श्री गजसिंह राजस्थानी ग्रन्थमाला

[ग्रन्थमाला सम्पादक : डॉ॰ नारायणसिंह भाटी, सम्मान्य निदेशक]

पाबू प्रकास

[महाकवि मोडजी आशिया कृत]

ग्रंथाँक १

सम्पादक

डॉ॰ नारायणसिंह भाटी

एम. ए. एल-एल. बी.; पी-एच. डी.

MAHARAJA MAN SINGH PUSTAK PRAKASH
JODHPUR

प्रकाशक

महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश, जोधपुर

मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट, फोर्ट, जोधपुर

• मुद्रक : श्री सुमेर प्रिंटिंग प्रेस
सोजती गेट, जोधपुर

• सर्वाधिकार सुरक्षित

• मूल्य : ३०) तीस रुपये
• प्रतियां : १०००
• सन् : १९८३

• प्रकाशक : मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट के अन्तर्गत
महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश, जोधपुर

Shri Gaj Singh Rajasthani Series

[General editor : Dr. Narayan Singh Bhati, Hon. Director]

Pabu Prakash

[Written by : Mahakavi Modji Ashiya]

Vol. 1

Edited by

Dr. Narayan Singh Bhati
M. A., LL.B., Ph. D.

Published by

Maharaja Man Singh Pustak Prakash

Mehrangarh Museum Trust, Fort, Jodhpur,

K/7

श्री गजसिंह राजस्थानी ग्रन्थमाला

[ग्रन्थमाला सम्पादक : डॉ० नारायणसिंह भाटी, सम्मान्य निदेशक]

पाबू प्रकास

[महाकवि मोडजी आशिया कृत]

ग्रंथाँक १

सम्पादक

डॉ० नारायणसिंह भाटी

एम. ए. एल-एल. बी.; पी-एच. डी.

MAHARAJA MAN SINGH PUSTAK PRAKASH JODHPUR

प्रकाशक

महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश, जोधपुर

मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट, फोर्ट, जोधपुर

Printed at :

Shri Sumer Printing Press

Sojati Gate, Jodhpur,

All Rights reserved

Cost : Rs 30-00 (Rupees Thirty only)

Copies: 1000

Year : 1983 A. D.

Published by :

Maharaja Man Singh Pustak Prakash

incorporated in—

Mehrangarh Museum Trust, Jodhpur.

अग्रलेख

साहित्य किणी देस या जाति री आत्मा ने उजासण वाळी एक सास्वत चीज है जिकी समै रै उलट-फेर अर भौतिक उत्थान में भी उण देस रा लोगां री अंदरुणी ओळख ने बरकरार राखै नै आपरै आपै पांण उण नै आगै बधण री सगती भी देवै। साहित्य रो निरमाण उठारी भासा रै माध्यम सूं हुवै। इणी खातर हर देस री भासा रौ आपरौ महत्व हुया करै, क्यूं के देस री आ भासा जिणनै आंपां मातृभासा केवां, मिनख रै जनम सूं ही उणरै संस्कारों सूं जुड़ियोड़ी हुवै नै पीढियां रो सचेतन सांवठौ अनुभव उण भासा रै पांण ही एक पीढी सूं दूसरी पीढी रै संस्कारां में आवै नै आंपां नै सोचण समझण री सही सगती देवै। भारत री न्यारी-न्यारी प्रान्तीय भासावां इण वजह सूं उठा रा लोगां खातर घणौ महत्व राखै। इण दीठ सूं राजस्थान री राजस्थानी भासा राजस्थान वासियां खातर घणी मैताऊ है नै इणरै साहित्य रै उत्थान सूं ही आ भासा नै इणरा बोलण वाळा समरथ बण सकै है– आपरै चितण में अर आपरै कारोबार में भी।

आ खुशी री बात है कै लारला बरसां में आपांरी भासा रै महत्व वास्तै अठारा लोग विसेस जागरुक होया है। इण सूं साहित्य रौ नवौ विकास हुयो है उठै ही पुराणै साहित्य नै उजागर करण री लालसा बधी है।

आ बात सगळा विद्वान मानै कै राजस्थानी रौ पुराणौ साहित्य घणौ सबळ नै सांवठौ है नै बो किणी प्रांतीय भासा सूं कमजोर कोनी, पण नवै साहित्य रौ बिगसाव तेजी नै समै री सूझबूझ सागै होणौ चाहीजै जिणसूं आपांरो प्रांत समै री रफ्तार सागै चाल नै दुनियां रै चितण में आपरौ योग दे सकै। नवै बिगसाव खातर भी पुराणै साहित्य रो अध्ययन नै इण री सुरक्षा घणी जरुरी है क्यूं कै साहित्य एक सैलंग परम्परा है जिकी आप नै आपरै संस्कारा री असलियत सूं जुडियोड़ी राखै नै सहज ग्यांन नै हमेसां सगती देवती रैवै। म्हनै इण बात रौ गुमेज है कै जोधपुर राजघराणै रौ इण परम्परा नै सबळ बणावण में मोटो योग रहयो, सृजन नै संरक्षण दोनूं ही तरह सूं। वर्तमान में भी "महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकास" री प्रकासण योजनावां में राजस्थानी ग्रंथां रौ प्रकासण राजस्थानी सीरीज रै माध्यम सूं करण री व्यवस्था है। इणमें 'पाबू प्रकास' रौ प्रकासण महत्वपूर्ण है। औ ग्रंथ राजस्थान री एक गोरव गाथा माथै लिखियोड़ो है जिण में राजस्थान रौ वीर-चरित्र आपरै पूरै उजास नै अनोखे आदर्श रै सागै प्रगट हुयौ नै जिण रै अध्ययन सूं न केवल राजस्थानी री वीर रस परम्परा रो ही परिचय मिळै, नवी पीढ़ी रै चरित्र निरमाण खातर भी

इण तरै रा ग्रंथां रौ आज महत्व है। कर्त्तव्यपरायणता नै वचन–बद्धता इण री कथा रा मूळ आधार है। पाबूजी देवळ चारणी नै वचन दिया कै जद भी उण रै परवार या गो-धन माथै विपदा आवैला वे हर हालत में हरतरै सूं उणरी रक्षा करैला नै इण कर्त्तव्य नै निभावण खातर वां बड़ो सूं बड़ो त्याग नै उत्सर्ग कियौ जिको दुनियां रै इतिहास में बेमिसाल है। दुनियां में जन-सेवा, त्याग, नै कर्त्तव्य री भावना रौ सदा महत्व है नै भारत री संस्कृति रौ तौ ओ ही मूळ आधार है, इणी खातर ऐड़ा कर्मवीर ही जनता रौ हिरदय जीत नै कालजयी हुया नै वांरा गीत करोड़ा कठां सूं आज दिन गाईजै। मानवता रै ऊँचै आदर्स ने सही विकास खातर इण तरै रा सस्कार जरुरी है नै वो साहित्य जो इण में मदद करै वो अमोल है।

म्हनै खुसी है कै 'महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश' री प्रकासण योजना में इण तरै री आ रचना प्रकाशित हो रयी है। म्हनै उम्मेद है कै राजस्थानी रा समरथ विद्वान डॉ. नारायणसिंह भाटी री देखरेख में संस्थान रा कार्यकर्त्ता नै अनुभवी विद्वान प्रकासण री इण उच्च परम्परा नै विकसित करैला।

गजसिंह

महाराजा, जोधपुर

पाबू प्रकास

: अनुक्रमणिका :

भूमिका	... .	(अ से ञ तक)
उतपत रौ समौ	....	1 से 14
गोल़ रौ समौ	....	14 से 28
विनोद रौ समौ	....	29 से 41
विरोध रौ समौ	....	42 से 50
आव्हान रौ समौ	....	51 से 85
आक्रान्त रौ समौ	... .	85 से 116
उत्तरायण सम्प्रहार रौ समौ.......		117 से 136
बूढ़ा रौ समौ	....	137 से 143
रातीवाहौ	....	143 से 181
सती रौ प्रवाड़ो	....	181 से 209
झरड़े रौ प्रवाडो	....	209 से 248
परचा रौ समौ	....	248 से 268
परिशिष्ट 1 कथासार	....	i से x
परिशिष्ट 2 शब्दार्थ	....	xi से xix
परिशिष्ट 3 शुद्धिपत्र	....	xx से xxii

चित्र परिचय

श्री पाबूजी राठौड़ का चित्र

देवल़ का चित्र

॥ श्री ॥

राठौड़ पाबूजी

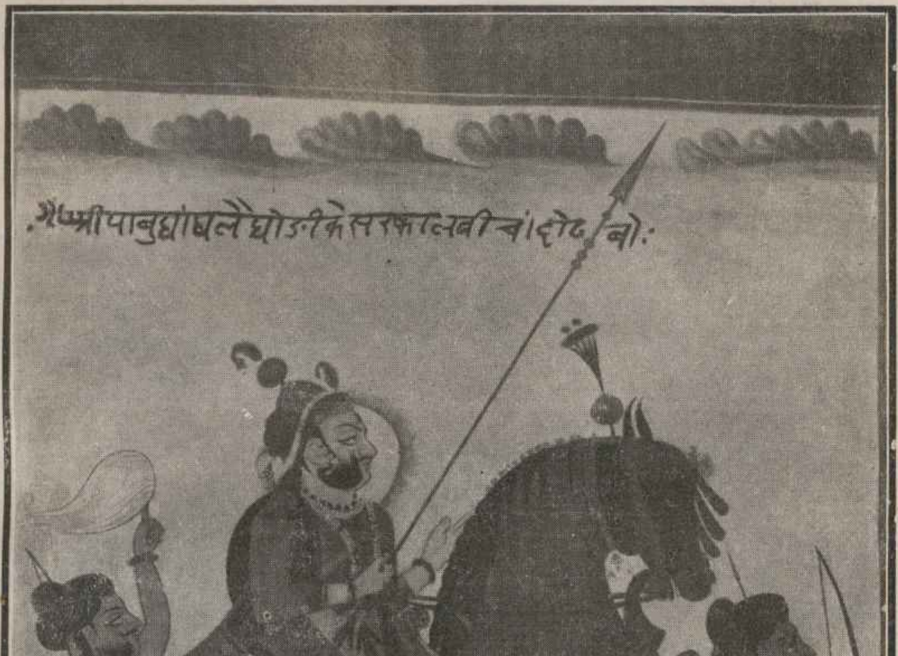

सुमेर प्रेस, जोधपुर

भूमिका

किसी भी देश का जैसा इतिहास, जन–जीवन और सांस्कृतिक गौरव होता है उसी के अनुरूप साहित्य की संरचना भी होती है। साहित्य सही मायने में उस समाज का अन्तदर्शन होता है जो एक दूसरी पीढ़ी को प्रभावित करता रहता है और संस्कारों के निर्माण में अपना योगदान देता है। इसलिए लम्बे समय तक उसी समाज का अस्तित्व बना रहता है जो अपनी पहचान अपने आप को अपने साहित्य के माध्यम से देता रहता है। इस प्रकार साहित्य समाज का सम्बल और पथ-प्रदर्शक भी बनता है तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में भी उसे अक्षुण्ण बने रहने की शक्ति देता है।

राजस्थान के डिंगल साहित्य का यदि गहराई से अध्ययन किया जाय और उसके दाय की निष्पक्ष दृष्टि से सही परीक्षा की जाय तो यह सत्य निखर कर स्वतः ही सामने आ जाता है कि न केवल राजस्थान अपितु समस्त भारत की सांस्कृतिक और साहित्यिक धरोहर को राजस्थान की अनमोल देन है। यहां के डिंगल साहित्य का इतिहास करीब एक हजार वर्षों का है, जिसमें वीर रस की प्रधानता है तथा शृंगार, भक्ति और नीति विषयक साहित्य की भावधाराएं भी समाज के संस्कारों को बराबर पोषित करती रही हैं।

जब 11 वीं (ग्यारहवीं) शताब्दी के लगभग उत्तरी भारत में मुसलमानों के निरन्तर आक्रमणों से वहां पर राजपूतों का वर्चस्व कम होने लगा तो वहां के बहुत से राजपूत कबीले राजस्थान के मरुस्थल में आ गए और उन्होंने कालान्तर में अपने अनेक छोटे बड़े राज्य कायम किए। यद्यपि राजस्थान में राजपूतों के राज्य और जागीर-समूह इससे भी पहले विद्यमान थे (मेवाड़ में बाप्पा रावळ ने गुहिल वंश के राज्य की नींव बहुत पहले डाल दी थी) परन्तु 15वीं शताब्दी के पश्चात् तो लगभग पूरा राजस्थान राजपूतों के ही शासन में आ गया था। इस काल में एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना यह घटी कि राठौड़ों ने कन्नौज से पलायन किया तो वे नए राज्य की ताक में थे और अन्ततोगत्वा उन्होंने निरन्तर संघर्ष करके राजस्थान में अपने पैर जमाये। सभी इतिहासकार इस बात को मानते हैं कि राव सीहा राठौड़ों का पहला पूर्वज था जो इस ओर आया और उसके पुत्र आसथान ने पाली पर राज्य कायम किया। इसके पश्चात् उसने खेड़ पर भी अधिकार कर लिया और उसके बाद उसका पुत्र धूहड़ गद्दी पर बैठा। उसने अपने राज्य का विस्तार किया और अपने भाई धांधल को कोळूगढ का राज्य दिया। धांधल बड़ा प्रतापी और रीझ-खीझ में पूर्ण क्षत्रिय था। इसी का पुत्र पाबू हुआ, जिसकी ख्याति आज समूचे राजस्थान में व्याप्त है।

पाबू के चरित्र और 'पाबू प्रकास' में वर्णित घटनाक्रम को समझने के लिए उस समय की परिस्थितियों को भली-भांति समझ लेना भी आवश्यक है। वह काल

ऐसा था जब पश्चिमी राजस्थान में राठौड़ अपना वर्चस्व कायम करने के लिए बराबर जूंझ रहे थे। वे अपना राज्य स्थिर करने के लिए स्थानीय लोगों से भी आवश्यक सहयोग प्राप्त कर रहे थे। यहां पर पहले से ही ईन्दा, सांखला चौहान भाटी आदि पुराने राजपूत वंशों की बिखरी हुई शासकीय इकाइयां मौजूद थी उनसे जहां इनका निरन्तर संघर्ष होता रहा वहां मुसलमानों के कई कुटुम्बों की शक्ति भी बराबर अवरोधक बनी हुई थी यद्यपि ये कुटुम्ब हिन्दुओं से ही मुसलमान बने थे। उनसे इनका टकराव बराबर होता था। निरन्तर संघर्ष और उत्सर्गमयी स्थिति में रहते हुए उन्होंने न केवल एक लड़ाकू जाति अपितु क्षत्रियत्व के संस्कारों से सम्पन्न कौम का भी परिचय अनेक रूपों में दिया है तथा उनमें पाबू का चरित्र एक ज्वलत उदाहरण है जो आगे के क्षत्रियों का भी आदर्श बना व क्षत्रियों की वीरत्व भावना के साथ-साथ धरती प्रेम, वैर लेने की भावना, वचन, निर्वाह, नारी की संस्कारवान भूमिका, चारणों और गुणीजनों के प्रति सम्मान तथा उनकी धार्मिक व नैतिक मान्यताओं का प्रभाव आगे आने वाली पीढियों के सस्कारों में काम करता रहा।

यह काल यहां के इतिहास में इसलिए भी बड़ा महत्वपूर्ण है कि इस काल में जैसलमेर, चित्तौड़ और रणथम्भोर तथा जालौर आदि स्थानों पर बहुत बड़े शाके हुए, जिनमें यहां के लोगों ने न केवल अपने शौर्य और स्वतन्त्रता की भावना का परिचय दिया अपितु साथ ही आत्म-शक्ति के बल पर ऐसे मानवीय गुणों की ज्योति भी प्रज्वलित की जो आगे के संघर्षों में बराबर राजस्थान का सम्बल बनी रही और आज हम जिस राजस्थान को देखते हैं वह राजस्थान अपने सांस्कृतिक धरातल पर अविचल बना रहा। प्रायः यह कहा जाता है कि इन शाकों में मुसलमानों से राजपूत परास्त होते रहे हैं परन्तु गम्भीरता से सोचने की बात यह है कि मुसलमानों की संगठित सैन्य-शक्ति के सामने इनकी शक्ति भले ही परास्त हो गई हो परन्तु उनका आत्म-बल और स्वाधीनता में विश्वास परास्त नहीं हुआ था वरना पूरा राजस्थान उसी समय गुलाम हो गया होता और लगभग आठ सौ वर्ष तक यहां क्षत्रियों का राज्य नहीं रहता और तब राजस्थान का जीवन और यहां की संस्कृति क्या होती? इसका अनुमान निष्पक्ष और सचेतन भाव से सोचने वाला कोई भी व्यक्ति लगा सकता है। यहां के लोगों में वीरों को लोक-देवता की तरह पूजने और उनमें अगाध श्रद्धा रखने की भावना के पीछे यही राज छिपा हुआ है। यद्यपि लोग आज इसे अन्ध-विश्वास और रूढिवादिता कहकर टाल देते हैं परन्तु इस भावना ने लोगों के जीवन को कितना सम्बल दिया है यह तथ्य कम लोग पहचानते हैं।

इस ऐतिहासिक व सामाजिक पृष्ठ-भूमि में लोक-देवता की तरह प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले वीर प्रायः वे लोग हैं जो बड़े शासक नहीं थे, परन्तु जीवन-आदर्शों के लिए और लोक-मर्यादाओं की रक्षा के लिए उन्होंने बड़े से बड़ा बलिदान किया, इसीलिए

जनता में उनके प्रति विशेष आदरभाव है। जनता की कसौटी ही खरी कसौटी है जिस पर कोई विशिष्ट चरित्र काल के अन्तराल में स्वर्ण-रेखा की तरह चमकता है। ऐसी स्थिति में यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि ऐसे महापुरुषों की ओर न केवल शिष्ट साहित्य लिखने वाले कवि ही आकर्षित हुए अपितु बहुत विस्तृत लोक-साहित्य भी उनके चरित्र एवं कार्य-कलापों को लेकर सृजित हुआ और वह यहां की जनता के जीवन का एक अंग बनकर उनका पथ-प्रदर्शक बनता रहा। पाबू, गोगा व रामदेव आदि ऐसे ही चरित्र हैं और उनसे संबधित शिष्ट साहित्य और लोक साहित्य के महत्व का मूल्यांकन भी इसी परिप्रेक्ष्य में होना चाहिये।

जैसा कि ऊपर संकेत किया है ऐसे वीरों पर लोक-साहित्य और शिष्ट-साहित्य दोनों तरह का साहित्य लिखा गया है परंतु हमारा लक्ष्य पाबू पर लिखे गए एक महाकाव्य का मूल्यांकन करना है। अतः डिंगल की वीर रसात्मक शिष्ट साहित्य परम्परा की ओर भी संक्षेप में दृष्टिपात करना उचित होगा। उपरोक्त ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में डिंगल काव्य की यह परम्परा कोई 12 वीं शताब्दी से ही हमें दिखाई देने लगती है परन्तु 15 वीं शताब्दी तक की बहुत कम रचनायें आज अध्ययन के लिए उपलब्ध हैं क्यों कि या तो अधिकाँश रचनाएं उस काल की विध्वंशात्मक परिस्थितियों में नष्ट हो गई हैं या जो मौखिक परम्परा पर जीवित रही वे भी कई कारणों से कालान्तर में विस्मृति के गर्त में खो गई। अतः उस काल के कुछ दोहे और छन्द आदि स्फुट रचनायें ही बच पायीं जो उस परम्परा का आभास कराने में सक्षम हैं।

राजस्थानी साहित्य का मध्यकाल वीररसात्मक कृतियों का अपूर्व भण्डार है। इस काल में सैकड़ों कवियों ने अपनी अनुभूति, कल्पना और वर्णन शक्ति का परिचय देते हुए भाव और शैली दोनों ही दृष्टियों से बड़े विस्तृत साहित्य का सृजन किया है और उसमें अनेक विधायें अपने शास्त्रीय पक्ष की सक्षमता के कारण भी यहां के साहित्य में विशिष्ट महत्व रखती हैं। मोटे तौर पर इस साहित्य को स्फुट और प्रबन्ध दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। स्फुट काव्य प्रायः दोहों, छप्पयों, गीतों झूलणों कुण्डलियों, निशाणियों आदि छन्दों के माध्यम से लिखा गया है। इन छन्दों के भी कई भेदों का प्रयोग विभिन्न कवियों ने अपनी प्रतिभा के अनुरूप किया है। प्रबन्ध-काव्य भी खण्ड–काव्य और महा–काव्य दोनों ही रूपों में लिखे गये हैं, जिनमें खण्ड–काव्यों की संख्या बहुत बड़ी है। प्रायः यह देखने में आया है कि पूर्व मध्य - काल में अधिकांश खण्ड–काव्य ही लिखे गये हैं क्यों कि वह काल प्रमुख रूप से स्फुट काव्य की परम्परा से अधिक प्रभावित रहा है और उच्च कोटि के कवि भी स्फुट काव्य की उत्कृष्ट रचनाएं करके ही उस समय के साहित्य जगत और समाज में ऊंचे से ऊंचा स्थान और सम्मान पाते रहे हैं। उत्तर मध्य काल में आते-आते कवियों ने महाकाव्य रचने की ओर विशेष ध्यान दिया और इस काल में 'सगत रासौ' 'गजगुण रूपक' 'राज रूपक' 'सूरज प्रकाश' 'विन्है रासौ' जैसे

महाकाव्य लिखे गये परन्तु यह परम्परा भी आधुनिक काल में आते-आते समाप्त प्रायः हो गई और बांकीदास जैसे समर्थ कवि ने भी खण्ड काव्य और स्फुट काव्य लिखकर ही संतोष कर लिया।

अंग्रेजी शासन-काल में तो राजस्थानी काव्य शिथिल-सा पड़ गया क्योंकि जिन परिस्थितियों के संवेग से यह साहित्य गतिवान था वे परिस्थितियां एकाएक समाप्त हो गई फिर भी पुरानी परम्परा समाप्त हो गई हो यह बात नहीं और राख में दबी हुई चिन्गारी की तरह वे संस्कार अब भी जीवित थे जिससे लोक-मानस पर आदर्शों की छाप धूमिल जरूर हो गई थी परन्तु मिटी नहीं थी।

लोक साहित्य तो अबाध गति से यहां के जन-जीवन में अपना प्रवाह बराबर बनाये हुए था अतः लोक-देवताओं तथा लोक मानस में बसे हुए वीरों के चरित्र को काल विस्मृति के गर्त में डुबो नहीं सका। अतः एक वीर लोक-नायक को लेकर मोडजी आसिया ने 'पाबू प्रकास' जैसे महाकाव्य की रचना की कवि स्वयं चारण था और चारणों के ऐसे घराने में पैदा हुआ था जिसमें बांकीदास जैसे मान्य महाकवि पैदा हो चुके थे और जिन्होंने काव्य की बहुत बड़ी सम्पदा भी संकलित की थी अतः कवि का चारण-काव्य की परम्परा से गहरा लगाव और वीर भावनाओं से संस्कार-जन्य तादात्म्य आदि कुछ ऐसे महत्वपूर्ण तत्व थे जिसने कवि को एक महत्वपूर्ण महाकाव्य लिखने की क्षमता प्रदान की और उसने एक छोटे से गांव में रहते हुए ऐसे महाकाव्य का सृजन किया जो न केवल पाबू के आख्यान को वर्णित करता है अपितु ऐसे संस्कारों के पुंज को साकार रूप प्रदान करता है जो एक जाति के जीवन का सम्बल बनती है और जिसका सार्वभौम प्रभाव अक्षुण्ण रहता है।

कवि के पारम्परिक संस्कार चाहे जो रहे हों पाबू के प्रति समाज में यह सर्वमान्य धारणा कि कलयुग में पाबू एक प्रभावशाली अवतार हैं ने कवि को काव्य रचने की प्रेरणा दी। कवि के कोई पुत्र नहीं था और पुत्रहीन व्यक्ति मोक्ष को प्राप्त नहीं होता है, यह एक बहुत पुराना धार्मिक विश्वास यहां के जन-जीवन में रहा है। अतः कवि के मन में ग्रन्थ रचने के पीछे पुत्र प्राप्ति की चाह जो लौकिक अलौकिक दोनों ही ऐशणाओं की घुली मिली चाह कही जा सकती है ने इस ग्रन्थ के रचनाकार के हृदय में श्रद्धा भाव को अक्षुण्ण रखा। वैसे भी इस काल में वीर रस का ऐसा प्रबन्ध काव्य लिखना किसी सम-सामयिक प्रेरणा का कारण नहीं हो सकता था क्यों कि जैसा पहले कहा जा चुका है यह समय अंग्रेजी साम्राज्यवाद का समय था और राजस्थान के रजवाड़ों में अब युद्ध-अभियानों की वह स्थिति समाप्त प्रायः हो गई थी जिसने मध्यकाल में राजस्थान की वीर भावनाओं को आलोड़ित कर रखा था। इसके अलावा चारण-कवि-समाज के साथ राजाओं और सामन्तों के वे संबन्ध अब शिथिल पड़ने

लग गये थे जो कि मध्यकाल में देखने को मिलते हैं। अतः ऐसी परिस्थितियों में किसी सम-सामयिक लौकिक वीर-चरित्र को लेकर काव्य लिखने की अभिलाषा अब कवियों में जाग्रत नहीं होती थी, वे या तो नीति परक छोटी-बड़ी रचनायें बनाते थे या फिर पुराने वीरों पर लिखे हुए प्राचीन काव्य को याद करके ही सन्तोष कर लेते थे। यहां यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि चारण काव्य परम्परा एक रूढि में बंध चुकी थी और उसका उद्देश्य भी सीमित होता चला गया था, फलस्वरूप अब यह असंभव सा प्रतीत होता था कि उस परम्परा का कोई कवि समसामयिक परिस्थितियों के धरातल से ऊपर उठकर वीर भावना के शाश्वत तत्वों को सहेजता हुआ संस्कारों की उदात्त भूमिका पर किसी ऐसे वीर-काव्य का सृजन करे कि वह कृति कालावधि से भी ऊपर उठ जाये। फिर भी वंशानुगत अनुभव के आधार पर इस कवि ने एक अच्छी प्रबन्धतात्मक रचना परम्परागत शैली में प्रस्तुत की है।

'पाबू प्रकास' काव्य का मूल्यांकन

जैसा कि पहले कह आए हैं 'पाबू प्रकास' एक प्रबन्ध काव्य है और उसमें सम-सामयिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के साथ पाबू का सम्पूर्ण चरित्र वर्णित है। हम उसे एक महाकाव्य की संज्ञा भली भाँति दे सकते हैं। महाकाव्य के परम्परागत शास्त्रीय लक्षणों के अनुसार उसमें उदात्त चरित्र का जीवन-वृत्त वीर शृंगार और भक्ति रसों में किसी एक की प्रधानता. प्रकृति चित्रण, चरित्र चित्रण और अन्य सामाजिक मान्यताओं का विस्तार, उस समय की संस्कृति का चित्रण, आठ सर्गों से अधिक सर्गों में ग्रन्थ का विभाजन, विभिन्न छन्दों का प्रयोग तथा धर्म, काम, अर्थ, मोक्ष आदि चारों में से किसी एक की लक्ष्य भूत उपलब्धि ये तत्व प्रमुख माने गए हैं। 'पाबू-प्रकास' में ये सभी तत्व किसी न किसी रूप में विद्यमान हैं।

'पाबू प्रकास' की कथावस्तु

ग्रन्थ में वर्णित कथा पाबू के जीवन को लेकर लिखी गई है। प्रारम्भ में अति संक्षेप में उसके पूर्वजों का वर्णन है। पाबू को एक अलौकिक पुरुष बताने की दृष्टि से उसके पिता धाँधल के घर एक अप्सरा की कोख से पाबू का जन्म बताया गया है। बचपन से ही उसकी विचक्षण बाल-सुलभ प्रवृत्तियों को दर्शाया गया है और एक वीर के अच्छे गुणों को भी उसके चरित्र में प्रतिष्ठापित किया गया है। उस काल के वीरों का एक अनिवार्य गुण अश्वारोहण था और वे लोग घोड़ों के बड़े शौकीन होते थे, पाबू की नजर में देवलदे चारणी की घोड़ी काळवी चढ़ गई और उसने उस घोड़ी को प्राप्त करने के लिए उससे प्रार्थना की। चारणी को वह घोड़ी बहुत प्रिय थी और कई वीर उसे मांग चुके थे, यहां तक कि पाबू का बड़ा भाई बूड़ा भी उसे

मांग चुका था पर देवल ने वह घोड़ी उसे भी नहीं दी थी। पाबू की विलक्षण वृत्ति को देखकर वह घोड़ी उसको इस शर्त पर दी गई कि वह घोड़ी उसके गायों की रखवाली करती है और जब कभी उस पर ऐसी आपत्ति आए तो पाबू उसकी तुरन्त रक्षा करेगा। पाबू ने वचन दिया और घोड़ी उसे प्राप्त हो गयी। इसके बाद पाबू के अनेक वीरता-पूर्ण कार्यकलापों का वर्णन इस ग्रन्थ में किया गया है जिन्हें सविस्तार परिशिष्ट में दिए गए ग्रन्थसार में देखा जा सकता है। पाबू की बहिन पेमलदे जायल के खीची सामन्त जिंदराव को ब्याही हुई थी और इन दोनों कुटुम्बों में बहुत पुराना वैरभाव था। खीची के मन में यह कपट बसा हुआ था कि कभी अवसर आए तो पाबू को मारकर यह वैर लिया जाय और कालवी घोड़ी को भी प्राप्त कर लिया जाय।

जायल की ओर अकाल पड़ जाने से ये लोग इधर अपनी गायों को लेकर आए थे और आग्रह करने पर भी वापिस जाने का नाम नहीं ले रहे थे जिससे दोनों पक्षों में कुछ तनातनी सी हो गई थी और अवसर देखकर जब पाबू ऊमरकोट सोढों के यहां शादी करने गया हुआ था तो पीछे से जिन्दराव ने देवलदे की गायें घेर ली। चारणी ने तुरन्त पाबू के पास पुकार की और पाबू ने अपने वचन-निर्वाह में एक क्षण भर भी देरी न करके चंवरी में भंवारे खाती हुई अपनी नव विवाहिता पत्नी सोढी का हाथ छोड़कर काळवीं पर सवारी की और अपने कुछ साथियों सहित गायों की वाहर के लिऐ निकल पड़ा। घमासान युद्ध करके पाबू ने गायें वापिस प्राप्त कर ली। युद्ध में अनेक बार ऐसा अवसर आया जब वह जिन्दराव को मार सकता था परन्तु उसने उसे अपना बहनोई समझकर और बहिन के सुहाग का ख्याल कर उस पर वार नहीं किया। परन्तु जब जिंदराव का दाव आया तो उसने बूड़ा और बाद में पाबू दोनों को मार डाला। ऐसी परिस्थितियों में जैसी कि राजपूत परम्परा रही है, पाबू और बूड़ा दोनों की पत्नियां सती हुई परन्तु बूड़ा की पत्नी के गर्भ में पुत्र था अतः उसने सती होते समय अपना पेट चीरकर वह पुत्र-रत्न अपने मायके वालों को सम्भलाया। इस दृढ आशा के साथ कि यह इन दोनों वीरों का वैर जिन्दराव से लेगा। यह पुत्र जिसका नाम झरड़ा दिया गया (क्यों कि यह पेट चीर कर निकाला गया था) बचपन मे ही बड़ा नटखट और निडर था। जब वह बड़ा हुआ तो उसकी बुआ ने उसे सारी कथा कही और झरड़ा वैर लेने की भावना को हृदय में संजोये वहा से निकल पड़ा। भटकते हुए वह नाथ योगियों के संसर्ग में आया। इस ग्रन्थ में यह भी दर्शाया गया है कि उसे गोरखनाथ के प्रत्यक्ष दर्शन हुए। गोरखनाथ की कृपा से वह दिव्य गुणों से ओतप्रोत अदम्य साहस का धनी हुआ। जिन्दराव उस समय का बड़ा सबल और सक्षम व्यक्ति था परन्तु झरड़ा रात को महलों में पाबू की बहन से भेद लेकर पहुंचा और जिन्दराव को ललकारते हुए उसके सीने पर चढ़ बैठा तथा उसकी हत्या करके अपने पिता व काका का वैर लिया। इसके बाद पाबू के लोकरंजनकारी चरित्र का बखान कई प्रवाड़ों के रूप में करते हुए ग्रन्थ की समाप्ति की गई है।

'पाबू प्रकास' में वर्णित चरित्र

'पाबू प्रकास' का प्रमुख नायक पाबू राठौड़ है। वह एक धीरोदात्त और ऐतिहासिक नायक है। उसमें वीरता, वचन-बद्धता, नेतृत्व, उदारता आदि ऐसे गुण हैं जो न केवल उसे एक महान व्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं अपितु उसे एक लोकादर्श के रूप में भी स्थापित करते हैं। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि पाबू लोक-देवता के रूप में प्रतिष्ठित है और उच्च समाज से लेकर निम्न वर्ग तक का उसके प्रति सहज सम्मान भाव है। पाबू का चरित्र उस युग की धरोहर है जब यहां सांस्कृतिक उथल-पुथल मची हुई थी और इस संक्रांति-काल में प्राचीन मूल्यों के सार तत्त्व के रूप में कुछ ऐसे नए मूल्यों का सृजन करने वाले लोगों की आवश्यकता थी जो समाज के आत्म - बल और सस्कृति को अक्षुण्य रख सकें। युगों-युगों के लम्बे संघर्ष में निम्नस्तरीय जातियें बड़ा संकटपूर्ण व कष्टप्रद जीवन व्यतीत कर रही थीं। क्षत्रिय आदि लड़ाकू कौमों के कुटुम्ब जहां अपने राज्यों की स्थापना करने में व्यस्त थे वहां हर परिस्थिति में वणिक समाज अपने लाभ की ओर ही दृष्टि लगाए बैठा था और किसी प्रकार के जोखिम का भागीदार बनने से कतराता था, वहां ब्राह्मण-समाज तटस्थ होकर केवल कर्म-काण्ड के जरिये उच्च वर्ग की श्रद्धा का भाजन बने रहने में अपनी होशियारी समझता था और शुद्र लोगों की उसे कत्तई परवाह नहीं थी। वे क्षत्रियों को समय-समय पर बस यह याद दिला देते थे कि वे गौ-ब्राह्मण प्रतिपालक हैं और ब्राह्मणों की रक्षा करना न केवल उनका कर्त्तव्य है अपितु पुण्य का भी मार्ग है। वे सनातन धर्म की उदात्त शिक्षा देने में अब सक्षम नहीं रह गए थे परंतु मन्दिरों और मठों में अपना एकाधिपत्य स्थापित कर सामन्तों का सा जीवन व्यतीत करने की ओर प्रवृत्त हो गए थे। क्योंकि उनकी जागीरें (डोली) थी और अपनी प्रबंध - व्यवस्था भी थी। ऐसी स्थिति में धर्म और संस्कृति के अत्यन्त संकुचित दायरे में पूरा समाज एक होते भी अलग-थलग पड़ने लग गया था और निम्न वर्ग के प्रति सद्भाव तथा उनकी कठिनाइयों से उन्हें उबारने की ओर समाज का उच्च वर्ग कोई ध्यान नहीं दे रहा था जिससे उच्च वर्ग को जो सहयोग पिछड़ी हुई जातियों से पहले प्राप्त होता था वह भी कम होता जा रहा था। ऐसी स्थिति में इस पिछड़े वर्ग को समाज का एक अभिन्न अंग बनाने और उनमें आत्म-विश्वास जाग्रत करने का कार्य पाबू जैसे पुरुषों ने किया, इसीलिए उनके चरित्र की विशिष्ट स्थापना लोक-मानस में हुई। उन दो सौ वर्षों के काल में न केवल पाबू अपितु अन्य लोकनायकों की भी अवतारणा हुई जिनमें रामदेव, हड़बू, गोगा और मेहाजी का भी उल्लेखनीय स्थान है। यह प्राचीन दोहा आज भी इस बात की साक्षी देता है :—

"पाबू हड़बू रामदेव मांगळिया मेहा।
पांचू पीर पधारज्यो गोगादे जेहा॥"

कहने का तात्पर्य यह है कि पाबू जैसे चरित्र की अवतारणा समाज में कोई आकस्मिक घटना नहीं थी, वह उस काल की एक ऐसी आवश्यकता थी जिसकी पूर्ति पाबू

ने की। पाबू के उदात्त चरित्र का मुख्य तत्व उसका वचन निर्वाह है और वचन निर्वाह हेतु ही उन्होंने प्राणोत्सर्ग किया था और उसके गुणगान की काव्य में प्रेरणा भी इसी से फूट निकली है तथा उससे पवाड़ों और शिष्ट-साहित्य का सृजन हुआ है। वचनबद्धता के पीछे गौरक्षा का भाव चारणों और राजपूतों के सनातन सम्बन्ध का अत्यन्त पवित्र और ऊर्ध्वगामी निर्वाह आदि मुख्य बातें हैं जो यहां की संस्कृति की रेखाओं को उज्ज्वलतर और अधिक पुख्ता करती हैं परंतु इस आदर्श के निर्वाह हेतु पाबू ने अपने कुटुम्ब का जितना सहयोग नहीं लिया उतना यहाँ की भील जाति का लिया और उन्हें इतना अपनत्व दिया कि कर्त्तव्य की उच्चतम वेदि के चारों ओर बहते हुए रक्त में अपने रक्त के साथ भीलों के रक्त के मिल जाने की प्रसन्नता पाबू ने व्यक्त की :—

"ओ रगत मिळ जावण दे सांवळा रे रगत मांय ."

इससे पाबू के चरित्र की सार्वभौम उदात्तता को कवि ने उच्चतम शिखर पर पहुँचा दिया है और यही पाबू के चरित्र की एक ऐसी विशेषता है जिसे कवि ने उपरोक्त विशेषताओं के साथ बखूबी अपने काव्य में प्रकट किया है तथा उसकी यथा स्थान सुन्दर व्यंजना की है। पाबू आज भीलों के पूज्य ही नहीं ईष्ट देव भी हैं और इसीलिए पाबू के पवाड़े मुख्य रूप से भील जाति ही गाती है जिन्हें समाज के सभी वर्ग बहुत श्रद्धाभाव से सुनते हैं। इस महाकाव्य में कवि ने पाबू को न केवल युद्ध-वीर ही बताया है अपितु उसे उदार और स्नेहिल भी चित्रित किया है। उसने अपनी बहिन के प्रति स्नेह के वशीभूत होकर ही अपने प्रबल शत्रु जिन्दराव को युद्ध में नहीं मारा। अपनी दूसरी बहिन के पति सिरोही के राव को भी बहिन के कहने पर क्षमा किया। वह युद्ध-भूमि में जहाँ वीर नायक है वहां विलास प्रसंग में शृंगार की सरसता का नायक भी है और अपनी प्रेमिका राज कुंवरी का वरण करने जिस उत्साह और सजधज के साथ जाता है उसी उत्साह और सज-धज के साथ वह सेनारूपी कुमारी का वरण करने के लिए भी प्रस्थान करता है। दोनों स्थितियों में उसका समभाव वीर और शृंगार रसों के एकत्व से उसके व्यक्तित्व को अक्षुण्ण रंगों से मूर्तिमान करता है। महाकवि बांकीदास ने भी इस रूप की बड़ी सुन्दर व्यंजना की है जिसे उद्धृत करने का मैं लोभ सवरण नहीं कर पा रहा हूं :—

'वरी रायकुंवरी जेण वागे रसिक ।
वरी घड़ा कुंवारी तेण वागे ।।"

युग-पुरुष अपने एक विशिष्ट दायित्व को पूरा कर लेने के बाद वहां नहीं ठहरते न वे अपने बलिदान से प्राप्त सफलताओं के भोग की इच्छा करते हैं और न यश की कामना ही करते हैं। पाबू भी ठीक इसी प्रकार के युग-पुरुष के रूप में इस काव्य में चित्रित हुआ जो अपने कर्त्तव्य-निर्वाह की छाप समाज में छोड़कर इस दुनियां से प्रस्थान कर जाता है और जल में कमल जैसे उसके व्यक्तित्व की सौरभ ही अब शेष रह गई है

जो कवियों की वाणी का शृंगार बनती है। इस काव्य में पाबू के उदात्त चरित्र की खूबियों को कवि ने बड़े धैर्य के साथ विस्तार दिया है और समय - सापेक्ष सांस्कृतिक उथल–पुथल में एक प्रकाश-पुन्ज की तरह उसकी सफल स्थापना की है। इस चरित्र से एक जातीय चरित्र का प्रकाश निरन्तर विकीर्ण होता है और आगे आने वाले काल में वह वीरों को प्रेरणा ही नहीं देता, उनके चरित्र को सामाजिक उपयोगिता की कसौटी भी प्रदान करता है।

पाबू की पत्नी सुपियारदे सोढ़ी

सोढ़ी क्षत्रिय नारियों के आदर्श की एक प्रतीक के रूप में इस काव्य में चित्रित हुई है। वह रूपवती और गुणवती तो है ही किन्तु साथ ही क्षत्रिय ललनाओं की तरह साहसी और कर्तव्यपरायण भी है। सोढी जाति की नारियों की सुन्दरता राजस्थान में प्रसिद्ध रही है और उसके अनुरूप ही इस काव्य में इसके सौन्दर्य का बखान किया गया है। राजपूत नारी में वीर-भावना, युद्ध में भाग लेने की लालसा और पति के मरण पर चितारोहण मध्यकालीन संस्कृति की सामान्य विशेषताएं बन चुकी थीं। इसी के अनुसार जब पाबू के पास देवल चारणी की पुकार पहुंची और वह चंवरी का गठबन्धन छोड़ कर युद्ध के लिए तत्पर हुआ तो साधारण नारियों की तरह प्रेम-विह्वल होकर सोढ़ी ने करुणा भरे आँसुओं की पाल बाँध कर अपने पति का रणपथ अवरुद्ध नहीं किया परन्तु उसने भी उसके साथ युद्ध में हाथ बटाने की इच्छा प्रकट की। एक सहधर्मिणी का इससे बड़ा धर्म क्या हो सकता था, जो नई दुल्हन ने यौवन की देहली पर पांव रखते ही प्रकट किया। यदि उस परिस्थिति की हम कल्पना करें तो एक अद्भुत चित्र हमारी आँखों के सामने प्रस्तुत होता है। वैसे तो वीर नारियां अपने पति के हर संकट में सहभागी बनती रही हैं पर जिस नारी ने चँवरी में बैठकर पूरे फेरे ही नहीं खाये न पति के प्रेम का कोई सुख-भोग ही किया वह जीवन की उद्दाम लालसाओं के आवेग को एकाएक जीवन की बलिवेदी पर समर्पण करने को तत्पर हो गई, यह यहां लक्ष्य करने की बात है कि सहधर्मिणी का यह विलक्षण साहस भरा त्याग पाबू के लिए कितना प्रेरणादायी रहा होगा। पाबू की वीरगति पर भला ऐसी नवविवाहिता पत्नी आँसू बहाने कब बैठती, वह उसी प्रणय-सूत्र का उल्लास हृदय में संजोये चितारूपी चँवरी पर सोलह शृंगार से सज्जित होकर आ बैठी और उस अग्नि में पावन होकर मानों धूम-लता के सहारे स्वर्ग में पहुंच गई। उस समय की नारी का यह सती-रूप वीरों के लिए सदा प्रेरणादायी मानकर उस समय के समाज और कवियों ने उनका बखान किया है और 'पाबू प्रकास' के रचयिता ने भी इसका निर्वाह सहृदयता पूर्वक किया है इसीलिए सोढ़ी रानी भी आज पाबू की तरह अमर हो गयी। आज की परिस्थितियां इससे बहुत भिन्न हैं अतः नारी का यह सती-रूप समय-सापेक्ष ही समझा जाना चाहिए।

बूड़ा

बूड़ा पाबू का बड़ा भाई है। वह धांधल की पहली पत्नी से पैदा हुआ था और धांधल की मृत्यु के उपरान्त गद्दी का अधिकारी बना था परन्तु उसमें पाबू जैसी वीरता, उदारता आदि विशेषताएं नहीं थीं, फिर भी वह अपने समय का माना हुआ वीर था। जब देवल चारणी की गायें चुराई गई तो उसने पहले पहल बूड़ा से ही निवेदन किया था कि वह उनका पीछा करे क्योंकि गायों की बाहर चढ़ना हर क्षत्रिय का धर्म था परन्तु बूड़ा ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। इस टालमटोल का मुख्य कारण यही रहा होगा कि बूड़ा ने भी काळवी घोड़ी चारणी से मांगी थी परन्तु देवल ने घोड़ी बूड़ा को न देकर बाद में पाबू को दे दी थी। यदि बूड़ा इस अवसर पर अपना कर्त्तव्य समझकर ही बाहर चढ़ जाता और गायों को घेर लाता तो शायद पाबू के प्राणोत्सर्ग की नौबत नहीं आती। परन्तु बूड़ा ने एसा नहीं किया जिसके फलस्वरूप संकट की विकरालता बढ़ गई और बाद में समाज की लांछना से बचने हेतु बूड़ा ने भी युद्ध में भाग लिया और वह भी युद्ध मारा गया। बूड़ा ने भी पाबू की तरह ही वीरता के साथ लड़ते हुए अपने प्राणों की आहुति दी थी और उसकी पत्नी भी उसके पीछे सती हुई परन्तु उसका चरित्र पाबू की तरह नहीं निखर पाया क्यों कि समय पर उसने अपने कर्त्तव्य की ओर ध्यान नहीं दिया तथा आपसी ईर्ष्या का शिकार हो जाने के कारण वह उस यश का भागी नहीं बन सका जैसा कि पाबू बना। इस प्रकार की ईर्ष्या की भावना उस समय के क्षत्रियों में खूब फैली हुई थी उसी का प्रतीक बूड़ा कहा जा सकता है और इस ईर्ष्या के वशीभूत ही अनेक घटनाओं में राजपूतों की पराजय होती रही है। इस परम्परा के लक्षण 'पाबू प्रकास' की इस घटना में भी देखे जा सकते हैं।

चांदा

चांदा भील जाति का सरदार था और पाबू का अभिन्न मित्र होने के नाते सदा उसके साथ रहता था। बचपन से ही पाबू भीलों के साथ खेलता शिकार में उन्हें साथ ले जाता और उनसे एक भातृत्व-भाव का व्यवहार करता। इस शूद्र जाति से इतना मेल मिलाप रखने के कारण कई बार उसके कुटुम्ब की नारियां और अन्य लोग भी पाबू को उपहास का पात्र बनाते परन्तु वह उसकी परवाह नहीं करता था। भीलों के प्रति पाबू की सहज आत्मीयता के कारण ही उनका सरदार चांदा हर संकट की घड़ी में उसके साथ रहता और अनेक युद्ध-अभियानों में भी उसने भाग लिया। चांदा वीर होने के साथ-साथ एक विश्वासपात्र व्यक्ति था। उसे जहां भीलों का पूर्ण विश्वास प्राप्त था वहीं पाबू के लिए क्षत्रियों से बढकर सहयोग देने वाला था। उसकी इस चारित्रिक विशेषता के कारण ही पाबू और भीलों का आद्योपान्त सम्बन्ध बना रहा और जब आखरी युद्ध में पाबू ने जूझ कर प्राणोत्सर्ग किया तो कितने ही भीलों ने उसके साथ

प्राणों की आहुति दी। इस प्रकार चांदा भील जाति की वीरता, विश्वसनीयता और स्वामी-भक्ति का प्रतीक बन गया और तब से भील जाति राजपूतों के बहुत निकट सम्पर्क में आयी। वह उनके शिकार अभियानों में भी सुरक्षा के लिए अंगरक्षक की तरह आगे आने वाले समय में बराबर काम देती रही। महाराणा प्रताप के युद्ध अभियानों और संकट के काल में उनका सहयोग इस परम्परा का एक बहुत बड़ा प्रमाण है अन्य शुद्र जातियों की अपेक्षा राजपूतों और भीलों का आधुनिक युग में भी घनिष्ट सम्बन्ध इसी संस्कारगत भावना के कारण है।

जिंदराव खीची

जिन्दराव जायल का खीची सरदार था। वह अपने समय का एक शक्तिशाली, सजग और प्रशासन-निपुण वीर था। बूड़ा की सगी बहिन पेमलदे उसे ब्याही हुई थी। इस प्रकार इन दोनों परिवारों में बहुत निकट का सम्बन्ध था परन्तु इन दोनों कुटुम्बों में पुरना वैर-भाव भी था क्यों कि उस समय में धरती के लिए कुटुम्बों में आपसी तनाव और युद्ध होना एक साधारण सी बात थी। जिन्दराव वैमनस्य, ईर्ष्या और वैर-भाव रखने वाला व्यक्ति था इसलिए वह पाबू से और भी रुष्ट हो गया क्यों कि चारणी ने काळवी घोड़ी जिन्दराव को नहीं दी थी। इन कारणों से उसके मन में वैर - भाव और प्रबल हो गया और उसने अवसर देखकर चारणी की गायें घेर ली जिसके फलस्वरूप युद्ध हुआ। इस युद्ध में ग्रन्थकर्ता ने बताया है कि पाबू को ऐसा अवसर मिला था कि वह जिन्दराव का प्राणान्त कर देता परन्तु उसने अपनी बहिन के सुहाग का ख्याल करते हुए बहनोई के प्राण बक्श दिये परन्तु जब जिंदराव का वार आया तो उसने किसी प्रकार का खयाल नहीं किया और पाबू को मार डाला इससे उसके चरित्र की निकृष्टता प्रमाणित होती है। परन्तु युद्ध में अवसर न चूकना भी नीति का एक नियम है उसने उसी नीति का पालन किया लेकिन मानवता का अवलम्ब उसने त्याग दिया इसीलिए वह जन-प्रशंसा का पात्र नहीं बन सका। वह बड़ा सावधान व्यक्ति था और इसीलिए इस तथ्य को उसने कभी नजरअन्दाज नहीं किया कि उसने पाबू को मारा है अतः उसके कुटुम्ब वाले इसका वैर अवश्य लेंगे। इसलिए यह सदा सावधान रहता था और अपनी सुरक्षा का पूरा प्रबन्ध रखता था। इस ग्रन्थ में दर्शाया गया है कि रात्री को जहां वह अपने महल में सोता था उसके चारों ओर कितने ही सुरक्षात्मक उपाय किए गये थे। वैर कभी बूढा नहीं होता यह राजस्थान की पुरानी कहावत है अतः कई वर्ष बीत जाने के बाद भी 'झरड़ा' जब युवा हुआ तो उसने अपने पिता व काका का वैर जिन्दराव को मारकर ले ही लिया और उसके सुरक्षा-प्रबन्ध यो ही धरे रहे क्योंकि जो जैसा करता है वैसा भरता है। पाबू जैसे विलक्षण और उदार सम्बन्धी की उसके हाथों क्रूर मृत्यु के घोर अनाचार और सोढी के श्राप से भला वह कब उबर सकता था। इस प्रकार इस काल में जिन्दराव की स्थिति एक खलनायक की स्थिति के रूप में सफलता पूर्वक वर्णित की गई है।

'पाबू प्रकास' में रस योजना

पाबू प्रकास में जीवन के अनेक प्रसंगों का उद्घाटन यथास्थान हुआ है अतः इसमें लगभग नौ रसों का परिपाक देखने में आता है। परन्तु वीर रस इसका प्रधान रस है। वीर रस की उद्भावना पाबू द्वारा लड़े गए तीन चार युद्धों के प्रसंगों में देखी जा सकती है परन्तु जहां पाबू और जिन्दराव का अन्तिम युद्ध हुआ है वहां वीर रस अपनी चरमता में प्रकट हुआ है और वीर रस के साथ-साथ अद्भुत, भयानक तथा वीभत्स रस भी सहयोगी रसों के रूप में प्रकट हुए हैं।

वीर रस का वर्णन वैसे तो परम्परागत रूप में ही देखने को मिलता है परन्तु जब प्रतिपक्षी नायक जिंदराव से वह युद्ध करता है तो अर्जुन के सामने जैसी धर्म-संकट की स्थिति आ गई थी कुछ वैसी ही स्थिति पाबू के सामने आयी और उसे यह खयाल बराबर बना रहा कि वह अपने कर्त्तव्य के लिए अपने बहनोई से ही लड़ रहा है। एक ओर उसने जहां अपनी कर्त्तव्य परायणता के निर्वाह के लिए युद्ध किया वहां उसने अपने शत्रु जिंदराव के प्राण न हरकर अपनी बहिन के प्रति स्नेहभाव का भी निर्वाह किया। पाबू ने चारणी की गायें छुड़ाकर अपने कर्त्तव्य को पूरा किया यद्यपि उसे अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा। इन परिस्थितियों के बीच से वीर रस का जो परिपाक हुआ है वह अपने सात्विक ओज में अद्भुत व अनुपम है। यही 'पाबू प्रकास' के वीर रस की एक विशेषता कही जा सकती है जो डिंगल के अनेक वीर-काव्यों से उसे अलग करती है और इसका प्रभाव भी पाठक के मनपर स्थायी रूप से पड़ता है। इस वीर रसात्मक घटना के बाद यद्यपि पाबू के क्षत्रियोचित उत्सर्ग की अमरता में किसी को कोई सन्देह नहीं रहता; परन्तु चारणी के भाव-विभोर कर देने वाले स्नेहिल वार्तालाप और सोढ़ी के सती होने की शृंगार-रंजित करुणा पाठक को एक विशेष भाव-जगत में पहुँचा देती है। यद्यपि सती के सती होने में भी उत्साह उसका स्थायी भाव माना जा सकता है और उसके अनुसार उसका चिता-रोहण भी कर्त्तव्य की वेदि पर एक वीरतापूर्ण कार्य ही है परन्तु यहां सोढ़ी के उत्साह को बरकरार रखते हुए भी कवि ने जो वर्णन किया है वह देवल चारणी के वार्तालापों के मध्य और कुटुम्ब की विलापजन्य स्थिति के मध्य पाठक का हृदय करुणा से आप्लावित कर देता है अतः वीर रस के बाद ही ठीक उसके विपरीत शृंगारमयी करुणा का यह वातावरण पाठक को द्रवीभूत कर देता है और सम्बन्धित पात्रों को एक नये मानवीय आलोक से स्नात कर उन्हें स्मरणीय उज्ज्वलता प्रदान करता है। इससे प्रतीत होता है कि कवि को मानवीय भावनाओं और जीवन की विकट परिस्थितियों में उनके उद्वेलन का बहुत अच्छा अनुभव था इसीलिए परिस्थितियों के अनुकूल वह ऐसी विचित्र रस-योजना का सामंजस्य बिठा सका जिसमें एक प्रकार की नाटकीयता भी देखने को मिलती है और पूरा प्रसंग एक क्रियाशील चित्र की तरह मानस-पटल पर उभर जाता है। इस प्रकार इस काव्य-नायक की मोक्ष-प्राप्ति भी अनन्त यश से मण्डित करने में कवि सफल हुआ है।

पाबू का बचपन लाड प्यार से गुजरा था अतः उन स्थलों पर वात्सल्य रस की सृष्टि हुई है वहां 'झरडा' की गोरखनाथ में अनन्य भक्ति के चित्रण में भक्ति-रस की धारा भी प्रवाहित हुई है। इस प्रकार इस काव्य में प्रसंगानुकूल ढंग से सभी रसों का परिपाक देखने को मिलता है परन्तु वीर रस ही इसका प्रमुख रस है।

'पाबू प्रकास' में वर्णन वैशिष्ट्य

जैसाकि प्रारम्भ में कह आये हैं वह काल एक सामाजिक ऊहापोह व राजनैतिक उथल-पुथल का काल था और उस समय में जहां अनेक राजपूत कुटुम्ब अपना वर्चस्व कायम करने हेतु संघर्षरत थे वहां क्षत्रियोचित गुणों की स्थापना भी नये सिरे से हो रही थी, ऐसे समय में पाबू का उपाख्यान हमारे सामने आता है। अतः इस काव्य में उस समय की राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक अवधारणाओं का चित्रण हुआ है और कवि ने उस काल के वातावरण को जीवन्त रूप में चित्रित करके अपने अनुभव का अच्छा परिचय दिया है। कवि को नाथ सम्प्रदाय की भक्ति-प्रणाली और उसकी क्रियाओं का भी अच्छा ज्ञान था उसका विस्तृत चित्रण उसने यथाप्रसंग किया है, यह उस समय में यहां नाथ सम्प्रदाय के प्रचार और उसके प्रभाव को द्योतित करता है।

भौगोलिक एवं आर्थिक स्थिति का वर्णन

'पाबू प्रकास' में जिन घटनाओं का वर्णन है, ये घटनायें पश्चिमी राजस्थान से सम्बन्धित हैं, विशेषकर मारवाड़ से और इसमें कवि ने यह बताया है कि उस समय में पशु-धन तथा खेती पर समाज की आर्थिक स्थिति अवलम्बित थी इसीलिए चारणी अपनी गायों के प्रति इतनी चिन्तित थी और वास्तव में उस समय गौ - धन ही यहां की विशिष्ट सम्पत्ति थी क्यों कि पशुओं को चराने के लिए यहां बहुत बड़े चरागाह उपलब्ध थे। उधर जिन्दराव भी अपने गाँव में अकाल हो जाने के कारण गायें लेकर ही इस ओर आया था। उस समय में गौ-धन की चोरी भी बहुत होती थी और गायों की रक्षा के लिए कई युद्ध होते थे। मारवाड़ एक निर्जल प्रदेश रहा है परन्तु आबादी की कमी की वजह से यहां पर्याप्त चरागाह उपलब्ध थे इसलिए गायों एवं ऊंटों के टोले रखने का विशेष रिवाज था और यह यहां के समाज की आर्थिक स्थिति का एक आधार भी था। घोड़े-घोड़ियों की बड़ी कद्र थी क्योंकि उस काल में सैन्य - शक्ति का अश्व विशिष्ट अंग थे।

सामाजिक रीति-नीति का वर्णन

उस समय भी यहां का समाज वर्गों के हिसाब से बंटा हुआ था परन्तु वर्ण-व्यवस्था की रूढ़ियों में कई परिवर्तन भी आ गये थे। क्षत्रियों का शूद्र जातियों से भी नजदीक का सम्पर्क यहां के जीवन की एक विशेषता के रूप मे इस काल में प्रकट

हुआ जिसकी वजह से पाबू के चरित्र को एक वैशिष्ट्य प्राप्त हुआ है। राजपूत कुटुम्बों के वैवाहिक सम्बन्ध, पुराने वैर को न भूलने की भावना, विवाह आदि उत्सवों के अवसर पर विशिष्ट साज-सज्जा और प्रदर्शन, आर्थिक सम्पन्नता का सामाजिक मूल्यों में स्थान, नारी सौन्दर्य के प्रति विशिष्ट आकर्षण आदि कुछ ऐसी बातें हैं जिनका विस्तार के साथ चित्रण इस काव्य में हुआ है। इस काल में जो विशिष्ट बात ध्यान देने योग्य है वह यह है कि चारणों और राजपूतों के आपसी सम्बन्ध इस काल में घनिष्ट से घनिष्टतर बनते जा रहे थे और चारण, राजपूतों के जीवन के एक विशिष्ट अंग के रूप में उभरते हुए दिखाई देते हैं उनका चोली-दामन का साथ एक विशिष्ट भाव-भूमि के आधार पर चित्रित हुआ है और पाबू की वचन-बद्धता ने उसे एक ऐसा गौरव प्रदान कर दिया है जो इन जातियों के आपसी सम्बन्धों को भविष्य में भी एक आदर्श पुन्ज की तरह प्रकाशवान करता रहा है और दोनों जातियों के बीच एक पवित्र सम्बन्ध के साथ साथ संघर्ष में उत्साह-वर्धक भूमिका के निर्माण में इन जातियों के योगदान को भी प्रकट करता है। चारणों द्वारा राजपूत वीरों के प्रशस्तिगायन के पीछे इस भावना को समझना बहुत आवश्यक है, क्योंकि इसे समझे बिना समूचे डिंगल साहित्य के मर्म को भी हृदयंगम नहीं किया जा सकता।

युद्ध वर्णन

वैसे तो पूरे ग्रन्थ में पाबू के वीरतापूर्ण क्रिया-कलापों में कई प्रसंग उभर कर सामने आये हैं परन्तु जहां तक युद्ध-वर्णन का प्रश्न है, मुख्य रूप से जिंदराव के साथ हुए पाबू के युद्ध का, कवि ने विस्तृत वर्णन किया है पाबू की सेना जहा भीलों और भाई बान्धवों स सजी है वहां जिंदराव के पास अपने खुद के सैनिकों के अलावा भी खींची कुटुम्बों के कई सदस्य हैं दोनों सेनाओं का युद्ध-वर्णन वैसे तो परम्परागत रूप में ही प्रकट किया गया है परन्तु उससे यह भली-भांति प्रकट होता है कि युद्ध के तौर-तरीकों व अस्त्र-शस्त्रों की अच्छी जानकारी के साथ शस्त्र-संचालन का भी कवि को पूर्ण ज्ञान है इसीलिए उसने धनुष, तलवार और भाले आदि के प्रयोग का बहुत ही सधे हुए ढंग से वर्णन किया है।

युद्ध की भयंकरता में बूड़े का मारा जाना, पाबू और जिन्दराव का आमने सामने होना आदि कुछ ऐसे वर्णन हैं जो पाठक को रोमांचित कर देते है। युद्ध-वर्णन में यह एक बड़ी विशेषता है कि कवि ने पाबू की घोड़ी को बड़ा महत्व दिया है। पाबू की अप्सरा माता उसे छोड़कर बचपन में ही चली जाती है परन्तु उसका मातृ-हृदय उससे अलग नहीं होता। वह कहती है कि वह काळवी घोड़ी के रूप में अवतरित होकर पाबू की रक्षा करेगी। यहां यह उल्लेखनीय है कि राजपूत संस्कृति में घोड़े-घोड़ियों को देव-योनि में माना गया है और घोड़े की पीठ थपथपाते समय उसे

'बापो' कहकर भी संबोधित किया जाता रहा है। अतः अश्व-योनी के साथ यह आदर-भाव का निर्वाह इस काव्य में अपनी चरमता पर पहुँच गया और पाबू की घोड़ी स्वयं उस युद्ध में कितने ही शत्रुओं को अपने पैरों तले रौंद देती है, उसकी दहला देने वाली हिनहिनाहट और विकराल चेष्टाओं से शत्रुओं के कलेजे कांप उठते हैं और जिधर काळवी बढ़ती है उधर ही शत्रु-पक्ष को खण्ड-विखण्ड कर देती है। इस घोड़ी के सहारे युद्ध में पाबू का ओज और वीरत्व भी द्विगुणित हो गया है। युद्ध-वर्णन में धराशायीं होने वाले वीरों का वर्णन है वहां भीलों की वीर गति को भी असाधारण महत्व दिया गया है ऐसा महत्व जो सामान्य तथा वीर काव्यों में साधारण जन को नहीं दिया गया और न ही उनकी इतनी प्रशंसा की गई।

शृंगार वर्णन

प्रसंगानुकूल ढंग से कवि ने शृंगार का भी बड़ा सुन्दर वर्णन किया है। पाबू जब विवाह करने जाता है तो दूल्हे के रूप में जहाँ उसके सौदर्य का बखान कवि ने मुक्त कण्ठ से किया है वहां दुल्हिन सोढी के सौन्दर्य और परम्परांगत शृंगारिक उपकरणों का भी विस्तार से वर्णन किया गया है। सोढा जाति की नारियों का सौंन्दर्य मरुस्थल में विख्यात रहा है अतः कवि ने उस पृष्ठ भूमि में दूल्हे और दुल्हिन का प्रभावकारी वर्णन इस प्रसंग में किया है। इसके अलावा सुकोमल शृंगारिक भावना के वर्णन में भी कवि ने कसर नहीं रखी है और पाबू तथा उसकी सद्य विवाहिता पत्नी सोढी रानी के वार्तालापों में यह भावना अपने सहज रूप में प्रकट हुई है। कवि ने एकाएक विवाह में युद्ध का प्रसंग लाकर उस समय के क्षत्रिय समाज में कर्त्तव्य की वेदि पर प्रेम किस प्रकार अमर हो जाता है, इसकी अच्छी व्यंजना की है।

इन मुख्य वर्णनों के अतिरिक्त उस समय के परिवारों के रहन-सहन महलों की साज-सज्जा, खान-पान आदि का भी अच्छा वर्णन किया है और जिंदराव के वैभव को पाबू से भो बढा-चढा कर बताया है। कवि की दृष्टि उस समय के सामान्य जन और योगियों, साधुओं आदि से भी ओझल नहीं हुई है और यथा - प्रसंग उनका भी वर्णन इस काव्य में आया हे। खास तौर से नाथ योगियों का वर्णन यहां विशेष रूप से उल्लेखनीय है। कवि ने चारणियों का शक्ति रूप में वर्णन भी बड़े उत्कृष्ट रूप में किया है और उनकी मान्यताओं तथा भावनाओं को अपने वर्णनों से साकार रूप देते हुए उस समय के समाज में उनके स्थान की अच्छी व्यजना की है। जो कि मध्यकाल के बहुत कम काव्यों में देखने को मिलती है।

इन वर्णनों को पढने से यह प्रकट होता हैं कि यद्यपि कवि आधुनिक काल में इस ग्रन्थ की रचना कर रहा है फिर भी उसे उस काल की गतिविधियों, मान-मर्यादाओं, भावनाओं और रीति–नीति का बहुत अच्छा ज्ञान है और अपनी कल्पना-शक्ति के बल

पर वह इतने लम्बे समय के अन्तराल को पाटता हुआ उस काल में उपस्थित होकर ही मानो यह सारा वर्णन कर रहा है। कवि की अनुभूति और कल्पना-शक्ति की यह एक बड़ी विशेषता है जिसने पूरे काव्य को सजीवता प्रदान कर दी है।

'पाबू प्रकास' में रूढियों का निर्वाह

महाकाव्यों की संरचना में रूढियों क निर्वाह एक ऐसा महत्वपूर्ण तथ्य है जिसकी ओर आलोचक का ध्यान आकृष्ट हुए बिना नहीं रहता। इसका मुख्य कारण यही है कि समस्त रूढियों से मुक्त होकर महाकाव्य की रचना करना परम्परागत कवियों के बूते की बात नहीं थी और साधारणीकरण की दृष्टि मे वे लोग कुछ रूढियों का निर्वाह करना आवश्यक भी समझते थे। वीररसात्मक काव्य में प्रायः जो भी संघर्ष होता था वह या तो जमीन को लेकर होता था या फिर किसी प्रेम प्रसंग को को लेकर। इसके अलावा शरण में आए हुए व्यक्ति की रक्षा करने के प्रण को लेकर भी बड़े से बड़े युद्ध हुए हैं जिनमें अलाऊद्दीन के साथ लड़ा गया गागरोन का युद्ध एक अद्वितीय उदाहरण है यह बात क्षत्रियों की चरित्रगत विशेषता से सम्बन्ध रखती है और उसमें कवि ने इस काव्य में वचनबद्धता का प्रसग जोड़कर उसके लिए बड़े से बड़ा बलिदान करने की भावना को इस काव्य में व्यञ्जित किया है। यह भावना भी शरणागत रक्षा की तरह ही मूल्यवान है और इसका उदात्त रूप में कवि ने निर्वाह किया है।

वर्णन-वैशिष्ट्य के निर्वाह में भी कवि ने रूढ़ियों का यत्र-तत्र निर्वाह किया है तथा अपनी ओर से उसमें विलक्षणता भी प्रदर्शित की है।

वैर भावना क्षत्रियों के चरित्र की एक विशिष्ट खूबी रही है इसीलिए सूर्यमल्ल ने भी कहा है—

"बारह बरसां बाप रो लहे बैर लंकाल।"।

इस रूढि-निर्वाह के अन्तर्गत ही सोढों और राठौड़ों के पुराने वैर को याद कर बूड़ा की पत्नी पाबू का सोढी के साथ सम्बन्ध ठीक नहीं समझती क्यों कि सोढ़ों और राठौड़ों में कोई पुराना वैर था। इसी प्रकार जिन्दराव से भी इन लोगों का वैर था क्योंकि जिन्दराव के पिता सारंग को इन्होंने मारा था अतः पाबू ने अपनी बहिन का विवाह उससे करने में आपत्ति प्रकट की थी। यद्यपि विवाह-सम्बन्ध होने के बाद वैर ठण्डा पड़ जाता है परन्तु जिन्दराव इस वैर को भूला नहीं था क्यों कि उसके मांगने पर भी दहेज में अपनी काळवी घोड़ी देने से पाबू ने इन्कार कर दिया था। इस वैर-भाव के वशीभूत ही जिन्दराव ने पाबू को मारने की ठान ली थी। राजपूत-संस्कृति में यह वैर-भाव जहां बड़ा विघटनकारी सिद्ध हुआ वहां बड़े से बड़े बलिदान देकर भी अपनी बात को रखने की ललक उनके रक्त में सदा प्रवहमान होती रही।

इनके अतिरिक्त सती प्रथा का भी सांगोपांग वर्णन कवि ने किया है। युद्ध के पश्चात् न केवल पाबू की पत्नी सोढ़ी सती होती है अपितु बूड़ा की पत्नी गेली भी सती हो जाती है और अपना पेट चीर कर अपने बच्चे को पीहर वालों के सुपुर्द कर देती है। उधर जिन्दराव की पत्नी पेमल भी सती होती है, यद्यपि उसी के भेद से जिन्दराव मारा जाता है। यह यहां असाधारण बात लग सकती है परन्तु उस काल में लांछनापूर्ण जीवन जीने के बजाय नारी सती होना ही अधिक पसन्द करती थी और सती–प्रथा एक रूढ़ी के रूप में क्षत्रिय समाज में व्याप्त हो गई थी। अतः उस काल को देखते हुए यह भी एक सामान्य घटना ही थी।

'पाबू प्रकास' की भाषा व शैली

'पाबू प्रकास' एक वर्णन प्रधान महाकाव्य है जिसमें उस काल की सामाजिक व सांस्कृतिक व्यवस्था के दिग्दर्शन के साथ स्थान-स्थान पर युद्ध वर्णन आया है। अतः पूरा काव्य ओजपूर्ण शैली से ओत प्रोत है। परम्परागत डिंगल काव्यों को देखने से पता चलता है कि यह काव्य प्राचीन काव्यों की अपेक्षा प्रसाद गुण युक्त है। यद्यपि इसमें मध्यकालीन संस्कृति के चित्रण को लेकर अनेक विशिष्ट शब्दों का प्रयोग हुआ है परन्तु कुल मिलाकर कवि ने ग्रन्थ को दुरुहता से बचा लिया है। इसकी भाषा प्रवाहमयी और सुसंगठित है वहीं यह ठेट राजस्थानी में लिखा गया ग्रन्थ है जिसमें अरबी फारसी के कुछ शब्दों को छोड़कर अन्य भाषाओं का कोई प्रभाव परिलक्षित नहीं होता। कवि भावानुकूल भाषा का प्रयोग करने में सिद्धहस्त है, साथ ही उसकी भाषा में एक प्रवाह और चित्रोपमता है।

जिंदराव और उसके साथियों द्वारा धांधलों की भूमि पर आतंक फैलाने का वर्णन इस दृष्टि से देखिये :—

नीसांणी

रैत थळी री रात दिन मन में धड़कंदे
कोटड़िया धमका करै चौबिस भड़दे
चरण वछेरा चांचड़ां जिण दीध फड़ंदे
कूक तणा कोळू महां नित ढोल रणंदे
हाजा पीथल हाक हक हथपाह हड़ंदे
बाघण व्याई वेढ में कुण दूर करंदे
अवे खीची ऊससै सब ससतर बंदे
अंखे जनां कोर ओलमा कर मूठ धरंदे
बींभरियोड़ा वाघ जिम सब सरड़ चलंदे ।।

ग्रन्थ में जहां बोलचाल की भाषा का प्रयोग हुआ है वहां ठेट के डिंगल शब्दों का भी प्रयोग देखने में आता है, जैसे- विडंग, डारण, त्रभागो, नरेहण, इकडाणी, रढराण, दुभाल, दात्रड़ियाल, चंचाळ, आदि।

कवि ने काव्य में गति और जीवन्तता लाने के लिए स्थान-स्थान पर वार्तालापों का भी सुन्दर प्रयोग किया है। कवि इस काव्य में वैण सगाई के निर्वाह के प्रति सचेष्ट रहा है और साथ ही अनुप्रास और यमक के प्रयोग से काव्य में लय का चमत्कार पैदा किया है। जैसे:—

धुरजालां धसलतां पुळे पाटले पुलातां।

(पृ०–137)

कवि उपमा, उत्प्रेक्षा और रूपक अलंकारों का प्रयोग करने में भी बड़ा समर्थ है और इस महाकाव्य में अनेक स्थलों पर इनका बहुत ही सफल प्रयोग किया है। वर्णनों में कवि ने भाषा में ध्वनि साम्य ऐसी पटुता के साथ बिठाया है कि जिससे भाषा पर कवि का सहज अधिकार परिलक्षित होता है और इससे भाषा में चित्रोपमता आ गई है। इस प्रकार कवि के वर्णन जीवन्त हो उठे हैं:–

"जिणवार भड़ै हथनाळ भड़ै। पखराळ तुरंग सैलाड़ पड़ै।
भिड़जां पर खाळव फेर भरै। कमठालाय पायक तूंग करैं॥

(पृ० न. 124)

"जिण वार नरां नर भील जुड़ै। पुल धूज बड़ा असवार पड़ै।
हय तोंण वालूचोय डांम हलै। सिरदारांय ऊपर पांण चलै॥

(पृ० नं. 124)

कवि का भाषा पर इतना असाधारण अधिकार है कि कहीं कहीं उसने भाषा के विलक्षण प्रयोग भी किये हैं, जैसे:—

'कोलू अद राजस करे। 'पत धांधल परताप'

इस पंक्ति में 'अद' और 'पत' दो शब्द आए हैं परन्तु वास्तव में ये दोनों शब्द मिलकर ही एक शब्द बनता हैं 'अदपत' जिसका अर्थ होता है राजा या शासक। परन्तु कवि ने इस शब्द को तोड़कर इस विलक्षणता के साथ रक्खा है कि पूरी पंक्ति पढने पर भाषा के चमत्कार की ओर ध्यान गए बिना नहीं रहता।

इसी प्रकार सामाजिक व्यवस्था को सूचित करने वाले विशेष शब्दों का प्रयोग भी कवि ने प्रचुर मात्रा में इस काव्य में किया है जिनका विस्तार के साथ अध्ययन अपेक्षित है और जो उस काल की संस्कृति को गहराई से समझने में सहायक सिद्ध होते हैं। जैसे :—

किरनाळो, धमळकत, प्रोखता, कुळवट, भ्रन, प्रवाड़ा, कुळमण्डण, गोळू आदि। कवि केवल युद्ध वर्णन, शृंगार वर्णन और सामाजिक परिस्थितियों के वर्णन के अनुकूल ही भाषा शैली पर अधिकार रखता हो, ऐसी बात नहीं है। वह जहां गोरखनाथ की विशिष्टता का वर्णन करता है वहां उसके अनुकूल ही भाषा का प्रयोग भी करता है जहां पारिभाषिक शब्दावली विशेष रूप से दृष्टिगोचर होती है।

"खट ऊरमी जीता अंग अदीठा। काळ वतीता थिर काया।
रिछ कंते तांणे कुंमक ठांणै। पूरक आंणै फिर पाया।
काया न कष्टै कांमन इष्टै। संजक चष्टै सील सती।
जमका डर भागै भ्रम नह लागै। जागै गोरखनाथ जती जी।
जागै गौरखनाथ जती। मछली उर जाया जोग कमाया॥ (130)
(पृ. नं. 222)

कवि ने इस काव्य में दोहा, सोरठा, नीसाँणी, मोतीदांम, कवित्त, छप्पय, त्रोटक, त्रिभंगी आदि छन्दों का बहुलता के साथ प्रयोग किया है और कहीं-कहीं संन्दर्भ को उजागर करने हेतु 'बात' का प्रयोग भी दृष्टिगोचर होता है। कुल मिलाकर इस ग्रन्थ की भाषा शैली विषय के अनुकूल और जीवन्तता लिए हुए है। कवि के भाषागत अध्ययन और शब्द चयन की निपुणता इससे प्रमाणित होती है। जहां डिंगल के प्राचीन शब्दों का प्रयोग हुआ है वे भी यथा स्थान अपने सहज रूप में प्रयुक्त हुए हैं तथा अरबी व फारसी के शब्द भी इस ग्रन्थ की भाषा में ऐसे घुल-मिल गये हैं कि वे राजस्थानी के ही जान पड़ते हैं। कवि ने जिस साधना व धैर्य के साथ इस काव्य का सृजन किया है वह इस ग्रन्थ के शैली-सौष्ठव में प्रतिध्वनित होता।

कवि की यह विशेषता रही है कि एक वर्णात्मक काव्य की रचना करते हुए भी इस ग्रन्थ को अनावश्यक वर्णनों से बोझिल नहीं किया है तथा साथ ही वर्णन-विस्तार भी जितना उपयुक्त था उतना ही किया है। प्रायः यह देखा जाता है कि चारण कवियों ने अपने महाकाव्यों में काव्य-नायक के पूर्वजों का विस्तार से वर्णन किया है जो इतिहास का पिष्टपेषण मात्र-सा लगता है। इसके अतिरिक्त राजसी ठाट-बाट के वर्णनों को भी अनावश्यक विस्तार दिया गया है। अपने ज्ञान की छाप छोड़ने

के लिए भी स्थान-स्थान पर उन्होंने ऐसे प्रसंग पैदा किए गये हैं जिनकी वहां अपेक्षा नहीं थी। पांबू कवि का आराध्य देव है और वह एक चमत्कारी पुरुष है फिर भी कवि ने पाबू के अलौकिक चमत्कारों को प्रधानता न देकर व्यवहारिक धरातल पर उसके कार्य-कलापों का वर्णन किया है। तुलसीदास जैसे सधे हुए कवि भी राम की अलौकि शक्ति का वर्णन करने का लोभ सवरण नहीं कर सके और 'रामायण' में अनेक चमत्कारी प्रसग उन्होंने वर्णित किये हैं परन्तु इस कवि ने पाबू को उस समय का एक वास्तविक जन-नायक मानकर उसका पौरुषेय वर्णन ही प्रमुख रूप से किया है। यह कवि की एक विशेषता कही जा सकती है औंर यही विशेषता 'पाबू प्रकास' को डिंगल काव्य की परम्परा में विशिष्ट महत्व प्रदान करने में सहायक सिद्ध होती है।

'पाबू प्रकास' का महत्व

जैसा कि पहले कहा जा चुका है डिंगल काव्य की परम्परा में पाबू प्रकास अपने ढग का निराला काव्य है और उसमें एक महाकाव्य के शास्त्रीय लक्षण विद्यमान हैं। उसकी भाषा शैली भी सधी हुई और भावानुकूल है। चरित्र-चित्रण भी बड़ा सजीव समय-सापेक्ष और प्रभावशाली है। यह काव्य परम्परा से प्रभावित होते हुए भी परम्परा को आगे बढाने वाला है और उन बहुत सी कमियों से रहित है जो कि प्राय: चारण-महाकाव्यों में देखने को मिलती है, क्योंकि कवि ने यह काव्य स्वान्तः सुखाय लिखा है। किसी पुरस्कार अथवा राजकीय सम्मान के लोभ के वशीभूत नहीं!

इस काव्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें कवि ने राजस्थान की सस्कृति का बड़ा ही जीवन्त चित्रण किया है और विशेष तौर से राजपूत संस्कृति की उन विशेषताओं को उजागर किया है जो क्षात्र-धर्म से ओत-प्रोत हैं और जिनमें जीवन का आदर्श ओर आत्मा के उत्थान की चेष्टाएं भी परिलक्षित होती हैं। डिंगल काव्यों में प्राय: राज्य प्राप्ति और जमीन की रक्षा के लिए किए जाने वाले प्राणोत्सर्ग तथा वीरतापूर्ण कार्यकलापों का बहुलता से वर्णन है और वह महाकाव्यों का तो मुख्य आधार-सा रहा है। परन्तु इस काव्य में मुख्य प्रसंग राज्य प्राप्ति के लिए युद्ध का नहीं अपितु वचन-बद्धता के लिए बलिदान और प्राणोत्सर्ग है। समूचे डिंगल काव्य में वचन-बद्धता को प्रकट करने के लिए ऐसा अद्‌भुत काव्य रचा गया हो ऐसी मिशाल देखने में नहीं आती। शरणागत रक्षा के लिए यहां बड़े से बड़े उत्सर्ग हुए हैं परन्तु यहां ऐसे प्रसंग को आधार बनाया गया है जिसमें काव्य-नायक चंवरी में से उठकर अपने वचनों की रक्षा के हेतु बिना एक क्षण का विलम्ब किए प्रस्थान कर जाता है, अतः इस काव्य की कथा का मुख्य प्रसंग अत्यन्त ही मार्मिक है। और फिर पाबू ने अपने वचन मात्र एक चारण जाति की स्त्री को दिए हैं जिनके निर्वाह की उसने इतनी बड़ी चिन्ता की

है। इस प्रकार इस काव्य का आधार एक अद्भुत आदर्श से सम्प्रेरित है और वह यहां की संस्कृति का एक ऐसा ज्वाजल्यमान प्रसंग है जिसकी तुलना भारतीय इतिहास के अन्य वीर-प्रसंगों से करना कठिन है।

कवि ने अपने काव्य-नायक के चरित्र में वीरता के साथ जिस उदारता, सहिष्णुता, प्रजा-वत्सलता और शूद्र जाति के लोगों से गहरा लगाव आदि गुणों की स्थापना की है वे वास्तव में इस काव्य को एक जातीय काव्य बनाने में सक्षम हैं और इन विशेषताओं को साकार रूप देने में कवि ने जिस काव्य-सौष्ठव की सर्जना की है वह वास्तव में इतना जीवन्त और प्रेरणादायी है कि पाठक के हृदय-पटल पर पाबू का चित्र एक लोक-नायक के रूप में उभर कर सामने आता है। ऐसा चरित्र जो बड़े से बड़े विजेताओं, सम्राटों और वीरों से अलग अपनी पहिचान और दीप्ति रखता है। कुल मिलाकर इस काव्य में समाज, संस्कृति, धर्म, नीति का ऐसा जीवन्त और सधा हुआ वर्णन हुआ है जो इस काव्य को एक सफल जातीय काव्य बना देता है।

डिंगल काव्य की सुदीर्घ वीर-रस परम्परा में इस काव्य का अद्वितीय स्थान है जिसके अध्ययन से मुगल कालीन राजस्थान के हृदय की धड़कन को पाठक महसूस कर सकता है। मानव - समाज के उदात्त जीवन–मूल्यों के संरक्षण की दृष्टि से ऐसे काव्यों का हर काल में महत्व बना रहेगा।

यह काव्य कोई पचास वर्ष पहले सन् 1927 में धांधलजी के वंशज केरू ठिकाने के ठाकुर साहिब भूपालसिंहजी के सौजन्य से श्री सुमेर प्रेस, जोधपुर ने छापा था। उस समय प्रकाशन के साधन बड़े सीमित थे अतः ग्रन्थ में अनेक अशुद्धियां भी रह गई फिर भी यह ग्रन्थ बड़ा लोक-प्रिय हुआ और अब इसकी प्रतियां बिल्कुल दुर्लभ हो गई थी। इस काव्य के महत्व को देखते हुए 'म. मान. पुस्तक प्रकाश' से जब इसके प्रकाशन का विचार हुआ तो उसकी प्रकाशित प्रति पुनर्मुद्रण हेतु प्रेस के विद्याप्रेमी संस्थापक श्री सरदारमलजी थानवी ने हमें उपलब्ध कराई, इसके अतिरिक्त एक बुजुर्ग चारण से भी हमें एक निजी प्रति मिलान करने के लिये मिली परन्तु दोनों प्रतियों में कोई खास अन्तर नहीं था। हमने इस ग्रन्थ के प्रकाशन में पूरा प्रयास किया है कि ग्रन्थ शुद्ध रूप में छपे परन्तु इतने बड़े ग्रन्थ में प्रेस की त्रुटियों के अलावा सम्पादन की भूलें सीमित साधनों के कारण रह सकती हैं, खास तौर से ऐसी स्थिति में जब कि पहले वाली मुद्रित प्रति काफी अशुद्ध थी और इसकी हस्तलिखित प्रतियां बड़ी संख्या में उपलब्ध नहीं होती। अतः सुविज्ञ पाठकों से हम इसके लिये क्षमा चाहते हैं। इस ग्रन्थ के प्रूफ संशोधन तथा ग्रन्थसार लिखने में सुमेर प्रेस के भागीदार श्री रामदत्तजी थानवी ने जिस सहृदयता के साथ सहयोग दिया है उसके लिये हम उनके हार्दिक रूप से आभारी हैं।

यह हर्ष का विषय है कि संस्था की ओर से हम राजस्थानी पाठकों को एक ऐसा ग्रन्थ उपलब्ध करा सके जिसके लिये काव्य-प्रेमी लालायित थे और जो राजस्थानी साहित्य की परम्परा और सांस्कृतिक धरोहर को समझने हेतु एक आधारभूत साधन का काम देगा। ऐसे ग्रन्थ-रत्न को प्रकाश में लाने हेतु जो प्रेरणा और प्रोत्साहन महाराजा साहिब श्री गजसिंहजी ने दिया है वह उनके साहित्यक-प्रेम और सांस्कृतिक धरोहर के प्रति गहरी आस्था का प्रतीक है। उनकी इस संस्कार-सम्पन्न सुरुचि के फलस्वरूप हमें आशा है कि संस्था से राजस्थानी के कई दुर्लभ और अप्रकाशित ग्रन्थ समय-समय पर प्रकाशित होकर पाठकों तक पहुंच सकेंगे और इससे राजस्थानी भाषा तथा साहित्य के उत्थान को भी बल मिलेगा।

संस्था की अन्यान्य योजनाओं की तरह प्रकाशन योजना को फलीभूत करने में मेहरानगढ म्यूजियम ट्रस्ट के मैनेजर महाराज प्रह्लादसिंहजी का निरन्तर सहयोग प्राप्त होता रहा है तथा ट्रस्ट के मान्य सदस्य मेजर जसवन्तसिंहजी (सदस्य-राज्यसभा) से हमें उपयोगी सुझावों के साथ प्रोत्साहन मिलता रहा है। अतः इन महानुभावों का हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ।

—नारायणसिंह भाटी

पाबू प्रकास

कोळू ग्राम (मारवाड़) में पाबूजी के प्राचीन देवळ

पाबूजी के मन्दिर का मुख्य द्वार

मंगलाचरण

॥ दोहा ॥

एक रदन बुध सदन अख । अत गुण करण अनंद ।
पाबू जस रूपग पढ़ूं । नमूं पगां शिवनंद ॥ १ ॥

॥ गाथा ॥

कविता आद गुरू कनियांणी । कव मोडो समरे कनियांणी ।
कथ पाबू कैंहबा कनियांणी । करौ हुकम मो पर कनियांणी ॥ २ ॥

॥ कवित छप्पय ॥

पारजीत जोगेन्द्र थयौ गोरख अविनासी ।
पारजीत खट जती नाथ नव सिद्ध चौरासी ।
पारजीत वैराग हुवा चौवीस तिथंकर ।
पारजीत चौवीस पीर मोटा पैगंबर ॥
पार रौ बोध लाधण प्रथम । आपै अकल आधारणी ।
जिण पारजीत आखूं जुगत । सुमत समापै चारणी ॥ ३ ॥

॥ गाथा ॥

उक्ती ध्यान धरचौ उर आई । मन सूं प्रसन बोले महमाई ।
भण तूं सगत तणौ जस भाई । मोनूं हुकम कियौ महमाई ॥ ४ ॥

॥ सम्बोधन ॥

सुण सुत समय सदेवत सूरह । पाबू समर वीर रस पूरह ।
दूजा देव कलू प्रत दूरह । है धांधल हाजर रा हजूरह । ५ ॥
प्रतप्यौ पाल वंस पोरसातन । पह पाबू सीधौ पोरसातन ।
पंड आयौ पाबू पोरसातन । प्रगट्यौ नाम पाल पोरसातन ॥ ६ ॥
ते धांधल आखेट नृभै तण । तिण अपसरा आप परणी तण ।
ते सूं भूतपाल उपज्यौ तण । ते पाबू जप सूं धांधल तण ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

केई गावे नृप कवत कर । कंई गावै करतार ।
गाऊं भालाळौ गुणं । सुणजौ सैह सिरदार ॥ ८ ॥

॥ कवित ॥

अरजण हुतौ अगेह वढण जदुपत विरदायौ ।
निपट अगे ज्वाळनळ पवन बालौ बळ पायौ ।
गोरख हुतौ अगेह गुरू मच्छंदर धारे ।
दहण सेन दांणवी हणु कनै रांम हकारै ।
करण महाबळ करण अगे कुरुपत उच्चरणं ।
अगे पाल राठोड़ बळै मोडो कव वरणे ।
कळ सीस नांम अबचल करण सूरज तेरे साखरौ ।
भालाळ तणौ रूपग भणूं जो बांधव नव लाखरौ ॥ ९ ॥
तन वीरा रस तमक पढण धुन चमतकार पर ।
ओजे अरथाभास पाल दुत दरस तात पर ।
वातप वचन विभाव पोख श्रोता चित पोरस ।
सूरवीर साहंस रैहस पूरण वीरा रस ।
धर वरण छंद प्रणमूं धणी सिद्ध देव आतम सगत ।
कव मोड रूप भाषण करै आवै धांधल राव उत ॥१० ॥

॥ नांमी थांनक ॥

आरत सुणनै आव डांवरै रै खैड़ै सूं ।
पीर अरज सुण पाल आव नैड़ै नेतड़ सूं ।

कमध आव सुण कूक धणारी रा भड़ां सूं ।
कुरछी हूंता कहूं पाल कैरू पाड़ां सूं ।
महि मालम थान मसूरियौ ओथ हूंत खड़ आवजे ।
वेगड़ा पाल गउ वाहरू दम इक जेज म लावजे ॥११ ॥

कोळू मंढ सूं आव बचण सुणनै मो वाळा ।
कारियात सूं कमंध भीर आवै भालाळा ।
वळे मध धांगळवास हूंत आवे सुण हेलो ।
कमंध चढे कालमी आव मो करण उवेळो ।
चाचरै हूंत स्रावल सुणे ग्रहण भीड़ मेटण धणी ।
कालमी चढे ऊपर करण धांधलोत आवौ धणी ॥१२ ॥

॥ दोहा ॥

हरिया माली प्रगट हुय । पिड़ चैहली उतपत्त ।
थापी गोगे थापना । सही जांणै सोजत्त ॥ १३ ॥
भालाळा मैं सांभळी । थूं जायौ जेकत्थ ।
आखर सूधा आंणनै । आखूं ख्यात अरत्थ ॥ १४ ॥

॥ छन्द पद्धरी ॥

दत उतन भोम आघाट दीन । करमाणंद हूवा रीझ कीन ।
सुत आसथांन धांधल सकाज । रवि तेज करै थळ भोम राज ॥१५ ॥
विश्रम किय नव पुर विच विडांण । थित जूनै कोलू राजथांण ।
कमधज विभाग अस भड़ां कीन्ह । लघु भोम भाग नह वंट लीन्ह ॥१६ ॥
रख पिता पाट धूहड़ सुराय । खाग रौ खाटियौ आप खाय ।
नृप रोहड़ हूंता मांगलीन । मेगधर कियौ मीसण नवीन ॥१७ ॥
राखे कनोज पूरब रवेज । तेग धर तपै जैचन्द तेज ।
गिरधरा तणा गढवा सुग्यान । वेगा गल लाया कारवांन ॥१८ ॥
रख आद सनातन व्याज रीत । पूरी नृप आणंद बढी प्रीत ।
कइ दिवस हुवा रहतां कमंद । अदभूत सुणी इक कथ अणंद ॥१९ ॥

गुणि अण मारू दिस पुरब ग्राम । धर सगत द्रव्य अवतार धांम ।
कन्यका तरुण वड़ चमतकार । धर लियौ कठण पण हृदय धार ॥२०॥
जद मांगू तद सर दै जरूर । संजात वरू सो महासूर ।
पण दुतिय वेड सरतर प्रलंब । कर लावै बंदण तोरण कंभ ॥२१॥
सत वीस वरण चारण विख्यात । नर नको आंमना निज सनात ।
काछेलति दक्षिण गमन कीन । नर पूर तास पण परणलीन ॥२२॥
कच गयौ जदन वन कंभ काज । मन अभय एकलौ ड्यांन माज ।
तर चढ्यौ करभ पद बंध तांम । तत प्रगटी भूतावळ तमांम ॥२३॥
हुय धड़धड़ाट धर व्योम हाक । दसही दिस वागी प्रेत डाक ।
दारुण चख लंबा दसण दीठ । उड झड़े जेम कण कण अंगीठ ॥२४॥
केईकरभ महिष अज नर कितेक । अध उरध उठै झालां अनेक ।
हणु दीह हुआ चिर तत अलेख । दरक निज सद्दस सत दरक देख ॥२५॥
किसतूरी मलची मुख कमाल । सोकरी नासका गत संभाल ।
झट तोड़ खंभ चढ चल्यौ जत्र । तब हुआ विसरजन चिरत तत्र ॥२६॥

॥ दोहा ॥

विद्द मांन जो उर वसी । सोभा तणौ समाज ।
हद लोपी बारै हुवौ । किए दरसण कविराज ।
विजनस आसण वांसले । द्रव्य रूप मय दीठ ।
दरसण आणंद नै दियौ । परतक बैठा पीठ ॥ २८ ॥

॥ छन्द वृद्ध नाराच ॥

अही सुबैण मृग नैण दींप नासका भणूं ।
लिलाट चंद बीज बंद तिद्र क्रोध है अणूं ।
धनूष भूंह लाज व्यूह तद्रपि पंकजं मुखं ।
कर विसाल चंप डाळ ग्री कपोत के रुखं ॥ २९ ॥
प्रबाळ उष्ट वैण मिष्ट दंत वज्र के कणं ।
सुरं कलीप कोकला कनंक कुंभ से स्थणं ।

गजंद मुन्ड नाभ कुन्ड पेट पत्र पीपलं ।
नितंब तंब जंघ रंभ केहरी कटी मिलं ॥ ३० ॥

गति करिन्द की प्रभा पदं रिव्यंद ओपमा ।
गुमान मोख इन्द्र विद्र मान जो तिलोतमा ।
पतीव्रता सु पीव के हणंत आध व्याध कूं ।
उदार मेरु सक्ति हेरु जोग के समाध कूं ॥ ३१ ॥

मनो अतीसु ब्रह्मसी अनौप रूप गौर सो ।
महा बली त्रकाळ पै विरंच बोध जोर सो ।
बना गतीज व्योमसी रुसीत हेतु हीन सो ।
सदा गती सचेष्ट है रु ताप है दिनेस सो ॥ ३२ ॥

सरूप दिव्य अंबका सू देह तेज के मई ।
कहूंक बंद मोड कुंज सो दई दुखोज ही ।
कही स ओपमा अनोप धीजिती कविन्द्र की ।
महा सु सूर वीर की जनेत है जतेन्द्र की ॥ ३३ ॥

आणंद वाच

॥ कवित्त ॥

प्रगट व्यास प्रोषता कना अपछर हैतू कह ।
इन्द्रायण कन आप रूप देखे विभ्रम रह ।
धरण आभ धारणी विश्व कारणी बखांणै ।
ऋध सिध नारायणी जगत अंबा मन जांणै ।

पनंगणी कना काय पंखणी । कोण देश हूंता गवण ।
हूं तुझ भेद जांणू नहीं । कह है तूं बाई कवण ॥३४ ॥

अपछरा वाच

॥ दोहा ॥

चाह न थी इण सबद री । मन्द मती सुण गुढ्ढ ।
प्रोढ देख धारण पती । मो मन हुती सु गुढ्ढ ॥ ३५ ॥

इन्द्र लोक री अपछरा । मंजूघोखा नाम ।
देव भाव सब निष्ट कर । कहो दृष्ट धर कांम ॥ ३६ ॥
भयौ श्राप सुर भूप कौ । आतम कदन अनन्त ।
अपछर आणंद रै धकै । वरण्यौ सब व्रतन्त ॥ ३७ ॥
वाग सुनन्दन सूं वुहो । सची बोहत थी साथ ।
चढ बिमांण नभ मग चलत । मैं न रख्यौ इळ माथ ॥ ३८ ॥
देवंसी नर देखियौ । तेज पुंज इण ताळ ।
सक्र प्रसंसा सुणत ही । क्रोध कियो ततकाळ ॥ ३९ ॥
सभा पुरन्दर की सरब । खेद कियौ कर खीझ ।
सुरगण अहः सब छोड़ कै । रही मनुज पर रीझ ॥ ४० ॥
चपल मतो दुरचारणी । चित्त भाव विभचार ।
शीघ्र त्याग कर सुर सभा । कर नर अंगीकार ॥ ४१ ॥
देव लोक रा पांच दिन । लाभ भोग म्रत लोक ।
कांम अरथ अहवा करहु । अष्ट पांच नर अोक ॥ ४२ ॥

। त्रोटक छन्द ॥

यह रीत भई गत ईश्वर की । पर त्याग पुरी की पुरन्दर की ।
अह श्राम विलोमपि माग अह्यौ । रिपुसो दुखदाय अठै न रह्यौ ॥४३ ॥
कल मानव रै अहवास करूं । उण श्रापतैं पार जदी उतरूं ।
सब मुज्झ मनोरथ सार सुण्यौ । भगनी मुख वायक केम भण्यौ ॥४४ ॥

आणंद वाच

मुझ वैण वृथा तुं गणै मतनूं । परणाउं अबैन महीपत नूं ।
कैहजे रवि जैचंद रै कुळ रौ । फिर लाउं अभूप अनै थळ रौ ॥४५ ॥

अपछरा वाच

यह काम सुधार दवै अपणौ । तब पूत तूं साच सगत्त तणौ ।
नभ चंद्रए नीर नक्षत्र न हैं । जड भूचर खेचर जामन है ॥४६ ॥

आणंद वाच

नभ चंद्र रा नीर नक्षत्र न हैं । जड़ भूचर खेचर जामन है ॥४६ ॥
कैहै लाउं अभूप मतौ करही । पुन जोग कठै मिलणौ करणी ।
जगती पर साख भरै जिण रा । कर दधी मं जोराय कुंदण रा ॥४७ ॥

॥ दोहा ॥

तिण दीना कुंदण तणा । मांनव बचन मंजीर ।
बाज हुसी जिण ठां अवस । वह आसूं हूं वीर ॥ ४८ ॥

पुणियौ आणंद नै परी । वीर फेर सुण वात ।
वरण सोह चढतै वरी । सगत जिका साख्यात ॥ ४९ ॥

केइ केइ कळैह करावसी । भूम उतारण भार ।
जिण रै पेट जनम्मसी । आवड़ री अवतार ॥ ५० ॥

ले मंजीर दृढ बचन ले । कोलू गयौ कमंद ।
वरणी अंतहपुर वसै । आणंद सैहत अणंद ॥ ५१ ॥

रहै सगत रणवास में । आणंद पर गहै आप ।
कोलू अध राजस करै । पत धांधल परताप ॥ ५२ ॥

॥ सोरठा ॥

बांधी सहंस बरूध । आणंद री धांधल उचत ।
सगत तणी मन सूध । कमलादे बंदगी करै ॥ ५३ ॥

पलंग सदन पैलेह । तदन ढळै आणंद तणै ।
मांझळ निस में लेह । दे साथे वैह दासियां ॥ ५४ ॥

पघड़ मल परमाण । गढवी सें है मालम गढां ।
कोड़ भड़ा दीवांण । राव हाथ जोड़ै रहै ॥ ५५ ॥

वा कथ विसराईह । वर घर तरुण विनोद में ।
आणंद नै आईह । सुध कैइ दिन वीतां सदन ॥ ५६ ॥

॥ छन्द छपय ॥

प्रथम मार परमार लियौ जूनो लोहां लड़ ।
रहै राव पाकती भड़ां घोड़ां भीड़ोहड़ ।
करमाणंद आणंद कवेस वहण मारू भाषा वट ।
बगस जिको विरदेत ईकडांणी आगा हट ।
कनवज हूता करंड लाग हठ पेथड़ लायौ ।
थप नागांणै थांन पाट पत इय वर पायौ ।
जयचंद हरा तो सिर जपूं रजबंद सब दिन रहूं ।
इण भाकर सूं राजस अगड सौ सौ कोस दिसा चहूं ॥ ५७ ॥

॥ छन्द अनुष्टप ॥

चक्रेस्वरी बलेस्थाने । राटेश्वरी तथा रटे ।
पंखणी सप्त मात्रेण । नागणेची नमस्तुते ॥ ५८ ॥

॥ सोरठा ॥

धूहड़ खेड़ घणीह । धांबल गिर जूनै घणी ।
आये पूर अणीह । भोपत जायल भूपती ॥ ५९ ॥
साहजादां समरूप । भोपत सुत चढती भरण ।
रावजादां रौ रूप । सारंगदे कंवरां सिरै ॥ ६० ॥

॥ छन्द मोतीदाम ॥

कही कथ राव थकै कवराज । सबै कर सम्रथ सोध समाज ।
कियौ अगिया नृप व्याज करूर । चढयौ भड़ मेल उगंतय सूर ॥ ६१ ॥
रजाबंद वंस मही रैहैमांण । दलां थंभ कोड़ भड़ां दइवांण ।
प्रती बज पोड़ तणो पिड़ताल । दियौ हय आगळ दात्रड़ियाळ ॥ ६२ ॥
ग्रहै दिड़कंद तणां कुण गैल । उडावत तुंड थकै अजरेल ।
रट्टकत एक लहौ फर सूर । कटक्कत बाजत डाढ करूर ॥ ६३ ॥

विड़ंगांय लीव वळावळ वाह । वजी पिड़ हाक वराह वराह ।
विचै थट भूंडण चीभड़वाळ । ये दनह तोड़ण कोट डाढाळ ॥६४ ॥
दरांणाय डोर छुटा सिरडार । लगा वग क्रूकर सूकर लार ।
थहै चटकै रटकै कंथ थूल । पमंग उलाळत ज्यां गज पूळ ॥६५ ॥
रह्यौ रुप हेकल पाधर राड़ । उठै अस धांधळ राव उपाड़ ।
भड़ां मुंह थाट विखैरै है भीड़ा । गुड़ावौह एकल सांग धमीड़ा ॥६६ ॥

॥ कवित्त ॥

हणें आप हथवाह । राव वाराहर झालो ।
लै छकड़ां सिर लार । पुळै बाजू दळ पाळौ ।
ओठी हाले अगे । पीठ घूमर पमंगाळो ।
आसथान रौ उतन । साख तेरे उजवाळौ ।
उडतां घांण सूघां अंतर, केसर चौसर कमकमां ।
आवियौ सरोवर ऊपरै, तिम माछी बैहै हमतमां ॥६७ ॥

॥ दोहा ॥

सुरा पांन आमुख सैहैत । करी गोठ तिण ठौड़ ।
रात सरोवर पर रह्यौ । राजंसी राठौड़ ॥ ६८ ॥
कव सिनांन कर धूप कर । अथपत ले एकंत ।
रव मंजीर सुणतां रमण । परी उडी नभ पंत ॥ ६९ ॥
अम्बरां डमरां उड्डतां । मढ विप ग्रेहणां माय ।
पंड झलूस पोसाक कर । अपछर ऊभी आय ॥ ७० ॥

देवंगणा वायक

वसै नहीं देवंगना । महिपत मिनखां माय ।
आवै मन में आप रै । अठै मिळो नित आय ॥ ७१ ॥
अबै रहूं घर आप रै । व्है न जितै जग वात ।
जद घर छोडै जाव सूं । बात बुही विख्यात ॥ ७२ ॥
भेलो रैह ने भुगतणौ । सब विध इन्द्र सराप ।
जाणौ कत हूंरू जिका । आणंद नै कै आप ॥ ७३ ॥

नृप धांधळ नर नाह । परणी तांम अपच्छरा ।
राखण नाम रसाह । केइ सुख उद्‌मादां करै ॥ ७४ ॥

उण सरवर रै ऊपरा । परी रहै नृप पास ।
कोलू नृपत कराविया । ओदी मिस ऐवास ॥ ७५ ॥

॥ कवित्त ॥

दिवस रहै दरबार राव धांधळ रढरांमण ।
नृप अपछर रै नेह तजी कमलादे भांमण ।
ऊगै दिन आवंत धणी मन राखण घण रौ ।
कर ओदी मिस कमंद वैह जावै आथण रौ ।
निस दिवस रहै छकियौ नरिन्द्र अमल दुबारा प्रेम अंध ।
कमलादे हूंत राखै कपट कई दिन यूं गमिया कमंध ॥७६ ॥

॥ सोरठा ॥

भूप अपछर भेलाह । रंग मांणण दोहूं रहा ।
बढ की सुभ वेळाह । नग पाबू सिध नीपियौ ॥ ७७ ॥

अधपत वालौ अंस । पड़ियौ अपछर पेट में ।
तद लछमण अवतंस । रतन कंवर पाबू रह्यौ ॥ ७८ ॥

सुमनां झड छायौह । अमरां मिल आकास में ।
पाल जनम पायौह । सुभ वेला धांधळ सुतन ॥ ७९ ॥

॥ गाहा ॥

कमंधा धर ऊगौ किरणाळौ । भुज लग हथ पाबू भालाळौ ।
वेगड धमळ कंध बळ वाळौ । वाखांणू धांधल राव वाळौ ॥८० ॥

॥ कवित्त ॥

आखे के आखेट कमध जावै निस करवा ।
केइ कहै सिध कनै जोग संथा उर धरवा ।
पुणै केक प्रोखता कमंध परणी धन कारण ।
जिण सारू निस जाय धणी कोलू रंग धारण ।

जगजीत परी माणै जिकौ जांणै न को जिहांन में ।
रणवास महैल सूना रहै आप रहै उद्यान में ।।८१ ।।

॥ दोहा ॥

कमलादे वायक कै है । दाखौ सच दरबार ।
मिस करनै जावौ मती । सूरां तणी सिकार ॥ ८२ ॥
हूं आखू साची हमें । तिण में भूठ न तार ।
सूर नही है सरबथा । नृपत उठै काय नार ॥ ८३ ॥

धांधल वायक

मिळै जठै सिध मंडळी । नाद पूर नव नाथ ।
उण कज जाऊं एकलौ । रांणी हूं अध रात ॥ ८४ ॥
भिड़जां परटा परभ गम । भंगमां तंबू भाल ।
उण प्रताप राजम अगड । वडकां थळां विचार ॥ ८५ ॥
वन उण में जौगी वसै । रहै सिधां रौ राज ।
तिण दीनौ जूनै तणौ । रिधु मनै घरराज ॥ ८६ ॥

॥ कव वचन ॥

कमधज जीण कराबियौ । अधरैणी रै ऊठ ।
छांनै हय चढ चालियौ । पिलंग तजी धण पूठ ॥ ८७ ॥
निज चख खोल निहाल । नृपत पिलंग दीठौ नहीं ।
तुरंग चढे तिण ताल । वांसे कमलादे वुही ॥ ८८ ॥
आई सांमी अपछरा । धण पूठे धाईह ।
पुणिया आणंद नै परी । वायक कड़वाईह ॥ ८९ ॥

परी वायक

आखी आपांणीह । सह कथ चिरतां तणी ।
राज तणी राणीह । वांसै खड़ आई वहै ॥ ९० ॥
गढपत कीन्हो गूंज । कमलादे रांणी कनै ।
तिण कज पूठै तूज । आ आवी धण आपरी ॥ ९१ ॥

प्रीतम पाबू नेह । राजंद जतनां राखजो ।
तज जासूं तो नेह । नर पुर फिर मिळसूं नहीं ॥ ९२ ॥
जणणी नह जायौह । इण जोड़े दूजो अवन ।
ओ मो उर आयोह । जिण नै सैल म जांणजो ॥ ९३ ॥
पीतम म्हारो पूत । वरदायक घर वाजसी ।
सिध नर कंवर सपूत । पाबू घर पूजीजसी ॥ ९४ ॥
नव लख लोवडियाळ रै । अन मझ हतो न वीर ।
इण कज पाबू ऊपनो । धांधळ सुतन सधीर ॥ ९५ ॥
पवंग धकै नख पाळनै । कर धांधळ पर कोप ।
तत खिण पीतम नै तजै । अपछर हुई अलोप ॥ ९६ ॥
चपला गत चूंबीह । परी गई अपछर परै ।
आय आगल ऊभीह । कमलादे नर वे कियां ॥ ९७ ॥

राव धांधल वायक

पापण जा पालीह । हव तो मारघां स्या हुवै ।
आंन करी आछीह । पाबू नै कुण पाळीसी ॥ ९८ ॥
ऐडा वांस ह्वै अकल । तिरिया तणी तमांम ।
कारण इण जग में कहै । नव खण्ड बेगम नांम ॥ ९९ ॥

कमलादे वायक

राखो सोच म राज । तार जितो बालक तणो ।
मो वाळो उर मांज । पोख करूं मोटो परो ॥१००॥

कव वायक

ले ऊंडलियां पालनै । भूप तणो तप भाळ ।
विडंग चढे वीखाविया । कोलू दिस ततकाल ॥१०१॥
अध रत रा आयाह । कमलादे धांधळ कमंद ।
वाजा वजवायाह । पुत्रोछव परभात रा ॥१०२॥
दे धांधळ नृप दांन । मन भायो धन मांगणां ।
वेवो हरष विदान । कमलादे जायो कंवर ॥१०३॥

वरदायक वालीह । अपछर रै उर ऊपनो ।
पाबू पौथालीह ; वरष जितौ दिन में वदै ॥१०४॥
बारौ सम्वत पेख ; निसचै वरष निनांणओ ।
पाबू जनम संपेष । मासोतम फागुण मुकर ॥१०५॥
फालगुणी उतरा फजर । पाबू नाम प्रमाण ।
किन्या रास जरूर कथ । जत मानव गुण जांण ॥१०६॥
जबर भुजा डण्ड जूंभमल । रंग है करण रढरांण ।
पख ऊजल नरपाल में । पिण्ड पोरस अप्रमांण ॥१०७॥
रजवट अंगली नां रहै । धर खाबड़ री ढाल ।
वरदायक कुलवट वहै । पौरष छकियौ पाल ॥१०८॥
चण्ड मुण्ड से धारणी । आ लोवड़ियालीह ।
आणन्द रै घर ऊपनी । देवल डाढालीह ॥१०९॥
जिण दिन पाबू जनमियौ । भालाळो कुल मांण ।
उण दिन देवल अवतरी । आणंद रै घर आंण ॥११०॥

॥ कवित ॥

देवल पाबू दखां वंश दीपक वरदाई ।
वेहुं भाई बैन रमे चौवटै सदाई ।
जोड़ हुंत घोड़ियां दौड़ आथण री आई ।
बेहूं बाळक बचै देव अम्बा दीठाई ।
मैल सात में झाल बांह ओथसां वधारी ।
गहै बाळ लिय गोद लखै कंमलादे सारी ।
वदारी बांह देखे बहू घट रांणी संभ्रमै घणौ ।
सांप्रत उणही पुळ सगत रौ जांण लियौ देवत पणौ ॥१११॥

॥ दोहा ॥

देवळ सूं थम दाख नै । हली सगत वेहद्द ।
आधा सादां आवसूं ; तू समरेसी तद्द ॥११२॥
वतका जग जाहर हुई । सांप्रत आसुर आय ।
तनुजा खांमद नै तज । मीळी देवगत माय ॥११३॥

॥ कवित्त ॥

आद १ जसो धन आख दाख दूजौ२ यणवल नर ।
वीरतवन्त ३ सिद्धरावत ४ करसी घण ।
रख नारायण ५ हूदै सांडसीह धण जुध खावज ।
विकरम ७ करम ८ वखांण करन ९ सारण मोटा कज ।
गैंवर पछाड़ गोविंद १० गजो११ मंडलीक१२ भड़ हाकहम१३तणा ।
आफरीवाद वूढा अनुज तेरेहि भटियांणी तणा ॥११४॥
पह वूढौ पाटवी १४ दाख नीबौं १५ बाहड़दे १६ ।
धुरकाजल१७ रिणधमल१८ आल१९ऊदळ२० आखवए ।
वीरभांण २१ वडवरै धियां सोनस १ पेमल २ धन ।
पीथल २२ सोम २३ प्रमाण मुदे पाबूजी २३ पणमन ।
दख वीर बड़ा मेकादसा वागां खग अणियांवनां ।
पुण मातुल गोहिल मालपत ऐ कमलादे ऊाना ॥११५॥

॥ दोहा ॥

आसथांन वाळौ उतन । नवखण्ड जाहर नांम ।
धजवड़ इत कोलू धणी : धांधळ ग्यौ सुरधांम ॥११६॥
विण धांधळ खारी विषम । कोलू रै रैवास ।
गिर री धरती नै गयौ । आणद हुए उदास ॥११७॥
आद ख्यात सूधा अरथ । ले मत यंछया लेप ।
कव मोडे वरणन कियौ । उतपत रौ आखेप ॥११८॥

इति श्री पालपोरसातन आसिया मोडजी कृत उतपत रो समौ संपूरण

अथ गोल रौ समौ

॥ दोहा ॥

जस लेवण जगजीत । आथमियौ धांधळ अवन ।
ऊगौ थळ आदीत । बूड़ौ नृप दन बार में ॥ १ ॥
बूड़ै नै बैसाणियौ । पत धांधळ रे पाट ।
तपै देस खाबड़ तणौ । झलै न को खाग झाट ॥ २ ॥

यत धांधळ री पाग । टीकायत बांधी तरां ।
राईतन रंग राग । वरणांणौ पाछौ बळे ॥ ३ ॥
देस तणां बुडै दियौ । भुजांपाल भर भार ।
हालै हव जिण रै हुकम । चौवीसें सिरदार ॥ ४ ॥

॥ कवित्त ॥

धणार एक धारणा १ पार परमोद अपंपर ।
सात वाच २ संजमी ३ वांहनकरै ४ भागल पर ।
माताजीत मनजीत ५ सेवगी रौ पख सांचौं ६ ।
सुणै हाक सात्रवां षाल न देवे पग पाछौ७ ।
नडर ८ सधर ९ नरलीभ १० वैर जूना उधरावै ११ ।
पारथियां १२ सिधपाल छतैं नाकार न १३ लावैं ।
विकल मन हुवै नह समर बस परदुख कापण अडग पण१४ ।
न करै अध्रम १५ जुध कळह नड़ कहियां नर वाहण १६ करण ॥ ५ ॥
दोम काचा न दे १७ पाल मग वै १८ परियां रै ।
धाळै छूटा उतन विखैं सरणायत ज्यांरै ।
ही छतां दलां हरोळ १९ पाल वांका पधौरण २० ।
प्रपत मृखै २१ अलीण रहै नर कपट २२ नरेहण ।
राजसी पणै मोद न २३ रखै खाट खाय निज खाग री २४ ।
पल करैं प्रवाड़ा रवि उदय २५ सदा हांमस भाग़ री २६ ॥ ६ ॥
काछ पाक निकलंक जती पर न नार जोवै २७ ।
जोह अहल नह जाय २८ कलह नह जीव लुकौवै ।
वजे गजर जिण वखत अंग आजो नहि आंणें २९ ।
करणी रहणी कमंद ३० पाल जोग मत ३१ प्रेमांणें ।
चारणां वरण संकट सुणै लाख वात अंजळ न लै ।
कमध यळ सीस राखण कथां धणां खळां खपरां घलै ॥ ७ ॥
रूपनाथ रौ हुकम ३२ रखें सबही दन धृ पर ।
भावी समरथ कांम वणैं जद गणैं सरोधर ३३ ।
सुणिया चारण सबद ३४ मिळै ऊठें कुळ मंडण ।

हैंक माड हिंदवाण ३५ पाल मेचांण वहै डण ।
सुरभियां ग्रहण श्रवणै सुणें दुरस ३६ छुडावण दाखड़ी ।
सिध मरद पाल धांधळ सुतना, ऐ खटतीसां आखड़ी ॥ ८ ॥

॥ छन्द त्रोटक ॥

धक धूणिय माल मिमाड धरा । पत आयत खींवरा आंन परा ।
कळचाळ वधे लहठी करड़ा । भड़कै घन देत गढां भरड़ा ॥ ९ ॥
गिर छोड़ वलै धर खूंद घणी । अडपात वार विखेर अणी ।
घरघाड़ मिमाढ वगाड धरैं । केई मारग पाड़ विगाड़ करैं ॥१० ॥
वड तंग खळों मगरा वळिया । नर नायक पायक नीकळिया ।
रखसी सुत धांधळ वंतरती । सपने मभ आंण कयौं सगती ॥११ ॥
लखपीट कमाल वळद्ध लदैं । महिषां सगटां पर भार मुदैं ।
कई काटळ पँरण भूड़ कड़ा । कमठाळ किया अम्बुवा कपड़ा ॥१२ ॥
मुदवी नरपाल प्रतै मिळिया । श्रवणै सैहैं वायक सांभळिया ।
कदनी रुजगार वसीकरणैं । सुत धांधळ राख लिया सरणैं ॥१३ ॥

॥ दोहा ॥

सैहल गिणैं समराथ नैं । वडा कांम वणियांह ।
रही नहीं जुध रोडियां । ऐ धारां अणियांह ॥ १४ ॥
दे धर सस्तर पुरण दे । दे अन वस्त्र दुजाळ ।
रजवट पारख राखिया । पारधियां नैं पाळ ॥ १५ ॥

॥ छन्द वेताल ॥

पडधरा पूर देसि अगल । ध्रवी नह गण धार ।
दख तिण कज खड़ दो खड़ै । आवियौ राव उदार ॥ १६ ॥
सुरभियां महखी सांढियां । आवे न भूअमिरात ।
सैहै लोक लारे साळुळै । नरनाह जायल नाथ ॥ १७ ॥
धर थळी धीरा धूंधळां । खड़ तणा जाया खूर ।
सह साथ कोलू सीम में । संक्रम्या ऊगों सूर ॥ १८ ॥

रन मांझ गाडा राखिया । भरिया ते जाजे भार ।
महिपती सारंग मेलियो । आगले एक असवार ॥ १९ ॥
कहजै थूं बूड़ा कमंध ने । जे हात हूंत जवार ।
गोळू धरा नागोर रा । संग लाविया सिरदार ॥ २० ॥
आप री आजो आण नें । आविया म्हे वेहै एथ ।
एकंथ भोम बताय दो । जिम गोळ बांधाँ जेथ ॥ २१ ॥
वचन सुण राव वजीर रा । परचण्ड तेज हचौ पाल ।
सत्रवां साल दुभाळ समहर । धरा खावड़ ढाल ॥ २२ ॥
वरियांम चांदौ वीसळौं । भड़ लगै खळां भयांन ।
असमराँ जोर उठायलै । अणियां परै असमांन ॥ २३ ॥

कव वायक

धन नृपत धांधल रो धरम । दिन दिन वदै तप दीह ।
सत सूर हुकमी सगत रौ । आवियौ पाल अबीह ॥ २४ ॥

बूड़ै वायक

थित थंभ थळवट राय नें । कैहै तेड़ियौ इण काज ।
धनवाळ ले जायल घणी । आवियौ सारंग आज ॥ २५ ॥
किरणाळ चौविस कोटड़ी । सब चलत तुज्झ सलाह ।
चहुवांण लायौ देम सैहैं । निज हव रखां कें नाह ॥ २६ ॥
बोलियौ नवलख सगत बंधव । कणण पाळ कंठीर ।
ऐ अपत आद अनाद रा । वसुधा न रक्खां वीर ॥ २७ ॥
दादो ज सारंग देव रो । पत खोर पंजर पीड़ ।
मजराद तद प्रथिराज मैहलां । करी जिण रित कीड़ ॥ २८ ॥
इयां रहां सुधरैं आंपणी । वहसे ज सूह विणास ।
इसड़ाई पिहूं अलखांमणा । परगे है इसी सह पास ॥ २९ ॥
अै थया जाडा आदमी । गत कुटल जींद अमीर ।
ये सर सू नैसार मुसकल । वर्णसी सुण वीर ॥ ३० ॥

बूड़ वायक

कथ पाल तैं सांची कही । वरदेत भूठ न बात ।
ग्राया समै रा मारिया । ए करैं सूं कव उतपात ॥ ३१ ॥

वेगडैं पाल कहियौं भले । सिध मरद परियां सोज ।
चहुँग्रांण ग्रायां सदन में । कालै करी कन्नौंज ॥ ३२ ॥

वड विवैं फिर समवादिया । ऐ ग्राती ग्रमीणी ग्रास ।
रटक धन धर नह् राखसां । थासै जदी उपहास ॥ ३३ ॥

भूईहल थळ नी भीम ना । तैं कीध साथ तयार ।
वसुधा तूं पड़त बतावजे । ग्रण साथ जा ग्रसवार ॥ ३४ ॥

कोळू तणै कणवारियै । देवड़ बत्तायी बोल ।
डेरै में चौड़ै सगट । हढ गौलूयां दीठी गोळ ॥ ३५ ॥

चढ जाय बूड़ौ चंचळां । मन रख सगापण मेळ ।
दारुग्रां ग्रमलां दोपटां । खीचियां कमधां खेळ ॥ ३६ ॥

ग्रखिट भेळा रमै ग्रधपत्त । जोख सूं दिन जाय ।
गायणी जांघड़ गावतां । इण रीत गोखां ग्राय ॥ ३७ ॥

ऐवास कुंजा ऊतरै । मदभर मण्डे मघवांण ।
रणवास भेळी रांणियां । दरगाय मभ दइवांण ॥ ३८ ॥

नृप सनढ कोळूनाथ रै । संग वंटै सारी रात ।
गुणिग्रणां भूलर गावतां । पीवतां मद परभात ॥ ३९ ॥

ममवार छाकां लेत मद । निछरावळां सिर नाय ।
केफांण नै डकावतौ । जींघरौ ढांणै जाय ॥ ४० ॥

रहै साथ नारायण हृदै । वस निकट वीरतवन्त ।
घण हेत सूं गोविंद गजौं । उर होय हरक ग्रनन्त ॥ ४१ ॥

वाघेल हूंता वैण कैहै । पाल दे मूंछां पांण ।
इण हेत फळ पाकै जिकै । भाळजै तूं चन्द्रभांण ॥ ४२ ॥

एक वरस लग वड रयौ ग्रालण । नृप वूहो मग नीत ।
मन खंच दूजे वरस लग । ग्रत लगौ करण ग्रनीत ॥ ४३ ॥

॥ दोहा ॥

हळियां हळ संजोड़िया । गळियौ ग्रीखम गाढ ।
आळसुंआं उद्दम कियौ । आयौ घुर आषाढ ॥ ४४ ॥
तद सारै थळवट तणौ । कीनी लोक पुकार ।
औ घर दाबण आवियौ । जायल रौ सिरदार ॥ ४५ ॥
वरस दोय रेतां हुआ । जो घर अजे न जात ।
अवस हुवेला आपरै । यां हूंतां उतपात ॥ ४६ ॥
काढै सांचा कूट नैं । घोड़ां आगळ घात ।
चरण न देवैं सीम में । म्हारी तौ मीरात ॥ ४७ ॥
जाव नह केवां जकां । मांनैं नह तिलमात ।
गायां सांढां घोड़ियां । रुळा चरै दिन रात ॥ ४८ ॥
महिपत बूड़ै मेलियो । वरजण कज असवार ।
कूक लोक जादा करै । हमें म्हे खादी हार ॥ ४९ ॥
धांर धरी सुरपत धरण । सारै हुवो सुगाळ ।
उतन पधारौ आपरै । काढ लिया दोय काळ ॥ ५० ॥
आवै वैह वैह नै अजे । लंगर लागा लोक ।
जकां दाब लीनी जमी । रन थन सारा रोक ॥ ५१ ॥
आंण वसी नागोर री । पटी सरब पासीह ।
आय गई जायल तणी । सारी चौरासीह ॥ ५२ ॥

ऐ समाचार कणवारिये सारंगदेजी नें कया जद पाछो सारंगदेजी कैवै है ।

॥ कवित्त ॥

म्हे ओठी मेलियौ जोवण नागोर धरती ।
यते म पालौ आय सुरभिआं मुज चरती ।
रहिया जतरा मास जता दन हमैं न रैवां ।
खमिया जिम हीज खमौ केम आखत कर कैवां ।
खड़ मेह धणौ म्हांरी धरा जासां गढ जायल जठै ।
आप मत वो ऊतावळा अबै नहीं रैसां अठै ॥५३ ॥

॥ दोहा ॥

पाछै आय प्रधांन । कमधज नैं कहिया कथन ।
जिदै कह्या जबान । पख हेक में जासां परा ॥ ५४ ॥

॥ नीसांणी ॥

गोळ घलांणा बेड़ में अनियाव करंदे ।
वाट चहूंदस सांहरा । धरवाड़ धरंदे ।
धरा छुड़ावण धांधळां मन कीन मरंदे ।
हय वड़ दोय हजार सूं जिंदराव हलंदे ।
डारण तेड़ वेलदार भुरका लंदे ।
रोठ घतीजै रोठ में चाळा चंगअदे ।
रैत थळी री रात दिन मन पें धड़कंदे ।
कोटड़ियां ध्रमका करै चौवीस भड़ंदे ।
चरण बछेड़ा चांचड़ां जिण दीध फड़ंदे ।
कूक तणा कौलू महां नित ढोल रणंदे ।
हाफा पीथळ हाकहक हथपाह हड़ंदे ।
वाघण व्याई वेढ में कुण दूर करंदे ।
आवै खीची ऊससे सब सस्तर बंदे ।
अखे जनां कोई ओळभा कर मूठ धरंदे ।
वीभिरियोड़ा वाघ जिम सब सोहड़ चलंदे ।
ढोल घुरंदे ढांणियां, कख कूक करंदे ।
त्रवनां डाकां कड तणां नह पीयण दयंदे ।
ऊगै दिन कोलू अवन धमचक मच्च दे ।
जखम घले केई झोळियां डीलियां ऊठंदे ।
नीबौ बाहडदे देव नर नित वाहर चढ़ंदे ।
खेत भीळंतां देख कर राठोड़ लड़ंदे ।
वड़ वड़ वीच भड़ांन विचे दास्तांन झड़ंदे ।
सिरदे दार मदार सिर हक खेड़ हुवंदे ।
संक न मानै जींदरौ नह रैढ खसंदे ।

धूणै सर कोळू घणो पछताव करंदे ।
वचन न मांन्या वीर रा हव हाथ घसंदे ।
देख जुलम जिंदराव का नित पाल हसंदे ।
एक निसांणी ऊमदा कव मोह कहंदे ॥ ५५ ॥

॥ दोहा ॥

करमांणंद हूता कहै । बूड़ौ नृप जिण वार ।
पालौ हिव जायल पती । तुरत वजी तरवार ॥ ५६ ॥
धांधळ नृप दाबी धरा ! जका छुडावै जींद ।
कैहजो सारंगदेव ने । कळैह वणी ताकीद ॥ ५७ ॥
वाझां हव चढतां वही । कांनां ताती तोखार ।
सेल श्रोथ तेगां समस । बिलकुल खांपां वार ॥ ५८ ॥
विष्टालू श्राया वहे । जींद कने खब जांण ।
कहिया बूड़ै रा कथन । बकियौ जायल रांण ॥ ५९ ॥
धूणै खग जायल धणी । दैण सत्रां कुळ देळ ।
करड़ा वायक काढिया । जींदे नृप श्रजरेल ॥ ६० ॥

विष्टालू पाछा श्राय जींदराव कह्या जिके वचन बूड़ेजी थकै जाहर करै है ।

॥ छन्द नाराच ॥

करै रखी न भोम का । श्रनाद श्राद सूं कणी ।
धरा परत्त तोज सा । श्रनेक हो गया धणी ।
मही प्रमार री थिरू । हूतो धुराद मंड सूं ।
श्ररोग भोम भूप श्राय । हो जकौ श्रफंद सूं ।
विसास घात गोहलां । निपात डाभियां बुरी ।
करै कमंध चूक जोम । भोम श्राप री करी ॥ ६१ ॥
वीडांण बीच ढांण दे । ऊजाड़ सूं बिगाड़ सूं ।
चालाय दूं हिमायती । खगांन धार चाडसूं ।
हजार डोढ श्रादमी । चढै सवार हाजरी ।
विधूंसदै जरायतां । रखै न काण राजरी ॥ ६२ ॥

डरूं न मीच भीच सूं । वदाय दूं सदावती ।
हलै न ग्रांन कोय । जींदराव वैं हिमायती ।
करै विगाड़ घोड़ियां । मनू न कूक यूं कढी ।
धणी हैसाब जींदराव । खाग जोर सूं कढी ॥ ६३ ॥

छतीस वंस मोक नें । दये न त्रंभ दांम नै ।
ठहै न बात ग्रा ग्रठै । खड़ौ तुरंग ठांभ नै ।
मनी न वात जींदराव । जो बुलाय मात नै ।
धकाय कोह ठाह नै । दबाय धांधळौत नें ॥ ६४ ॥

बूड़ै वायक

ग्रबैं करौंज वाकबीं हगीगतूं ग्रबेल नैं ।
प्रचंड जूंझ मल्ल नै बुलाय वीर पाल नैं ।
रखैन भोम दाबलै कहौ वाघेल रांग नैं ।
भुजाल ग्रम्बुग्राल फेर भीच चन्द्रभांग नैं ॥ ६५ ॥

सलेस जो भड़ां हमें तमांम साख साख रा ।
पमंग ग्रोधवाळ जंग चाल सोस पाख रा ।
दुरील गोज जींदराव भीम दाब दोलियां ।
धडीज धांधळौत रै दुवार बंट गोळियां ॥ ६६ ॥

तुरंग पीठ ग्राविया ग्रभंग भीव ताकड़ा ।
हणूं कण्ठीर भीम द्रोण पाथ वाग हाकड़ा ।
रमंत जोम सांवळा भ्रमन्त भूल रातड़ा ।
भराय नैं कसाय कण्ठ पीठ सोर भातड़ा ॥ ६७ ॥

खळांडळां ग्ररी करै जिके हंगाम खेल रौ ।
दहन्त कोम भेल ले सवार ग्राज ढेल रौ ॥ ६८ ॥

॥ कवित्त ॥

भालां ग्ररिणयां भळक जागी ग्रागळ जांमकियां ।
सिंह रूप सांवळां कसी पलवट में रखियां ।
भू तारण भिड़ियां पूरजे ग्रीधरण पक्खां ।

नहां भीड़ नायका दीध टण्कार धनैखां ।
ग्रभागौ कियां चढियौ तुरी रज थळवट रौ रूप रै ।
हथ भ्रात पाल भेळी हुवो ग्रावै फळसै ऊपरै ॥६६ ॥
पुणै राव सूं पाल मतां चढजावौ माथै ।
ऐ वैहै जासी ग्राज भार गाडां सिर घाते ।
रुकौ बाच रावळौ ग्रवस परभाते ग्रावत ।
ग्राप बिनांहूं उठै वहै परबारौ जावत ।
सैर तणी सीम में कहूं खेतर काळां रा ।
चरण लगा धांन में विडंग जायल वाळां रा ।
ले माल ग्रनैं ढांणां लगै डारण खग हथ दौड़ियां ।
ग्रन्त रूप सांढ घोड़ै सैहत बढी पिषंतर घोड़ियां ॥७० ॥

॥ दोहा ॥

चांदे ढबा समर री । जबर दिखाई झाट ।
राव तणा गोळू रह्या । वुहा लोक घरवाट ॥ ७१ ॥

बूड़ै वायक

राव करे मन रीस ग्रखै इम पाबू ग्रागे ।
जींदो कुसलें जाय जदे लख लानत लागै ।
मो ऊभां माहरी धरा खग जोर धकावै ।
बोले मोटो बोल वळै मन में गरबावै ।
न जाय कुशल जायल नरिंद ग्रह विगाड़ कीनौं घणौं ।
रण जींद तथा सारंग रखूं तद सागे धांधळ तणौं ॥७२ ॥

॥ दोहा ॥

पाल छांड़ जाय पागड़ौं राख कोट सम रात ।
संतरां पारधिया सैंहत चांदौ ढेंमौ साथ ॥ ७३ ॥
ग्राया सरणै ग्रा१णै ग्राप हूंत ढिब्र ग्राद ।
जो खीची कीनी बुरी वीरम कीजै वाद ॥ ७४ ॥

बूड़ै वायक पाबू सूं

॥ कवित्त ॥

मो चढियां री खबर जाय पूगी जायलियां ।
वां सजियां मोरचा ढोल जंगी धायलियां ।
उतरस हुवे जदे जींदौं यम जांणौं ।
राठौवड़ डरचौ वढण आप रा खखाणौं ।
पाल नह जाऊं ढांणौ परे कर सिकार आसूं कह्यौ ।
सब साथ रावळै संक्रम्यां रावत कोळ मंझ रह्यौ ॥७५ ॥

॥ दोहा ॥

बूड़ै वायक पाराधियां सूं

पैलां री दाबण प्रथी रखिया पाबू राव ।
थां ऊभा पाराधियां धर ली जींद धकाय ॥ ७६ ॥

पाराधी वायक

हुवो आप वाळौ हुकम । काढां खीची कूट ।
गायौं सांढ्यां घोड़ियां । लेसां सारा लूंट ॥ ७७ ॥

दुरस वतावां जींद नै । जबर भुजां री झाट ।
धर ऊपर ढोळां धणी । महियां भरिया माट ॥ ७८ ॥

तिरियां भूखण तोड़ सौं । जोखे जुवा जुवाह ।
गजब उठादां गोळ रा । धौळै दिवस धुवांह ॥ ७९ ॥

डार करांला देखिया । पीता सरवर पाल ।
ऐ नर पाछा आविया । टूंकी सूं ततकाळ ॥ ८० ॥

चेवह वांटी चेभड़ा । एकल दात्रड़ियाळ ।
कांनां सुण बूड़ै कमंद । चटकाया चंचाळ ॥ ८१ ॥

॥ सोरठा ॥

आवै उडतोड़ोह । एकल होफरतौ उठी ।
ग्रह साबल घोड़ोह । दाकल कर नृप हाकियो ॥ ८२ ॥

तुरंग जोर भालै तणी । हुई राव हथवाह ।
ग्रस पूठो उलटावतां । छड़ बारै फल मांह ॥ ८३ ॥
थे कीयौ घायल थको । जिणमौ जुवो जुवोह ।
डाढाळो पसरां दपै । धूंधा फेर हुवोह ॥ ८४ ॥
तिण पुळ में घोड़ां तणौ । जोय घुमर जाडोह ।
करचाळौ सारंग कंवर । ग्रायौ फिर ग्राडोह ॥ ८५ ॥
बूड़ै नृप रा बोलिया । सोहड़ वचन सकाज ।
परठी जो सूवर परै । ग्रवस वर्णै ला ग्राज ॥ ८६ ॥
धांनक कर धूंकार । पाराधी ग्राया पुळै ।
बुहो हको जिण वार । पिड़ धुबिया दोहु नरपती ॥ ८७ ॥

बूढै वायक

कहूं वाह थूं मत करे । सजियो म्है ग्रौ सूर ।
वाह हुवां सूं विगड़ सी । जींदा ग्राज जरूर ॥ ८८ ॥

॥ छन्द नाराच ॥

बन्दूक घोर उडे सोर भांण धूंधलौ रह्यौ ।
वाराह ऊठ खेंग पूठ भूपती ऊभौ ग्रह्यौ ।
भई न वाह रोक राह चाह चेत में रही ।
करोड़ प्रांण द्वार ढांण भांण मण्डली ग्रही ॥ ८९ ॥

॥ दोहा ॥

ग्रतरै सारंग ग्रावियौ । किया पयन्दा कोट ।
साट पड़ावण सूर री । गोठ करण मन मोट ॥ ९० ॥

॥ कवित्त ॥

यतै नृपत ग्राविया । विडंग सैंफलै वैहन्ता ।
वर वरता वर देत । वहै मग पेड़ दहन्ता ।
ग्रठी जींद ग्रजरैल । ग्रठी बूड़ौ ग्रड़पायत ।
प्रथमी मोटैं पळै ग्रणां । सत्रवां दळ घायत ।

है उभै ढाल हिंदवांण री घण थट लीना घूमरा ।
वरदायक दोनूं ते विजै भूप उभै सिंह भूम रा ॥६१ ॥

बूड़ै वायक

॥ दोहा ॥

क्यूं सारंग थारौ कंवर । महि अण भांत मरेह ।
बीबूं सांग उलाळ री । पळकै कूंत परेह ॥ ६२ ॥
यळ सारी यम ऊचरै । कमसल औघ कदीम ।
म्हां ऊभां इज म्हांहरी । सारंग दाबै सीम ॥ ६३ ॥

सारंगदे वायक

बूढा मत बोलेह । बेमुख से मुंह दुरवचन ।
तू मो पर तौलेह । आवध जोर उबां बरै ॥ ६४ ॥
बूड़ौ ऊसस बोलियौ । असमर करग उठाय ।
तूं किण कज लेवं त्रिपट । हणियौ मैं वाराह ॥ ६५ ॥

सारंग वायक

गढां वढां नौबत धरै । मोद धरे मत रोक ।
यण बारै सिब ऊपरै । मैहलां रै मंडलीक ॥ ६६ ॥

॥ कवित्त छपै ॥

बूडौ सारंग वेहू अखै वायक अरड़ीगा ।
छोड कसा ढालरा पालरा आवै पूगा ।
साहै मांणक छटा कंवर ताजी आताळै ।
आवै ढांणां अगे वग्गफिर सांमी वाळे ।

जींदराव वायक

तूं बूड़ा नृप थळवट तणां । छै किण विध कैहैं मो समी ।
रत पौड़ां सूं दाबी रहे । जबर भड़ां घोडी जमी ॥६७ ॥

॥ दोहा ॥

आगे बळती आग । भालाळौ सुण भटकियौ ।
खीची ऊपर खाग । तद तोली धांधळ तणैं ॥ ६८ ॥

विण पुळ लगो न वेर । वाग संभातां विडंग री ।
सारंग पर समसेर । तद तोली धांधल तणौ ॥ ९९ ॥
महिपत धिक मोटेह । असमर बूड़ै आछटो ।
नरपत धर लोटेह । सारंग सर पड़ियौ समर ॥१०० ॥

। कवित्त ॥

धूकारव धांनकां रीठ वजियौ पिड़ टंकां ।
घोर सोर उड गजर वगो धम गजर बंदूकां ।
वहै धिरत वाहळा माट फूटै महियां रा ।
करै रैत त्रिय कूक लाज भूखण लहयां रा ।
लाखां धन गाडा लूंटिया यळ पर कथ राखी अमर ।
गज ग्रैहण जींद भाजे गयौ सजियौ सारंग नै समर ॥१०१ ॥

॥ दोहा ॥

म्हाटौ तज जींदौ नरिंद । पड़तल आपांणीह ।
लड़ पारधियां लूंटियौ । धौळै दिन ढांणीह ॥१०२ ॥
ते प्रधान बुड़ा तणौ । प्रसण विभाड़ै पूग ।
पड़ियौ सारंग साथ पिंड । तेगां झडजे तूंग ॥१०३ ॥
काळा भंवरा कमंद रा । दौळी फिरिया दौड़ ।
खारा लागै खीचियां । भीलां रा भालोड़ ॥१०४ ॥
बोले आज बन्दूक । डौढी सूर ढांणै दसा ।
अड़ियौ जाय अचूक । सारंग सूं बूड़ौ समर ॥१०५ ॥
डारण नर दुरवार । बीज़ा भड़ चढ़िया भुरज ।
ले पारधियां लार । पाबू हव खड़िया पमंग ॥१०६ ॥

॥ नीसांणी ॥

अतरे पाबू आविया कीधा धमसांणा ।
पायक थट पाराधियां लीधा आंपांणा ।
बंसली डोढी बाजती हय अगर हलांणा ।
दहल पड़ै ज्यां देख नै राणा सुरतांणा ।
घोड़ां कीधां घूमरां रज उरस ढकांणा ।

पाछो वळियौ राव पह धन लूंटे दांणा ।
मिळियौ पाबू मारग मझ तड ऊंचीतांणा ।
गायां भेंस्यां घोड़ियां जे लूंट लिरांणा ।
वित सैंहै पाबू वीर रै निजरां गुजरांणा ।
सारंग खागां साझियौ ऐ कत्थ सुणांणा ।
पाल कह्यो तुम पाटवी बड़ जुलम करांणा ।
दुनियां सब यम दाखसी अनियाव करांणा ॥१०७॥

॥ दोहा ॥

मराड़े पत मूरखां । काळो बदन करेह ।
लूंटावै धन लाख रौ । जींदो गयो घरेह ॥१०८॥
अजरायल रहियौ उठै । सारंग धारां सींध ।
कई घायल लारै करे । जायल पूगौ जींद ॥१०९॥
रहियौ सारंग देव रण । सुत उर सोक सरूह ।
दरसण जींदा नें दियौ । गोरखनाथ गरूह ॥११०॥
राव सदा जावै रयण । साकबरी सूं थांन ।
मिळियौ जो रिख माग में । गोरख मागर आंन ॥१११॥
मिळियौ सुत माछन्द्र रौ । वळियौ वखत वळंत ।
आज लियौ पड़तां पगां । गळियौ ऊम गळन्त ॥११२॥
प्रगट अला पंथ पावरौ । भूपत रख जे भाव ।
जींदा तो घर जनम सी । गेहो गींदण राव ॥११३॥
लखं लांनत लागेह । किम जीवूं जींदो कहे ।
अम पित मो आगेह । मो देखत मारीजियौ ॥११४॥
सिख कीन्हो माछन्द्र सुत । जायलपत नूं जाय ।
घाव लगै न तुज्ज घट । पीठ फरै नह काय ॥११५॥
वैर सवायो वाळ सी । सुण सिख सनैं सनेह ।
रण तो हाथां रेव सी । बूड़ो पाल विनेह ॥११६॥
रण सारंग विसरांमियौ । नह बूड़ौ नमियोह ।
गोल तणो कहियौ गुणी । सम्पूरण समियोह ॥११७॥

इति श्री पाल पोरसातन आसिया मोडजी कृत गोल रौ समो सम्पूर्ण ॥

अथ विनोद रौ समौ

॥ गीत ॥

खीची राव सत्रू खंगाळण । गाढो जोर दळां वळ घालण ।
जायल नृप असंगां उर झालण। श्रौ सारंग सुत वंस उजालण ॥ १ ॥
वरदाई पाबू वंसोधर । श्रौ वड पह विभै जींद वंसोधर ।
वैर वराह विनै वंसोधर । वड़सी जुद्ध विनै वंसोधर ॥ २ ॥

॥ छन्द त्रोटक ॥

जुड़वा रण पाबुअ जींद जुआ । हट लाग सगा अम नेह हुआ ।
तण सारंग जायल सीस तपै । पित धांधल पाट बुड़ौ प्रतपै ॥ ३ ॥
भिड़जां भड़ पारख साल भरै । करवा जुध वींदल मेलि करै ।
भर रौस जिदै धिक वैण भणै । गहै राख खळां तिलमात गिणै ॥ ४ ॥
कळचाळ भड़ां अस मेल करै । वरियांम किसौ ज पिता विसरै ।

जींदराव वायक

मणधार नलें नह आप मणी । तइयां घर आंटौय बाप तणौ ॥ ५ ॥
दमणां दळ हूं परि हंस दयूं । लघु खेत पिता चोय वैर लयूं ।

कव वायक

सुपहां दर चंचल वाळ सरू । घट व्यापक गोरखनाथ गरू ॥ ६ ॥
तुड़तांण जिसौ चउवांण तपै । कर वेढ सिमाड में वास कपै ।
धर खाबड़ बूड़ौय राज धरै । कर ठाल पाबू धकचाल करै ॥ ७ ॥

सीमाड़ा वायक

पहचां नह पोरस तुज्ज पणा । तुह सांमत धांधळ सीह तणा ।
जग जेठिय पाल वहांळ जपै । तिण ताल उभै किरणाळ तपै ॥ ८ ॥
पित धांधल पूत बिनैं पड़दै । दुरजावत नींबोय बाहड़दे ।
सिध धांधल श्रेस खलां सलही । अल सूरण रींभळ ऊधलही ॥ ९ ॥
वरदायक वींरव देवण रा । कम श्रोज उजागर कैवण रा ।
सत्रुश्रों कुळ कादण काल सही । मदमांनत कांन कुबज्ज मही ॥१० ॥

हर सीधीय साथ परी हल नै। रखियौ सपनं निस देवळ नैं।
धर खाबड़ पाळ भलाळधणी। जिण री सुर वारण हूं जणणी ॥११॥
विध जोग विजोग हुवो वर सूं। सुत मूक चली तिण वासर सूं।
कैहैं नां रखियौ उर मोद करैं। पह पाल रमाडुंय पीठ परैं ॥१२॥
घट तेज अनौंपम वेग घणूं। विण कारज तुज्झ विडंग वणूं।
रखसूं कर मोद घणी रळियां। उगनूं असमांन री ऊंडळियां ॥१३॥
तुज खेत हृदैंबळ साल तणां। वहसे अस दौड़ सवार वणां।
रज सूं नर वंदण रेवति यूं। हूय खेंगण धूप उखेंवति यूं ॥१४॥
धर मूक न ढील करौ धम री। भड़ पाल तनूं समपै भमरी।
सगतो तुम मात अमां सुमना। वत मोह न दीजोय पाल विना ॥१५॥
प्रगटी घर देवळ रै पर ही। अवतार तुरंग अपच्छर ही।
कछ वागड खंड हलार करा। धुर मूंकिय नीलि नागोर धरा ॥१६॥
गउवां थट बाल घलै गढवा। पुळ आगम पाल थली पढबा।
धिप खेडहुं नांह हलीधर रा। गढवी धन बाल अमैं गिर रा ॥१७॥
उसरांण थई धरगी उण री। नव सोरठ पूपत नां घण री।
कछ देसाय आपण दुःख कियौ। दत पाल मथांणांय गोल दियौ ॥१८॥
पह आवत जोण मही पर रा। कव रूप वखांणत केसर रा।
अहफीण गळै नित मोद अवं। चवरै चढ आवत पाल सिधं ॥१९॥
मिसटांण गरी चटकां मिळियां। गळियां पर साकर री डळियां।
विसरां मडकां थड दीह बडां। गजपाथ है वेछर माड गढां ॥२०॥

॥ दोहा ॥

क्रोड़ जुगां राजस करो। प्रथमी बूड़ो पाल।
भूप उभै भूलावियां। सरवैंया सुपखाल ॥२१॥

॥ कवित्त ॥

दई राव नै ढेल जींद नै दो गंगाजळ।
गडवण राखी गोप कमद पाबू कज काजळ।

बंधी तिमर बूहरै सदा पीवजो चूनड ।
सिद रैवंत सुभ सैहज विडंग नह और जकण वड ।
नायकां साथ लीनां नरिंद मोर तुरंग चढ मोट मन ।
विडंग कज पाल आयौ वहै चौड़ै धांधल रौ सुतन ॥२२ ॥

॥ छन्द त्रोटक सुजपाल ॥

सुजपाल विडंग वखांण सुणै । मुरजाळ जुहार सिलाम भणै ।
अरजी सुण देवल मांन अनै । वगसीस करौ अस बांधव नै ॥२३ ॥
वरदायक ताजण कोड वणें । जिण खैंगण मोल अमां न जुड़ै ।
समपे मुज बन्धव जांण सही । लख मौलिय केसर मोल नहीं ॥२४ ॥

कव वायक

कलमी अस देवल दैण कीयूं । लोवड़ी प्रतपाल यूं वैण लियूं ।

देवल वायक

विचि त्रायल लूंटत चार वला । रन मांझल म्हे धन बाल रुळा ॥२५ ॥
जग खोसिय कोलिय मीर जता । सिर बंध सराहिय राठ छता ।
जोहियां वाअली साय लूंट जणी । धनवाल अभै रन नांह धणी ॥२६ ॥

कव वचन

कर सूं हूं ऊपर पाल कियौ । दुतियां रखवालण वैण दियौ ।

श्री मुख सूं

तब कीं दरसावत वात तुमै । यण वंस तणा रचपाल अमै ॥२७ ॥
गणजे मत दांमण चोल गनौ । मुझ बन्धव सांचिय भाव मनौ ।
विवनौ घर जीवत रूप मुणै । चारणां कुळ संकट पाल सुणै ॥२८ ॥
गढवाडांय जीवत कौण गजै । व्रनपाल गवां धवपाल वजै ।
जग मांझ अमां घट प्रांण जितै । इहम वित हेरण कोण यतै ॥२९ ॥
सपतास विडंग तणै समरी । वांहरै सुंय बाहर ली भंवरी ।

पाबू वायक

नह खैग यैसी घर सीस नरां । किरतार वणाविय आप करां ॥३०॥
सिर राखण देवल दीध सुणां । तुरगांण वचौ खगराज तणां ।

पमंगा यसि प्रथीमाद परै । गाय छैल दिनां कुण रींझ करै ॥३१ ॥
सत्रवां चख नीच हियै सल री । दत खँग दियोंड़िय देवल री ।
हय देखत पाल घणूं हुलसै । वरदायक लै सगती वखसै ॥३२ ॥
ग्रहणां मढ केसर रूप घणो । तन भीड़ब साज वणाव तणो ।
कंध थापल देवल रींझ करै । पग दे चढ पाल रकेब परै ॥३३ ॥

॥ सोरठा ॥

भुजां खत्रवट भार । सिघ खत्री धांधल सुतन ।
भाई का सूं भार । भूरा तो जोतां भिड़ज ॥३४ ॥
मन सुध हुय मोनूंह । तैं दीधी केसर तुरंग ।
बान्धव बाई नूंह । सीलवणी कद सील सूं ॥३५ ॥
तैं देवल अणदां तणी । भूल त्रसूलां भल्ल ।
पाबू नै दी काळवी । गढां उबारण गल्ल ॥३६॥

॥ छन्द श्रोटक ॥

धुणियाळ धकै चड खेंग धणी । असमांन लगा चड़ियाल अणी ।
सुरभी थल मांझ नचीत चरौं । खितपाल थयौ रखवाळ खरो ॥३७ ॥
कहदे घर आगम केसर रौ । संचकार उणै दिन सूं सिर रौ ।
लख आंणिय केसर खेंग लखी । धांधळां खिचियां फिर वैर धुकी ॥३८ ॥
प्रतपै नृप बूडोय पाट पतं । थिर कोलुअ पाल प्रधांन थितं ।
खित मारग खँग अलग खड़ै । प्रसणां पर पाल अचिंत पड़ै ॥३९ ॥
कोटड़ो धरघाट दबी कुड में । दीपत राजस खावड़ में ।
थित बंगय काचरणै थल में । यह पाल प्रमांणत पूंगल में ॥४० ॥
सतवी सत सोहड साथ समैं । रण आंगण धांधळ पूत रमै ।
मझ माड अनैं खड आल मई । ठरहै धर जंगळ हाक ठई ॥४१ ॥
धर धूजत धांधळ पुत धकै । धप धोलिय सिध तणीं धमकै ।
चजटां नल सीस खळां टकरं । भय मांनत है सिखरं मखरं ॥४२ ॥
कांपली गढ धौल वढार कपं । रिख राड विराजण धाड़ रुपं ।
अग सीस उपाडिय पाल जडा । कछ कपंद डूंगर झाले अडा ॥४३ ॥

किथै संतर भोम प्रचो करडी । बल आंगम सांक मनै बरड़ी ।
दायणां घर धांधळ चाल दखै । इभड़ा सबंनी धर सैंक अखै ॥४४ ॥
जसभाल तणा पुगर जपै । प्रस धीस अढारै इया थरपै ।
भड़ लूंटीय हैदर मीर मणी । तिय सिंध वखांणु अ खांन तणी ॥४५ ॥
कमठाल हटाल डलां कलता । वह लावैय पीठ वसै वळता ।
कल अजर गूडर माग किया । लक्ष झारोय डूंगर ठेक लिया ॥४६ ॥
पड़ सादर जागर सीस पड़े । सवियांण तणै गिर हींड चडै ।
हुय वाकव ते जयचन्द हरा । धुब्र अंग लोयाग्रह रींझ धरा ॥४७ ॥
बड़ माड़ पहाड़ कमाड़ वगौ । लखते तव सायत नाल नगौ ।
वसतं रसतं सब चीज वरं । यह राजत है एहलांण पुरं ॥४८ ॥
सांवलां सेहै राजव भोम सही । मिणिया गिर लूंट सुजेर मही ।
घर आंणिय सांढ्यां टोळ घणौ । तिण लंगेय सायर सिंध तणो ॥४९ ॥
किलमां मोहरों अरदास कही । सायेरे वाथांणी सूं रींझ रही ।
समपै एक चारण बंध सकौ । धर धूजत धांधल पूत धकौ ॥५० ॥
मेवास वडा व्रत है मिळिया । कळहै डरपे सह कांठलिया ।
जग जेठिय जोध फरै जतरा । हीय तूलमतूल हकूंमत रा ॥५१ ॥

देवल रे भतीज री जांन मलहणपुर पाटण रातरा उतरिबा बाग में तठारा

॥ दोहा ॥

अधरत री उतपात । बावळ कांठळ सूं बणी ।
वळखे वदन वरात । आंण दाग मझ ऊतरी ॥ ५२ ॥
कहियो मालीकार । ऊतरवा न देवां अठै ।
वातां कली वधार । वागवान गढवां वुवौ ॥ ५३ ॥
फजर वखत फिरिंद । कीन्ह जाय मिरजा कनै ।
सुण इक तरफा साद । रोके गढवा राखिया ॥ ५४ ॥
पड़ती रैण पुकार । देवल पाबू सूं दखी ।
तद चड़ वड़ तोखार । पह फाटी बढियार पर ॥ ५५ ॥

वड़ वड़ भीच वकार । खेंगा चढ कर खाटखड़ ।
आछट जोध तंवार । आछट धांधल राव उत ॥ ५६ ॥

॥ कवित्त ॥

पड़ती रजनी पाल रखी थळवट उपरांटी ।
जाम अरध जावतां क्रमण नइयड़ री कोठी ।
गढपत्त तीजी घड़ी गयौ गांमणें गिरवर ।
जांम निसा जावतां धरा पूगो राडधर ।
क्रमण कांपली कोट पांचमीं घटका पूगो ।
धरणीधर दे घोख अरध निस चंदौ ऊगो ।
बंढियार वाड भाल वळै क्रमण पौर तीजी कियौ ।
दुत गैण उदे सिंदूरियौ लाग वाग पाटण लियौ ॥५७ ॥

॥ दोहा ॥

नरहां रांमत नींच । असली न खोसे अकस ।
वळतौ पाटण वीच । पाबू मिरजो पकड़ियो ॥ ५८ ॥
रंणबंको राठोड़ आह । सुणौ देवल तणी ।
मिरजा खांन मरोड़ । गह लायो गढ गूंजवै ॥ ५९ ॥
जळ पूगे आडेर । जम ढल बृंदा चल ढाल ।
ज्यांरे पूगै बीज । जिम पाटण पूगी पाल ॥ ६० ॥

॥ कवित्त ॥

उतरंग नागदरी करी कमधज धारांकर ।
लाख वार लूणका अरी ढाहा तर उत्तर ।
जळ प्रजळ जोजरी क्रमी केसर वेला कुळ ।
जूंसरिया जव रेल साथ सतवीसां सांवळ ।
भादरा मज्य भोगावती अवन सौनमद्रा उठी ।
आथमण रसा साखी अरक हय धोया धांधल हठी ॥६१ ॥

॥ दोहा ॥

वांछीजै आका वगत । पाल धकै पिसताव ।

देबराज भाटी दखां । सोलंकी सिधराव ॥ ६२ ॥
तवूं नृपत ऊदल तखत । ग्रलहणपुर ग्राथांण ।
नव टूंको राजै नहर । कुंडळ गिर कमठांण ॥ ६३ ॥
विजेराज समहर बढे । धड़ छकिया खगढेर ।
कनी कूतर परमार । कुळ चूंडाळे समसेर ॥ ६४ ॥
निभ ग्राधी रा नीकलै । थळवट ग्रहियो थांन ।
गादीमालक गेलड़ा । पैह गूंगा परधांन ॥ ६५ ॥

देवल वायक

॥ सोरठा ॥

वेहल गिर वाळाह । थळ में की दायौ थयो ।
छत्रपत रा साळाह । भालाळा इण विध भणै ॥ ६६ ॥
रजपूतां रैह लाह । धर दाबी भाला धकै ।
गढवां नै गैहलाह । तवै एम उदै तणा ॥ ६७ ॥
ग्रांसूं ग्रावै ग्रांख । सालभ कू खत्री सबद ।
नरदप दीना नांख । ग्वाळा कूटै गेडियां ॥ ६८ ॥
कोळू सूं इक कोस । देछू सूं उत्तर दिसा ।
भूरे कोट भरोस । कोट गोळ गैहलां कियो ॥ ६९ ॥
दंखे वरदाईह । तै लाई केसर तुरंग ।
वाभी रा भाईह । कुबचन बाई ने कहै ॥ ७० ॥

॥ कवित्त छपै ॥

देवल चख जळ देख पाल खग भाल पयंपै ।
गढपत जूंनै गयो सुता ऊदळ कळ चंपै ।
चांदे घोड़ी सीस कस कमर संज करायौ ।
तेग भूसटाहियौ यतै ठाहियौ वेह ग्रायौ ।
गैहलां बाळी गाल पाल विण भड़ पाबू रा ।
ग्ररक उदे ग्राविया ग्रंग टूंकस ग्राबू रा ।

कलायों सीस हथनाळ कर दळ पंखारां दे रया ।
तड बंद बेल गढां तणी गूंगौ गैहलां घेरिया ॥७१ ॥

नायक पूगा नेह तोड़ कूबा वढ ताटा ।
गाडा दिया गुड़ाय मही घृत भरिया माटा ।
पड़तल पिलंग पिलांण तोड़ भूखण तिरियां रा ।
आठ टूंक अरटियां छेक भयखी छुरियां रा ।
हुव चाह द्राह नरनाह हुव लता पंखाळे ले रया ।
महप रे सोग री माळियां बांदर रींछ विखे रया ॥७२ ॥

॥ सोरठो ॥

व्रत रो दिन वळियोह । गळियो गैहली रै घुमर ।
मोटो कव मिळियोह । आणंद पाबू आय नै ॥ ७३ ॥

सरणायां साधार । वरदायक तौं विप विरद ।
वे भूठो इण वार । सुत ऊदळ साधारियां ॥ ७४ ॥

राजा मांणक राव रौ । राजै सैंभर राज ।
लखपत कोडी जिण नगर । करे वाणवट काज ॥ ७५ ॥

॥ कवित्त छप्पय ॥

सुध नांमी चैतरी आय हरमल कळ आपी ।
सिध दाता दिन समभ पाल मढ रैवण थापी ।
पमंगां हुवा पिलांण भूप बूड़ा चढ भेळो ।
बण चांदे वागेल ठई संग सारो ठेलो ।
वहै ढेल वीटियां जगै जांमकियां ढोया ।
दरकासर दीवड़ा ओर भाथड़ां संजोया ।
किय ढालो पूनागर कने आय खबर यण रैवियां ।
सुरै तुरंग असी ऊठां सैहत है बोलावौ खीचियां ॥७६ ॥

पमंगां चाढ पगड़ा वात त्रैधड़ा विचारी ।
आगे तूट आंपणै वैर सारंग बडारी ।

हासी होवणहार वेह लिखियो जिम ह्वै से ।
इग अपार धन देख कहो डर जावां कैसे ।
कर गाळ अमल मनवार कर बेलीवा पुकारिया ।
रिम दळ वडाळ संका रहत ते वंका तरवारिया ॥७७ ॥
अलग राख आरोह तसां कपड़ा वेतोड़ा ।
खर हुंड नासा खांच रजक प्याले अण रोड़ा ।
क्रमी क्रमाळ कतार अठी आधी निस ऊपर ।
बोलाऊ वींटियां धुरज चौवड़ कन धूपर ।
काळी घटा अटोप कर धुर असाढ धड़ूकियां ।
कळ धवत दगी इकवार कन उडै नड़ैउ अड़ूकियां ॥७८ ॥

॥ दोहा ॥

जोध समर बौह जूंझियौ । ऊफणतौ आपांण ।
बहियो रिण बालो उवां । वाज खेत निरवांण ॥ ७९ ॥
न्हाटा तद खीची निलज । घायल भड़ घोड़ाह ।
पुळतां निसमें पळकिया । तारा जिम तोड़ाह ॥ ८० ॥
धाड़तां लीना धकै । असरफियां रा ऊंट ।
कोलू गढ आया कमध । लै कोड़ां धन लूट ॥ ८१ ॥

॥ छन्द त्रोटक ॥

जग में राव रांणवदे जब ही । सलतांणेइ जांण लियो सब ही ।
कमलायत माय विचार कियूं । तिह पूछ उभो सुत तेड़वियूं ॥८२ ॥

माजी कमलादेजी वायक बूड़ै पाबू सूं

सम सोध सगा घर मींढ सही । हव सोनल पेमल दीह हुई ।

बूड़ाजी वायक

सुभणै यम बूड़ोय वैण सुणै । पत पेमल जींदोय मीढ पुणै ॥८३ ॥
जग जोवण कासूंअ खांप जुई । देवड़ा नृप देसूंअ बैन दुई ।

पाबू वायक

किम देवत पेमल जींद कथा । हरिणयां पिड सारंग राव हथां ।

बूड़ै वायक

कथ बांधव पाबुग्र सांच कही । सजियौ मह सारंग खेत सही ।
परणावय वाढांय वैर परां । गढ राव बुलावय जींद घरां ॥८४ ॥
सुत सारंग सांभ्रथ वात सहू । दखजै सिर गोरख हाथ दहू ।

॥ दोहा ॥

लखपत काले लूटियौ । सजियौ पित संग्राम ।
जीं सूं सगपरा जोड़ियां । ग्रासी की ग्रारांम ॥ ८५ ॥
गैरी सूं दोय गैर । करां ग्राप हूंता करी ।
बोलावै रौ बैर । बाप बैर हूंतां बहुत ॥ ८६ ॥

कमलादे वायक

प्रगळौ बळ ग्रोपत पूर पटै । लख मौलिय जायल नेस लटै ।
कोळू घर राखण दाव कियो । दिल देख समै यह घाव दियौ ॥८७ ॥

पाल वचन

गढ कोलुग्र ग्रासंग कोरा घतै । जराणी सुत ऊभोय पाल जते ।
रज रीत भुजां खगं क्रीत रहै । कुरा मांय ग्रमां धर मींढ कहै ॥८८ ॥
मन तोल ग्रमां बळ वैरा मणूं । हट लागै न ग्राथरा पैल हणूं ।
तरसै मुझ ईढ धुखै तड़ सूं । जिरानां कुळ खोद कढूं जड़ सूं ॥८९ ॥
जगती पुड़ ग्रौर न काय जगा । सत्रुग्रां कुळ थापोय केम सगा ।
कैहै केवत ग्राद संसार कलै । बुलवै घर प्रीतम ग्रांख बळै ॥९० ॥
दुरगारिय सोग न पाल दखै । भख ग्रौ जोगणी दन मांझ भखै ॥
दसरणां घर पूगत मैल द्रुवो । हटतै दन पाबूग्र केम हुवौ ॥९१ ॥
वर टीकोए पेमल मीढ वहू । घर वैठांहि मारण धाड़ घडूं ।
मवगो जिंद राव दिनां में मरै । कछ देसांए खेचल केम करै ॥९२ ॥

चढसि रिप बंचक चारणियां । अर भूखैय भालैय री अणियां ।
अखवूं दिनता गल जींद अगे । लख लांनत धांधल पूत लगै ॥९३ ॥

अर बंचक धेनांय आय लियां । जोगणी भख लेसिय जायलियां ।
भड़ पाल तणौ तन पांण भलां । कुण रेस दई दुख काछियलां ॥९४ ॥

जुद वेध हुसी घर राह जुदी । मनवो गल खीचिय नै मत दी ।
भण पाल सुणौ सह मात भुवा । हव बूड़ोय पाबुअ दोय हुवा ।९५ ॥

॥ कवित्त ॥

मुणै वैण खग तोल सेस उठ्यौ रोसाजळ ।
करंमाणंद परधांन आय दाढी हाथोगल ।
ऊसस कर आछटे वीर पायको वकारै ।
साथ लियां सांवलां पाल गूंजवै पधारै ।
सीमाड़ थयो अवनाड़ सिध अध मगे ऊंधां चला ।
कळेचाळ वीर खाडूकियां सिह अग्राजे सांवला ॥९६ ॥

॥ दोहा ॥

कोळू रौ ऊभौ कियौ । कमधज पाबू काथ ।
आयौ चाड़े गूंजवै । सह भालां के साथ ॥ ९७ ॥

तूटी बूडै सूं तरां । हेतारथ री हील ।
कोळू सोमा कदमई । भूप भरैं नह भील ॥ ९८ ॥

॥ नीसांणी ॥

गढी बलाणी गूंजवै मंड भुरजां माळा ।
ओप चहूं दिस आठिया जंजाळ भड़ाळा ।
नग छोटा जुधवी मवण वड पल्ले वाळा ।
माप सुं रखिया मोरचा तीर बंद विचाळा ।
सांमत वसिया सांवला चहुं तरफ सिगाळा ।
वजड़ां हाथ आंनी तणा वरियाम वडळा ।
चांदे ढेवे सारखा भुज आभ भळाळा ।

वसिया मैंणा लोधिया भीलां भूरजाळा ।
भोम विगाड़ू भोमिया आया अरसाळा ।
पीहर पाल विखायता धर ठांभण वाळा ।
जिक विगाड़ूं जगतारा रजपूत रंदाळा ।
वसिया दोय हजार घर केह सह कंठाळा ।
गांम मथांणा गोलिया दोथ गढवां वाळा ।
धणीं जकांरा धांधलोत पाबु रखवाळा ।
दस दस लूटण देस नैं जावै कमठाळा ।
आवै पूगे वाहरु सीमाल विचाळा ।
जवर वजै जद धमजगर नम सेस फणाळा ।
कमध चढै ऊपर करणा पाबू पौंछाळा ।
बचै नहीं कोय वाहरु दैखाड़ विचाळा ।
धूखणं मचियौ धरण में कुण मेटण वाळा ।
जाहर सारै जगत में अजरेल भाळाळा ।
मेवासी बांका मरद थळ भोम विचाळा ।
चांदे डेमे सारखा जबरेल ढालाळा ।
मेवासे डूंगर महीं सोहड़ कळचाळा ।
नम कुण मणले नागरी नर हाथ बालाळा ।
कुण जीतै बजरंग नै वड कळह विचाळा ।
अरजण नै कुण आगमण ले समर लड़ाळा ।
बाळ उखेलै बाघ रा कुण नर मुख बाळा ।
बाथ घले असमांन नैं भड़ कौन भुजाळा ।
कवण उठावै पाल रा मेवास वडाळा ॥ ९९ ॥

॥ दोहा ॥

मेटे दुरभक मुरधरा । सुर भख चारू चाल ।
रागपाल पाधौ विरद । महींरेलण बण माल ॥१००॥

॥ छपय ॥

अलवाणि आपार मिळै कोली मूंछाळा ।

सोढा मिळिया सरस वळे वोलावे वाला ।
जत नायक जोइया वेढ घायक वाढेला ।
गिर मिणिया गामेंत तेग बंधा तूबेला ।
काठी वधेल झाला कमंद भुजां भींत भुरजाळ री ।
घमसांण कहक कीधा गजब पाल चाढ रायपाल री ॥१०१॥

॥ दोहा ॥

पूजीजे धूहड़ प्रतक । प्रगट माडलप पाल ।
वदलो लेवण कड़चियौ । पाल अनै रायपाल ॥१०२॥
कागद वाही कर कटक । फर हरमल चहुं फेर ।
डेरा आथमतैं दिया । आय नगर आमेर ॥१०३॥

॥ छंद ॥

हल्लियौ कटक वीर पुर हूंता । कैवी पूर दिनां जाय कूंता ।
ठाकुर पाल कियौ हद ठावौ । मंडोवर ऊपर मेलावौ ॥१०४॥
भुट्टा वलाचा राजड़ भाटी । वळजै लूटै ईदावाटी ।
नाहड़ पीप जिसा भड़ नाहर । थित ज्यां उतन घरै लिय थाहर ॥१०५॥
वाले वागन कीनी वाहर । हाली नह पाली घां साहर ।
सासळ वात घरैं वह आयौ । रट रूपग पाबू रींझायौ ॥१०६॥
भिड़ज सुतर अस वहल डंडभर आडे फौज खरच सिर ऊपर ।
पिंड पिड़ियार हुवा गळ पांणी। ईदां थी दीधी आपांणी ॥१०७॥

॥ कवित्त ॥

मरग होय पांगळा पवै तन चाहै पांखां ।
हलचल प्रथमी हुई चाल परजा पड़ साखां ।
उड्डै धांम अपार जलै अम्बारत जागा ।
तकै मंडोवर तणा लोक जा छीतर लागा ।
खड़ झाळ दंत नाखै खड़ग सूं करजोड आगल सगां ।
परणाय कंवर केलम प्रथम पड़िया महिरेलण पगां ॥१०८॥

॥ दोहा ॥

अम्बा पावण वृन तणी । घर थलवट री ढाळ ।
वळै खणायौ बेगड़े । पाबू सरवर पाळ ॥१०९॥

॥ इति श्री पाल पोरसातन आसिया मोडजी कृत विनोद समयौ ॥३॥

॥ अथ विरोध रो समौ ॥

॥ छन्द त्रोटक ॥

सिर मालेय तेग अणी छड़ रै । विखियांत करी हरवी झड रै ।
सुत मात करी मिल गोप खला । भड़ वाजत भोमिय हुंत भींला ॥ १ ॥
अवनी कज उग्र करै तपऊं । नर वाजत भोम हुतैं नृप यूं ।
कल् सीस अनेक उपाव करूं । जगती थिर राखत भूप जकूं ॥ २ ॥
यह पाल न मावत वीर पणै । गढरात्र जिकां त्रण मात गणैं ।
चक पोरस पाबुअ जोम सरैं । बालु ओ नर नाहर पूर बरै ॥ ३ ॥
कहै मुज्झ मिटै नह सोच कदा । सुज जींद सरांणैं साल सदा ।
प्रसधी लग वाद विनै पड़सी । अपभींच बिनैं जुध आवड़सी ॥ ४ ॥
तनुजा अप पँमलदे रतिकौ । जग मांझल वाडय वैर जिकौ ।
नृप मेलिय करीफल विप्र नरं । कह बंदिय भूपत आप करं ॥ ५ ॥
गघ घोड़ाय झीनत कीघ घणी । तुल वाज वणाविय जान तणी ।
घुर ढोल रखे लघु बंध घरे । कर व्यंब चढ्यो नृप मोद करे ॥ ६ ॥
सह जांन पधारिय सँण सगे । यम दाख वधाड़यदार अगे ।
मंड साभ झलूस तमांम मिलै । चढिया अस सांमल सांमेहले ॥ ७ ॥
कमलादे सैवग हूंत कह्यौ । गूंजुवै अस तेड़णा पाण गयो ।
तवियौ यम माजिय वैण तुमैं । चढ पाल पधारोय जांन समैं ॥ ८ ॥

चांद वायक

जड़ झीण मई सिणगार जिता । रिम साल विड़ंग पिलांण रता ।
धुर गात समारेय साज धरौ । काळवीं अस पिंडव त्यार करौ ॥ ९ ॥

कवराज वचन

परही युल आणिय ठांण परै । भुर जालेरी खेंग हुती वुहरै ।
भणियै क वखांण किसूं भलरी । वरदाइ नै दीधल देवल री ॥१० ॥
रंग रूप मिजाज अपच्छर रा । सुल लौतर है साहलोतर रा ।
यळ ऊपर वात उचारण री । सिध रेवत दीधल चारण री ॥११ ॥
चकड़ो मुख कायज दीध सही । मुख तूलिय वाग लगांम मही ।
खुररो कर साकत गंठ खुली । सिणगारिय केसर वाज सली ॥१२ ॥
अल गूंथत्र वाल समीप अपं । लड़ सूं धज कोल लिलाट लिपं ।
हव होमियें अग्गर अंग हीयूं । दोउ पास रूआवळ वास दियूं ॥१३ ॥
तस मंडिय पीठ पिलांण तवां । दिय भीड़ कड़ा जुड़ तंग दुवां ।
गजगाह खुली विप स्वेत गणं । मुख रीचिय रोल हिलोल मणं ॥१४ ॥
सिणगार सिरोमण साकुर रो । तस बीड़िय रूप खुलै तुर रो ।
करती नभ सीकिर संप कियाँ । बलती फुरणा वृत वालकियां ॥१५ ॥
गळ जोड़त गूघर माल घली । मुरजाळ री टावल खूब भळी ।
सिणगारुअ मारुअ पाल सजे । काळवी चढियो पिड़जांन कजे ॥१६ ॥
काळवीं कल भोर तणी करियां । नख चाल वजै पग नेवरियां ।
धुणियाल दुगाल ढेबाल धकै । अणियाळ ढळाल पेमाल अखै ॥१७ ॥
अर काळ विसाल कंधाल उरं । कल चाल वडाळ भुजाल करं ।
अंबुवाल छोगाल खैंगाळ अणी। करवाल कुंदाल धनंक कणी ॥१८ ॥
गिड़ कंधन रीद अरंद ग्रहं । कथ चंद न खत्र उड़ींद कहं ।
दिगपाल हले जमजाल दलं । कनहां हुलराव कंठीर कलं ॥१९ ॥
हलवै यम पायक मोद हमें । कन कांठल आगल मोर क्रमे ।
मिल देखत जांनिय मांढ हूड़ौ । असवर सूं केसर आवतड़ो ॥२० ॥
परवी तिय ऊपर हाथ पड़ै । चपला गत अंबर बीच चडै ।
धरती सिर पोड़ धणूध्रमती । यम आवत केसर उक्रमती ॥२१ ॥
मिळ तंत हुवा दोय एक मनं । धन धन्न विडंग सवार धनं ।
करियै बरणाव वखांण किसो । जिणपै असवार जतेंद्र जिसो ॥२२ ॥

राजश्रंस न जायौ वईरणियां । बिज बाज न जाइय बाजणियां ।
भड़ ढाबिय रांन स भीड़िय में । बुरछी कन सूरिय बीड़िय में ॥२३ ॥
गोलियो मण थांणय दोय गमे । सह देखत कूलुह चौकस में ।
पिड़जांन तुरौ थत बंद पुरौ । मुण पाबुश्र गोग हुतां मुजरो ॥२४ ॥
सत सूर मह्राजत सूरत यूं । कमधां गुर डोढोय कूंत कियूं ।
कल दीठांय पाल स पाप कटे । रायपालर गोग बखांण रटै ॥२५ ॥
घर रूप लछम्मण देव धनं । मिल श्राखत मोढिय मोद मनं ।
सह ध्यांन लये मन इंच्छ सची । वर वाज उडै बरछी बरछी ॥२६ ॥
खित देखत सांमिय जांन खड़ी । प्रसणां सिर श्रंबर बीज पड़ी ।
निज पूठलियां श्रसवार नवै । खिचियां दळ ऊपर कूंत खंवै ॥२७ ॥
महखी खर रूपीय हीण मणा । तिण वार तुरंगम जांन तणा ।
खित जांनिय बाज लखे खड़ता। तिण वार खंबै भंमरी तड़ता ॥२८ ॥
तद वाज महा खगराज तकै । धजराज उडै गजराज धकै ।
दुयणां उर ताप संताप दियौ । कमधां गुर पूल मिलाप कियो ॥२९ ॥
ग्रह टूं किय साबळ ठांब गनै । कालमी श्रस श्राणिय मोर कनै ।
धज पांव छबै न छबै धरती । काळमी श्रस खूंद घणौं करती ॥३० ॥
मांढियाँ मिळ देखत मोद मती । जांनियां मद हीणाय देख जती ।

हमें वात सांमेळिया पाछा चडिया जठै पावूजी घोड़ो फेरै छै

॥ छन्द श्रोटक ॥

श्रसवार जोय दोए सिंध श्रणी । तड तागत झंपत पाल तणी ॥३१ ॥
वग पाल उथेलत रांन वळा । काळमी कपि वादिय एन कळा ।
डर चांह हुलाह दये डकती । श्रसनास वजावत श्रोद्रकती ॥ ३२ ॥
घर पूरत हांम मनै खिकरी । चित री गत काय फरै चकरी ।
करता कर वाज सवीर कियूं । दल रूपन लाभत लाख दियूं ॥३३ ॥
धजराज यसी न लखी धर पै । जांनिया सह क्रींत वखांण जपै ।
परगै रह देखत पाल पना । वर जांन वखांनत पार विनां ॥३४ ॥

जींदराव वायक

घर लेवूंअ वाज उपाव घणौ । मन मांनिय केसर मुज्झ तणौ ।
दायजे हथलेवेय दाब दयूं । लख मोलिय वाजिद एह लयां ॥ ३५॥

वडजानियां वायक

मुण वैण गमासिय तूं परनू । कुण देवैय जींदाय कैसर नू ।
हव होवत आलेय माट हसी । असवार न देवत खेंग इसी ॥३६ ॥
तुंरगांण न देसिय पाल तनें । मग माडेय वैण अमीणि मनें ।
मुणिये घर खोसेय एण मुदे । काळमी नह देसिय पाल कदे ॥३७ ॥
सनमंध थयौ सुखमेळ सहं । परगै सह पालत राव पहं ।
नृप बूढेय पाबुअ मेळ नहीं । मुख व्याव थयौ यह बैर महीं ॥३८ ॥
जिण वंस महीं सिध पाल जगा सत्र आद अनाद न सैण सगा ।
दिल नांह मिळै पिडजांन दुवै । गैहैं राख भालाळ गयौ गुंजवै ॥३६ ॥
पगड़ौ चड़ संक्रम पाल पती । हय बांधिय पांडव हींसवती ।
कथ जींदोय एकन्त एम कहै । परगैं पिडजांनिय बैठ पहै ॥४० ॥

जींदराव वायक

दायजे नृप केसर खेंग दई । नहि तौ कमंधां मुज मेल नहीं ।
कह जासिय वैर नभैं कित नूं । पित मारत लूंट लखपत नूं ॥४१ ॥
सह बैठत जांन विछात सरै । बकियौ सुत सारग पूरवरै ।
विप सोध जड़ां वसु वासवमें । वरतै मुख वायक आसव में ॥४२ ॥
सुणिया सह वायक सांग हणै । तद चाकर बूडैय राव तणै ।
कहियौ कमलावत हूंत कमैं । घर आयौहि सात्रव नाह गनै ॥४३ ॥
कळ नाथिय वात नहीं कवधे । सनमंध कियौज विनास मधे ।
पत वैरन छोडुअ वाज वखै । असहां वरवायक एम अखै ॥४४ ॥
बर वांदिय तोरण रैण विखै । चवरी लिय फेराय सात सुखै ।
ग्रहणौ भळळाट पटी गठसूं । हथलेवोय हाथ ग्रह्यौ हटसूं ॥४५ ॥

बूढ़ै राव वायक

मुणियो यम वायक राव मुखं । सोई फूल चढंत महेस सुखं ।

जींदराव वायक

हथ संग्रह नांह तजू हरनूं । काळवीं ग्रस दोत छडूं करनूं ॥४६ ॥

बूढै वायक

गघ घोड़ाय देवुंग्र ग्रौर घणा । ग्रस वा नहँ ग्रावत ग्रांगवरणा ।
काळवीं घट भीतर जीव कलं । पह पाल न भूलत हेक पलं ॥४७ ॥

जींदराव वायक

गह चाढेय भूलोय सारंग मैं । मुणियौ तुम नाट तुरंग ममै ।

बूड़ै वायक

हथळेवेय हाथिय दैण हमे । सुजवा ग्रस पाबुग्र प्रांण समे ॥४८ ॥
मुणिया वर वायक सांम हणा । घर घोड़ाय हाथिय मुज्ज घणा ।
चित धारत रीस जबां चलवी । कह क्यूं न लयूं हुं लेवू काळवीं ॥४६ ॥

कव वायक

मन जांनत बूडोय बांधव नूं । गळ मूकत धीर ग्रही गम नूं ।
सुणियौ जौय बूड़ेय एण समै । घर नै वर जीवाय हूंत गमै ॥५० ॥
ऊठ ग्राया य राव दरग्गाय नै । मुणिणौ राव पालरू गौगय नै ।

बूड़ै वायक

गुंजवै पर गाजत सिंघ गलां । कमधां घर लागिय वाद कलां ॥५१ ॥
जिदराव न मांनत टांक जितौ । छित सीस पाबू ग्रवतार छतौ ।
मुज भ्रात कंठीर जती मतनूं । नृप जांणत मांनव देवतनूं ॥५२ ॥
कथ संभर खेड़ नरेंद्र कही । सनमंधिय वल्लव जींद सही ।
दरसाय उभैं नृप हूंत दगै । उठ ग्रायौय बूड़ोय मात ग्रगै ॥५३ ॥

॥ छन्द ॥

जपै वात सारंग सारंग जायौ । उठै भ्रात पाबू घणो याद श्रायौ ।
अखै वैण ते नैण ऊठै अगोठा । दुले पाल वाळा नहीं हाथ दीठा ॥५४ ॥
दखै वात की छांत फाटै डराडै। अमे मारियो तात चौड़ै अखाड़ै ।
कहै वैण ऐ राव जांणंत काहै । महं पेम रांडी सरी मंत मांहै ॥५५ ॥
चवै वैण वूड़ौ वकैं क्रोध छायौ। अलो ऊदळौ पान आणंद आयौ ।
रखौ राव जींदौ घणैं चाव राजी। मुखां ऊचरै जे सुणी वैण मांजी ॥५६ ॥
नरांनाथ एजात वेपात नीचो । खलूं आंणियां केम जामात खीची ।

बूड़ै वायक

॥ त्रोटक ॥

दुख देस सबै मुज नेंज दयौ । कह पाल वरज्जण वैंण कह्यौ ॥५७ ॥
सद भूत जती सत सील सदा । कह वैण बृथा नह होय कदा ।
वरजंतांय बांधव कीन वसू । हव सो फल पासांय लोक हसूं । ५८ ॥
नड़ियौ सन धीयह दीयनला । पड़ पाप वचा वाह अग्रपला ।
प्रत पेमीय द्राग दई पर रौ । यह सोक होसी सह ऊमर रौ ॥५९ ॥
नह मांनत धूरत वाज लयूं । काळवीं अस देवण केम कहूं ।
जिय धीर रहै हय वैग जहूं । प्रसणां विच एकल पाल पहूं ॥६० ॥

मासव कमलादेजी वायक

किम आप कमांण नजाज कितं । निसचै सिर भोगवणी नृपतं ।
कथ कूड़ उपावय सांच करौ । हितसूं दुमणा पण द्वेग हरौ ॥६१ ॥
उर मांनिय आयस अंबाय रौ । क्रिमियौ चंवरी दिसै दाव करौ ।
जणणी उपदेस ग्रह्यौ जपयूं । कथ कूड़ वणावत सांच कियूं ॥६२ ॥
जग मांन लियै सद भूत जिसौ । तिण ताल वणायोय कूड़ तिसौ ।
कमधां घर होवणहार कियूं । दिल भाविय बैठ उपाव दियूं ॥६३ ॥
मिसलात विरोल अमंगल में । मंझ रात दरोल दमंगल में ।
भ्रत थाल विसाल रसाल भरै । सह जानिय डेरेय सैंभर रै ॥६४ ॥

करचाव हता जनवास क्रमै । मभरात लगौ भड़ ग्रासव में ।
प्रत सांत हुवौ व्रत ढोल पनै । वंदती किम लाय सवाय वनै ॥६५ ॥
जणसूं मृत होवत जेठिय रौ । किम काल मिटै कणएठिय रौ ।
चितयूं परबोल मसांण सिवा । दुय चार उभै हक साद दिवां ॥६६ ॥
चन्द्रभाण पहां रूग्र कोट सिरै । पठियौं हटियौ भुरजाळ परें ।

चांदे वायक

कण थांन विडांण उद्वान कठी । ग्रपसांण उनांम जिरांण उठी ॥६७ ॥
नर भूपत मीढ रखौ निसमें । देय पोर कोहर री निसमें ।
जन वासत वीगड़ जांण जहीं । मांभियां सिर भादर रोल महीं ॥६८ ॥
सुजला दिय चांदेय वात सहूं । कथ राखिय गोपन वैंण कहूं ।
यमसांण विचारिय जांण ग्रगै । लोह ग्रांच भड़ां ग्रस ग्रंग लगै ॥६९ ॥
कमधां गुर बूड़ेय व्याज कियौ दोयणां मिळ पूळोय लाय दियौ ।

बूड़ै वायक

सपती हथ एम चढ़ै सहुग्रां । गढवाड़ां री ग्रांण ग्रहौ गउग्रां ॥७० ॥
सुरही लिये बूंबांय साज रुलै । यम वार चढां मन ऊपरलै ।
बल विरोय गुज्ज खगां बडसी । कटकां पर खेंग घणूं कढसी ॥७१ ॥
चारणां वत वार चढै सहियां । कछ ग्रायल बून सगी कहीयां ।
ग्रह धेनांह खेम गया घरनूं । कह लेसिय तौ नृप केसर नूं ॥७२ ॥
समयां वत केसर वाज सटै । नरही दुख पाल कदे न सटै ।
छलसूं त्रंब घेंच लयौ सेंहते । पुळ पूगौय पाल विनां पैहतैं ॥७३ ॥
दिल धाव विचारिय मीट दई । यण दावतें केसर ग्रावहई ।

कव वायक

जग जांणिय जींदे ग्राप जिसा । बकिया कथ धांधल वीस वसा ॥७४ ॥
मुणिया जेय वैण प्रमांण भलं । पह पाल न भूलत हेक पलं ।
भणिया जिय वायक साच भला। समपी यह साबत नेक सला ॥७५ ॥

दखवी गळ बूडय फेर दूग्रां । सनमंध नैं वल्लभ ग्राप सुग्रां ।
धरती सिर ग्रंजस देख धरां । कैहै ग्राप हुंतैं किम दाव करां ॥ ७६ ॥
कर छोड़ सुं राव विनोद कियूं । नृप कूड़ सबै सत मांन लियूं ।
धर पूठैय धांधळ राव धिया । दुलहै जनवास नूं पैंड दिया ॥ ७७ ॥
जद भूमत जांमये चाळ भली । भणियूं फिर राव ग्ररज्ज भली ।

बूड़ै वायक

सखते रहसूं रस सील सिधं । जिंदराव मारेय पाल जुधं ॥ ७८ ॥

जींदराव वायक

रखसूं तुज बांह सदीह रिधूं । धुर वैण ग्रमां थिर ग्रंबर धू ।
ग्रह जांमन गोरखनाथ गुरू ।कह क्रोड़ गुना जिण माफ करूं ॥ ७९ ॥
परणीजे पेमल जींद पती । नर नारिय नेह बंध्यो नृपति ।
नवळी लेय ग्रायोय जायळ यूं । भरता त्रिय रंग रमें भल यूं ॥ ८० ॥
नह भूलत खैंग हियै नित यूं । दन बोलत ग्रंजस दंपत यूं ।
चित भीतर जीवसजोत चडी । घट वाज न भूलत येक घड़ी ॥ ८१ ॥
जळ जीमण ग्रासव पांण जदं । काळवीं नह भूलत राव कदं ।
मन भाव स राग हुलास मिळा । करकंद्रप दीपत कांम कळा ॥ ८२ ॥

छन्द बेअक्खरी

दन सुभ लगन विप्र कर दीधौ । रिड़मल हरौ चाव बौह रीधौ ।
सैहमल राव पतौ चण्डावळ । उण सिवपुरी वसाई उज्जळ ॥ ८३ ॥
सोभै कंवर तणी वउ सोभा । लखै बरात दुनी मन लोभा ।
धांधळ राव प्रौळ मांदह धन । एकां गमन एक ग्रावाहन ॥ ८४ ॥
ग्रा वरात कोळू गढ ग्राई । सौ पाबू मन घणी सुहाई ।
गढ जूनौ बंध तणी गणायौ । ग्ररवद धणी मौड़ बंध ग्रायौ ॥ ८५ ॥

॥ दोहा ।

वर सोनल ग्राया वरण । नृपत नांद गिर नाथ ।

देवळ काबा देवड़ा । चींबा वोड़ा साथ ॥ ८६ ॥
मन सायर कसमेरियो । नव खण्ड जाहिर नांम ।
धांगौ सूधे गिरधरणी । जवर अखे गढ जांम ॥ ८७ ॥
साथ जसौ सोनीगरौ । भीनमाळ भोपाळ ।
पौंहप माळ श्रीमाळ पर । रुद्रमाळ रखवाळ ॥ ८८ ॥
आवै दिरब अपार । रहीं जांन वह रंग सूं ।
जाजा करे जुहार । विडंग चढै घर दिस बूहा ॥ ८६ ॥
नृप बूड़ौ नाराज । कोळ मंढ नायौ कमंद ।
चढती जांन सकाज । पाबू मिलण पधारियौ ॥ ६० ॥
आप भंमर असवार । ढाळेती पैदळ धकै ।
तैरह सथ तोखार । मणधारी आयौ मिलण ॥ ६१ ॥
सोनल सिर से लाल । हठी फेर दाखै हठो ।
वाई जगत विचाळ । दयूं अपूरब दायजो ॥ ६२ ॥
वदसी वह विसतार । जो बळ पर रहजावसी ।
आंणौं दयूं अपार । वरण गणती सांढां वरग ॥ ६३ ॥
गूज बड़ै पर गोठ । वळती दई वरात नैं ।
पकवांनां भर पोठ । गाड़ां ढिग कीना गजब ॥ ६४ ॥
पौछावा नृप पाल । जांन साथ चढियौ जरां ।
वैंतां मांग विचाळ । सोभत कथ आखी सरब ॥ ६५ ॥

॥ कवित्त ॥

कांनां कमधज सुणी बात सारी बूड़ा री ।
हव खीची सूं हुई पाल आंगी ऊतारी ।
लेजासी धन लोड़ दौड़ जींदौ देवळ रा ।
कूड़ा करणा कहूं वचन पाबू धांधळ रा ।

॥ श्री मुख ॥

चारणां तणी लीनीं सुरै जुध रवि कोतक जोवसी ।
सिर घणां भड़ां वाळा समर हर गळ माळा होवसी ॥ ६६ ॥

कियां दुबाहाँ कोट पाल जांगड़ गवरावै ।
गह मह वै दुरबार वड़ा भूपत वह आवै ।
अमल उरड़ अपार मचै दरगह मारू री ।
परगह मझ विणपार ऊडै दपटां दारू री ।
नित जावै आखेट सदा नींसांण मण्डावै ।
लियां साथ नायकां धुरज केसर अस लावै ।
कवराज वडा साथे कियां ते नित गुण रूपग तवै ।
भालाळ खड़ग तोलै भुजां यूं दन बोलै गूंजवै ।। ९७ ।।

पाल वायक दोहा

बूड़ौ अर जींदौ बिहूं यळ मोटे औसाप ।
आगे आगे कुखत्रियां । सगतां दियौ सराप ।। ९८ ।।
कवराजां हुंता कहै । भालाळौ कुळ भांण ।
विप गोगो इण वखत में । सिध खत्री चहुंआंण ।। ९९ ।।

कव वायक

अमल सुरा कर ऊधरा । परगैं नूं पावन्त ।
मरण तणा दिन साधणा । पाल कहै आवन्त ।।१०० ।।
।। इति श्री पाल पोरसातन आसिया मोडजी कृत चकार रौ विरोध समयौ ।।

।। अथ आवाहन रयस ।।

।। छन्द त्रोटक ।।

परचा योय पाबुह सीस परां । धार नाम रखूं कर जंग धरां ।
कमधां कुळ रीत अखी करणां । मन धारिय पाल सही मरणां ।। १ ।।

पाबू वायक

खित जासिय ऊमर पाय सही । नभ सूरज चन्द भुगोळ नहीं ।
जिंदराव लेजासिय वित्त जठै । कह पाल वतासिय मूंह कठै ।। २ ।।

अथ राईतन लोकायत वायक

वढ वैर थ्यौ पेमल जींदव रौ । अपमेल कियौ रख पाल अरी ।
दुख देवण चारण देवळ नूं । परणाइय बूड़य पेमळ नूं ॥ ३ ॥
घर दोय थयौ सुख हेत घणौ । टळ वैर रयौ एक पाल तणौ ।
पड़खे घेय संधव पेमल रौ । व्रन वाहर बंधव देवळ रौ ॥ ४ ॥
धर रूप भुजां असमांन धरै । कव पाल तणौ वरणांम करै ।
वरणूं कुण पाबुअ वंस वडै । धांधळौत दड़ौ जत मेर धड़ै ॥ ५ ॥
सत द्वीप नवें खण्ड भूम सरै । कुण पाल तणी नर मींड करै ।
हिक मींड गोगो चहुंवाण हुवौ । दखजै कुण पाबूअ मींड दुअौ ॥ ६ ॥
नख तेत रती चण सूर नळै । तप धार जती चढियौ त्रसळै ।
मणधार नृभै मण हेक मणौ । तुल बंधव जींजणियाळ तणौ ॥ ७ ॥
धर थंभ जती सिध धांधळ रौ । हव सूर मांभी आसथांन हरौ ।
जुड खेत तजूं तन वीध जोए । हिक वात इळा चहु भूठ हुवे ॥ ८ ॥
वरदायक संजम सील व्रतं । सिध खत्रिय धांधळ राव सुतं ।
कछ देस तणौ पहराव कियूं । धांधळां घर चारणि वीद धीयूं ॥ ९ ॥
मन जे जोस रांणिय एम मुणै । भुरजालय सोनळ बूंब भणै ।
काळमी चढ पाबुअ साथ क्रमै । धर लूट सिरोहिय नैर ध्रमै ॥ १० ॥
लड़ राव भुजाबळ वांध लियौ । दुत मांनिय सोनल छोड़ दियौ ।
प्रसधी चहुं कूंट सुणी यह यूं । अमरांणै सुं श्रीफलअब हियूं ॥ ११ ॥
भूरजाळा नुं देखण काज भणां । तद आयाय सूरज भाळ तणा ।
सुपहां मिळ पंपय चांद सही । कथ पाळ अगे सनमंध कही ॥ १२ ॥
जिण वार विचारिय एम जती । सुणियै मृत होसिय लार सती ।

॥ दोहा ॥

पाल वायक

जद श्री मुख सूं यूं जती । फुरमावै फरमांण ।
सगपण री मा साबनै । जायै पूछो जांण ॥ १३ ॥

सोढां में सुरतांण सूं । दैण लैण दोवेह ।
यां सूं सगपण आंपणौ । है कै नह होवेह ।। १४ ।।
ढाळैती हवै ढळकिया । जोधा जूंझ जवांन ।
ढैंबौ चांदौ धुर धमळ । पाबू रा परधांन ।। १५ ।।
दुभ्रळ छतीसुंहि डाबियां । भूथारण भेड़ीह ।
धनुष भुजा डण्ड धारियां । आया आहेड़ीह ।। १६ ।।
पारधियां भुज ऊपरै । रूप बंधे रण रोह ।
यां हूंतौं जुध आंगमै । कहजै मुख किणरोह ।। १७ ।।
पारधियां भुज ऊपरै । रूप बंधै रजरोह ।
कळचाळां आवै कियौ । माजी सूं मुजरोह ।। १८ ।।
माजी फुरमावै मुळक । जाब यसो ज्यांनोह ।
आज धणी भां आविया । मुदवी परधांनांह ।। १९ ।।
अमल खठोळी ऊपरा । माजी बैठा आय ।
सांमी आंगण चौंक में । जाजम दई ढळाय ।। २० ।।
सुपह वडा भड़ सांवळा । रजपूती रा कोट ।
बैठा गोड़ी खाय विप । दे ढाळांरी ओट ।। २१ ।।
आहेडी माजी अगै । भाखै यम भुरजाळ ।
आवी लिछमण देव नै । सोढ़ांरी वरमाळ ।। २२ ।।
म्हांनै पाबू मेलिया । विध सह वड कानांह ।
माजी वाभी नै मुदै । पूछौ परधानांह ।। २३ ।।
किसड़ी धरवट जकणरी । है किसड़ौ हमरोट ।
सोढा किसड़ा यक सगा । किसड़ौ ऊमरकोट ।। २४ ।।

माजो वायक

है आदू परमार ऐ । सोढां साख सुजांण ।
ज्यां सोढां मांहे जबर । चोखा है सुरतांण ।। २५ ।।
अमर वसायौ नगर औ । पहलौ ऊमरकोट ।

तपिया वेह रांणा तठै । मेधा गुण मनमोट ॥ २६ ॥
धाट धरा रौ सै धणी । खत्रां घणां रौ साल ।
अमरांणै रौ राजवौ । मुदवो सूरजमाल ॥ २७ ॥
आगे सगपण आंपणा । ज्यांसूं हुवा न जोय ।
सोढा चोखा है सगा । कुळ में फरक न कोय ॥ २८ ॥
विण आयां दीठा विगर । पूरी नहीं पिछांण ।
अतरी तौ जाणां अवस । है ठाकुर सुलतांण ॥ २९ ॥
पांण जाड ढेबौ पुणै । जाबक कथ भुरजाळ ।
विण रांणै रौ म्हे विभौ । नजरां लियौ निहाळ ॥ ३० ॥
धुर बंकौ खावड़ धरा । है सारी हमरोट ।
की लीजै दीजै किसूं । कोळू ऊमरकोट ॥ ३१ ॥
बाघाणी वाळा वरग । लीना भालाळेह ।
जद सूरजमल आवियौ । वातक बिसटा लेह ॥ ३२ ॥
उण दिन था रांणा अगे । हैंवर दोय हजार ।
सांवत कळचाळा सधर । चकडाळा सिरदार ॥ ३३ ॥
वीभै मांझ रांणौ वडौ । जांणां बात जरूर ।
ऊंच नीच कुळ री अखौ । म्हेई करां मंजूर ॥ ३४ ॥

कमलादे वायक

प्रथम हुवौ दळ पांगळौ । यण घर में जयचन्द ।
अपड़ लिया पतसाह हट । म्लेचां बळ कर मंद ॥ ३५ ॥
यळ सारी यम ऊचरै । सोहौ सिव अवतार ।
जाब एवौ लखपत जवर । वागां खग रणवार ॥ ३६ ॥

॥सोरठो ॥

पाली पकड़ांणाह । सुणियां दुज तिय सीसु रैह ।
काटे तुरकांणाह । आसथांन रहियो ऊठै ॥ ३७ ॥
पाळ गोदावां ऊपरै । रची दुजां छळ रूड़ ।

पड़ियौ दादो पाल रौ । प्रसण घणां जुध पाड़ ॥ ३८ ॥
जग जाणै मौ जेठ । पाल तणा वड़को प्रता ।
भूप हुवो सुर भेट । धूहड़ वाहर धेन री ॥ ३९ ॥
मो देवर सगराथ । धुर दवाळ वाडे घणी ।
नग किय जलँधरनाथ । जो वत वाली ज्वार रा ॥ ४० ॥
यण घर में तौ ऊपना । आगे अवतारीह ।
जग पाबू ऊभौ जितै । साबत कथ सारीह ॥ ४१ ॥
लंक गढां विहंगां गुरड़ । भाळ ग्रहां मझ भांण ।
कुळ खटतीसां कमंध कुळ । सुण यम है चन्द्रभांण ॥ ४२ ॥

गैली वायक

बोली गैली जिण विचै । विध यण अकल वणाय ।
औ सगपण जत रावरौ । नह है तौ सुभ न्याय ॥ ४३ ॥
आं सोढां सूं आंपणा । विघ विष जूना बैर ।
कूड़ा सगपण मिस करे । गैरी करसी गैर ॥ ४४ ॥
साळ्यां आंणी सिंध सूं । देवर लिछमण देव ।
ऐ सलामी अमरांण रा । विघन हूंसी यण भेव ॥ ४५ ॥
छत्रियां यण कुळ खेधरो । सब दन यसो सभाव ।
वाळै वचन सिघार वर । रण देसी धुर डाव ॥ ४६ ॥
कै विष करसी कुभद कर । वादे खड़सी बीज ।
कदै नहीं आसी कुसळ । पाबू धण परणीज ॥ ४७ ॥

चांदे ढेंबे वायक

पाळ परै खगपात । कैवी जुध मांभळ करै ।
रांणी जिसड़ी रात । नर कोई जायो नहीं ॥ ४८ ॥
पायक चाकर पाल रा । लड़ण गणै मन लाभ ।
भड़ नायक ठांभै भुजां । आज पड़ंतो आभ ॥ ४९ ॥

तूं गैहल्ली ऊदा तणी । बोल न जाणै बोल ।
धुर लीना कोळू धणी । म्हारां मसतक मोल ॥ ५० ॥

कोळू वाळा कांगरां । तिण दिन पड़सी ताव ।
उण दिन आडा आवसी । भीलां तणां भड़ाव ॥ ५१ ॥

ते नायक तरवारिया । वरदायक देहवांण ।
कर पळवट वाळै करै । एक धरा असमांन ॥ ५२ ॥

करां समर मझ हेकवौ । है जमथट हैडीय ।
कुण पाबू सूं जुध करै । ऊभां आहेड़ीह ॥ ५३ ॥

कव वायक

अंतहपुर वाळा महल । गळ सांभळ गळळाय ।
उरस चिंभैंतैं ऊठिया । केहर जिम कणणाय ॥ ५४ ॥

बंगी आवै वढण नै । खेलौं कर खेड़ाह ।
आप राव मेळे अगू । भळजो ज्यां भेळाह ॥ ५५ ॥

जुध तज नै नह जावसी । हार मांन हैरांन ।
धणी धकैइज लादसी । पाबू रा परधांन ॥ ५६ ॥

सुपह दबै नह सांवळा । खीटवियोड़ा नाग !
मदरा पीतोड़ा गयंद । हाकळियोड़ा बाघ ॥ ५७ ॥

आप दूज राखौ यती । वदसी जण सूं वाद ।
थां लखणां सूं आपरौ । यळ में लैसां आध ॥ ५८ ॥

सारी वातां समझिया । म्हे अन्तर बुध मेल ।
आप वचन ऊचारिया । खसाखसी रौ खेल ॥ ५९ ॥

पाबू ने परणीजसी । डरप पणो दिल देर ।
पाटोधर परणावसां । ले सोढां नालेर ॥ ६० ॥

यूं कै बारै आविया । डारण भाखर डील ।
सांम तणां पाखर सधर । भालांळा रा भील ॥ ६१ ॥

अतरै चाकर आवियौ । राव तणौ रूड़ौह ।

भड़ नायक चन्द्रभांण नै । बोलावै बूड़ोह ॥ ६२ ॥
मूंछ जाय भूहां मिळी । मिळिया भुज असमांन ।
सांचौ सांमत चांदियौ । पाबू रौ परधांन ॥ ६३ ॥
मुजरौ कर मांझीह । ऊभौ आगे आयनैं ।
म्है नृप वेराजीह । बूड़ौ इण तक बोलियौ ॥ ६४ ॥

राव बूड़ा वायक

पाल धणी पारांधियां । पाराधी परधांन ।
पाराधी परणावसी । जावां म्हे नहिं जांन ॥ ६५ ॥
मांनै नह मोरीह । चांदा थारी व्है सला ।
पाल तणी फौरीह । दीसै हुय आई दसा ॥ ६६ ॥
सगती देवळ सारखो । थां सरखौ परधांन ।
ढाळेती ढेबे जिसौ । होण पदारथ जांन ॥ ६७ ॥
जूंझारां री देवळी । कायर राज करंत ।
आंपां घर सांची वहो । चांदा पाल मरंत ॥ ६८ ॥
वीर प्रवाड़ै वाड़ । चांदा औ न करै समझ ।
कोळू तणौ कमाड़ । पाल दिनां रौ प्रांमणौ ॥ ६९ ॥
येण उपाड़ी आग । आग खाय फिर ऊठियौ ।
वीरो मो बजराग । गुड़ै अगाजे गूंजऐ ॥ ७० ॥
धर थळवट बाळी धरा । सह लोकां संताप ।
काछेला राजस करै । पाल तणैं परताप ॥ ७१ ॥
पेमां परणाईह । डर हूंता सह जग दखै ।
जींदो जम्माईह । जमरांणैं हूंता जबर ॥ ७२ ॥
धांधळ सह धारैह । कुळ रव पाल कढावसी ।
चांदा चीतारेह । बूड़ै वाळा बोलड़ा ॥ ७३ ॥
धांधळ राजी रांण में । धूहड़ रा दीवांण ।
म्हे यळ पर पूजीजसां । यांरी फिरसी आंण ॥ ७४ ॥

कहजै चौवी कोटड़ो । एक धांधळ री आज ।
पाल तणौ परताप सूं । रिम धर करसी राज ।। ६५ ।।
चांदा वचन संभाळजे । अरियां वागां ऊठ ।
नैड़ौ बूड़ौ लादसी । पाबू वाळी पूठ ।। ७६ ।।

।। छप्पय ।।

कनवज हूंता कठठ म्हेई आया मुरधर में ।
जमूपाळ काज सिद्ध करण थेई आया माळवत ।
भूपांक भाल पाचाळ गढवी आया धर गिर रा ।
आय हुवा एकठा सरब भूखा समहर रा ।
कळ प्रिया खेल खळखट करण रगत बिना वह दिन रही ।
अब सगत रूप धारी अवन मांगै भक मुरधर मही ।। ७७ ।।

चांदा वायक

।। सौरठा ।।

पाछौ कहै प्रधांन । राव हूंत समझे रहस ।
वस भावी बळवान । होणहार ज्यूं होवसी ।। ७८ ।।
लाग वाग दापै विना । त्यांसूं हुवे न तांन ।
कद इक कळह करावसी । जींदे तणी जबांन ।। ७९ ।।
जींदौ यम वायक जपै । तन मंझ आंण तरंग ।
बखत अणी सह राठवड़ । वांसै खड़ै विड़ंग ।। ८० ।।
खीची यम वायक कहै । जे न सहै भालाळ ।
तिण कारण पिंड तूटसी । मुगताफळ री माळ ।। ८१ ।।

।। कवित्त ।।

कीनह वनवाळी सूतौं मालम जग सारै ।
सर गंगा तट सुपह पाल दरसणां पधारै ।
वाग तणा सुत विमद यते वगडावत आया ।

नौबत सुणें नै हाव राव पाबू रीसाय ।
नायकां हुकम कीना नरिंद खोस सरब लीना खयंग ।
करदई नगरां कूंडियां पाल तणा पीना पमंग ॥८२ ॥

हव चांदौ चढियोह । ले रेवत रूड़ीह ।
घुरज लई म्हारै धणी । बीड़ी दे बूटीह । ८३ ॥

खोस लिया सारा खयंग । गाढ म गरभ गमाय ।
निकस गयौ परि हंस ले । भोजो रांण भणाय ॥ ८४ ॥

॥ कवित्त डोढौ ॥

सांबरोट धर दाब प्रांणजळ खाग पखाळै ।
गूंगा गैहला गाळ वचन देवळ रा वाळै ।
पिड़ सुरियां नै पकड़ साज पाबू समसां नें ।
पड़ मेचो कुळ दहळ दिपैं जस दसूं दिसांनें ।
मिरजौ गूजर महीं पकड़ मढ आंणियौं पाबू ।
सोनल वचन संभाळ आय नमियौ नृप आबू ।
सांढियां ले आयौ सिंध सूं मथै नीर मैंहरांण रौ ।
भांण नभ भोम सिस जस भणौ पाल तणौ आपांण रौ ॥८५ ॥

जायल रौ जूंभार गयौ लखधन लोसावै ।
जायल रौ जूंभार गयौ आखेट खोसावै ।
जादल रौ जूंभार गयौ पितु नूं मरवाड़े ।
जायल रौ जूंभार गयौ घोड़ियां बढाड़ै ।
जायल रौ जूंभार वळै कीनौ बोलावौ ।
लखपत लीधौ लूंट छिप गयौ सारंग चावौ ।
वणावौ आप वात्तां वड़ौ साप हुवे किम सीदरौ ।
सनमंद थयौ लांठौ सदा जांणां टणकौ जींदरौ ॥८६ ॥

॥ सोरठो ॥

आप थकै आयोह । आयौ जो पाबू अगै ।
नद सारंग जायोह । तपसी नह जायल तखत ॥ ८७ ॥

ढाळेंती ढळियाह । सिधनृप रा दीवांण सूं ।
वागेला वळियाह । कमधज नै मुजरौ करे ॥ ८८ ॥

पाछा आय प्रधांन । पाल हूंत वायक पुणैं ।
बूड़ौ कपट निधांन । पंड पूरौ दुसमण पणौं ॥ ८९ ॥

कमळायत वायक कन्हीं । न देखियौ निसाप ;
राव भरोसै रैवसौ । अकन कुंवारा आप ॥ ९० ॥

कूंकूं पत्र पाबू कमध । जो मेली हित जांण ।
सैंण सगा भाई सकौ । आगू मिळजो आंण ॥ ९१ ॥

राव रह्यौ रीसाय नै । कद मोसूं कैवाह ।
अमरांणै हूं एकलौ । जाऊं परणेवाह ॥ ९२ ॥

॥ जान रो चढाव छन्द त्रोटक ॥

कसमेरिय रोलिय एक कियूं । हथ जोड़त श्रीफल वंद हियूं ।
वनड़ौ वण सूर मनूर वरै । कछ देसिय बायळ लूंण करै ॥ ९३ ॥
मिल पेम विसाल ढेंबाळ मुणौ । तिणताळ हबोळोय जांन तणै ।
दंतवाळाय बाहिर झोल दियां। कमठालाय तेल चंपेल कियां ॥ ९४ ॥
घण माळ भरे नयताल घणा । तविया दन पाव टकाळ तणा ।
उड केसर बीर गुलाल अगां । सतरंग सुरंग झुंगा चणगा ॥ ९५ ॥
कमधां गुरु गोरखनाथ कळी । मिल मांझिय जांण जमात मिळी ।
हुय ढेंब सवार हणखुर रै । परधान चढै अस मोर परैं ॥ ९६ ॥
लखियौ हथळेव प्रमांण लधौ । विजड़ौ हथ धांधळ मोड़ बन्धौं ।
विधना अंक मेटण को वरणै । पहवाळ जतिन्द्र जकौ परणै ॥ ९७ ॥

कव वायक

क्रमनार गताम वरात करी । फिर आडिय देवळ आंन फरी ।
लटयाळिय जोगण साथ लियां। कैंक आळण रूप विरूप कियां ॥ ९८ ॥
सियकोतर भैरव साकणियां । डहरी बहरी मिळ डाकणियां ।

गयणागन मावत ग्रीधणियां । सुज भौंम असी छव चारणियां ।। ६६ ॥

इण रूप भवानिय आय यतैं । पुणती केइ सावळ पाल प्रतै ।
हव ढेंब कहै भड़ देर हुडी । वरजो निय चारणा आवतड़ी ।।१०० ।।

सुभ मौरत पाल वरात चढै । कुव आंणिय वांणिय केम कढै ।
परही हव टाळोय पारधियां । कक आलण रूप विरूप कियां ।।१०१ ।।

पारधियां वायक

वनड़ौ परणीजण पाल वए । देयवी अण सुभ्भ सगून दये ।
दुलहा पण मोद घटै दिल नूं । तिम पाल न जांणिय देवळ नूं ।।१०२ ॥

फजरै विकराळ सरूप करै । किम व्याव विचाळ विघन्न करै ।

देवल वायक

सब धाविय पाल कनै सिंधियां । पुणावां तुम नै नथि पारधियां ।।१०३ ।।

गणसै मुझ दांमण चोळ गनै । वरदायक वाजै हैं पालव नै ।
अमनै मत जावोय छोड़ इयूं । दुलहा नवलाखनिग्रांण दियूं ।।१०४ ।।

गुरु अंग वडापण तुज्ज घणौ । तुअ वीर राजा थळवट्ट तणौ ।
धुन धाट पधारण चित्त धरी । किरणाळ भली प्रतपाळ करी ।।१०५ ।।

जसवंत महा सिध रुद्र जड़ा । अन कूकत मूंक म ववौं वनड़ा ।
हय वाग झलौ असथांन हरा । धुरजाळ खड़ौ मत धांधळ रा ।।१०६ ।।

तत व्याव उमंग धरी तन री । वरदायक चीत रखो अन री ।
त्रिजड़ा लाग जांन हळै तुमणी । हव बांधव वात सुणौ हमणी ।।१०७ ।।

अर मारीय जाखिम आयल रौ। यम बूंट उखेड़ेय जायल रौ ।
इण कारण चांदय हूंत अखौ । रखवाळण ढेंबोय कोट रखौ ।।१०८ ।।

घण ढोल कुकाउ अरा घुरसी । फजरै पर जायलियौ फरसी ।
कमठाळ सबै भड़ साथ क्रमै । हरियौ हव सूंपौय वेग हमैं ।।१०९ ।।

लज धार वड़ा अद सार लियां। काछे लीनु पाल जुहार कियां ।

जुग वीर हुवा तुव खेद जुवा । भुवपाळ देज्यार निहार भुवा ॥११० ॥

पाल वायक

कहिये तकसीर मुमें कित री । अखती थुंअ देव हुवे अत री ।
भुरजाळ सैलाळ भरणौं भळ सूं । हव तुज्ज हुकम्म हुवै हल सूं ॥१११ ॥
यण रूप पधारे भले आइयां । बहुए कर जोड़ खड़ौ बाइयां ।
तत राख सुं मन्न सधिर तुवां । हळ सूं सुरराय हुकम्म हुवां ॥११२ ॥
कर जोड़त पाल प्रणांम करै । चंद्रभांण विनां मुझ केम सरै ।
चढ रातळ देस प्रदेस सुणौ । तव अग्र हलै जसवंत तणौ ॥११३ ॥
अणियांटल वेढ हुसी अरती । धुर दीठळ धाट तणी धरती ।
प्रसणां विच एकल राड़ पलै । हरियै विण आगळ कोन हलै ॥११४ ॥
सगतांरि सिरायत वैण सुणौ । हव ढेंबै करावुहु आलहणौ ।
जद पाल वडै भड़ हूंत जपी । अमली सुंअ अग्घाय एम अपी ।
वागेलाए नायक वैण वयौ । नव वाह भळामण ढेंब लयौ ॥११५ ॥

ढेंबे वायक

भड़ ऊसस पाल तणौ भळए । अम्बु आळ कहै सुण देवळए ।
सिध रींझ कियौ सुज चाकर नै।कर वेग विदा हव ठाकर नै ।॥११६ ॥
दखियौ यम तद रुद्र दुती । जस लेण सधाव कमंद जती ।
प्रसधी जग ऊजळ चन्द्रपना । वरवा धरधाट अपार वना ॥११७ ॥
त्रिजड़ा लोय नायक सूंप तुमै। हिंदवांणिय भांण सिदाव हमैं ।
भुरजाळोय चांवड पेम भणौं। मुजरौ मुजरांणोय हूंत मुणौं ।११८ ॥
दत ले यम आयस पाल तणौ। मुणवै हव नायक आप मुणौ ।
सगतां मम वैण सुणौ सहुआं । गढवाडां री कोण गहै गउवां ॥११९ ॥
ताइयां दळ देखोए जांण तुमै । यत देजोय कोहर ठीक हमै ।
मारको सह ओडव आप मथै । सबळा भड़ सत्तार जेण सथै ॥१२० ॥
त्रजड़ा लोय जांन हुंतै टळियौ । वड़को भड़ कोट रखो बळियौ ।

यम आग धुखै जिण आँखड़ियां। वरदायक मूंछांय वांकड़ियां ।।१२१ ।।
पराधिय आज उजाळ पळी । वळतै मुख राग वजै वंसली ।
वरदायक नै व्रद देवो हला । सगतां मुख पाल तणा सोहला ।।१२२ ।।
गढवाड़ाँ भोळावण डैंब ग्रह्यौ । रखवाळण भूरेय कोट रह्यौ ।
कमधेस दई वडकाम तनै । सगताँरी भोळावण साँवत नं ।।१२३ ।।
पंसही उड़ ग्रीधणियाँ परती । अंबुआळ रौ लूण उतारवती ।
किर दंत वराह सराह कसी । चढ मूंछ व्रहाराँय बीज ससी ।।१२४ ।।
गुंजवै पर ठाल नखै गिरजाँ । भुरजाळाय आँण ग्रही भुरजाँ ।
ग्रह मौद करी वरणाव घणौ । तिणरौ सुत बालकनाथ तणौ ।।१२५ ।।
अंबूवाळ वल्यौ लिय चाळ अणी तद जाँन हली सिध पाळ तणी ।
बाजरियाँ नीलाँणी आँभर टाँका पाँणी है ।
हसनाही नीरभर सहत घोर सिर ढाँणी है ।।१२६ ।।
कवळूं यण सूं खड़ केसरियौ । उण कोळुअ धाँधळ ऊतरियौ ।
विप भीजत संज सवै वणगाँ । फजरै घणराव जमें फुणगाँ ।।१२७ ।।
जळ डोहत पंथ वरात जुई । हरिया व्रत डूंगर भूम हुई ।
अत सूर करूर तपै पल में । मंडियौ नभ मंडल वादळ में ।।१२८ ।।
गुड़ळापण तै गिर काँत गया । थळ धूंधळ ऊजळ रूप थया ।
धर सोर मयोर झिंगोर धरी । कर अग्र कतार बळाह करी ।।१२९ ।।
चढियौ भुरजाँ यम ढैंब चवै । खित जंगळ वढाळ सीस खिमै ।
धल काँठळ गैणाँ भड़ाव घणाँ। तिण ताल चढाव वरात तणाँ ।।१३० ।।

।। दोहा ।।

मैहमंद चमणा मौलणौ । रंगबाहळा रलेच ।
भूपाळाँ सिर भींजसी । पागाँ वाळा पेच ।।१३१ ।।
तिथ रखालुअ ढैंव थयौ । घुर ढोल पाबू अमराँण गयौ ।
ललकारत राग हूता लड़ियाँ । चत्र वीसत कोटड़ियाँ चड़ियाँ ।।१३२ ।।

।। कवित्त ।।

चढे आल ऊदळह चढै नींबौ बाहड़दे ।

चढै पुत्र रणधमल चडै काजळ सुध पखदे ।
चढै हाफल बंबाळ चढै पेथड़ विक्रमायत ।
षह चढ केतूपाळ सूर लीनाँ जतने सत ।
एतळा नृपत चढिया असाँ पाँण पाड़ भोपाळ रो ।
थळ सैहर माग वागै थया जाँन सिषावण पाल री ॥१३३ ॥

॥ दोहा ॥

पूगै कागद पाल रौ । सह परगह सणगार ।
हुव जेवर जायौ हुवौ । अस नीलै असवार ॥१३४ ॥

॥ छन्द पद्धरी ॥

पाल री जाँन परदंप गार । सिध गोग हुवौ नीलै सवार ।
रजधार साख चौवीस रूप । भिड़जाळ खड़े दधरेळ भूप ॥१३५ ॥
पाल रौ वराती वरन पाल । संभरी हाथ ग्रहियाँ चडाल ।
बाचत खत आयौ वड़े वेव । दाखूँ वरात मझ गोग देव ॥१३६ ॥
गोग रा भींच अंगाँ गरीठ । रणवार सत्राँ सिर दैण रीठ ।
धुरजाळ खड़त संभर धणीह । तिम वजत रोळ गूघर तणीह ॥१३७ ॥
सुत भ्रात लियाँ परवार सैंग । खैड़ नृप खड़ै ततकार खैंग ।
आयौ खड़ कोळूं वैहै उताळ । पाबू सूं मिळियौ रायपाल ॥१३८ ॥
पतबंब वाह पूरौ पुरस्स । दामेव सुतन दीनौ दरस्स ।
लीना भड़ घोड़ा बहुत लार । जसराज आय कीन्हो जुहार ॥१३९ ॥
बळ ईठ साथ लीधाँ बलोच । पूरौ नर जादव वड़ी पौंछ ।
वीर देत हुवो मृत सूं अबीह । सीम रौ पौतरौ सोमसीह ॥१४० ॥
जत पाल दुलह अमराँण जात । सिधवीर सरब नर जाँन साथ ।
आछ दिय पाल दोढौ अमल्ल । मिळियौ जद सोढो रायमल्ल ॥१४१ ॥
हक जोर सोर दळ घेर होय । जालोर दुरग चहुँ फेर जोय ।
मिळ किय जुहार दरगाह मांह । पाबू सूं मंडी पातसाह ॥१४२ ॥
चिढियौ आँण फौजाँ विलंद । अणखलैं तणाँ आयौ नयंद ॥१४३ ॥

।। दोहा ।।

हव सारा भेला हुवा । अधपत कोळूं आँण ।
हूवो लछमण देवर । जाँन तणौ घमसाँण ।।१४४ ।।

।। सोरठा ।।

जाँगड़ गावै जोड़ । पहैं वड़का दारू पियै ।
रंग दुलहा राठोड़ । कंकण हथ पाबू कमंद ।।१४५ ।।
घूमर घणी घटियौह । तिण पुळ में बूड़े तणौ ।
थळ कोळूं थटियौह । कंकांणाँ हूंकल कळळ ।।१४६ ।।
रहियो एकज रात । कोळू मड पाबू कमंद ।
पमंग चढै परभात । वरवा धण खड़िया वनै ।।१४७ ।।
साथे ले सिरदार । पाबू पंथ खड़िया पमंग ।
लागू बूड़े लार । दाव दियौ दन देख नै ।।१४८ ।।
भेळा ले भोपाळ । पाल गयौ परणीजवा ।
विण धणियाँ धणवाल । गढवाड़ाँ वित घेचणौ ।।१४९ ।।
कागद मंझ बूड़े कह्यौ । वेगम करजो वेल ।
पाल गयौ परणीजवा । मिल घोड़ांणा मेल ।।१५० ।।

।। छन्द त्रोटक ।।

लिय कागद ओठिय माग लियूं । गिरतें रित जायल नेर गयूं ।
थित मेर घड़ी दोय दीह थकै । घर धूसण झेंक्यौय प्रोळ धकै ।।१५१ ।।
यत हूं कवळूं गढ आगम यूं । कर कागद सूंप जुहार कियूं ।

सांढियै वायक

कुसळायत पूछिय आप करा । मुणिया सह साथ घणा मुजरा ।।१५२ ।।
तिथ आठम तेड्याये वेग तुमै । दख सोह हकीकत कागद में ।
सिस कागद बाच नरिन्द्र सही । जिण मोद वध्यां मन सिद्ध जहीं ।।१५३ ।।
सुपहां सुंर्आ दाखत सारंग रौ । कठओ तिनुं ओठिय त्यार करौ ।

लोह चाळ घोड़ा रजपूत लये । गिर खाट अमाग सवेग ग्रहे ॥१५४ ॥
मुंडए धर खीमर गांम मनै । करसां दळ मेळ नागोर कनै ।
कमधां घर फट खता करणौ । फजरै पर पाल धरा फरणौ ॥१५५ ॥

कव वायक

लिय वैण मुखां सह भेद लियौ । कळ दैण काई कोय उक्रमियौ ।
सैहै रांनक माल उड़वो समलौ। मिळियौ आय ओठिय उत्तमलौ ॥१५६ ॥
मुणिया यम वैण करे मुजरौ । कठ ओतिरा ठाकुर चेड़ करौ ।

मैहेदर वायक सोहलां सूं

मुणियौ कण ओठी परगैह नै । नह भूलोय जेठिय सारंग नै ॥१५७ ॥
सनबंध थियौ धण व्याव सटै । किम ह्वे खत्रियां कुळ वैर कटै ।
जरणा रख धेस प्रता जरतौ । फिट ग्रीधड़ मात लियां फिरतौ ॥१५८ ॥
उण अंस सूं देह उरहैं अगयें । जिण खेत सूं देह वंदै जगयें ।
धर सीस जकां सख फोट धरै । वरणी मन रज पिता विसरै ॥१५९ ॥
धर थाय दुती सुख मेळ घणौ । तित बीज नहीं पित अस तणौ ।
कुळ ऊगोय सूरज तेज करौ । चत्र वीसत साखांय सारंग रौ ॥१६० ॥
दुरियां जड़ तोड़ण रुद्र दती । जिण पीठ मछंदर पूत जती ।
कुळ खीचिय अंजस बोध करै । बडकौ कुण नौज पिता विसरै ॥१६१ ॥

मैहमंदर वायक ओठी सूं

धुर लूंटण धांधळ पूत धरा । चव मुज्ज हरोळिय सारंग रा ।
गिर आव तपैं नृप दीह घणा । तुंअ हत्थ जोए लघु भ्रात तणा ॥१६२ ॥

वरियावत वायक दोहा

गढ राधो गढ गागरण । अचला मेळा आज ।
अंजस तोनूं ईखनं । सारंग सुतन सकाज ॥१६३ ॥

॥ छन्द त्रोटक ॥

लड़वा दळ डौड़ हजार लियूं । कठग्रोतिय ठाकर चक्रिय यूं ।
दुरियौ घर बोलक नांदरियौ । यम ह्वी गिर गोढळ ऊतरियौ ॥१६४ ॥
जिदराव भड़ां घड़ मेळ जुई । दुतियां धन घांसरा धाड़ दुई ।
सांहणी हय सारत सादवियूं । तसलीम तुरंग वरणावत यूं ॥१६५ ॥
घड़ डोहण पाखर पीठ घळं । हय हींस भड़ां हक होय हळं ।
पर ग्रंग छतीस परंकड़ियं । कळ जन्त्र जड़ी तन चकड़ियं ॥१६६ ॥
दसता कर मोजाय पाव दयूं । सिर टोप कटो ग्रह सूथरण यूं ।
सत साहस सूरत पाक सही । जिंदराव हुवा करु राज जही ॥१६७ ॥
कहजै दिगपाळ जटाळ करणा । मुदरा लाय जोगिय ग्राप मरणा ।
जुध पाल परीख धनंजय ज्यूं । कवळूं वैराट पुरी कैह ज्यूं ॥१६८ ॥
कमधां घर हेरण चेड कियुं । दख तंग कड़ा जड़ ताक दयूं ।
जमजाळ मिळै नृप जींद झलौ। हय ग्रावत ऊखंभ वेग हलौ ॥१६९ ॥
जरदाळ तुरंग वणाव जुग्रौ । हय मोर परै ग्रसवार हुग्रौ ।
चड राव सबै भड़ खैंग चडै । धांवळां घर धूसरण मेर घड़ै ॥१७० ॥
प्रसणां घर ग्रंबर मेघ परै । कर डंबर मारे क्लाब करै ।
सुण बात थरग्गह वैरण सदी । कथ दासिय पेमल ग्रग्र कही ॥१७१ ॥
चढ जावत पाबुग्रा सीस सनै । मुणियौ यम पीहर मांणस नै ।
सुज ग्राखत पेमल चौकस में । कळ भूप जती पर केम कमै ॥१७२ ॥
जिण वस मही सिध पाल जगा। चहुंग्रांण कमंदज ग्राद सगा ।
सुत पाळोए मजिय साब सुणौ। तिम ग्रागळ बांधव मुज्ज तणौ ॥१७३ ॥
दहवाटेय रोळ दये दिवड़ा । पह सूरज चंद सखी प्रवड़ा ।
चित धायौयं दूब ग्रपच्छर नौ। मण देसु महा सिध पाल मनौ ॥१७४ ॥
यळ ऊपर नांह वड़ौ उण रौ । मुणजं ग्रवतार लिछम्मण रौ ।
नड़णौ नह वाद कळु नर सूं । नृप जीत लई किम देवत सूं ॥१७५ ॥
वरदायक धारण मेर वड़ै । भुरजाळां सुं भूपत केम भड़ै ।

मांजी भाटियांणी वायक

रजवाड़ांय ऊकट काठ रिधूं । वीर तेड्यौय कागद मेल विधूं ॥१७६ ॥
धांधळां कुळ धेख धिखै धर रौ। गढवी कखपाळ रखै गुर रौ ।
जिंदराव सहाय हुसी जिण रौ । गढवा एक दांय नदै गण रौ ॥१७७ ॥
बळ ग्रासंग नायौय पाळ वरौ । बैंहनोइ नै तेड्यौय उचव रौ ।
लेय ग्रासिय धेनांह एथ लगै । पड़सी जद पाबुग्र राव पगै ॥१७८ ॥

पेमा वायक

यळ सीस न जायौय मात यसौ। जिण पाय नमै मुज वीर जसौ ।
वड भ्रात कियौ यह कांम बुरौ । कमधां खीचियों कुळ हांण करौ ॥१७९ ॥
ग्रखजे धन हेरुग्र फेर ग्रठै । कहौ तेण वतायोय पाल कठै ।

महन्त वायक

लखिया खत ग्रंक मिल्यौ लह यूं। परणीजण धाट गयौ पह यूं ॥१८० ॥
कह वाचिय कागद ग्राप करां । धुरबंद लख्यौ हमरोट धरां ।
पुळ ग्रासिय लेवत खेम पती । जग जोध नहीं घर पाल जती ॥१८१ ॥
कुळधी जद एम विचार कियूं । दिल भ्रात किसूं यह धाव दियूं ।
जुध केम करासिय राव जहूं । बहनोइह बंधव प्यार बहूं ॥१८२ ॥
जिण दाव रचै सिर राव जियौ। विप पाल उवारण कोण बियौ ।
चित बांधिय धीरज ब्यंब ससी। कुळ ढांकण केम बुरो करसी ॥१८३ ॥
बरवा वर पाबुग्र जांण वनी । घर सीस चली जळ दोय धनी ।
तन त्रंण भड़ाव त्रहूं तड़यूं । सिस ऊगत जींद खड़े चड़यूं ॥१८४ ॥
भय भ्रंत उजाड़ सिमाड़ भड़ं। उपटे रज धूंध चढी ग्रनड़ं ॥१८५ ॥

॥ दोहा ॥

इण घर में तौ ऊपनी । ऊमां भूमां वात ।
ग्रम घर में बहनां ग्रधक । लोवड़ियाळां छात ॥१८६ ॥

॥ छन्द त्रोटक ॥

अस वाजस पक्खर गूघरियूं । तित थागत लेत सुरंतरयूं ।
अत वेग वढै लग पीठ अणी । तत सिघ्र आवाहन मोर तणी ॥१८७ ॥
लग पूठीय दोय हजार लियूं । कन सूरीय ऊपर कूंत कियूं ।
अप पीठ अळो वंध ऊलळती । कमधां धर भेद लियां कळती । १८८ ॥
उपटा दळ काळ तणी अवली । चड़वां लाए सीस भमै सँवळी ।
नवनाथ जमात कियां नर सूं । मिळियौ फिर पापू मछंदर सूं ॥१८९ ॥
यम आवत जींद उरव्वड़ियूं । चख जोस तैं महैंदर भींचड़यूं ।
रहियौ नभ चंग बंधै रज रौ । मारकां अस ठांम कियौ मुजरौ ॥१९० ॥
कळ कोयक जाय अगू कहला । अस पंथ खड़ौ वैहला वैहला ।

जींदराव वायक

जोवसां भुज जोर घणां जबरां । खळ वंकाय आज हुसी खबरां ॥१९१ ॥
जत पाल वड़ौ सत सील जथौ । हव देखूंअ धांधळ आग हथौ ।

पुनरपि जींदराव वायक मेंदर प्रतै

फिट लागत मो कुळ बोल फरूं । कळ ऊपर पाल जूंभार करूं ॥१९२ ॥
धवळै दिन सात्रव राड़ धरां । कमधां पर खाग टकाव करां ।
धुर थंभ वजैत मुरद्धर रौ । वरदाय तौ जोर जोऊं वर रौ ॥१९३ ॥
रैयणांयर पेथर जेम रजी । वड़ नौबत मेंगळ सीस वजी ।
हटकारेय खीज अमां हकतौ । निज बांधट आज मिल्यो नखतौ ॥१९४ ॥
सत्र अंग धुखै लग पाग सली । खत्र मांग तुमां चत्र बाग खुली ।
धुर सानुज जोर लियां धर रौ । सुन काढण आंटोय सारंग रौ ॥१९५ ॥
करतै विपरीत रजाय क्रमू । चत्र मास चढै नह भूप चमू ।
प्रतबंव गिरां सिखरां पड़िग्रां । कळळै नभ मारग कूंजड़िग्रां ॥१९६ ॥
धक सांभळ चाक चढी धर यूं । भुरिया गिर पाधर भंगर यूं ।

पतसा लुळ लेवण वित्त परा । असवार खड़ै अस तूंगिय रा ॥१९७ ॥
पिड़ मौर उड़ांण मृगांण परै । कळ हांण सिचांण हिहांण करै ।

धाड़ेतियां वायक

वरवा धण धाट क्रमै वनड़ौ । खळ थाटांए पीठ लियौ खेहड़ौ । १९८ ॥
पह फाटिय लेसांय वित्त परा । अज पाल है बाहड़मेर उरा ।
हिक मेक जवाहर धाड़ हुवां । तिल कांम न देह तनाळ तवां ॥१९९ ॥
खवि आंख गवी जल सीस खळां दुत रंग वही जलधार दळां ।
वरसै रसधेर भलै रव नै । किय मौर दिनेर सुजेर कनै । २०० ॥
रयणी हतभाग कियौ रड़ियां । चव तीतर बोल लवै चिड़ियां ।
नभ नांखत सीस ढकै निस में । कवळूगढ सीस खँवै कस मैं ॥२०१ ॥
लखि एत घड़ूंस लताळ पटा । घण जोर वरै थळ सीस घटा ।
धुन अंतस नखत्र सीस धरै । हव आयौय सांढ पलांण हरै ॥२०२ ॥
प्रतकूल थिया विध अंक प्रमं। सांवड़ूं मग आयाइ प्रात समं ।
पधरा लेय दीठ लख्या पुळता । नहराळाय डाबाय नीकळता ॥२०३ ॥
वहिया पंथ डाक पाछा न वळै । हय ठांभय चंद कह्यौ हवळै ।
तुर आठ भळै सह झंप तठै । अपसांण हुवा चख देख उठै ॥२०४ ॥
अत मंगळ व्याव विनोद होए । हवसाण पलाउए केम हुए ।

॥ दोहा ॥

मिळै सोमसी रायमल । जठै गोग जसराज ।
पांच पीर इण विध पूरणै । ए सुकन किम ह्वै आज ॥२०५ ॥
पाल पधारै परणवा । सिध जांनी सैहै संग ।
वुवा सुकन किम वेढ रा । बागां भलौ विडंग ॥२०६ ॥

जसराज वायक

पाल तणौ परधांन तूं । तूं नायक बौह जांण ।
सूरज ऊगै सावटू । सो किसड़ौ चंद्रभाण ॥२०७ ॥

चन्द्रभाण वायक

गिड़िया गज समहर गुड़ै । छत्र पड़ै रवि झंक ।
यसा सुगन है आज रा । पुणे चन्द धांनंक ॥२०८ ॥

चांदै वायक छन्द त्रोटक

धिप आयय आधिय आध धरा । अमरांणै सूं खावड़ खंड उरा ।
कंध जोड़ उभै महि खाण कियां। दन टाळांय सोळह पौर दयां ॥२०९ ॥
पग सीस धखावै आग पुड़ां । खित माग पछै यत हूंत खड़ां ।

पाल जतराव सिध वीर रौ वचन

नयड़ी मुझ मौत हमें नैहढो । सुपियार रखै किम तेल चढो ॥२१० ॥
मृत सांमिय सुद्ध लखै सांमरा नूं । सरदार म पूंछौय सांमरा नूं ।
मांझिय हत्र नांह टळौ मृत यूं । छिपती काय वात नहीं चत सूं ॥२११ ॥
ताइयां मिळ बंठोय बभ्र तनूं । मरणौ हत्र लाजम जंग मनूं ।
परदेसिय बूडोय जींद परा । दुरही बित लेसिय देवळ रा ॥२१२ ॥
वहणौ मुज वाट खत्री वट री । घड़ियां मझ मौत वणी घट री ।
पोरसातन आयौय धेस परा । अपवैरा न चूकुंअ सीस उरा ॥२१३ ॥
अवसांण वण्यौ मन भाव इयूं । दिल मांण न मूंकुअ सीस दयूं ।
पायकां रखजो तन पांण पणौ । तद अंत प्रवाड़ौ है पाल तणौ ॥२१४ ॥

॥ दोहा ॥

पाल ए वायक पुणौ । सुणौ सरब सिरदार ।
सुगन बुराहज होवसी । है परख होणहार ॥२१५ ॥
तवै वचन धांधळ तणौ । आच कूंत ऊपाड़ ।
करणां यळ नांमां अमर । मरणौ मंगल राड़ ॥२१६ ॥

॥ सौरठो ॥

वित देवळ वाळोह । लागू जींदौ लेवसी ।

वीरो मो बालोह । कळमथ घरणो करावसो ॥२१७ ॥
ढोलां पड़सी धांह । करळा ग्वाला कूकतां ।
चारणियां री चीह । श्रवणां हूं कदे न सुणू ॥२१८ ॥
सूना मैल चकार । हूं परणेवा हालिश्रौ ।
वांसे गायां वार । करसी कुण मो विण कहूं ॥२१९ ॥
वणै दुलह जिण वार । पह बीजा सुध पांतरै ।
वचन सुरह री वार । पाबू वनौ नह पांतरै ॥२२० ॥
मिळै जसौ अर रायमल । जठै हुवे सुभ जोग ।
होणहार ज्यूं होवसी । हमैं खड़ावौ गोग ॥२२१ ॥

॥ छन्द ॥

वेंगा गळ वाग्रह चाळ बियूं । सज वाग उछांटिय साबळयूं ।
भंमरी अलवांमण डांण भरै । कवराव किती वरणाव करै ॥२२२ ॥
समरात सजै सबगात सळै । हमरोट धरात वरात हलै ।
करहां अस धांधळ तूंग कियूं । अमरांण जती खड़ आव हियूं ॥२२३ ॥
जळ व्यंब ढकै पग पंथ जपे । फुरमावत श्रीमुख हूंत फतै ।
कड़कै तड़तां नभ डाग करै । भुजिये पर कांठळ रोस भरै ॥२२४ ॥

॥ दोहा ॥

धोला धोरा धाट रा । कछ डूंगर काळाह ।
धण साखां लागा गयण । वड़ लबं वाळाह ॥२२५ ॥
धाटी गव घाटी धमळ । धाटी सिरै धुरज्ज ।
पाबू धाट पधारियौ । धरा धाटेती कज्ज ॥२२६ ॥
राव कला री वार में । ईडर अधकांणाह ।
रांणा सूरजमाल रै । वारै अमरांणाह ॥२२७ ॥

गोग वचन

खथीआ पहरण षगखलां । लोवड़िआं नळतांन ।
अम्भी अस्सी ऊचरै । पाल सुसर परधांन ॥२२८ ॥

लांबै तलाब ऊपर पिणगट वै वै है तिण रौ वरणन

गजगमनी केहरकटी । हेम वरन्नी होय ।
मृगग्रंखी नासकसुकी । लख धाटेची लोय ॥२२९ ॥

हार हिये विच हींडळै । वाजै ऊपर पग्ग ।
विच गळ सोवन वाळला । लांबै पणघट लग्ग ॥२३० ॥

की कठिग्रांणी कायथण । पूंगल प्रसू प्रथीप ।
ग्रमरांणै धर ऊपनी । दूजौ सिघलदीप ॥२३१ ॥

होट ललाई सूं उदै । हासौ उज्जळ होय ।
संध्या हूंतां चंद्रका । जांणै फैली जोय ॥२३२ ॥

मंत्र वसीकर मेहलो । वांणी बोयलियांह ।
कुरजड़ियां गरदन कहूं । कंठां कोयलियांह ॥२३३ ॥

दूर निहारै दंतड़ा । ग्रति ही ऊजळिग्रांह ।
कांठळ गूंघट ग्रोटकिर । वादळ वीजळियांह ॥२३४ ॥

स्यांमा केसां सांवळी । रांमा ग्रत रूड़ीह ।
हियै कामपावक हुवै । जस धुग्रां जोड़ीह ॥२३५ ॥

ग्रसत भमर सम ग्रोपियां । बाम भुहारां बंक ।
प्रातै कमळ प्रकासिग्रा । ऐही निरमळ ग्रंक ॥२३६ ॥

मूंगफली करग्रंगळी । नग जुत विळय निहार ।
जांणै नवनिध देह जुत । ग्रांण लियौ ग्रवतार ॥२३७ ॥

एक कळस सिर ऊपरै । कळस उभै कर कीन ।
कंचन रा तीनूं कळस । नवळ संगाती लीन ॥२३८ ॥

॥ छप्पय ॥

करणाटी कट कहूं जंध उतकळ त्रिय जेही ।
गूजरियां कुचगात केस केरळियां केही ।
करणा हाव कटाछ नार तरहुंत समी निज ।
नितंब तेलंगी नैक मिले देसांतर तन मज ।

तनवास सहज सिंगल त्रियां मारू भूला देख मन ।
रायपाळ गागे हूंतां रटै धण धाटेची रूप धन ।।२३९ ।।

॥ दोहा ॥

आभूषण तन आभरण । जकै आवता झूळ ।
हंसगती हमरोटियां । दिपै सुरंगद कूळ ।।२४० ।।
नेह नवळ नव नारियां । नवळ सुरंगा नीर ।
कर चंपक डाली कळस । लहर हिलौळै नीर ।।२४१ ।।
कुरजड़ियां पाळी कहूं । सर सारसणी सार ।
मानसरोवर हंसणी । लांबै री पणियार ।।२४२ ।।
चंदौ आठम भाळ छिब । मुख पूनम रौ चंद ।
भ्रूह उभै भंवरावळी । नैण उभै अरिबंद ।।२४३ ।।
नागण आठी अरुण नख । कनअक पात कपोळ ।
ठणणण नूपुर पग ठमक । रमक भमक रमझोळ ।।२४४ ।।
कर इक गह लोटी कळस । अंग भूखण ओठीह ।
नवकोटीपत नै निरख । हाली हमरोठीह ।।२४५ ।।

॥ छन्द त्रोटक ॥

सिणगार वनै नृप जांन सजै । तिण देखत इन्द्र गुमांन तजै ।
सर लंबैय ऊतरिया सब ही । दिन अंथ बधाऊअ ठीक दई ।।२४६ ।।
कमधां नृप री पिड़ जांन कजे । सिणगार सबै नृप अंग खजे ।
दखरांण वजीर हुकम्म दिया । करहां तन भाटक संज किया ।।२४७ ।।
विडंगां गळ गूघर माळ चजे । वज ढोल त्रिवाट निसांण वगे ।
सुरभी घर आवत जेण समै । करहां गळ मंगळ माळ क्रमै ।।२४८ ।।
मन मोद अलंकृत सूं मढिया । सब साथ वणाव करे चढिया ।
रंग पेच कुंआं रखवा रुळता । हल आगळ जांगड़ हूकळता ।।२४९ ।।
परधै लेय आमोय धाटपती । विडंगा पग नेवरियां वजती ।
वण जांन सुप्यार तणौ वर री । घमचोळ वजै बहु गूघर री ।।२५० ।।

मिळ मांढिय जांन किया मुजरा। गहरै सद सोर भखी गजरा।
जद भूप वछायत बैठ जुआ। दुलहै मुख जांघड़ देत दुआ ॥२५१॥

तद मीट लखंत धनंतर री। उड घांण सुगंधक अंतर री।
सब भूप पियै मनुहार सिरा। उणवार पियालाय आसबा रा ॥२५२॥

अज काछ ककीण सुराब अगां। पिडजान सवार हुआ पमंगां।
पह पीठ बड़ा सुखपाळांय री। भलखै अणियां बह भालांय री ॥२५३॥

मिळ चोवड जोत मसालांय री। उणबार कथा अब दाखांय री।
कर माळ दुबाहुय कोट कियां। लख पैदल साथ ढाळेत लियां ॥२५४॥

चळ भूप जलेब कियां सुमनूं। नृप सूरजमल्ल समागम नूं।
जतराव समे लोय बंद जठै। त्रिय भुल लखै नृप नार तठै ॥२५५॥

सब भूप विछावत बैठ सई। गउ धूलक धांधळ वाग ग्रही।
कमठालोय साथ हुवो कनलै। सरदार मिळें सह सामेहळै ॥२५६॥

॥ कवित्त ॥

मिळ रांमा राजसी मिळै भोजा भुरजाळा।
मिळ दोनूं अरबाब वडा नृप बंगे वाळा।
मिळ वीरम गंगदा मिळै भुज बळकळ चाळा।
मिलन ह्वे वैरसी घाट घर रा रखवाळा।
सुरतांण उदा मिळिया सको घण थट लोनां घूमरा।
आविया सांमेळै कज यता अमरांणै रा ऊमरा ॥२५७॥

सूरजमल वायक दोहा

सुणता था आगे श्रवण। सिध खत्री चहूंआंण।
आज भलां दरसण कियौ। रटै मुखां सूं रांण ॥२५८॥

यळ मोटे औसाप। विभै वडौ यण बखत में।
आयौ क्यूं नहिं आप। वडजांनी जींदौ वणै ॥२५९॥

चन्द्रभांण वायक

प्रसण वुम्रो रे पाल सूं। जम्माई जमरांण।
खीची अस न्यारा खड़ै। भाखै यूं चन्द्रभांण ॥२६०॥

सूरजमल वायक

पाल तणौ नृप पाटवी । राजवड़ां री रीत ।
बूड़ो जांन न आवियौ । औ कुळ रो आदीत ॥२६१ ॥

चन्द्रभाण वायक—कवत्त

दीयौ रींझकर दांन पाल गोलियौ मथांणौ ।
केसर दीनी सगत राव बूड़ौ रूसांणौ ।
गडवाडां गउग्राह जको गण मांगै बत री ।
दयै न चारण दाम राव रीसियौ कुखतरी ।
परणाय बैन पेमावती रूख जींद हुतैं रखै ।
पाल सूं हुवौ पूरौ प्रसण यूं चांदौ नायक अखै ॥२६२ ॥

॥ दोहा ॥

सांमेळै मिळिया सरब । जांनी करै जुहार ।
हुव अमलां छक हालिया । डेरां दिस सिरदार ॥२६३ ॥

॥ कवित्त ॥

सिध जांनी सैहै साथ नाथ दधरेल जिसा नर ।
संग नृपत सोमसी गणै ब्रहमंड पंडकर ।
जसधारी जसराज पुणां बारड़ कुळ छत्रपत ।
मेहो हरभूं विनै मरद सिधियळ जोगयमत ।
आविया परम आलग उठै पीरंम थोरे पूजिया ।
विद्यायत हूंत उठै विलंद गढपत सैह डेरे गया ॥२६४ ॥

रांणा सूरजमल वायक—छन्द त्रोटक

रज भाड़त्त रांणाय देख रती । जग जेठ धनंजय पाल जती ।
मिळियो वर सूरज रूप मनं । धनधन्न अमां सुत भाग धनं ॥२६५ ॥

श्रब श्राखत विप्र श्रखी यळकै । मन में जत राव जठै मुळकै ।
श्रम धूंधळ बंदण तोरण रौ । डह सेल भलैं रज डांरण रौ ॥२६६ ॥

सज राग हबोलय रंग सही । मचियौ श्रमरांण रे चौक महीं ।
हिय गायक कंठ सुराग हुकै । कळ कंठिय घाट धिग कहुकै ॥२६७ ॥

मुगताफळ ऊपर भाग मणी । तिणताल भळाभळ मौड़ तणो ।
कालमी श्रस उक्रम हींस कियूं । हथ कंबड़ तोरण बंध हियूं ॥२६८ ॥

वसुधा पर भूपत कोण वडै । हव श्रायोय पाबुश्र मांढ हडै ।
जनसांण मिठांण प्रमाण जठै। श्रलमांण श्रठारह वखांण उठै ॥२६९ ॥

परमा छळयां पध मांण परा । श्रसमांण विमांण ग्रहा श्रचरा ।
प्रसधी सुण भंखत क्रात परै । सोढियां चढ देखत मैल सरै ॥२७० ॥

मन भाव श्रंगारुश्र वीर मढै । कमधा गुर तांम रिकाभ कढै ।
वरवा वर पाबुश्र राज विधू । सिणगारित सूरजमाल सिधू ॥२७१ ॥

सिखराळ लड़ी छिब सोभतियां। उतारैह भळामळ श्रारतियां ।
भव साजणरीत जती भंवरी । चढिया धण वींद वनै चंवरी ॥२७२ ॥

जत यंद्र महा सिध तत जती । सुपियार वडी व्रत सील रती ।
दोय फेर खंगां रुश्र पाल दये । लुक जींदय थांणय सीमलये ॥२७३ ॥

सिर पाल महातिस रैण सिरै । हव ढोयय श्रीधण राव हरै ।
करजोड़ सजोड़य विप्र कही । समियंत स फेराय लीध सही ॥२७४ ॥

होय रंग हबोळोय मांढहड़ौ । वळियौ जनवास हमै वनड़ौ ।
भूरै रतकोट सनंद भया । गुडला पण नखत्र गैण गया ॥२७५ ॥

॥ दोहा ॥

मभ श्राथण मेवासियौ । पंचादी परभात ।
वाट निहारै वेगड़ौ । जपण उड कियौ जात ॥२७६ ॥

॥ छन्द ॥

लखिये रंग हाथ लगी लपटां । परमेस न पायोय भूंत्र पटां ।
डेयरां लगि श्राविय जोड़ दहूं । सोढियां धण वींटिय श्रोड चहूं ॥२७७ ॥

लखपाल पधारत डेरां लगै । अमरांणें रो रांण भालाळ अगै ।
सुसरौ अर सालाय बंधस नै । मिळिया सह मांढिय मोद मनै ॥२७८ ॥
सिध खत्रिय ऊतरियौ चंवरी । भंवती हिणणाट करै भंवरी ।
कत नीम संग्राम विरोध करी । खय मोसिर बोलत खंभ करी ॥२७९ ॥
गत जांणिय आगम री गम ए । खित केसर थूं धमए खिम ए ।
भड़ जावत काळ वाताल भड़ै। अवतारिय नायक आभ अड़ै ॥२८० ॥
दुलहै परणै चित बोध दिया । कमठालाय आय जुहार किया ।
वजनास व्रहास अभास वळा । काळवी हरि पिंडत देव कळा ॥२८१ ॥
कंध ऊपर हूकल त्रूल कियूं । विपरोम वालू छौय फूलवियूं ।
क्रमतां नह सूभत माग कठी । उतराधुअ कांठळ जोर उठी ॥२८२ ॥
भर सांभण जांमण भादवरी । उद्रिआंमण दांमण आधव री ।
तिम नाळाय खाळाय नीर तजै। वरसाळाय काळाय दूक वजै ॥२८३ ॥
कर जोड़त पाबुअसीण करी । धुधळीमल वाहर चित्त धरी ।
वनड़ो घर डेरांए हूंत बळी । रंग रैण रमाड़न कीध रली ॥२८४ ॥
सुपियारिय सूरजमाल सिधू । वडभाग वखांणुअ बाळ वधू ।
जनवास रह्यौ कळ चाळ जती । सुपियार बली पतसाळ सती ॥२८५ ॥
दिल पाल कदे रस में न दियौ । कव मेह अगे वरणाम कियौ ।
मन हेक रह्यौ दृढ जोग मची । जनम्यौ जिम जोध जवांन जती ॥२८६ ॥
हळकार भड़ां थट पाल हसै । कमरां बंध मांभिय साथ कसै ।
अमरांण में वाजिय डाक अड़ै । सुपियारि रौ सायब आज चड़ै ॥२८७ ॥

सोढा वायक

धुररात पधारण चित्त धरौ । किम राव पाबू अनियाव करौ ।

दुलहै वायक

भालाळौए वायक एम भणै । वेवगी म्हांनै दीधांए सखी वणै ॥२८८ ॥
गढवाड़ांय वाद धुखे गढियां । सरदारांय मुज्ज सजै चढियां ।

ऊण ढांणिय कोहर ओटड़ियां । केइ दोरिहै तापर कोटड़ियां ॥२८९ ॥
नृप मोराय पाल घड़ी कनरैं । पतसा हिय फौज सिवांण परै ।
रवदां वल लूंटत गांम रटै । विछत्रां दळ घेरव लाख वटै ॥२९० ॥
गण राठ मेंवात सेहाय घणा । तिम वागुए बंधव गोग तणा ॥२९१ ॥

॥ दोहा ॥

तमराळौ वाळौ सरस । बंभण वाहै ताव ।
चढजासी इणहिज समैं । जस दोमें बसुजाव । २९२ ॥

॥ छन्द ॥

कमठालाय चित्त धणी कलता । यत आयाय साकाय ऊलळता ।
भुव धारण वागाय पीठ भड़ां । धक चालण हाथ कियां धुहड़ां ॥२९३ ॥
जुग पौर रही निस आय जुओ । हव पाल बेगा असवार हुओ ।
धिण दूराए कोस नबैं धरती । फजरै बिच होय करी फुरती ॥२९४ ॥
रिछपालग घाट सुपाट रखै । अर बाब उभैं कर जोड़ अखै ।
बिप्र चारण वंस घणूं वलहा । दळ थंभ सवार भवौ दुलहा ॥२९५ ॥

सोढा वायक–दोहा

सोढा यम वायक चवै । जांमां करसूं झाल ।
मो ऊपर कर नै मया । पख हेक रहवो पाल ॥२९६ ॥

॥ सोरठा ॥

थिर देवै थांनांह कांकण बंध नाळेर कर ।
मोटे मझमांनाह सुज मैं पूगां चाकरी ॥२९७ ॥

पाबू वायक–कवित्त

मिळै सरब मांढियां पाल कथ गोप प्रकासिय ।
कमंध नाम यळ करण बरण अछरां खग वासिय ।

काळू रौ सिरदार जिकौ तेड़े जायलियौ ।
वित लेने वरन रौ जाय कुसले न घायलियौ ।
सगत रौ कांम बाहर सुहर वचन मुज्ज साबत वळै ।
रण जूंभ यसौ प्रब मरण रौ मोनू जोताइ ना मिळै ॥२६८ ॥

यळा तांजं तद अनन्त दिनन्द ऊगै पिछम दिस ।
गोरस गोरस अग्रै व्यास सिखवै माया वस ।
वक्र गति तज सरप दरप दूरजोधन मूकै ।
मौज तजै मैहराँण बाँण रिण अरजुन चूकै ।
गुरड वेव साहंस घटै मरण संक हणवंत मुड़ै ।
जग यता थोक थावै जदै पाल वचन भूठा पड़ै ।२६६ ॥

॥ सोरठा ॥

एही अखं अरज्ज । सोढा भेळा हुय सको ।
पह हरखाय परज्ज । राज अरोगे माँहरै ॥३०० ॥

॥ छप्पय ॥

ढाळ खंवै ढळकती मूठ तरवार ग्रहौ कर ।
कर दूजै रूमाल धके कालमी डोर धर ।
जगी मसाळाँ जोत पाल आभास वडो कण ।
साथ सरब सिरदार मैहर मरजाद सूरमण ।
दासियां दौड़ आगू दखै साथ विराजौ साँगणै ।
क्रणडोर छोड़ पूजाकरण पाल पधारौ आंगणै ॥३०१ ॥

ग्रन्थकरता वचन

कड़ाजूड़ लोहलोट पाल आयौ राय आँगण ।
सोढी कंवर सुप्यार अवल भूलाँ आभूखण ।
तेज तेज सूं मिळै किरण सिस मिळै प्रभाकर ।
हूर नूर हेक हुवा कहो राँणी जोड़े कर ॥३०२ ॥

सुप्यारी कंवर वायक

हुकम धणी जो हुवे साथ हालूं इण सायत ।
कहौ पाल चढ काठ मिळै सतियाँपुर माँहित ।
खग तोल ऊठ मिळ दोलहर सीख प्रबोधिय सायधण ।
काछेल वैंण ऊतर करण कनग्रोजे कीनूं कयण ।३०३ ॥

॥ दोहा ॥

ठहरौ ठहरौ ठाकुराँ । अखत म धारौ अग ।
सुपियारी नह छोडसी । सोढी थाँरो संग ॥३०४ ॥
हूं कद भेळी होवसूं । करसूं किण दिन कोड ।
वरराजा जावौ मती । सुपियारी ने छोड ॥३०५ ॥
आप पधारौ एकला । मेले पीहर माँझ ।
एकळडी लेसूं अवस । सारे थांरी साँज ॥३०६ ॥
पतियारो आवे प्रसध । राड़ रहे सोराज ।
सोढी थाँने साधसो । महिथळ अंबर समाज ॥३०७ ॥
पाछी नह लेसो पिया । सुपियारी री सार ।
राँडी हुय रैसूं नहीं । मिळसूं अगन मंझार ॥३०८ ॥
देवाँ नह मुजराँ दिया । छेड़ो वाधो छोड़ ।
हथ काँकण ले हालिया । रिण जूंझण राठोड़ ॥३०९ ॥

पाल वायक

सोढो आखर सांच रा । चित प्यारी सुणलेज ।
म्हारो आवै मौळियौ । जिण दिन म करौ जेज ।३१० ॥
जो हूं रहियौ जीवतौ । पोहर रखूं न प्यार ।
अमरांणै फिर आवसूं । ले जासूं अहै लार ।३११ ॥
सोढी जो रहिया कुसळ । मिळ करसां उदमाद ।
आवै काला आखरी । आ दिन रखजे याद ॥३१२ ॥

जीवां तौ गढ गूंजवै । थित बौह करसां थाट ।
सोंढो मिळसां सायधण । वैकुंठां री वाट ॥३१३ ॥
मेसरणैं बादळ महीं । रवि श्री हाथां रोक ।
ऐ वातां थवसी यळा । उण दिन अळग न ओक ॥३१४ ॥

सुप्यारी वायक

आप सिधावौ वेग अब । करौ भलां जुध काज ।
जो हूं सूरजमल तणी । रहूं न वांसे राज ॥३१५ ॥
गाढे विधवापण ग्रहूं । हूं न करूं तन हांण ।
पौंह जिण लाजै अमरपुर । सूरजमल सुरतांण ॥३१६ ॥
धीरज रख म्हारा धणी । पख दोनूं पूरीह ।
सुपियारी साथे सदा । जाई सूजे रीह ॥३१७ ॥
वरदायक सांभळ वना । सोढी धण रा सांम ।
एक घड़ी हो एकली । रखै न थां विन रांम ॥३१८ ॥
पाल दये पग पावटै । ऊतरतां ऐवास ।
श्री मुख फुरमावै वचन । सौढी ने छंवास ॥३१९ ॥

पाबू वायक

ऊबरियां जुध आवसूं । विलस करैसूं वात ।
मुआं म मेले एकलां । सोढी रहजो साथ ॥३२० ॥

सोढी वायक

कासूं आखौ ठाकुरां । विळकुळ भौळी वात ।
सुपियारी नह छोड़सी । सोढी थांहरौ साथ ॥३२१ ॥
हथलेवै भेळी हुई । नह होसी न्यारीह ।
सोढी रहसी सरबदा । साथे सुपियारीह ॥३२२ ॥

कोड लाड नांहीं किया । सुपियारी रे साथ ।
परौ सिघावै प्रामणौ । रह्यौ न हेकण रात ॥३२३ ॥

वनौ वनी नैं तज वुहौ । भालाळौ कुलभाँण ।
धणी तणौ सिर धारियौ । फूल कंवर फुरमांण ॥३२४ ॥

पाछा करलीधा पुरण । जांनी जीमण जीम ।
हय ऊठां चढ हांकिया । सरस विडांनां सीम ॥३२५ ॥

गावै पदमण गीत । महिपत भर बाथां मिळै ।
वेतां अरध वतीत । कमध अरोही काळवीं ॥३२६ ॥

॥ छन्द ॥

चढियीय हिंदवा भाण । साथ गोगदे चहुंआंण ।
सारांहि विळखतां सुरतांण । उण पुळ नीसरचा अमरांण ॥३२६ ॥

॥ दोहा ॥

भड़ तन सम भड़ाव । कमध भले भांलो करग ।
रटतौ पाबूराव । कमध अरोही काळवी ॥३२८ ॥

आधी निस अमरांण । ग्रहण अरध निस जूं जुऐ ।
मंडियौ घांण मथांण । पौह पाबू ढेबा प्रतै ॥३२९ ॥

सारे सोढां साथ सूं । जाभा करे जुहार ।
हव जांनी सारा हुवा । अस करहां असवार ॥३३० ॥

जांनी मुजरा कर वुवा । कीया मागां केकांण ।
हुंओ टळै गिर सम हठी । उण निसरौ अमरांण ॥३३१ ॥

कव यायक

दई भवानी रीभ कर । पमंग विलानी पाल ।
ध्रब छानी ताई तिके । मानी सूरजमाल ॥३३२ ॥

कस आयुध पाबू कमर । धयर घणौ मनधार ।
करण समर घांधळ हुओ । भिड़ज भमर असवार ॥३३३ ॥

पाल भुजां साबळ पकड़ । साळ लखौ अणसंक ।
कळह साल आगे कियो । ढाल जेम धानंक ॥३३४ ॥

कवत्त दोहौ

पाबू खड़िया पमंग नेतियारां संग लीधां ।
हाडां रै पड़ हेट कमध घूमर थट कीधां ।
सर लंबैं तट सरब भूप मुजरा कर मलिया ।
जुदा जुदा जांन रा तूंग घर दिसनै टलिया ।
वाटां वाटां विडंग अधक खड़ै उताळा ।
रन ऊज रात रा वहै जांनी सिधवाळा ।
पाल हो पधारै परणनैं नायकां साथ लीना नरां ।
अमरांण हूंत खड़े अलल गढपत सह जावै धरां ॥३३५ ॥

॥ दोहा ॥

पुणै सरब नृप पालनै । वीछड़ता जिण वार ।
टळै जठालग टाळजो । वडका पणौ विचार ॥३३६ ॥

कवत्त संक्रखणरौ

जांमकियां जगमगां साथ भूथारण सींधड़ ।
कोड़ भिड़ै कस समार धकै जुझिया भड़ ध्रीगड़ ।
खाटखड़ां वडगड़ां पुळै काळवी पुलावै ।
कभी वाग ठलवळां यतै कह पाळा आवै ।
नैहराळ माग चालैं नखत धाट हुंतां थळ धरणनै ।
गूंजुवै सीस आधी गया पाल पधारघौ परण नै ॥३३७ ॥

॥ छप्पै ॥

अतरयणी ऊजळी गयण नांहीं वादळ गण ।
निरमळ जळ नाडियां दयै हैला पैलै कण ।

ध्रंग खूह ढांणियां चवैं आहट सदमारां ।
हरिया मारग हलण धरा पंडुरदुत धोरां ।
ओडांमण गरजैंत चीह् पपीह् वडां सिर दरां ।
लवै दादुरा करै भली बोह् भंकरां ।
अत पवन मंद वजै यळा हरिअ ह्वार निहारिया ।
गूंजवै सोस आधी गयाँ पाबू परण पधारिया ।।३३८ ।।

।। दोहा ।।

हरिये मारग हींडता । मन सागर मन मोट ।
लायौ हरियौ अरध लग । कमधज भूरै कोट ।।३३९ ।।
मह सूरौ पूरौ मरद । खळ धू रौ खेगाळ ।
पाराधी नूरौ पुणै । भूरां भूरौ भाळ ।।३४० ।।
राव ताजण ही रात । आवे सुतौ गूंजवै ।
पह तिणरी परभात । कोळू धव कीधा कटक ।।३४१ ।।

।। इति श्री पाल पोरसातने आसिया मोडजी विरचिते
आवाहन रयस विवाह रौ समौ सम्पूर्ण ।।

—

।। अथ आक्रत छन्द ।।

क्रम राव वडौ अनियाव कियौ। दुरिया मुंह पाल विसास दियौ ।
नृप रौ मुख देखण जोग नहीं । मण दीह रयौ सुविचार महीं ।। १ ।।
खड आरुण स्वदन वाज खथा । जिम ओळ ग्रहां चल अस्त जथा ।
लखणां रज वादळ ओह लही । अग अंक धस्यौ दरिआव मही ।। २ ।।

। छन्द त्रोटक ।।

तेय छाड के बाय बंध तुरी । दुरियां निस काळांय डेर दुरो ।
प्रथमी पर नांखिय भांण पला । जंगमां चढियां नर धेन भळा ।। ३ ।।

अध रैण भवानिय आय यतै । पुणियौ यम देवळ डैब प्रतै ।

देवल वायक

जिंदराव तणा दळ हेम झला । अखबू दुरिया तुम खेड़ यळा ॥ ४ ॥
कह वीर चकार थका किणरा । दळ आयाप ायक दौयण रा ।
थित आज चकरांय लाज थनै । व्रनवीत भळांमण दीध वनै ॥ ५ ॥
खळ थाट घणा पिंड खाय करां। कस भीच हमै वरदायक रा ।
तसलीम करै भड़ हाक तबै । सांभियां कस आवध भीच सबै ॥ ६ ॥

डैंबे वायक

अग जेठिय जूंझ भुजां झल नै। दखवै यम वायक देवल नै ।
अबुवाल अफीण अणी अड़ियां। केई भींच करी सिर काठड़ियां ॥ ७ ॥
अर नार सुहागन होय अखी । भ्रख सै वड ठाकुर सेर भ्रखी ।
सिरदार विमांण घणा चढियां पुळसी वत तुज्झ अमां पड़ियां ॥ ८ ॥
रण पूर लरावू चठार गतां । सुर राय री लार वडी सगतां ।
फजरै पायकां भुज जूझ फतै। महमा करवावण राड़ मचै ॥ ९ ॥
सत्रवां पर घाव घली सुरगां । हळ सीखळ जीद चली दुरगां ।
गुडसी खळ पायक मोद घणै । तुव पीठ भवांनिय पाल तणै ॥ १० ॥
रण डोहण साथ घणां रिमरां । कमठाळांरी खांभ बंधी कमरां ।
धुर मूंड अमां सिषमाळ धरू । कछ देसिअ देव प्रणाम करू ॥ ११ ॥
गह पूर मदंध दुगाळ घणा । तिण वार कसै अबुआल तणा ।
उण वार महाभड़ डेंब इयूं । कुस मांडव भैरव रूप कियूं ॥ १२ ॥
कमठाळ कंठीर जिसौ कणणौ । हरणां खुर आंच क्रमै हणणौ ।
अमरांण में भूप भालाळ तजां। भिड़ बंधिय भीच कंदाळ भुजां ॥ १३ ॥
धुर ऊपर नांम अखी धरणौ । मन पायक आदरियौ मरणौ ।
रज धूंधळ झाटक काढ रखी । भिड़ अंत उठाविज सोर भ्रखी ॥ १४ ॥

जगजेठ डिग्रंतोय आभ झलै । हड़मांन कनां भड़ ढेब हलै ।
जुध जूटण झूंसर कांध झळी । अरियाँ घर काळ जिसौ अमली ॥ १५ ॥

विप पूर महा रुद्र भेख वणी । तिण ताळरि नाळ दुगाळ तणी ।
करनाळ करा करमाळ करै । लोहचाळ विनै रत पीण लड़ै ॥ १६ ॥

चंद्रहास में तेज घणौ चमकं । हथनाळ में काळ झडै हमकै ।
अथमें नभ जोडर पेर उठी । अपठाँण यतं अमराँण उठी ॥ १७ ॥

रिप तूंगिय डाक वजै रहियूं । गुंजवै पर चंद भड़ाँ गहियूं ।
धुणियाळ उगाड़िय प्रोलधरै । क्रमियाँ मग जायल तूंग करै ॥ १८ ॥

सवळाँ पख रैण विखै सुणियाँ । गणणाइह अंबर ओधणियाँ ।
घुरराय अलूकरताँ घुरियाँ । करराय वडाँ लड़ कोचरियाँ ॥ १९ ॥

कवळ खित जींद चमू कलियौ । सतराँ सुंग्र ढंबोय सालुळियौ ।
भुरजाळाँ री धूपर बाँध भड़ाँ । उण घालिय फाटिय घूंभ अडाँ ।
तन सूर म तेज करूर तपै । सुह हावत सीतल वात सुपै ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

खेल भुजां बळ खेलणौ । आहव मन ऊभेळ ।
वरदायक दीठां वणै । वण पुळ रौ वाघेल ॥ २१ ॥

संग चौसठ लेवण चठा । खित बावन खेळाह ।
हव ढेबौ सभ हालियौ । ब्रिड़वा वाघेलाह ॥ २२ ॥

॥ छन्द त्रोटक ॥

धन लूसण कीट कटक्क धकं । वसुधा रिव ऊगम जैण विखं ।
पह फाटिय सूर उदे पर यूं । फजरे अर पाल धरा फरियूं ॥ २३ ॥

धुरजां चढ लीनिय धेन धकै । वित टोळण क्रूकाय वैण बकै ।
मिळियौ राव बूडोय दाव मतै । आय वित्त लिया दिन ऊगमतै ॥ २४ ॥

अवनो रज डेरण ऊपड़ियूं । त्रंब थेट न जाँण दई तड़यूं ।
लेय धेन सवाळख लोवलियूं । क्रमिया मग जायल तुंग कियूं ॥ २५ ॥

ग्वाळिया हय फेट धकै गुड़िया । अवनी खेह लाटाय ऊपड़िया ।

पुळिया मग वेग पगाँ पणयूं । तेह कूक करै बोह लेणी यूं ॥ २६ ॥
घर मंडळ गैण दबै धुड़रै । भुरजाळेय सेन कियौ भुहरे ।
लख ग्रंध दिसा निस धेन लही। चाँदियै कळ पाबूनं दीध सही ॥ २७ ॥
घलियौ गढवाड़ाँ में सोर घणौ । ग्रह ढोल घुरै बह छेड़ तणौ ।
पय भायल मायल बूँनपुणं । कछ देसाँना ग्रायल लीध कुणं ॥ २८ ॥
भेह रायल देवल एम भणी । तक सूझेहै जायलराव तणी ।

गढवाणां वायक

भणजै गढवाडांय लाज भगी । लोवड़ी कर सावळ साद सगी ॥ २६ ॥
दुख देण ग्रमाँनेय यां दुसटी । वळ घेन लई सैगतां त्रिसटी ।
पुळ ग्रायै यै नायकव ाल वळी । वध तेनाय देवल पूछ वळी ॥ ३० ॥

देवल वायक

भगग्या ग्वाळिया तन भीत भणै। कह वीर ग्रमाँ वित लीध करणै ।

नायक वचन

जग जेठवी जायल नाथ जिग्रौ । कण एठिय मैंदर साथ कियौ ॥ ३१ ॥
दरकां ग्रस ग्रागळ वित्त दिया । करबा जुद पाबुहूं चित्त किया ।
कर सावळ चारण दूळ क्रमी । ग्रंब वाहर बूड़ाए राव तुमी ॥ ३२ ॥

गढवाणा वायक

धणिया पण दाखव ग्राज धणी । विखमी धणि ग्रा पुळ ग्राय वणी।
खळ लीनाय मो वित खार खधू । रजवाड़ाँ प्रभाकर राव रिधूं ॥ ३३ ॥
मज लेम कवाँणैय मूक ग्रही । गोलिये भण थांणैय भूम ग्रही ।
थळ ग्रायत वागड़ छोड़ थितं । पळटी धर धाँधल पाट पतं ॥ ३४ ॥

कर साबळ न्हाठिय कंठ कळी । लख फाटिय वीर लखी लोवड़ी ।
सच सीधिय कोय नहीं सगती । प्रव पूगेय जायल नेर पती ॥ ३५ ॥
चुंग्र थाँणाय चारण हीण सकै । धवले दन कोलुग्र गाँम धकै ।
कमधाँ घर राज किसूं कहला । वत वाहर वीर चढौ वैहला ॥ ३६ ॥
ग्राया बूंबड़ी गळ देत ग्रठै । कमठाळाँ रौं ठाकुर पाल कठै ।

देवल वायक

धांधळां कुळ सूरज ऊंच धड़ौ । बरवा घण घोड गयो बनड़ौ ॥ ३७ ॥
वित लींनाय जींदिये एथ वगां । पड़िया ताय वेहळ तुज्झ पगां ।
ऊतारिय ग्रोडिय तो ग्रवळै । वत वीर हमे तोंय हूंत वळै ॥ ३८ ॥
मारुग्रा व्रन ग्रोठेभ धीर मतू । पह वीर गरीबांय पाल गतू ।
गढवां वित लीनाय कोण गनै । कह कूकत देवल राव कनै ॥ ३९ ॥
धर घावांय बूंब दयां धरणै । सरणा यांय चूंथ लिया सरणै ।

बूड़ै वायक

थिर रांख्याय थेटुग्र जेण थनै । कह कूकत देवळ राव कनै ॥ ४० ॥
धांधळां घर बेध घणूं धुखियौ । दुखतै निस दीह म्हूं दूखियौ ।
विप सिंघज वीन थियौ वरधा । सगतां पिंड मुज्झ नयी सरदा ॥ ४१ ॥
दुख वींचख ऊतर राव दियौ । कळळाहट चारण साद कियौ ।

देवल वायक

फिट राव बुढ़ा पुळ एण फरै । घल डाक कूकाउग्र ढोळ घुरै ॥ ४२ ॥
घट मुज्झ भरोसोय तुज्झ घणौ । तुंग्र वीर पोतो ग्रासथांन तणौ ।
वड बंधव पाल समौवड़ियां । किरणाळ चौवीसेई कोटड़ियां ॥ ४३ ॥
सुत धांधल ढाल वरन्न सही । नटवाराय तुज्झ विरद्द नहीं ।

बूड़ै वायक

भुगतूं दुख वाद थयौ भाइयां । विरदावौय पाल बनौ बाइयां ॥ ४४ ॥
ढिग ग्राविय लार लियां ढचरी। कंक ग्रालण चारण तूं कछ री ।
तुम जावौय गोळ मथांण तजै । ग्रतरै सजियौ त्रंब हूंत ग्रजै ॥ ४५ ॥
कर दावत वाहर कारणियां । चढसी दुरवारिय चारणियां ।

देवल वायक

धन मुज्झ दरावोय जींद धकै । बूग्रड़ा मत कूड़ाय वैण बकै ॥ ४६ ॥
सत न्हांढौय नासत ग्रायौ सही । रजपूती निरेजम नांह रही ।
किम याल रसातळ डोर कटै । नरनाथ बूड़ा पुळ एण नटै ॥ ४७ ॥
दळ नांह मिल्या सुखमान दुवै । हव वीर ग्रमां स्युंग्र हाल हुवै ।
सबही समधी मिळ मेळ सला । भड़ एह नमाया मेवास भला ॥ ४८ ॥
वत जाय ग्रमीणौय वार वही । नरनाह धरां ग्राज पाल नहीं ।
रन रोवैय देवल दूख रणै । सिधपाल ग्रमीणाय वैण सुणै ॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

धांधळरो सुत रणधमल । दूजौ बाहड देव ।
वरियांमां वाकारियां । जुजठळ स्वातक जेम ॥ ५० ॥
कूकै गढवणियां कळह । धेन लई खळ धूत ।
कांधळ मोटळ मेह करण । पांण वजौ रजपूत ॥ ५१ ॥
धीचीजै गायांह । धरणां धाबळिग्राळियां ।
पाबू दुख पायांह । ग्रांपांनै मरणों ग्रवस ॥ ५२ ॥
पकड़ें पमंग पलांण । कड़ ग्रावध खट तीस कस ।
भड़ वळिया कुळभांण । धर खत्रवट घोड़ां धकै ॥ ५३ ॥

॥ वात ॥

बलांणा घोड़ा रजपूतां रे घरे था सौ धांधलोतां ललकारिया जरां भीण करवा लाया, जका वगत सगतां ऊभां राव बूड़ाजी धकै कही जद पाछो बुड़ै कणवारिये कनै कही ।

॥ छन्द ॥

कोटवाळ बुलाविय राव कहै । परगै सब पाळोय गांव पहै ।
करणां तल वैण सबै कढजो । चारण वित वार मती चढजो ॥ ५४ ॥

बूबड़ी गळ बोलत राड़ वळा । कळ देखुअ चारण देव कळा ।
अण ताळ त्रसूळांए चाड अगां । पड़सी हव जींदल आय पगां ॥ ५५ ॥

॥ दोहा ॥

दुरस पखां पर देख । कोय अमां बाहर करै ।
वरजै ढोल विमेख । सुण चमार कुबत्री सबद ॥ ५६ ॥

तांणे तूटै तंत्र । खाप दियो जद सूं इनूं ।
मनै न कुळ ना मंत्र । बूड़ो खाप नुगुरो विवध ॥ ५७ ॥

ऊठां भूळ अपार । घोड़ां रा कर घूमरा ।
नींबै बाहड़ लार । कमियो थळवट रौ कटक ॥ ५८ ॥

आ सुण लोवड़िआळ । हरखै अत राजी हुई ।
दो त्रण पड़ै दुकाळ । सत नह ढटै चमार रो ॥ ५९ ॥

उरस लगी अणिआंह । खेहाखमां भळ खवें ।
जोवौ जोगणिआंह । सगत त्रसूळ न चमकिया ॥ ६० ॥

मोर चढै खळ मारणी । महिष चढै भाळांण ।
वाघ चढै वाघेश्वरी । नाग चढै नागांण ॥ ६१ ॥

॥ दोहा सावळ रा ॥

जाखी खायोय जींदरो । त्रंब लायोय थण ताळ ।
आयोय वेग उतावळी । धावोय धाबळियाळ ॥ ६२ ॥

धीचीवियूं घोड़ेह । अम ईणो वित आतळै ।
बूड़ा लज बोडेह । फिरस्यूं बैठो फातळा ॥ ६३ ॥

आवै थूं आईह । सावळ रा सांभळ सबद ।
त्रसगत भरताईह । जोगण खपरे जींदरी ॥ ६४ ॥

॥ स्राप ॥

स्राप जाघसो अऊत । जायो थासी जोगटो ।
कुखत्री कमध कपूत । वीर वचन ग्रमणौ वदे । ६५ ॥
हे न तायळौ राज । तर चोयल भालौ टकै ।
मरसौ जुध नै माज । वीर वचन ग्रमणौ बदे ॥ ६६ ॥
ग्रागे कुखत्री एक । तोजेही हूंतौ त्रपट ।
सांप्रत कीनौ सेख । नाच नचायौ नागवी ॥ ६७ ॥
कुखत्री लोपी कार । बूड़ैनै जींदै बहू ।
चौड़े चूंथ चकार । हमणौ वित ले हींडिया ॥ ६८ ॥
वित लेजावै विसटिया । पांण चकारां पाड़ ।
मारौ ज्यांनै मौटवी । सगत त्रसूळां चाड़ ॥ ६९ ॥
पीनौ धारे पांण । हेकण चळुए हाकड़ौ ।
रै कछ धरणीं रांण । ग्राज कठी गी ग्रावड़ा ॥ ७० ॥
नवलख सोरठ नाथ । तैं कीनौ कुलड़ी त्रषत ।
मारण जींदौ मात । बेग सिधावौ वरबड़ी ॥ ७१ ॥
पावे पूंगी पार । नागां गढ गिरनार ही ।
महिष सूर जूं मार । जोगण खावो जींद ने ॥ ७२ ॥

देवल वायक गढवणां सूं

जावै वित ले जींदरौ । घोड़ां ग्रागळ घाल ।
लोवड़ियाळां घर नहीं । पीहर म्हारा पाल ॥ ७३ ॥
कूके कमधां कोटड़ी । देवळ दुखदाईह ।
गढवां ग्राज ग्रळगो घणौ । भालाळो भाईह ॥ ७४ ॥
लोवड़ियाळी वित्त ले । जावे जमरांणाँह ।
कूक न पूगे कमध ने । ग्रळगो ग्रमरांणांह ॥ ७५ ॥
सेस फुणंधर सरकती । मेस करत रुंडमाल ।
यण पुळ जो होवत ग्रठै । भाई मो भालाळ ॥ ७६ ॥

देवल चख जळ देख । पाबू मिरजो पकड़ियौ ।
धरियो म्हांसू धेक । विजलग हल्लां वाढियां ॥ ७७ ॥

॥ कवित्त छप्पै ॥

जितौ पटंतर सांच कूड़ जिम केहर जंबक ।
हरण वाघ किम होय होवे चींटी कुंजर तक ।
निशा द्योस अंतरो जेम बंबूल सूरांतर ।
रवि समान खद्योत सेस जळ साप समीसर ।
देवळ कह सगतां अगर पाट देख मत पांतरौ ।
है पाल अनै बूड़ै तणौ यतो बरोबर आंतरौ ॥ ७८ ॥

॥ दोहा ॥

धक बूड़ा कोळू धणी । राव हुवो तूं रंक ।
वायक सुण बाहर बुग्रो । धन ढैंबा धानंक ॥ ७९ ॥
आयौ रांघड़ एक । फेटांणी कोळू फलौ ।
दारुण रगतां देख । परळोकां नूं पूछियौ ॥ ८० ॥

लोकायत बायक

गढवां री ली गाय । अप्रछन खोची आय नै ।
बूड़ौ तज आकाय । मिळ बैठौ जींदो मई ॥ ८१ ॥
बाहर बत दोना वचन । जग सारौ जाणेह ।
पाल गयौ परणीजवा । रावत अमरांणेह ॥ ८२ ॥

सांमन्त वायक

कळपो मत काछेलियां । दिल भीतर दुख दाय ।
सुत धांधळ सिध सांवणौं । रावत देयूं वताय ॥ ८३ ॥
रावत आधो रैण । आयौ परणीजै अभंग ।
वकता सांभळ वैण । चित हरखांणी चारणी ॥ ८४ ॥

॥ कवत्त ॥

करग अभागौ कियां वदन वींटियां बुकांनो ।
धांनंक कर ढाबियां क्रमै पायक चहुं कांनी ।
सिध रैवंत रा विरद दुरद घट देवल दीनी ।
विप रज सूं वींटियौ भंवर परसेपैं भोनी ।
कमठाळ भीच आगे कियां भिड़ बंधै भाराथ रौ ।
आवियौ गूजूऐ रूप यण रावत आधी रात रौ ॥ ८५ ॥

देवल वायक दोहा

सांमंत नै सुभराज । कहियौ गर आयौ कमध ।
आमीणी अत आज । जाणां जायस तौ नहीं ॥ ८६ ॥
भुजलग हथ भालाळ । गढवण आयौ गूंजुए ।
तें कहियौ यण ताळ । वीर चिरंजी रैवसूं ॥ ८७ ॥
वित देवल वालोह । जांणू हमें न जावसी ।
माई भालाळोह । आयौ कोहर ऊपरै ॥ ८८ ॥
हालौ सेहै सगतां हमै । भाखां जण नै भेव ।
कूक सुणै कासूं कहै । देखां लिछमण देव ॥ ८९ ॥

दूजी सगतां वायक

मेहण तजै मरजाद । अरक पिछम दिस ऊगमै ।
सांभळ साबळ साद । पाबू नट बैसे परो ॥ ९० ॥

देवल वायक

कमधज सांभळ कूक । धेनाळी जायल धणी ।
बूड़ै मांडी बूक । नरपत कुखत्री लला ड़रौ ॥ ९१ ॥
भारी तुज्ज भरोस । रिन में थित बांधे रह्या ।
खीची लीनी खोस । सारी मो वाली सुरै ॥ ९२ ॥

देवल करै पुकार । गढवण आवत गूंजुए ।
सुत धांधळ संभार । वीरा तो वाळा वचन ।। ९३ ।।

दूजो थां विण देव कुण । धाबळियाळी धीर ।
बूड़ो खारो बोलियो । पाबू म्हारा पीर ।। ९४ ।।

पड़ै चखां पाणीह । जोर नहीं लागै जको ।
देवल लूंटाणीह । गढवण कोळू गूंदरैं ।। ९५ ।।

मूको गोळ मथांण । पड़े इज पकड़ीजसो ।
क्यूं दीधी केकांण । कोळू रो ठाकुर कहै ।। ९६ ।।

खीची अस खड़ियाह । बित ले आगळ विसटियै ।
धांधल धूहड़ियाह । हव सह ताळी दे हँसै ।। ९७ ।।

नीबौं तुज्ज नजीक । सतवादी तो ज्यूं सदा ।
कमधज नग कोड़ीक । बाहड़दे ऊदल बिनै ।। ९८ ।।

लख नव सगतां लार । दौड़े करजाळो दियो ।
पाबू कनै पुकार । काछैली आवै करण ।। ९९ ।।

।। छन्द त्रोटक ।।

बकती मुख सावळ देव बळी । कळपै चारणी गत हंस कळी ।
लग वेध अमीणिय धेन लए । दुलहा सुण देवल साद दए ।।१०० ।।

गणणाय वळा वळ भींच गळी। भुरजाळां री मूंहर आय भळी ।
पड़ पायक पावेय वैण पुणै । चुण देवल सावळ पाल सुणै ।१०१ ।।

मिळ आयोय खीचिय वाद मतै। बह कायल बूड़ेय वात वतै ।
मनवै निय वायक पाल मरै । कल लाग वडो अनियाव करै ।१०२ ।।

पुळ आज बुरी अत पाल प्रतै । जोय बूड़ोय जींदोय हेक जथै ।
बिभ ना पुळ अंतर पाल वये । दिन आजकी देवल द्राह दये ।।१०३ ।।

उरडो कर साबल बोल अछै । पुळ आविय जोगण दैण पछै ।

देवल रौ साद

न रही घर संपत धेन नठी । किरणाळ सिधायाय पाल कठी ॥१०४ ॥
सगती राय बान्धव सूर सती । जग जागत सूतौय पाल जती ।
जिय जावत धार विना जखंमी। वनड़ा आज वार घणूं वखमी ॥१०५ ॥
खेंवतिय गूगळ धूप खुरी । उण त्रंबां नै ताजण मार अरी ।
करती सर चंबर प्रांण कळी । धुरजांळांय खोसलई धवळी ॥१०६ ॥
परियंक तजो परिआळ पना । वडंगांण चढौ हरिआळ वना ।
पुळ गैण विमांण चढी परियां । काळवी चढ दे सिर केसरिया ॥१०७ ॥
बजरै घर व्योम सिसू वरळा । करती केय श्रोण तणा कुरळा ।
खड़ आवत सूनांय खेड़ांय री । अर फाटक पेड़ उखेड़ांयरी ॥१०८ ॥
धिप सूतोय नींद मुरद्धर रा । गउ घाट उलंग हली गिर रा ।
भड़कै खुरही हय अग्र भगै । असमांन न सूझत धूंध अगै ॥१०९ ॥
न रही चख आंसुअ धार नरै । कुण पाल तुमां बिण वार करै ।
असमांन गी खेह उड़े यळ री । वज हाक वळा वळ साबळ री ॥११० ॥
चढियो नह केसर पाल सुणौ । त्रंब आगळ वाजैहे वेढ तणौ ।
पाराधिय काळ जिसा पुळता । अस अग्र न आयाइ ऊलळता ॥१११ ॥
किय धू दुलहा पण मोह कना । अन वाहर खेंग पलांण वना ।
राअठोड़ तुमै घर बैठ रह्यौ । वित्त आज अमीणौय धाड़वह्यो ॥११२ ॥
सुण हाक जगै उठ पाल सही । वदळै तुरंगांण रै गाय वही ।
पाराधिय लोधिय आय मळै । मभ नायक पेमोय चांद मिळै ॥११३ ॥

पेमे चांदै वायक

सुण लैवत वात तुमां सुरही । भरणौ कर दांम दयां भरही ।
जिण वार वुयो लछमंण जती। रत साहस सूर दातार सती ॥११४ ॥
कर हाकल भीलांए दूर किया। दरसाव दिनंकर जेम दिया ।
मणधार जुधार जती मत में । सुण सावळ काव लिये चित में ॥११५ ॥
सुत धांधळ केसर वाग सही । जगजेठ मणंधर नाग जेही ।

लघुता दुख दोवडियाळ लखै । धिक रोस मुराड़िय आंख धिखै ॥११६ ॥

॥ दोहा ॥

भूपत सूतौ भूहरे । भर निन्द्रा भालाळ ।
अब सावळ सुण ऊठियो । कोप घड़े किरणाळ ॥११७ ॥

॥ सोरठा ॥

हे सावळ हाकोह । गायां रज मंडियो गयण ।
पड़े ढोल डाकोह । गाजे कोहर गूंजुए ॥११८ ॥
वरन ढाल आवे वुही । सूळ भाल चांडीस ।
नींद पाळ ग्रह भाळ नर । पाल ढाल पसांडी ॥११९ ॥
समहर दांम सुजाव चढ । ऊमर घाव आलोच ।
व्याह लई इण बखत में । बेभए बाह बलोच ॥१२० ॥
जांगीयौ वारै जुआ । जिणमे एकज जांण ।
घुरै आज गढ गूंजुए । सिर दधरेले सिवांण ॥१२१ ॥

॥ कवित्त ॥

अंग आळस मोड़तो नैण धोळतौ निद्रालू ।
कर मेंहदो रंग कियो रोस भरियौ रुद्रालू ।
परणेत पोशाक झिलंब पैरियां जवाहर ।
सिर दुपवेटां बांधियां झळळ सोभा जर जेवर ।
सूरतन तेज जीतौ समर कोटां सिर नांमां कियौ ।
डोरड़ा बंध मुजरा दयण इण विध पाबू आवियौ ॥१२२ ॥

॥ दोहा ॥

सुण आयौ सावळ सबद । अंग पौरस अजरोह ।
कीनौ देवळ ने कमंध । मौड़ बांध मुजरोह ॥१२३ ॥
सगतां विच ऊभौ सुपह । धांधल ऊंच धड़ोह ।
कर जोड़े मुजरा करै । वरदायक वनड़ोह ॥१२४ ॥
आखै जींजलियाळ । देवळ सगत आसीस दे ।

भवयण तन भालाळ । रहण अजरोमर रहो ।।१२५ ।।

पाबू वायक

रे बायां बोली रहौ । धेनां आसी घांम ।
यळ पाबू ऊभौ पते । कीसा बळ रो कांम ।।१२६ ।।
गढवण थूं गैहलीह । कूकी जाय बूड़ा कनै ।
पोते दी पैहलीह । सुरही लेवण री सला ।।१२७ ।।
अचळा मेळा आविया । सारंग रा सैहचाळ ।
त्रंब लीनी तीनूं तड़ां । पूठै चढसी पाल ।।१२८ ।।
सगतां री लीनीं सुरह । बीच चरंती वेड ।
कर आयौ बूड़ै कहौ । खीची ठाकुर खेड़ ।।१२९ ।।
सूकत क्रख जळहर सबद । लगां अगन रंग लाल ।
पायौ दरसण पाबुआं । पूरै संकट पाल ।।१३० ।।
मैहंदर नै मारूंह । वातां ऊवारू वसां ।
चौड़ै सिणगारूंह । माथा हूंत महेस नै ।।१३१ ।।
आवे मोनू याद । बाई नह भूलौ वचन ।
वाहर करवा वाद । आयौ खड़ अमराण सूं ।।१३२ ।।

देवल वायक

वीरा गायाँ बाळ । अरियै फौज उथाळ नै ।
आज विरद उजवाळ । तूं सीहै धांधल तणा ।।१३३ ।।
जायल रो जूंझार । गायां ले जावे घरे ।
विरदां बाळी वार । कीना इज सरसी कमंद ।।१३४ ।।

पाबू वायक

आज घलूं अममांन नै । बाई चौड़ै बाथ ।
करूं अरुण रंग समर कर । भिड़ज भंवर भारात ।।१३५ ।।

कलपत उक्त

देवळ छोडू जींद नै । बाई पेमा लार ।
मारू मैंहदर राव नै । तो लछमण अवतार ॥१३६ ॥
जिका अगे हूं जाणतौ । कूड़ी हुई न काय ।
लारे वीर लिरावसी । गडवां वाळी गाय ॥१३७ ॥

॥ सोरठा ॥

आयौ ऊतालौह रहियौ कौहर रात रौ ।
वित देवळ वाळौह प्रसण लियौ परभात रौ ॥१३८ ॥

इणमें इधक मौरौ देवल वायक

पाबू लोपी पाज । जींदै नृप मैहरांण ज्यूं ।
लोवड़ियांळां लाज । राखे तूं जिण दिन रही ॥१३९ ॥

पाबू वायक

देवल तूं मत कर फिकर मोटो देख मर्थाण ।
कळह विरोड़ुं एकलौ घांसाहर घमसांण ॥१४० ॥
कह देवल कीभौह आंखां जळ न्हांखै यतौ ।
यळ साबत ऊभौह पाबू बरस पचीस रौ ॥१४१ ॥
फजरै अर फरियौह धेनां थट धरियौ धकै ।
कहै यम केसरियौह म्हैतौ आदरियौ मरण ॥१४२ ॥
देवल नूं धीरज दये सुत धांधल मनसूध ।
गायां जाती गढवरणां खुरियां सू धड़ खूंध ॥१४३ ॥

देवल वायक छन्द त्रोटक

भुरजाळ अमै दुख दीन भई । गढवालों तणी मरजाद गई ।
व्रण जात टळां ऊपहास तिका । जिंदराव करी मोय मांभ जिका ॥१४४ ॥

धर सीस ग्रमां नह कोय घणी । तूं रखै लज लोवड़ियाळ तणी ।
किय होय बहूविध कूक कियां । ग्रर जाय ग्रमीणिय धेन लियां ॥१४५ ॥

पाबू वायक

भालाळ क्रोधाळ स्युं वैंण भणै। मिळ मूंछ ग्रोहाळ रोसाळ मुणै ।
बाइयां मत कावळ वैंण बकौ । धुर ग्राज हुसी मोय हूंत धकौ ॥१४६ ॥
धट भांजण मो मन चाह घणी । ब्रन कांम ग्रनै ग्रंब वार वणी ।
कह कूक करै किण कारणियां। चुप रौ चुप रौ चुप चारणियां ॥१४७ ॥

चारणियां वायक

निबळै दुख नीर भरै नयणै । गऊवों रज उड्ड चढा गयणै ।
वत खोसय लीन घणी वणियां। चुप रै किम बांधव चारणियां ॥१४८ ॥

पाबू वायक

ढळ सैस फुणां धर मेर ढहै । रिण वांवत जावत पाल रहै ।
रिम ग्राभन छोडुग्र फेर रसा । दुर जासिय जिंदोय कोण दसा ॥१४९ ।

गढवणां वायक

निपणां वत वाहर कोण नड़ै । चारणां धन खोस लिया चवड़ै ।
घट जींद कुखत्रिय वेस घणौ । तिल तागत मांनत मुज्झ तणौ ॥१५० ॥

पाबू वायक

कुसलै ग्ररजाय चमू करणी । जद लाजत पाल तणी जणणी ।
घळवूं सत्रूग्रों सिर धाव घणौ। तद जांणैय धांधल राव तणौ ॥१५१ ॥
जोयसौ धुग्र सात पयाळ जमै । गयणा गउला धुग्र एक गमै ।
महरांण मथूं पुड़ फेर मही । सगतां थांरी लाऊंग्र धेन सही ॥१५२ ॥

देवल वायक

कवळू पत लूंटण बैंण कह्या । रवि अंसिय ओठेभ आय रह्या ।
गमिया धन नांह धणी गवळूं । कछ देसांय आंण घटी कवळूं ॥१५३ ॥
जुड़सी कद धेनांय फेर जुई । हव काछ अमां बोह दूर हुई ।
सुरही लिय केसर राज सटे । नवलाख रौ पीहर नांज नटै ॥१५४ ॥

पाबू वायक

पल सूद मूंड महेसर रै । संगलै वित नाए कैसर रै ।
वदळै लेय जासिय जींद सही । कळ पाल सजीवत जोग सही ॥१५५ ॥

देवल वायक

निज बीर चकार साकार नहीं। रूपहां कुखत्रीपण लीध सही ।
गढ ओळ सदा मढ लाज ग्रहं । मढ ओठ गढां मरजाद मही ॥१५६ ॥

पाबू वायक

कमधां गुर ऊसस वैण कहै । रवि अंस अजे घर सीस रहै ।
रणहूं धलसूं रगतां रिपरां । खळ मैंदर जोगण रै खपरां ॥१५७ ॥

देवल वायक

बइयां मत साद दयौ बौहळा । कमदां कुळ देख अपांण कळा ।
धेनां दिन खोस लिवी धवळै । कव कासुंअ वीर बकूं हवळे ॥१५८ ॥

पाबू वायक

यण रोम तदै जेयबे देख यते । परणीजण गौ अमरांण प्रते ।
अर लेवूंअ आपड़ आइ ऊरा । परते नह छंडुोअ सिन्ध परा ॥१५९ ॥

अपता पण जींद तणी न रही । चारणां धन गेच लई सुरही ।
अंब पाबू ऊडै रज ग्राव तिके । जिंदराव तणा दनमांन जके ॥१६० ॥

देवल वायक

सुपहाल अमीणाय पीर सुणौ । गढवाडां में संगठ आज घणौ ।
पित धांधल अंस रूदैव प्रभा । यम आखत चाल ग्रहे ओळभा ॥१६१ ॥
पड़तौ जळ देखेय पार पखां । चित चायौय धांधल चोळ चखां ।
जल बूनम नांखेय सोक जळा । कुळ जींद करू जळ बोळ कळा ॥१६२ ॥
कळपै सगती थूअ केण कजै । यळ ऊभौय धाँधल पाल अजै ।
सुण देवल नीर म नांख चखाँ । जम भेट करू वत लीन जकां ॥१६३ ॥
मत आंणव धोखोय धेन मतै । जग सीस पाबू घट प्रण जितै ।
सगती सुण मोविय आज सही। रिणवां वित लायांय लाज रही ॥१६४ ॥
सुत थांधल धीर दये सिधियां । पह पाल बुलाव्याय पारिधियां ।
धन लीधाय जायळनाथ धलौ । चांदियां वत वाहर बेग चलौ ॥१६५ ॥

चांदै वायक

पुणचां दौय पाल सुणौ प्रथमं । अब आसिय मौ सुत जांन अपं ।
रख क्रोध ग्रहौ तन धीर रसा । दुर जासिय जींदोय कोण दसा ॥१६६ ॥

पाबू वायक

रजपूतिय हीण लगै रटणौ । नायकां पुळ एम नहीं नटणौ ।
अरसी न विरोलय जोस अछै । परणासाय तो सुत आय पछै ॥१६७ ॥

चांदे वायक

मुख लोचन चोळ करै मयनूं । अखवै यम पायक लोकायनूं ।
खत्रसूं मृत आज तणी नकसै । वरदायक पाल धणी वणसै ॥१६८ ॥

लोकायत वायक

वढ़ियां विण पाल पाछौ न वळै । टाळियां दिन आज तणौ न टळे ।

खट मांझियां वायक देवलसूं

मुण तूं धर राखण पाल मुदै । अड़ लावांए तो धन सूर उदै ॥१६९ ॥

पाबू वायक

अम वात वणाय वियां भणनूं । कुमळै घर राखैय तूं किणनूं ।
जिय ओळ लियौ मिस जीवणरौ। वर आयौय तोरण कापण रौ । १७० ॥
भरसूं सर देबळ रौ भरणौ । मांझियां आज पाल वणौ मरणौ ।
अर ते जगनाथ तणा अटका । विप जूंझ करूं बटका बटका ॥१७१ ॥
गढ कोळुअ खैह नखै गमनै । अर जावत मोनुंअ आंगमनै ।
मिळ आयोय खीचिय वाद मतै। चंद्रभांण डरां किम याण छतै ॥१७२ ॥
फजरै रवि ऊगण रै फरही । सत्र लीनिय देवळ री सुरही ।
कळ मेलांय कोरत सिंध कड़ै । सत्रवां पिड़ राड़ रचौं चवड़ै ॥१७३ ॥
मृत सूर कटै अणभांत मरै । यळ कायर सोध कठै अमरै ।
हिय हाथन जे सह लाक हसै । खित कोय अखूटिय नाह खसै ॥१७४ ॥
सिर रीझ दयूं हूं महेसरनै । कर साकत आंणौय केसरनै ।
महिपाल को आयस अंत मता। रज झाटक खेंग पलांण रता ॥१७५ ॥
सांहणी सुण वायक वेग सही । लख मोळिय साकत सार लई ।
काळवी पर त्यार पलांण कियौ। दुत वाल समार लगाम दियौ ॥१७६ ॥
हिय आगळ अग्गर होम हुओ । दोहुं पास रूं आंवळ बास दुओ ।
चकड़ो मुख कायज कंध चढै । काळवी कंध कोमंड बाल कढै ॥१७७ ॥
सांहणी विरदाय संवार सलौं ; जिण पीठ प्रसीनेय मेंल झलौ ।
दृढ कीनीय दोवड़ संभ डळी । मंड पीठ खोगीर वनात मिळी ॥१७८ ॥
जिण ऊपर काठिय हीर जड़ी । लख पोस वनात्त जुहार लड़ी ।

गुघराळिय पाखर पीठ घली। खत अंग मसी गजगाह खळी ।।१७९ ।।
तसलीम वणाविय साजत मै । काळवी सज आणिय पाल कनै ।
भर रोस बलावळ पेंड भरै । कमघां गुर पाल वणाव करै ।।१८० ।।
कळवी तक देवल ओर क्रमै । जत रावक गोरखनाथ जमै ।
कड़ आंटळ साबळ हाथ करै । फिर वेंण कहै खग तोल फरै ।।१८१ ।।

देवल वायक

वरदायक तो बन रावलहा । दिन आजके जोखम है दुलहा ।
अंब वारदयूं चढवान तुमै । हिंदवांण रा सूरज ठांभ हमैं ।।१८२ ।।

पाबू वायक

बंघ लाखोय सूरज पुत्र वियौ । दिप इच्छन गूजर खंड दियौ ।
असुरायण विप्र ग्रहा अहयूं । पड़दादोय जूंज कटै पहयूं ।।१८३ ।।
अन पाल अमैं सब दीह वजां । उण सायद पाळिय नेर अजां ।
दुछती मत देवळ आंण दये । हल एह अमां घर आद हुये ।।१८४ ।।
जियणौ तन मोह वृथाज करै । मरणौ दिन आज कियौ मुकरै ।
रंग भाव संसार नहीं रजणौ । तन चेतन आज परौ तजणौ ।।१८५ ।।
कुळ ऊंच मई जनमेस कियौ । दिल चेतन सूध विखे न दियौ ।
अजड़ी घकधूण तकी तरछी । बुरचींतोय देवल नां विरची ।।१८६ ।।
वढ वाराय मुज्झ भुजां वदियां। अणियां तुल मांझिय ओळ जियां ।
वसुधा परचंड कलाय वळै । मांझियां सत भीलांय लोह भिळै ।।१८७ ।।
हलकार करै नृपसूं हंसियौ । यम सांभळ चांदोय ऊससियौ ।

चांदै वायक

रण मूक तुमां धर भील रहै । किम पाल धणी यम वैण कहै ।।१८८ ।।

यह श्री मुख बोल सुणै अजरा । धर ग्रेस तजे सुण धांधळरा ।
जत राव महा सिध पंथ जुओ ।हाय आज भालाळ त्रिकाळ हुओ ॥१८६ ॥
गम राख धणी मन धीर ग्रह्यौ । बळ आप धरां मत वार वह्यौ ।
धन लावांय तोगांय झूट घणी । अरियां थट मूंहर भांग अणी ॥१६० ॥
सतरां सुंअ ढेवोप सालुळियौ । दळ आगळ दाबोय जाय दियौ ।
पिड़ पूठिय जाय अमै पोहचों । रण रो हस देवळ ने रहैचां ॥१६१ ॥
जिण काज कहां फिर वैंण जुआ। हल आप चढ़ो म्हेय त्यार हुआ ।

चांदे वायक सांवळां सूं

बत बाहर आवांय कांम वजे । सांवळां हव धावोय वेग सजे ॥१६२ ॥

पाल री जंगी वणाव

करवा जुध सूथण सार कसी । दसतां कर मौजाय पाव दिसी ।
जणवार कड़ी जरदाळ जड़ी । उणवार ब्रही लग मूंछ अड़ी ॥१६३ ॥
क्रमतौ धर पाल सताव करै । फुरती कर पेटियबंद फुरै ।
करबांण ग्रहै कड़ बींट कसी । वड पीठ अली बंध ढाल वसी ॥१६४ ॥
कड़ भीउत ऊसस जोस कणं । त्रंब बाहर धांधल राव तणं ।
जमदाढ छरी चकमार जड़ी । कसमार मेखंज में भीड़ कड़ी ॥१६५ ॥
रण ठांमण पाल किसो रटकै । लज आलय सीस कड़ो लटकै ।
हय द्वादस भांण मगां हरणौ । परटो सुतरां पर पाखरणौ ॥१६६ ॥
नरनांह भुजां बळ सैल लियो । काळवी दिस पाल पयाण कियौ ।

चांदे वायक

अच झेलिय साबल ठांभ हमै । कछ आयळ पाल विडंग क्रमै ॥१६७ ॥
भेह राय वलावळ साद भयौ । गढवी थट आयर भाग ग्रह्यो ।
कर ठांभोय आज उपाव करो । धर सूं रण जावत दूर धणी ॥१६८ ॥
वसुधा सिर जांमण पाय वळै भांभियां ने तो ठाकुर नांय मिळे ।

चांदै वायक सांवळां सूं

पोरसातन आपण रोम पड़ै । सांवळां आज एकल पाल चढै ॥१९९ ॥
जिदराव सूं बांधव बन्ध जठे । मरणौ प्रब आयोह पाल मथै ।
मिळिया सह बूड़ैय हूंत मनै । वडवा पुळ पाल हुवो विभ नै ॥२०० ॥
धुर वैण संभाळिय चित्त धरौ । कमठाळ हमैं मत जेज करौ ।
चरचै आज वैण घणी छेहला । वडवा कज भींच कसौ बेहला ॥२०१ ॥
दट लागत लानत लोक हसै । कमठाळाय एकल पाय कसै ।
प्रब केतांय कांम किया पैहली । सिध चांदिय पाल तणो छेहली॥२०२ ॥
विखमी पुल आपांय सीस वणी । धुणियाळांरी जेहैं पाल धणी ।
चारणां कमठाळांय जात सही । जांणियां नृप हाथांय रेख जिही ॥२०३॥
पिड आंगण आज खरै पड़णौ । मांभियां नह पैंड पाछौ मुड़णौ ।
सिह सीधांय पाल तणें चरणे । मिळ मोखांय जांमण नै मरणें॥२०४ ॥
सुणिया वच बूड़ै तौ दीघ सटां । नायकां पण आंपेय केम नटां ।

ढोल नैं चांदे री हाक

पाग्ररधिय चांदोय बैण पढ़ै । सज आयोय पाल विडंग चढ़ै ॥२०५ ॥
हव वेर न कीजिय वेग हकै । धूणियाळ मिळो भड़ पाज धकै ।
विजड़ी जड़ भाथळ बांध विनै । कड़ भीड़ कठ्ठ त पाल कनै ॥२०६ ॥
रंग वाहर रूप बंधे रज रो । मारका भड़ आय करै मुजरो ।
कड़ भीड़िय साज बंदूक कड़ा । धक चालण हाथ वजे धुहड़ा ॥२०७ ॥
मुदराल मतंगय भीड़ मणा । तम रंगाय गोरखनाथ तणा ।
हिक नाख्यत्र पाल जनम्म हुओ । दखजै कुण नाख्यत्र मींढ दुओ ॥२०८ ॥

कव वायक

घट देव कळा मन जोश घणौ । तत रूप हुओ तन तेज तणो ।
रण जूंभ दये पगजीत रती । चपळा सम हाथ खंवे सगती ॥२०९ ॥
लज थंभ वणी पुल नाळ थियौ । पह चाळीय घांधळ पोरमियौ ।

तन प्रीत तजी ऐह लोक तणी । घट चाह बसी सुरलोक घणी ।।२१० ।।
जुध पाल हुवो मन मोद जितो । अन भूपन आवत व्याव यतो ।
वरणी रवि ऊगम सेन विधू । चंद उगम सूरज पाल सिधू ।।२११ ।।
वर फूलवरी अर फौज वनै । बंधिया तण कांकण डोर विनै ।
पह सोढिय सांझ समै परणी । विण प्रात घड़ा अवरी वरणी ।।२१२ ।।

।। कवत ।।

मौड़ बांध जगमांय जगत सहै देव जुहारै ।
बांध मौड़ भालाळ पाल जुध करण पधारै ।
आरतियां अमरांण रांणियां कीनी राते ।
ऊतारे आरती परी झूलर परभाते ।
कांवड़ी लगाई वरण कज राते तौरण रीझियौ ।
ऊससे पाल ऊगे अरक लड़वा कर भालौ लियौ ।।२१३ ।।
अरातुणी अध रात सोढियां गाया सोळा ।
अजहुंणी परभात हुए कूका चहुं दोळा ।
मोढी निस साहिब हाथ जोड़े हथळेवो ।
ग्रहै सो कर रिम धड़ा आच भुज लग हथ एवो ।
हलकार वीर बावन हलै चौसट जोवण चालवी ।
वाळवा वित्त देवळ तणौ कमध चढै अस काळवी ।।२१४ ।।
करे पाल अत कोप निजर अर दिस्स निहारै ।
निपट कांम री निजर बाम तण री वीसारै ।
सुपरस करत चडाल पाल हीचोल भुजां पर ।
प्रसण त्रिया चख परस मिटै काजळ रेखा कर ।
अणियाळ ग्रहै लागौ ऊरस सो उतोल ओपम सही ।
केवियां तणी जे कामणीं वज्रियाळ चूरण वही ।।२१५ ।।

।। बात ।।

देवल मन में जांणियो आज पाबू मारीजसी अर हमे पालियौं पिण रया नहीं जद दूजी सगतां ने कह्यौ आंपां माथे मोटी ढांक आसी ।।

॥ छन्द ॥

निजराव जांण्यो घर पाल नहीं । जुड लेसिय जींदोय धेन जुई ।
भव सौं बलवांन किसीक भई । हव सीस श्रमां बदनाम हुई ॥२१६ ॥
सगतां दोय दौड़िय तांम सही । कमलादे रे श्रागळ जाय कही ।

सगतां वायक

सबही मिळ वात करी सखरी । लग वीकल बार घटी लखरी ॥२१७ ॥
तत श्रायोए ग्रेह खड़े तुरियां । श्रमरांण सूं पाल श्रधी उरियां ।
सत्रांण सूं भूंमर क्रोध चितै । परगेह जूतै भुरैय कोट प्रितै ॥२१८ ॥
दोयरणां मिळ पूलोये लाय दियौ। कर द्रोह भलो गव कांम कियौ ।
धेयनाँ कज वाद उभै धरसी । मारका धरण जूंभ ऊभै मरसी ॥२१६ ॥
कर पाल वरंग हुवे कुरियां ।खळ खीचिय धेन तणी खुरियां ।
जिंदराव लये श्रगपाल जई । हव देख त्रणे सुंयलाय हुई ॥२२० ॥
सुत मात करी मिळ वात सली । घर दोय विचं तरवार घली ।
गूंजवै पर श्रायुध पाल ग्रहे । रखवौ कोय जावेय हाल रहै ॥२२१ ॥
कमळाय त दौड़िय श्राय कहै । रण पाल वहै घर राव रहै ।

माजी वायक पुत्र रतन भाव धुन

केवियां मनवछत काम कडै । छत्रपत श्रकेलोए पाल चढै ॥२२२ ॥
वळ श्रावल लोक खळां वळियौ । मनवंछत पूत समै मिळियौं ।
रिम वीर सहायत को रण रौ । मृतदीह कंवार लिछमण रौ ॥२२३ ॥
धुरजां थट घूड़ सबें धन नै । दुजए रजपूत किसै धन नै ।
यळ सीस न जांमण पाय यसौ । जाय पूत श्रकेलोय पाल जिसौ ॥२२४ ॥
कुळ दीपक जायौय जोग कणी । थित श्रौर न श्रायोय दोय थणी ।
रांणियां वड सुरत वंधरती । जणजो सुत मीढुश्र पाल जती ॥२२५ ॥

बूढा वायक

मन पाल घणौ तिलमात म्हनै । केवियां थट दोय हजार कनै ।

घड़ियाल रखो त्रण पाल घरां । कह ढोल दये दळ मेळ करां ॥२२६ ॥
कमळायत आतुर माग क्रमी । सगतां संग पालण आप समी ।

बूढा वायक

विप पाल हगीगत केम वहै । करमाणंद पात विदात कहै । २२७ ॥
निज लागत दीह घणू नखरौ । सुकनां दिन काल किसौ सखरौ ।

करमांदे वायक

रजमां झटके रविचक्र रथ । मिळियां दळ पाल वहाल मथं ।
सुण जीवण चील बुरै मन रौ । चढतां हय तीर चींगण रौ ॥२२८ ॥

॥ कवित्त ॥

दिसासूळ दाहनौ पूब जोगणी पुणीजै ।
डावौ दिन मांनियौ चंद सनमुखी सुणीजै ।
कहूं निरंजण काळ वास वडफर कुळां वीचे ।
सिद्ध जोग संक्रमण अलळ आरोह कुंत ईछे ।
सांवणू विजेदसमी सुकल तणां चवै नह पाल तण ।
आदीत चंद साखी ऊभै पाल जीत आमी प्रसण ॥२२९ ॥

॥ दोहा ॥

विधन लाख कोड़ां वहो । ईस दई कर ओट ।
कळै पाल आसी कुसल । कमधज भूरै कोट ॥२३० ॥
सनमुख भैं सो सावड्ड । नाहर लाळो नाळ ।
डावी दिसमूं दरसिया । दळ लड़ घरा दराड ॥२३१ ॥
कमधज चाकी खड़ग कर । पाल प्रसण दळ पोस ।
तरण अमसत ताड़सी । सबळ गूंजवै सीस ॥२३२ ॥

॥ कवित्त ॥

भैरव डावी भणै दुगड़ियौ मान दिरीजै ।

जो राजा जीवणौ पोहर हैकण ठैहरीजै
ब्रख आड़ो वेखतो पौर खोडस पांरंभण
आठ पौहर यो मास चलैऊ भेड़ौ ते सुण ।
जांम थिरवती दत जरख रा सींह पोहर सोळैह सहै ।
नह दियौ मांन पाबू नृपत करमाणंद वायक कहै ॥२३३ ॥

॥ दोहा ॥

अरज आप जतनां अखूं । दिवस प्रळे री दौड़ ।
डावौ बोलै दांतियौ । ठहरीजै इण ठौड़ ॥२३४ ॥

॥ छन्द त्रोटक ॥

परधांनांहि साथ थकै पुळियौ । कळ चालण पाल सबै कळियौ ।
ललकार भिलां भड़ साथ लियां । हय पीठ पाबू असवार कियां ॥२३५ ॥
गूंजओ कर मालम कोट गढै । चारणां थत वाहर पाल चढै ।

देवल वायक

मुरजाळाय भाल विढंग भणां । तूं बांधव लोवड़ियाळ तणां ॥२३६ ॥

पाबू वायक

किम भालुअ थाग सैलाळ कहै । बाइयां वत जीवत पाल वहै ।
रुख मेळेय बूडोय वेठ रहै । गढ़वां वित जायल राव ग्रहै ॥२३७ ॥
वचनां मुझ देखत वित्त वुहो । हव जीवण फोटन जोग हुवो ।
धयनां ब्रण मूक तुमां धरणौ । मम देवळ आज भलौ मरणौ ॥२३८ ॥
टणकायण मौत न मांम टळी । मुळकै मिळ बुदय बात मिळी ।
वित थाड़ थकै ब्रन रौ सुवहै । रजपूतपणौ तन रौ न रहै ॥२३९ ॥
खित सीस मणी मनमें रखसै । हठ जीवण लोक संसार हंसै ।

देवल वायक

जग जांणिय आगम वात भली । वळ वीण अमे जांणां थेन वळी ॥२४० ॥

प्रधान वायक

मरदाँ कोय वाग झलै मुरडो । अस चालव पाल कियौ उरडो ।

पाल वायक

ठह वात अमाँ फिर आय ठगै । लंठमार प्रधानाँय सीस लगै ।।२४१ ।।
कमधज्ज भिळां हलकार करी । फिर गाहण फोलाँय वाग फरी ।
हिय आगळ दोवड़ तोड़ हड़ौ । कूंदियळ वळावळ वांध कड़ौ ।।२४२ ।।
विच बूड़ेय आय थया विसमें । भुरजाळ वळावळ भील भमै ।
थिग पारन जावत लाय थटो । चल पूर कराडोंय सीस चढो ।।२४३ ।।
फरियां सुख आगळ भील फरै । कुण पाल तणौ विसवास करै ।
आहेड़िय पंथ हुवा उरळा । कमठां कर पीठ सरी कुरळा ।।२४४ ।।

चांदै वायक

कनलै चढ चांदेय हाक करी । फिर फांदल पाबुअ वीट फरी ।
काळवी अस पाल करै कढवा । चंद्रभांण रै मोर तुरी चढवा ।।२४५ ।।
रुघ आगळ पीठ न लाग रहौ । ग्रह गोडेय केसर वाग ग्रहौ ।
धुहड़ा सर मूडिय मांझ धरौ । कुंदयल कळा गांय सीस करौ ।।२४६ ।।
खिन मारग धोमैय पाल खड़ौ । धम ऊठ बंदूकन बंध घड़ौ ।
चढवा कज वाहर पाल बुओ । हिक चंग रजी असमांन हुओ ।।२४७ ।।
विसटाळुअ गोम दिसा वळिया । पाअराधिय पाल धकै पुळिया ।
उतमँगिय बंध लिया अंबवा । सांवळौ कन आज उठै संवळा ।।२४८ ।।
केकियां सुर कंठ झरै कनड़ौ । वेरियां सर तुंग खड़ै वनड़ौ ।
विय सोतर पाल घणौ वलहौ । दुरियां घर काळ हलै दुलहौ ।।२४९ ।।
दिन अंतक पाल तणौ दसमीं । रजसूं हुय मंदर वीर समी ।
खित दावण भाव न खोलत है । दसही दिस दिग्गज डोलत है ।।२५० ।।
गुजुए सुअ सोहड़ दोड़ गया । कथ राव धकै यम जाय कह्या ।
माजियां थट वींट मही मंढियौ ।सत्र साजण पाल परी चढियौ ।।२५१ ।।

भड़ खीचिय वंस समेलेवरा । मिळ आयाय सारंग मैळेयरा ।
जथ बंधिय बंधन जींदल री । धिक है आज एकल धांधल री ॥२५२ ॥

खित खूंद लई दळ मैळ खळां । कदई न पाल रहै कुसळां ।
सुकनांराय वायक एम सही । निसचै घर आसिय पाल नहीं ॥२५३ ॥

थित आज लगैं लख फोट थनै । बुग्रड़ा नृप वोडिय लाज बिनै ।
गिड आयर जींदेय घेन ग्रही । सुत लेवण सारंग बैर सही ॥२५४ ॥

चत्र वीस त कोटड़ियां न चढी । पह बूड़ाय तो सिर धूड़ पड़ी ।
मिळ मैदर वीर चमू मुदियौ । यह सांभळ सोक हिये उदियौ ॥२५५ ॥

श्रवणां नृप वैण यसा सुणिया । हिय हारव धीक मथां हणिया ।
वाजियौ पिड़ ब्योम विनै वगडौ ।जांणियौ राव आज हुसी भगड़ौ॥२५६ ॥

बूड़ै वायक

गढवां वत जींद धाड़ीत घणौ । तिम वाहर बंधव मुझ तणौ ।
कर सारंग वैर सका खोहनूं । पर थाट न छोडय पाबूअ नूं ॥२५७ ॥

अरिसेन बहू जत एक हियूं । अब वाहर पाल हतै तइयूं ।
मुझ बांधव पाल जिसौ न मिळै । बंस दीपक आज परौ वेहलै ॥२५८ ॥

कुसळै दन केण प्रकार कढै । चंवरी जिण जायळ नाथ चढै ।
अंखियां फिर बंधव पाल यसौ । जड़ काटण वंस कुदाळ जसौ । २५९ ॥

मिटसी नह धोखाय जूंभ मुऐं । जावसां सरणापुर पंथ जुऐं ।
कर आतुर बूड़ेय राव किहौ । मैहड़ां थट वांटिय सोर सिहौ ॥२६० ॥

घल जांघड़ डाकेय जूंभ घणौ । तिम खूर बधै सैहै वार तणौ ।
प्रभ जूंभूऐ पाल हुतै पैहला । विड़गां पर भींण न्हखौ वैहला ॥२६१ ॥

मुझ बांधव सीस अरी मिळिया । अस नायत हाथ अबै ढळिया ।
भड़ घोटक संज करौ भिड़वा । मन मांभ रही सबही विड़वा ॥२६२ ॥

कळ ऊकट काट करावणनूं । सिध तेड्यौ है देवळ चारणनूं ।
धर चक्र वसूल करां धरही । नव लाखांय पाट तपै नरही ॥२६३ ॥
हव सेवग वेग गया हल नै । दुरवार लेआविय देवळ नै ।
महि मंडिय गैंण प्रभा मुगती । सत चडिय रूप पियां सगती ॥२६४ ॥

बूड़ै वायक देवल सूं

मुणियं यळ धूज गएण मही । न रही सम ग्रौर सगत नहीं ।
पुणियै मगती भव पालण री । खत्रियां स्रग द्वार खुलावणरी ।।२६५ ।।

।। कवित्त ।।

देवळ हूंतां वयण जपै बूड़ों कर जोड़ी ।
सगती लाऊं सूरै त्रजड़ धारां ग्रर तोड़ी ।
भई ग्रकल मो भिसट कह्या कूवचन ग्राई नैं ।
सगत खिम्यारा समझ विरद वडकी बाई नै ।
कमधेस सिलैह पूरी कियां लियां चखां रंग लालरौ ।
यम सगत हूंत वायक ग्रखै पोरस जेठी पालरौ ।।२६६ ।।

देवल वायक

।। यण मैं रूपग ।।

तूं वीरा वड तमण रसा मुरधर रौ राजा ।
तो ग्रोळे खट वरण सदा विलसै दन साजा ।
तूं धांधळ पाटवी गरठ लीना भड़ घोड़ां ।
कियौ थनै किरतार राव सूरज राठौड़ां ।
हिंदवांण तणीं ग्रागळ हठी भुजां लाज भर भार री ।
पालरां वीर बांहां प्रलंब सबद न ढाल चकार री ।।२६७ ।।

।। दोहा ।

रैणां एक मनां रहौ । भूप उभे भाईह ।
कुण थांनै गांजै कळह । दोनूं वरदाईह ।।२६८ ।।

बूड़ै वायक छप्पय

ग्रागे गयो ग्रंबुग्राल परब मोटे दिन पायौ ।
पूठै चढियौ पाल ग्रलग हूंता खड़ ग्रायौ ।

अजमेरौ आरांण खगां रहियौ तौ खासी ।
मो जावतां मोहर आज जींदौ भगजासी ।
पेमां इळां विप रैहसी विमुख जुद्ध जो नां हुम्रो ।
कर जासी खेह कछोटियौ हूं पाबू भेळौ हुम्रौ ।।२६६ ।।

।। यण में परिया उक्ति ।।

मो आगे भज गयौ जद न लखपत लूटांणौ ।
मो आगै भज गयौं कळह सारंग कूटांणौ ।
खोखलई आखेट घूंमर तेगां अहियांरा ।
म्है कूटे काढियौ माट फोड़े महियांरा ।
पाल सूं हमैं पहलौ परब म्हे भजियौ सौवारनै ।
विध विध हूंत जांणू भळे जायळरा जूझारनै ।।२७० ।।

।। छन्द त्रोटक ।।

सहड़ां तन पोरस सालुळिया । विडंगां दिस जीण लए वळिया ।
डवढा उड़ तांणिय तंग दिया । कडकांण पिलांणै त्यार किया ।।२७१ ।।
लोह लाठ कड़ा जुड़ साथ लियां। दळ रूप रकेबांय पाव दियां ।
चढतां अस बूढेय राव सही । गहली भण आवोय चाल ग्रही ।।२७२ ।।
बिप कंपत कंठ भरे विलखी । मुणिया यम वायक चन्द्रमुखी ।

गैली वायक

धर धीर रचे बुध राव घरौ । कल औ दिन मुज्झ पसाव करौ ।।२७३ ।।
डक छूटिय मौतन प्रांण डकं । लख दीह भयकर रूप लगै ।

बूड़ा वायक

जगजेठ सुजाळ धनंजय नै । नह मेळुअ एकल पाबुअ नै । २७४ ।।
पिड जूंभअ पाल हुतै पैहली । गहली मत बांह अहै गहली ।

गहली वायक

मन ठांभेय क्रोध करौ मरजी । अड़पै ग्रहधाल करूं अरजी ।।२७५ ।।

बूड़ा वायक

जुधराव वकारत जूंझ झला । वरियाम चढौ वैहला वैहला ।

गैली वायक

हळकारन कीजत वेग हलां । भुरजाळै रा बंधव मांन भलां ॥२७६ ॥
धेखियां मन वंछत पाव धरै । किस नाथ अमां अण नाथ करै ।
असवार हुए पुल राज इया । वैरियां रा करौ मत चींतविया ॥२७७ ॥
जुध जोवोय जींदोय पाल जुतं । पिड जूंझ सवार मवौ नृपतं ।
अहियौ दन ऊगमतौ गणलौ । नृप धीर धरै यण आथणलौं ॥२७८ ॥
गणिऐ समतो तन सार गनै । बहनोइय बांधव वाद बिनै ।
जुध ताल जवाब दयौ जिण रौ । करसौ जाय ऊपर थे किण रौ ॥२७९ ॥
नड़ियौ सन धीयह दीह नळा । सुत मात वताविय पेल सला ।
वड राजाय ओ दन मो वगसौ । चढ प्रात करीजोय राड़ चसौ ॥२८० ॥
कर क्रोध दुहाग दयौ किण नै। धारुआं जड़ साज चलौ धण नैं ।

बूड़ा वायक

गम नां हिय वेगम जात गणं । हथ छोड़ अमां भुज जींद हणै ॥२८१ ॥
वढ नांम कढूं यह संघव नूं । नड़ वाद ढहै मुझ बंधव नूं ।
पह ठीक पड़े किस पूरांय री । रवि साख भरै नह सूरांय री ॥२८२ ॥
अस चालन ओरुअ सीस अणी । धुर लाजव धूहड़ खैड़ धणी ।
हय द्वादस भांण मगां हरणां । परठो सुतरौं पर पाखरणौ २८३ ॥
खळ जावेअ लेवत वैण खता । पण लाजेय धांधळ मुझ पिता ।

॥ नीद रसना अलंकार ॥

जिदराव लेजासिय धेन जदं । असताचळ ऊपर सुर उदं ॥२८४ ॥
हण जावत पाबुअ जींद हतं । मणधार न झालत भार मथं ।
गढ कोलुअ सीस न्हखै गिरदं । नह जावत खेम कदे निरदं ॥२८५ ॥

जपिया वच राव विमेक जतं । मनिया नह रांगिय बाल मतं ।
मुख रोह करै यम वैण भणूं । हथ छोड़ नतो उर कूंत हणूं ।।२८६ ।।
धणनूं कर धाकल क्रोध धरै । कळचाळ उछांटिय चाळ करै ।
मन साहस सूर मनूर मढै । छत्रपत्त मयूरिय सीस चढै ।।२८७ ।।
मथ तूटेय वावत खाग मणा । जुध साथ चढै त्रय वीस जणा ।
किरहां ठुह कींण बंधै कुरळा । अस ढीलय पंथ किया उरळा ।।२८८ ।।
धुरजां खड़ आतुर माग धसौ । जाय बंधु अकेलोए पाल जसौ ।

।। हय द्राहण छन्द त्रोटक ।।

गध राव उड़ावत खेंग घणा । तिण वार करोठिय पाल तणा ।।२८९ ।।
रह अंतर कोस दसेक रसा । जिहमें नृप वाहड़ देव जिसा ।
इळ अंतर राव सुसाज सजो । गज मारण भीम गयंद गजो ।।२९० ।।
मन सूर मडील रजी मांडिया । चवदै सुत धांधळ रा चढिया ।
बड़ वेग कमाल खड़े वळ रा । थळ लांघ कटक गया थळ रा ।।२९१ ।।
वदती मुख मूंछ भ्रंहार वळै । तिण दीह अपाल सुं काल टळै ।
अम आवस छंद रंग्यौ उरसी । तन आंणह पीठ फबै तुरसी ।।२९२ ।।
अग खेंग उडै रज डंबर में । अणियाळ खवें भुज अम्बर में ।
अंग साथिय भींच इकीस सथां । हय ढीलविया चढ आग हतां ।।२९३ ।।
मन क्रोध अमां पग जां मुरडै । कमधां गुर आज मतै करड़ै ।
चख आग धुखै तन लाय चड़ौ । कहदै जिण रूप भिलंब कड़ौ ।।२९४ ।।
बिखमी पुळ चामंड मींड वणी । तद वीर भयंकर राव तणी ।
धुर छातिय वज्र कमाड़ धरा । असवार कना भड़ अन्तक रा ।।२९५ ।।

।। इति श्री पाल पोरसातने पुरवायण विभागे आसिया मोडजी कृत प्राकृत रो समो संपूर्ण ।।

अथ उतरायण सम्प्रहार रौ समौ

॥ छन्द त्रोटक ॥

क्रमते श्रस फेरव राव कियौ । दुरियौ दळ टाळीय पाल दियौ ।

बूड़ा वायक

भड़ भागेय श्रोसर वाद भड़ै । कमठा हथ पाल रह्या कनड़ै ॥ १ ॥
रहियौ पण सावत जेतरती । जुध घात विभासत पाल जती ।

॥ रावणै रा वायक ॥

किम जांणत बूड़ाय राव कहै । विमुहौ रण मारग पाल वहै ॥ २ ॥
सत छोड़य सीताय कूंत सती । जिणवार टळै जुध पाल जती ।
परचौ यह राव छतौ पड़ियौ । श्रजयां जत रावण श्रापड़ियौ ॥ ३ ॥
श्ररयां सुंश्र पाबुश्र श्रापड़सी । खह सीस रवां रथ नां खड़सी ।
भुरजाळीय जाय खळां भळसी । हिकवार यळा पुर घोर वसी ॥ ४ ॥
लखवार बंदुकांय लुंग लिया । करि श्रंग भालौड़ दुमार किया ।
घाहसाहर ऊपर घोर घलै । सत विसांय नाहर ठौर सलै ॥ ५ ॥
काळवीं पर धांधळ पूत किसौ । जड़वा रण सौ जमदूत जिसौ ।
घोश्ररारव श्राज श्रड़ां घळसी । हाकड़ो सिंध पाबुश्र हाकलसी ॥ ६ ॥
सांवळी हुय देवळ श्राभ चढी । महि ऊड रजी पुड़ गैण मढी ।
डहडाकांय श्रंबर भोम डगै । यम ऊड़त पायक पाल श्रगै ॥ ७ ॥
हुय देवकळा मन सिद्ध हियौ । कन सूरिय ऊपर क्रूंत कियौ ।
जुध ऊडांय रोप तुपक्ख भळी । श्ररियां दळ श्रावूतियो श्रमली ॥ ८ ॥
त्रक होयय उवड़ाय पंथवरा । चढिया सह श्रम्बर मांच सरा ।
भुज भाथाय जोर सरां भरिया । जगजेठिय पायक भुंसरिहा ॥ ९ ॥
बढवा कज पाबुश्र माग वहै । ढल धूपर ढेंपेय व्योम ढहै ।
खित तातांय पायक पाल खड़ै । पुरबंध बंदूकांय धीब पड़ै ॥ १० ॥

गिर श्रांग तजै श्रड़ माग ग्रही । रतनांळिय अम्बर लाग रही ।
धुर घेनांग श्रोद्रक श्राय थकै । हकवाक अचांणक होय हकै ॥ ११ ॥

पमंगां फिर पूठिय वाल पड़ी । जण ताळ पयांळेय नाळ भरी ।
कर हाकळ जींदोय राव कहै । वाळवौ ग्रस फेरेय वित्त वहै ॥ १२ ॥

सत थांहूग्र साथ हुवां सुमना । वढसै रावरी श्रिय पाल विना ।
कायरां फिट भीलांय वाद क्रमा । सह है कुण पाबुग्र वेढ समां ॥ १३ ॥

भिड़जां फिर न्हांखोय सीस भड़ां । ग्रत घालिय श्रागळ भील श्रड़ां ।
धेयनां सुसती कर हेक धड़ं । कर पैदल पीठ रखौ कनलै ॥ १४ ॥

दहुं कोर श्रतालेय सीस दयौ । लेय हेट रकेबांय कूंत लयौ ।
धुरजां उर पाड़ोय फेट थकै । रजपूतां रा मारग भील रुकै ॥ १५ ॥

यण में संभावना और दीपक

थट रूधाय भीलण चूरंग थणां । तेइ पूत वजै रजपूत तणां ।
खत्रियां पण राखोय सीस खवां । तन घाघांय हार थकेल तवां ॥ १६ ॥

जर जेवर श्रंग ढकै जणियां । भर पीतळ भूखण भीलणियां ।
तन थांयाय ठेळ चहोट खियां । श्रड़ धालेस श्रग्र ग्रही श्रणियां ॥ १७ ॥

॥ ऐ समाचार जींदराव श्रचलावत मेलावतां नै कह्या ॥

॥ त्रोटक ॥

गज घेर किसायक घाव घलौ । हय न्हांक भिलां धड़ खूंध हलौ ।
लख पायक पाघर मांभ लड़ै । पमंगां उर फेट सफील पड़ै ॥ १८ ॥

सांवळां नृप वायक सांभळिया । विप बांधत गाढ विलक्कुळिया ।

ढेबे वायक

ग्रस बाग उठावोय राव श्रखै । पायकां भिड़ बंधहै पाल पखै ॥ १९ ॥

मोरचा हव चाढोय खूंद मरौ । कर तूंग बंदूकांय बंद करौ ।
जरदांळाय पाखर घाल जड़ै । मोरचै विण पाधर पांव मुड़ै ॥ २० ॥

रण रा हाका वायक

अस तूंग बळावळ दौट उठै । कजियौ कर मांडाय पांव कठै ।
अस झंपत खाग ग्रहै अरवा । भड़ दूजिय नांह दई धरवा ॥ २१ ॥
हुण विग्रह भीड़ सबैं हरही । कमधेसर पाल फतै करही ।

ढेबे वायक

कायरां किम आगुअ भीत कपौ । जत राव तणौ मुख नांम जपौ ॥ २२ ॥
वढवा कज राव दळां वळगौ । अमरांण है पाल घणौ अळगौ ।
कुण मार सकं मुख मूंछ कणी ।धुणियांळां रौ ठाकुर पाल धणी ॥ २३ ॥
हथवाह सवार न होय हुडी । गत बीज सवालुक मांन घड़ी ।
भर राखौय त्यार बंदूक भड़ां । अस वाग उठंतीय झाळ अड़ां ॥ २४ ॥
मझ माखिय मेल न मींट मंडे । अण कारज गोळिय सोर उडै ।
विडंगां सिर हेकण ताल वळौ । लड़वां कळ झंपेय मूंठ लुळौ ॥ २५ ॥
धर ऊपर थंभ नहीं धमरौ । सांवळां हव पाल धणी समरौ ।
वरियांम हजारां सूं हेक वढौ । पोरसातन आवेय पाल पढौ ॥ २६ ॥
उड़तांण ग्रहे कर मूंठ अड़ां । भड़ धीवांय लोहड़ियाळ भड़ां ।
भुरजाळांय जोर रखौ भुज रौ । घण घोड़ांय सीस धलां गजरौ ॥ २७ ॥
कजियौ कर नांम अखी करणौ । मांझियां दन एक सबैं मरणौ ।
फरका असमान सवार फरै । केइ पायक कांठिय सीस करै ॥ २८ ॥
गध घोड़ाय भांगोय वाद घणा । तद वाजांय चाकर पाल तणा ।
पायकां दिन आज वडं प्रव रौ । जिंदराव सां जंग करां जबरौ ॥ २९ ॥
रज ऊपड धूंहर बंध रही । गज ठोर बंदूकांय हाथ ग्रही ।
भूरजांळाय कोट कियौ भमंगां । पखरालळांय दोट दखै पमंगां ॥ ३० ॥

॥ वारता ॥

इमे पाबूजी फाटै थल कबै आया । ढेबो खीचियां रा कटकनै थापा सैहेत रोड़ियां ऊभी है, बीसल पिण ।

॥ कवित्त ॥

वीसल　रोजी　विडंग　खेंग　हीरावळ　खाखू ।
रैवत　रूपारेल　भमर　अणियां　चढ　भाखूं ।
चढियौ　सिंगालिये　भिड़ज　ठांहियौ　वड़ौ　भड़ ।
पेमो　हरड़ै　पमंग　कमै　हठियौ　कंध　कूकड़ ।
छौगा　पीठ　ईसळ　चढे　काळरूप　सभ　कोधरा ।
भड़　पाल　तणा　पूया　खळां　अस　चढणौं　अण　ओध　रा ॥ ३१ ॥

॥ दोहा सौरठा ॥

व्रन　कज　सीस　वरीस　वाहड़दै　नींबौ　बहू ॥
आया　मरण　इकीस　चढ　घोड़ा　धाँधळ　सुतन ॥

॥ छन्द ॥

सुर पाल बंदूक तणौ सुणियौ । माँभियाँ कुण वाद करै मुणियौ ।

चाँदै वायक

कर कीमत पायक वात कढी । परठे जिंदराव निसांण पढी ॥ ३३ ॥
हड़वै भड़ ठाँभिय छूट हियै । काळवीं अस वावळ रूप कियै ।
तसलीमिय साँकड़ नास तड़ै । पड़ साज प्रसेणिये फीण पड़ै ॥ ३४ ॥
काळवीं अस चौवड़ लुंब करै । चढिया साँवळा भड़ थूंब सरै ।

सांवलां रौ साद

घोड़लाँ लाय घेचिय दूर घणी । घन वाहर पूंगोय पाल धणी ॥ ३५ ॥

॥ रावतां रां वचन खींचियां सूं ॥

ग्रह वाटाय मारग बंध घणा । तेह चाकर रावत पाल तणा ।
वाळवै वित घोड़ाँय तूंग बणी । अरियाँ अस आगळ भील अणी ॥ ३६ ॥
दीनाँ साँवळाँ रण राग दूहो । हिकबार पाबू मन मोद हुवो ॥
खित आगौइ धाट धरा खड़ियाँ। अलंगां सुंअ पाबुअ आपड़ियां ॥ ३७ ॥

जतराव सुं बाहर वेढ जुई । हव जायळ लाखांय कोम हुई ।
पुरबंध बंदूकांय राड़ पली । जिण ताळ उठंतिय वाग झली ॥ ३८ ॥
होय हाक हांहारव दूर हुओ । जांणियां सांवळां फिर साथ जुओ ।
रज डोरण धूंहर बंध रही । गिर धूंधळ पाबुअ वाग ग्रही ॥ ३९ ॥
सुज पूगोय खळांय सा सबळो । उतराद सुँ गव क्रमं अवळो ।
वज सा सत्र खाट खड़ां वयंगां ।खेहड़ो तज झाट किया खयंगां ॥ ४० ॥
जिण वार रजी गयणाग जप्यौ । कवलूपत मारग भूल क्रम्यौ ।
बैहळा वैहळा मुख बाँण वळै । पौहचाळ उड़ावत ढेल पुळै ॥ ४१ ॥
धर सीस फुणां हय पौड़ ध्रमै । कुंदियल्ल कळायांय सोस क्रमै ।
फरियं दन काळ तवो फरियौ । अस छाड़व जींदह ऊतरियौ ॥ ४२ ॥
महि सीत खळां जिय मौचन लै । लख लोचन तेज विरोचन लै ।
सत तेज कमंद मरीच सिवा । चहुंआंण कटक्क लखै चकवा ॥ ४३ ॥

जींदराव वायक

दखसी कुण जायल ठीक दुओ । हाय आज वडो अनियाव हुओ ।
लगती कळ आगम जांण लिया। कमधां दोय वाहर तूंग किया ॥ ४४ ॥
सत्रुआं मन बंछत मेळ महै । रखवै तोह गोरख लाज रहै :
किय बूड़य मेळ वडै क्रत रौ । अमराणै सूं वेग वळै अत रौ ॥ ४५ ॥
हुय हेत हरोळिय पाल हुओ । वडवा कज बूड़ोय अग्र वुहो ।
घर खोस होसी यळ लूट घणी । अगळीं आज आँपाँय नेस अणी ॥ ४६ ॥
चित ठाहेय वात अमां छळियौ । मरदां आज पाल वुरौ मळियौ ।
सह देखत पावूअ थूंब सरै । काळवी मुख पायक नाच करै ॥ ४७ ॥
धूंधळी मळ पाल जतंद्र धकै । बिजड़ाहत सातुअ वीस बकै ।
कोय कोढोय मैदर भेद कणी । बाद री पुल खोटिय वार वणी ॥ ४८ ॥
कुसळै घर जावत पाल कसै । वसुधा पर खीचिय नांह वसै ।
फिरवै अस साज वराव फरै । पग रोप खरावोय पाल करै ॥ ४९ ॥
नह जीतांय वाद घणां नड़ियाँ । पिड़ जीतांय पाल धरा पड़ियाँ ।
नर हूँत सदा नर वेढ नड़ै । वढवा किम मांनव देव बड़ै ॥ ५० ॥

सुत धांधळ जीवत पीर सकौ । धुरहै आज देवत हूँत धकौ ।
काळवी कळळाहट हींस कियूं । लख ओळख ढैबेय पाल लीयूं ॥ ५१ ॥
धुर उभाय पायक राड़ धकै । विजड़ाहत ढैब दुगाळ बकै ।

ढैबै वायक

अणियाळांय ठौर हुवा उमंगाँ । पखराळांय दोट न्हखै पमंगां ॥ ५२ ॥
गम राख जिंदे मुख मून ग्रही । सतवीसांहूं पूगौ है पाल सही ।
टणका मृत दीह घणां टळियौ ।मारका आज पाल धणी मिळियौ॥ ५३ ॥
खित मारग जींदोय राव खड़ौ । पह पाबुअ वांम चढै पगड़ौ ।
कस ऊभोय जेठोय त्यार कियौ । दवढौ विरदावेय पाल दियौ ॥ ५४ ॥
घळ वाढ जींदौ अह फीण गळै । वरियां मांनै हाकळ पाण वळै ।
गढ राव अनै दळ मांह गनै । वहनोइय साळेय और विनै ॥ ५५ ॥
किय राव गंगाजळ सूं कुरळां । खर हूंड उठाय लई खरळां ।
दिन राव हरीहर रंग दिया । लंगरी आतताइय नांम लिया ॥ ५६ ॥
सिन्न सेवत पाल नवै सगती । जिंदराव रै गोरखनाथ जती ।
कमठा गुण खाग खरा कसिया । अमलां छक पायक ऊससिया ॥ ५७ ॥
लड़वा भुज अंबर जाय लगा । जिणवार फुणावण सेस जगा ।
सुरखी मुख मूंछ ब्रूहार चली । किर दंत वराह खड़ी कंवळी ॥ ५८ ॥
सत्रुवां दन मांन घणौ सजियौ । करसां आज पाल अमै कजियौ ।

खट मांझी वायक

धणियापण सीस यती धरज्यौ । कर रास ताकीद मती करज्यौ ॥ ५९ ॥
यण ताळ विरोळांय जींद अणी। धन लावाय पाधर देख धणी ।
घऊड़ां वाग दौय हजार ग्रही । सतवीसत पाधर देख सही ॥ ६० ॥
पाबकां तन संधिय जोस परां । नायकां पर बंधिय नेत नरां ।
करवा जुध घोड़ांय तूंग करै । भड़वां रिण भील बंदूक भरै ॥ ६१ ॥
लग सीस गजां बळ पांण लसै । कमठां गुणले जमतांण कसै ।

अंवळा सिरपेच लियां अंबुवा । डाढियां गळबंध बुकांन दुवा ॥ ६२ ॥
सजियाप लवींटघले छुरियां । गुण चाढ कसी तन गातरियां ।
कुंदियल्ल कड़ां जड़ खाग कठी । पंखवाहर लागत तेल पटी ॥ ६३ ॥

पारधो वायक

धणियापण पाबुअ सीस धरां । कड़ भीड़य लाखह एक करां ।
असरेरिय चाळव सीस अणी । तद आंण तुमी नवलाख तणी ॥ ६४ ॥
दोयणां कुळ काढण चित्त दियूं । उर जोन प्रभाकर वंस इयूं ।
काळवीं चढ पाबुअ हाक कियूं । लड़वा प्रब धांधळ ऊंत लियूं ॥ ६५ ॥
जत रावजणी पुळ वाग भळै । हय थाट विरोलण भील हलै ।
कळचाळ रोसाळ बुहा कड़चै । यण ताळ धेनांल लयां अड़चै ॥ ६६ ॥
लुळ वाळ करां पुळ चाल कियूं । कर क्रोध कबांण कुंडाळ कियूं ।
धुरजाळ कुंदाळ अंताळ ध्रसै । हटियाळ कांघाळ कराळ हसै ॥ ६७ ॥
धुरजाळ उलाळ अंगार धखै । नहठाल भिलाळ भालोड़ नखै ।
वळिया दळ दोय वजै बगड़ौ । जिंदराव सौ पाल सजै झगड़ौ ॥ ६८ ॥
गातरी बंध पाल तणा गणियां। जिंदराव तणा भड़ भूंसणिया ।
घूमरा कर पाधर दौड़ घलै । सांवळां पर जींदल जोड़ सळै ॥ ६९ ॥
उतामंगिय नाळउपाड़ियतां । धन वारुअ नै धाड़ैतियतां ।
रजवाड़िय जोध खगां रसिया । नह ठाळ बड़ा भड़ निधसिया ॥ ७० ॥

सांवळां रौ अग्रज

कदई नह नास चढां कनड़ां । भिड़जाळांय बंधत सीस भड़ां ।
डरणै पग पाछाय नांह डगै । असमांन उठावांय पाल अगै ॥ ७१ ॥
डस खावांय दांतांय डायळियाँ । जुध जोवोय भीलांय जायळियां ।
दळ थंभ तुंकार पुकार दोए । हिक साथ हुँकार फुंकार होए ॥ ७२ ॥
पड़गा हठ त्रापड़ वाग फरै । कळ झंप तुरंग छुकार करै ।
नायकां नर जींदोय वाद नड़ै । पायकां सिर ऊपर धीव पड़ै ॥ ७३ ॥

लेय पावत घेर नवै लख रो । सांवळां पर रूप बंधै सख रो ।
विजड़ी हुय खांपांय चींह वकी । भिड़जां चढ टोप कढै भभकी ॥ ७४ ॥
गुण सीघ्र दणांक ठणांक गजै । विप छेद खणांक छणांक वजै ।
भुरजाळ रोसाळ उड़ार भरै । कर तीर विबार बंभार करै ॥ ७५ ॥
जिणवार भड़ै हथनाळ भड़ै । पखराळ तुरंग सैलाड़ पड़ै ।
भिड़जां पर खाळव फेर भरै । कमठाळाय पायक तूंग करै ॥ ७६ ॥
भिड़ंगाळ ससंकार मग्ग पुळै । लोह चाळ निसंक निसंक लुळै ।
धक धक्क रुधक्क खलंक धुम्रों । हक बक्क जिदो डक चूक हुम्रो ॥ ७७ ॥
चहुंम्रांण कमंध ज भूठ छटै । करबांण वहै तन त्रांण कटै ।
फ़ुरणां वज सीकर ऊभ फरै । कयकांण किता सुर घ्रोण करै ॥ ७८ ॥
जिण वार नरां नर भील जुड़ै । पुळ धूज वड़ा असवार पड़ै ।
हय तांण वालूचोय ठांभ हलै । सिरदारांय ऊपर पांण चलै ॥ ७९ ॥
रजवींट पळेटिय बंध रखी । भिड़जां पर छूटत सोरभ्रखी ।
लुळता सरपेच भुजां लटकै । पागड़ां पगतांण धरा पटकै ॥ ८० ॥
फटकार भड़ां नह धेन फरै । किळकार चांदो हलकार करै ।
धुणियाळ धुंकार टंकार धड़ै । पिंज वारुम्र पींजण घोट पड़ै ॥ ८१ ॥
भिड़जाळ लुळै कळ एम भगै । वहियां छट ऊपर त्राट वगै ।
नहठा दनवाद किला नड़िया । भुरजाळांय भींच भला भिड़िया ॥ ८२ ॥
मांभियां भुज़ ऊपर नेत मंडे । असवारां रा भू पर स्वेत उडै ।
फुरणांवज वाह हिहाड़ फरै । कळ गाय हांभाड़ त्राभाड़ करै ॥ ८३ ॥
पर बंधिय ढेंबेय चांद परै । कण एठिय जेठिय वाद करै ।
कर सीस छणांक छणांक कटै । तरुम्रार खणांक खणांक तुटै ॥ ८४ ॥
विच ऊमोय मैंदर मेर वड़ै । पुरबायण पिच्छम धीब पड़ै ।
मारका भड़ पाधर पांव मंडै । घट कूंत कितां चढ भाज घड़ै ॥ ८५ ॥
हाथुवां चढ भाळत वाग हथां । विडंगां असवारांय लूंथ वथां ।
फरडाहक बोलत फींफरियूं । छेकियुं घट घाव करै छुरियुं ॥ ८६ ॥
विप श्रोण खळक्क खळक्क वहै । धर लोथ ढळक्क ढळक्क ढहै ।
मन सांकन राछत आप मना । अजडाहत नाचत पाल तणा ॥ ८७ ॥

खुलियातन धारांय खार कंधाँ। कमठाकर घूमत नाह कंधाँ।
घर पाँण कबाँण आपाँण खरै। कयकाँण में बांण दुसार करै॥ ८८ ॥
लोह चाळा रोसाल लंकाल लडै। काळ जाळ चुनाळ विचाळ करै।
खहै ऊठ वलावळ कूंत खवै। नड़ियौ पिड वाद जवाँन नवै॥ ८९ ॥
धुरजां विच जायळ नाथ धरै। कठओति रौं सायब वाद करै।
वळवाग जणै जण सोस वलै। मांझियां पर मैंदर लोह मळ॥ ९० ॥
धुरजाँ रज ऊरड़ सोर धूंओं। हळकार अंधारोय घोर हुआ।
जग जेठिय पायक चाँद जपै। यण वेला में सहस पाल अपै॥ ९१ ॥
रण भोम न सूझत धूम रुके। धुर काँठळ वावळ जेम धुकै।
घट खंड किया भड़ वाज घणा। तन रै खत पूर दुगाळ तणा॥ ९२ ॥
जंग पंग विढंग कपांण झळी। अंग रंग वरंग किया अमळी।
मन राखोय ऊजळ आप मणौ। तिम आवत पारस पाळ तणौ॥ ९३ ॥
पायकां पर खाग घणू पळकी। हव लागत पाल तणी हळकी।
दोयंणां सिर वाढण आन दुओ। हरणां खुर ढेब सवार हुओ॥ ९४ ॥
फरकी असलां सांय झांप करै। कळपांण अठीरिय धोफ करै।
जिणवार वळांराय तौर जड़ै। अस जांण कळांराय मोर उडै॥ ९५ ॥
वंसळी सुर पंचम भेद वजी। धुरनाळ निखादुअ नाद ग़जी।
क्रमती सहनाय वजै कुरजी। खित बोलत मोर घणु खुरजी॥ ९६ ॥
कायरां महराय गंधार कियौ। दुखतैं सुर धेनांय त्रांभजियौ।
जिण वेळारौ देखण काज जुओ। हय कंठ धईवत नाद हुओ॥ ९७ ॥
धर भार उतारण काज धुरै। सुर बंधे हैं साबत सात सुरै।
धुरजां भड़ लागत सोर धुओ। हव जंग संपूरण रूप हुओ॥ ९८ ॥
घर सीस घणू पय पौड धमै। काळवी कर हूंकळ खूंद क्रमै।
विध वागेय सावछ आय वळे। भुरजाळां री टावळ लाय भळे॥ ९९ ॥
फिरजाय नमंनम लैंफररी। धमकाय रमंझम गृघरही।

॥ दोहा ॥

नम नम धम धम नाचती रमझम अपछर रीत।
तिम तिम यम पाबू तवै वालां खम खम बीत॥१००॥

कळहळ करती काळवी वळवळ फरतौ वाज ।
खळदळ धरती खूंदती जळ मिळ तिरखी जाज ॥१०१ ॥
रमझम पाखर रोळती घम घम पौड़ाँ घम्म ।
धम धम पाबू धीरपै खम खम घोड़ी खम्म ॥१०२ ॥
काँछां तोनै काळवी आंछौ मत कर आज ।
वाछौ मन रावां वढै पौछां समंदां पाज ॥१०३ ॥
भांण तमासौ भाळवी मेस टाळवी माळ ।
करूं गरक रण काळवी जाँण चाळवी झाळ ॥१०४ ॥

पाबू वायक

धुवई सगळे अम आज धरै । काळवी किम वाज ताकीद करै ।
धमए तोहि धीरप वैण धरूं । काळवी खिमए गरकाव करूं ॥१०५ ॥
रुंडमाळ घलूं गल मैसरए । किम आंपत झांपत केसरए ।
धुर चेतन जोत मई धरणौ । काळवी मम नांम अखी करणौ ॥१०६ ॥

॥ दोहा ॥

भुज भळ हळ भालोह । खग जळ हळ खांयां खवै ।
वीसोतर वालोह । दोयणा उर सालौ दुलह ॥१०७ ॥
इहगां धन आडोह । परु गाढौ गिर मैर रुख ।
लोहां बळ लाडोह । कवियां जड काढौ कळह ॥१०८ ॥
हरखै अपछर हूर । वीर बकै जस वांणियां ।
सारा है मुख सूर । पाबू रौ षोरस पणौ ॥१०९ ॥
भाळै कोतक भांण । बावन चौसठ जस बकै ।
रंग है पाबू रांण । वनड़ा गायां वाहरू ॥११० ॥
सोवल भळहळ सेल । कह वाजी हुंकळ कळळ ।
जिण पुळ साबळ झेल । घोड़ा मिळ मैदर घलै ॥१११ ॥

मेदररी आतवी दाकल

॥ दोहा सोरठा ॥

अम लावै धररांह । लागां खग पाछा लयै ।
अइयो असवारांह । पाळा नह फेटा पड़ै ॥११२ ॥

कर फेरब कूंतांह । गाढे बळ मूठाँ ग्रहौ ।
रे फिट रजपूतांह । वागां झल पाछा वळौ ॥११३ ॥

तुरंगाँ आता लेह । रानां बळ गाढा रखौ ।
वाळा पधरा लेह । ऊठै नह आठूं अगे ॥११४ ॥

पुणाचां ग्रज पंखार । लुळता सर मूठी लगै ।
ते वाजै टंकार । पाराधी डोढा पुळै ॥११५ ॥

पाळां ऊपर पात । वाढ झड़ै वीजू झळां ।
हेड़वीयां खड़ हाथ । धुरजाळां धोरां धकै ॥११६ ॥

साँवलाँ रौ समरण

लीनो चढ लारौह । झूलां बंध खागाँ झड़ै ॥
खळ लागौ खारौह । आवै धाँधळ राव उत ॥११७ ॥

आड़ीला असवार । गुणचाळौ नाँही गुणँ ।
पाबू वेग पधार । वेळा तौ जेड़ी वणी ॥११८ ॥

मैंहदर तणी मणीह । माथै सूं खंचणी मुकर ।
ढाळौ भंवर धणीह । धोरां सूं घोड़ाँ धकै ॥११९ ॥

छन्द भुजंग प्रयात

झली वाग पाबू रहे नांहझाली । कैरै खूद मादी थई वाद काळी ।
कड़ी भीड़ लग्गाम जंजीर कूंची। उड़ै तो बुरच्छी दसै वीस ऊंची ॥१२० ॥

फरै पाखरी जो पराँ लागफीली । ठहैं फ़ेट दंती करी माग ढीली ।
यसी ताल में पालरी वाग ऊठी खळाँ सीस अणगाळ री वीज खूटी ॥१२१ ॥

करै वाद ओजींद हंदौ कणौठी । जणी धूपरै आवियौ पाल जेठी ।
घळै खाग रीठौ हुओ श्रोणगारौ। खळू मंदरौ सांवळां लाग खारौ॥१२२ ॥

वळे साँवळाँ भूबलाँ घीव वाजै। गुड़ै भींच ढैबै तणा व्योम गाजै ।
धणी सेवगाँ भीड़ में बेल धायौ। उठी वाग यूं तेज रौ पुंज आयौ॥१२३ ॥

विछुटौ रवि कोट ज्यूं वादळाँरौ।सत्रां सीस आयौ धणी साँवळाँरौ।
चढाँळौ भुजाँजोर सूं आभ छायौ।उणी वारमें पाथ सौ पाल आयौ॥१२४॥

विडौजा रवी मोज की भोज बोड़ी।घळी पाल जाडाँ दलाँसीस घोड़ी।
करै हाकळै पाल भो गोळ कूडैं। असव्वार फ़ेटाँ धकै धूज ऊडै ।।१२५ ।।
धुंआधोर बंधै छुटै नाळ घोरे । कड़क्कै मनाँ वीजळी च्यार कोरे ।
पटी सोर उठै छुट्टौ हाथ पारौ । तुटौ रात आधी विखै गैण तारौ।।१२६ ।।
धपावै सराँसूं परी दूध धायौ ।अणंकाळरी मीच ज्यूं पाल आयौ।
पमंगाँ उलेळै मनाँ फील पूळै । बमै पाँन छौगेल दोटे वघूळै ।।१२७ ।।
केई घूमरा फाँठदे पीठ कावै ।अखी हाक औपाल औ पाल आवै ।
तुरंगा चड़ाँ पाल सींचाँण तूटै । चलै पाँण न बाँण बंदूक छूटै ।१२८ ।।
धखै फेट औ ओणसू सेल धोवै । जठी वाग वाळै तठी पाल जोवै ।
विडंगाळ भाँकै करै आठ वाटाँ। चलै वायरै दोट सूं मेघ छाँटाँ । १२९ ।।
भयंकार पाबू खळाँ एम भायौ । अगे लाय लागी परे वाय आयौ ।
करे खाग भाळै समौ वाद केहौ।जिणी वार औ वज्जरी आग जेहो।।१३० ।।
भले भींच केता कढे खेंग भोला। टळै ऊंछकै भूपड़ै भद्र टोळा ।
जिणीवार बूड़ा लगू पाथ जेठौ । घणूं घुंमराँ पाड़ मानौ गहेठौ ।।१३१ ।।
तिके औ विहंगी खळाँ चीलताबुं।परैहै लगी काळवी राँन पाबू ।
चमू हाकळै काँकड़ाँ पाल छाडी।करे गोट पाराधियाँ धेन काढी ।।१३२ ।।
घड़ा मेळवै त्रेवड़ो व्रह गाडो । यते आवियौ मैंदरौ फेर आडो ।

मैंदर वायक

करो गौळ कूंडे दये देट कावै ।जो औ कायराँ भील ले वित्त जावै ।।१३३।।
तिगे बूंद कांटा करौ त्यार तोडा। घलौ घाव आडा नखौ फेर घोड़ा।
फरां खापटाँ पाखरां खील फूटै । चलो देर पाराधियां तीर छूटै ।।१३४ ।।
वळे पांण मूठाँ ग्रहे पाल वाळा। करां ध्रोंण धूंकार हूंकार काला ।
पलौ सात दीपां नवेखंड पायौ । यते वाग वाळे धणी पाल आयौ ।।१३५ ।।
वळे वागज्यूं राग चीतै विचारै। धरै नांम ज्यूं कालवी माम धारै ।
भली वाग पाबू मणूं जोग भूठी। मनूं वाय गंठी छुटी हाथ मूंठी ।।१३६ ।।
पमंगां परै पाल जंपाल पाळौ । सही देव भूटै कनां वीर चाळौ ।

वगड़ै प्रधान वायक

सगा पाँण राखौ रखैं भौळ सौदे।खळाँ वीज काढै भुजाँ सेल खौदे ॥१३७ ॥

वसूधा उखेड़ै जड़ां सीध बूंटौ ।जती आजको पाल रो द्रल्ल भूठो ।
मरै राव जींदौ होवे वात मोटी।खळां आजकी पाल रीमींटखोटी॥१३८ ॥

थटी आय सारां भड़ां मौत थांरी। खुटै आज तीनू तड़ो खीचियांरी।
भलो जीव चाहो तजे खेत भागौ। रंडे गागराणो अनै कोट रागौ ॥१३९ ॥

बचे राव जो ओ भलो है बुरां में। घलौ दाव जींदौ घणू घूमरा में।
खही आव सारां अणी सात खूटो। छुटे धेन तौ जीवतां जीव छूटो ॥१४० ॥

अखै दीह केता कहैके अंधारौ । कहै रात केता हुओ सोर कारौ ।
कियौ खेह कूंडौ बंधी ज्यूं कनारी।भड़ां सूर सूणे पाल रौ तेज भारी।१४१ ॥

बंधे राग स्वारौ लगै एक बेकी । चलै काक केकी भळे वाग छेकी ।
मिल्यौ ब्रह्म सूं ब्रह्म सौ ध्यान मायौ।पमंगेस देवेस रौ तंत पायौ ॥१४२ ॥

दई जुद्ध संध्या भड़ांजस्य देखी। करी अस्थ विद्या मणां एक मेकी।
पिले रान लागां तिगै ठेक पेरै । फरे बाज चक्री रसी बाल फेरै ॥१४३ ॥

हुवो पाल आभास जंगो हिया में। पड़्यौ जूंभ आंटै भुजंगी प्रिया में।
वजी बादरी काब लीनी नं देरी। फिरे थाट पाराधियां धेन फेरी॥१४४ ॥

सजे धेन दोळी हुआ आप सारा। तथा चक्र विंध्या भ्रमे जांण तारा।

पाल रिण जूंझ वायक

करै खेडछांनी सला लाग क्यारी। इयां धेन लीजे भड़ां इहगां री ॥१४५ ॥

रुपे राड़ चौड़ै हणू मेंदरा नै । रखूं खेम पेमांग ने जींदरा नै ।
मिळी जावती अंग है भोम माहै।ढळी गंगज्यूं हेम रा स्रींग ढाहे॥१४६ ॥

॥ दूहा ॥

कटे टोप बगतर कटे, पाखर कटे पिलांण ।
धाड़ो कट धरती गई, पाबू री केवाण ॥१४७ ॥

॥ छन्द ॥

फळां बुद्ध के सावळां फोड़ कीलां। भड़ां धेन काढौ हमें वेग भीलां ।

लगै वाग छोटौ विचै कूत लोधूं। दिगै रोस मूठां परो हाथ दीधूं ।।१४८ ।।

।। दूहा ।।

जेदरथी माथो जुई । अई भुकाओ आंण ।
आयो मैंदर ऊपरै । पाबू इण परमअण ।।१४९ ।।

।। छन्द ।।

मलोळी भली रान सूं खेंग माती।भली तेग पाबू तणी सीस जाती ।

असवारां ने नायकां वचन

घली सीस घोड़ां कळा भंप गोती।करै काळ री भेट वाजे कठोती।।१५० ।।

वुही खाग पाबू तणी टोप वाढै ।कड़ी टूट कांधै चली काठ काढे ।
करी टूक दोये वडो टूक काठी ।अड़ी तेग जाती बली हाथ आठी।।१५१ ।।

।। दुहा ।।

जींदो जोवंतोह । पाबू बोवतौ प्रसण ।
रटतो रोवंतोह । वीर मूवो भारत विचै ।।१५२ ।।

लड़ लोहां लोडीह । तोड़ी जड़ खींचीतणी ।
माती घड़ मोड़ीह । पाबू घोड़ी पेलतै ।।१५३ ।।

।। छन्द ।।

हुई जीत पाबू हण्या जोध हाथं । पड़े वीर जूंझै महा चोळ प्राचं ।
उड़ै काळवी वाज संवेग आगै । लड़ै वीर पाबू भुजां गैण लागै ।।१५४ ।।

कड़ां भाड़ खीची हुवा एक कांनै। मुड़ै राव जींदौ वडौ सोक मांने ।
अड़ां छाड़ पाराधियां साथ आयौ।भड़ां वाग ऊठी महा क्रोध भायौ।।१५५।।

दिगै नाळ तोड़ा धुबै वाद दौढी । पड़ै जूंभ ढैबो बड़ौ भींच प्रौढी ।
करै गोट घोड़ां बंधै घूम कोरै । फरै धेन पाराधियाँ पाल फौरै ।।१५६।।

नड़ै वाद खूंदै घणौ सीस नाळै। वळी काळवी पाल रा वैण वाळै ।
दये फेट धेनाँ धकै आय दोड़ै । भुगै सांवळा पाल रा पाल जोड़ै।।१५७ ।।

वुआ धूंधळा वीट सूं खेह वाळा । क्रमै भींच पाबू तणा कांग काळा।
नड़ै नेत पाराधियां धेन लीधूं । क्रमै काळवी धूंधळी रंग कीधूं ।।१५८ ।।

जती एक नखत्र में पाल जायौ। यळा फेर वो नखत्र नांह आयो।
जगं पाल अंगै महा सूर जोती। कियौ कूंत जौ ऊपरै ठोक नोती।
वहै माग बोलै सदा बैण वाई। भले पाल थूं लोवड़ीयाळ भाई ॥१५९ ॥

॥ कवित्त ।

वे भाथा बंधिया रजी पींजियाँ न हेटां।
कड़ भीड़ियां कटार मार गातरी कंठ रेठाँ।
धेनां रज धूंधळी उड़ै आगे अणियाळा।
भुगं केक भाळियां भींण पोसी लूंबाळा।
सांवळां भीच अणियां भंवर काळरूप भूसण कियां।
काळवी पाल आगे क्रमैं लगा पूठ धेनां लियां ॥१६० ॥

केई घायल कणणाता पटा भरता विण पारां।
दीसै वसिडोलियां लार लीधां जूंभारा।
कहता वातां कळह वुवा खाली भूथारण।
कई तूटा कामठा करी खागाँ धारांकण।
बंदुकाँ सीग खाली हुवा गण त्रण पौछै गोळियाँ।
कळ धाव दाव कहता कथन दौड़ै पाबू दोळियाँ ॥१६१ ॥

पाल छाड़ पागड़ौ वाग सांवळां भलावै।
कर सावळ सिग्रही बुकांनी बंध छुड़ावै।
सींह हाल संक्रमै आप वहै पाळौ आवै।
करै धेन एक कोर वीट साँवळाँ वळावै।
बाइया ज्यार देऊ सवां कर सलाम पायक नमौ।
रहे वीर कुसळ अर जीत रण अखी अमर पालक अमौ ॥१६२ ॥

आवड़ मांमडियाळ खोड़िया रह खेत्राही।
बूट अनै बैचराय उभै मांणच री जाई।
घूबड़ मादाईह राजवाई गींगाई।
बैहरी डहरी बून अखै देवळ अणदाई।
जोगणी जूभ ऊठौ जमै वित्त नवै मंढवाळियाँ।
बधावौ वीर पाबू मिळै धावौ वावळियाळियाँ ॥१६३ ॥

देवल वायक

भर मुगताफळ थाळ सगत सांमी सँह जावै ।
कर कुमकुम रौ तिलक पाल मोतियां वधावै ।
उतारौ आरती ढोल वाज नै त्रिधाई ।
गावौ मंगल गीत पाल सांचौ मो भाई ।
लावियां धेन जीतौ लड़ै विरदावौ हव बाइयां ।
सिद्ध यळ सगत धावोय सरब पाल वधावौ आइयां ॥१६४ ॥

देवल री आसीस

पाल वरन प्रतपाल पाल बंधव विसोतर ।
पाल प्रवाड़ा पूर पाल एकोतर उद्धर ।
पाल प्रथी प्रतपाळ पाल गउ ब्राह्मण पालण ।
पाल वडौ सत पुरुष पाल निज वंस उजालण ।
सूरमा पाल जतराव सिध औध कूंत आछैलियां ।
रह पाल अजर अणभंग अमर कहै वेंण काछेलियाँ ॥१६५ ॥
पालह पीरां पीर पाल अण बंधवां बंधव ।
पाल अभीरां भीर पाल पित माता संधव ।
पाल अबेलाँ बेल पाल अपखां पख पालण ।
पाल वरन प्रतपाल पाल गमिया वित वालण ।
सगत रा वीर धांधळ सुतन सूर धीर जीतण समर ।
नांनहीं सगत लूहर लये अखै पाल अजरां अमर ॥१६६ ॥
करण धाबळीबार पाल धाँधळ पौंहोचाळौ ।
सूरवीर सापुरष भांणवंसी भालाळौ ।
वरदायक वेगड़ौ धमळ जस रथ कांधोधर ।
लिछमण रौ अवतार कमंध हिदवांण विभाकर ।
सिध मरद करण वाहर सुरैह सुत घांधळ सुपखाळ नै ।
अख मांझ विरद लागै जतां भला सरब भालाळ नै ॥१६७ ॥

पाल वायक

पाल तुमां रजपूत पाल तुम नांना भाई ।
पाल भीड़ दुख पीड़ बेल कर टाळौ बाई ।
सात वीस सांवळाँ सगत सैह रावळा चाकर ।
हूं बांधव रावळो कहै पाबू जोड़ै कर ।
नवलाख सगत पायै नमां तिम देवळ अ्णदायतण ।
सतवंत जती हुवजाव सिध मिटै तुज्ज जामण मरण ॥१६८ ॥

खित खौखर खेजड़ा नील रंग नीलां नीमां ।
धर धोरां धूंधळाँ सीमरन भंगर सीमां ।
खह परबत खागळतां नीर भरपूर निवाणां ।
वजी सोक गयणाग आव आई ऊडाणाँ ।
संप्रात हुवौ अंबर सुबध किर पाखाँ धर कंवळियाँ ।
देखवा पाल देवल दरस सगत हुई सह सांवळियां ॥१६९ ॥

पाबू वायक

घेनाँ लयौ संभाळ जोय मींटै जण जण री ।
टळो होय केरड़ी दांम भरदेयूं दुगण री ।
जाखी कुसळां गयौ कांण राखी पेमल री ।
जड़ काढूं खोद नै लयै गायां देवल री ।
ग्वाळियां वित्त वांसे घलौ सखरां देख संभाळियाँ ।
तारवै मींट आछी तरां लेवोय लोवड़ियाळियां ॥१७० ॥

देवल वायक

वीर अमां वतवाळ केत वंधी केवढ कढ ।
गढवाळां रखवाळ वार जीतौ तेगां बढ ।
त्रण दन री तरसाळ हुई थाकी घोड़ां हड़ ।
वछ ओडी वाछड़ां त्रंब नह पूग सकै तड़ ।

गूँजुवौ जोत पावौ गायां पूरौ थाळ भराय जळ ।
यळ सूर चंद ज्यां लग अमर करूं पीर सिध राव कळ ।।१७१ ।।

।। प्राचीन दोहा ।।

मो गायां मरसीह सुण । पाबू आखै सगत ।
अण दन री तरसीह । रांभै धांधळ राव उत ।।१७२ ।।
रैगा कमधज राव । मणधारी रहजै अमर ।
वाळी ज्योंही पाव । तरी न झेलै टोगड़ा ।।१७३ ।।
पायां जळ पीसीह । खळ गायां खीजाड़ियां ।
कांकड़ कौळू सींव । नरजळ रीती नींबळों ।।१७४ ।।

। कवित्त ।।

पाल झंख गूंजुवौ तोय कम दीठ अभै तण ।
कर धानुख टंकार मही रेली कमधां मण ।
पंडूरजळ प्रगळी खीरसागर गंगारुण ।
वळोवळी वीछड़ी पीये धेनां आपोपण ।
सिगाळ धवळ मोड़ी सुरह केई पीळी अंभाड़ कर ।
वाछड़ा झेल सांमी वळी ग्वाळ हकाई टोळ धर ।।१७५ ।।

।। दोहा ।।

सगर खिणायौ सागरी । पय बंधायौ पाल ।
वित्त पायौ सर वेगड़ै । देवल तणौ दुझाल ।।१७६ ।।
पाबू गायाँ पाय । चाराणियाँ नै चाँदिये ।
वगसी वेग बुलाय । धेन वळी सह धीवड़ी ।।१७७ ।।
नाव वाहा बैठा नडर । चौंडै गढवा साथ ।
कळ ऊकटवाळी करै । वेढ वदी जिम वात ।।१७८ ।।

।। कवित्त ।।

ठहियै रा दस ठीक आठसाँ पेमाँ अक्खाँ ।
चार वीस चंदरा पूरबळ डील सपक्खाँ ।

वीस हूंत बीसळौ वड़ौ रिण जूझव जाँणाँ ।
दस सूं खाखूं दुझळ कळह जमदूत कहाणाँ ।
पिड सात हूंत ढेबौ पड़ै आग छड़ौ उबावरौ ।
पाल रौ भोच बाह्याँ प्रलंब साताँ वीसाँ रौ सिरौ ॥१७६ ॥

॥ दोहा ॥

रगत ध्रपी रतनाळियाँ । प्रल ध्रपिया पंखाळ ।
प्रसण घणा ले पौढियौ । अड़ा परे अेबुवाळ ॥१८० ॥

॥ कवित्त छपै ॥

जाँमकियाँ जगती पूठ भाथा ऊलळता ।
बंदूकाँ डाबियाँ मूंठ त्राड़ी कड़ मिळता ।
घायल मघ घूमता फेर झोळी घर फिरता ।
निध्रसता कूदता गया ठेलाहूं करता ।
भरसौ कट हुंकै भीलड़ी जूंझ वधारचौ झागड़ै ।
काळवी कंध थापोट कर पाल उछाड़चौ पागड़ै ॥१८१ ॥
ढाल डाव खूटिये पाल चकड़ा वळ खोले ।
साँवळाँ खग साँकळी कड़ाँ नागलेस सजोळै ।
हलकारे पायकाँ राव पोहरै दर रक्खे ।
सूर पार संक्रमो थयौ निन्द्राळु चक्खे ।
पोढियौ पाल नाहर पिलंग मिळिय जोत सूख चैनमय ।
पहरात चंद हाका करै सिंह अग्राजै टूंकपय ॥१८२ ॥

॥ दोहा ॥

हींच मही घायल हुआ । जोया जखम जेताह ।
फिर श्रीमुख फुरमावियौ । रैवत बाधरताह ॥१८३ ॥
जीतो हूं राड़ाँ जबर । परवाड़ाँ उण पास ।
कवळी उजवाळी कळह । अमळी भड़ाँ उजास ॥१८४ ॥

॥ कवित्त ॥

अरक देख आथम्यौ चाँद भुरजाँ पर चढियौ ।
निरख निजर ज्वाळनळ पैख मन संभ्रम पड़ियौ ।

वाग तणी थह वीच अठे किण कीध अखाड़ौ ।
रिम आया रात रा लूम लेसी खग लाडौ ।
सगताँ नै सूंपी सुरेहियाँ वह आयो उण वार थी ।
कैरते वीर आएण कियो साँमी समरू भारथी ॥१८५॥

अरध गयण अरक्क वाय वज विखम चहुँ वळ ।
कालेरे कूकंत करे केकी कोलाहळ ।
खरळ दिसा खाँखळी तवै तीतर दिस उत्तर ।
ग्रीधण करै गलार चील चोहंत वड़ाँ सिर ।
इळ चक्र लगे उदियावणो महा सूर भैचग मणाँ ।
भयंकर रूप लागै भुरज दतन कोट भूरे तणाँ ॥१८६॥

सुरखी दिसाँ धूंधळी रयण धूंधळी भयंकर ।
चडी रूपदे सबद तरळ भुरजाळ सहोतर ।
रतवर खावद रूप वली खाँखळी वळोवळ ।
बोलै तीतर बोल अरण उदराद दिसी हल ।
अत पूरब ईसाँन बुरा सिज्या बेळा वस ।
पंचादियो त्रिदोष तवै तसकर ढूकै तिस ।
गोमायू जरख व्रक गूध्रवाँ सिस कस वद आवत सुणी ।
मुख रयण लगै अन्तस मही आज घणू उदियामणी ॥१८७॥

॥ सोरठा ॥

सूंडाळी चहकैह । वक गोमम वीटो वहे ।
पौहरातू आप खेह । भूरा रोळू भाँमणा ॥१८८॥
दींसो तरवत वार । तूं भूठौ अरजुण तरैह ।
अरजण रौ अवतार । साचौ धाँधळ राव सुत ॥१८९॥
खीची खत्रवट सूं अलग । नवड़ा धाँधळ न्याय ।
जींद ग्रही सुरही जिका । पाल दई छोड़ाय ॥१९०॥

॥इति श्री पाल पोरसातने कव मोड़जी विरचिते उत्तरायण सम्प्रहार रौ समौ सम्पूर्ण॥

—

।। अथ बूढा रो समो लिखतै ।।

।। कवित्त ।।

धुर जाळाँ धसळताँ पुळे पाटले पुळाताँ ।
मळफंतौ पागड़ाँ अगे असवाराँ ताताँ ।
हाकळती साथराँ चा हत्र सलेवळ चड़ियौ ।
ताल छूट त्रापड़े आय बूढौ आपड़ियौ ।
विडंगाळ झाँफ आडावळै करपावे अंगार वळ ।
कणेठौ पाल ऊपर करण आयो जेठी आप बळ ।। १ ।।

।। दूहा बूढा रो बोल ।।

कर मुंहडो काळोह । किम जाउं कोळू कहण ।
भाई भालाळोह । जो म्हाँनूं नाहीं जुड़ै ।। २ ।।

।। छन्द मोतीदाँम ।।

विछूटोय आवत बूढौय वार । हमै ठंभ पाल तणा हथमार ।
नृभै घर जाय हणौं सिध नांज । हूं ऊभोय बूढौय बन्धु हनाँज ।। ३ ।।
मिळे नह पाल म्हनै जग मांझ । उखेडुह बूंट तुहाळोय आज ।
हणौ मुझ बन्धव पाबुह हाथ । न जासिय जायल जायलनाथ ।। ४ ।।

कव वायक

जगै यळ मैंहदर खेत जिरांण । सुजांणत पाल धिखै समसांण ।
उठी लख राव तणै उर आग । दुरी हण पाल दए किर दाग ।। ५ ।।
आयौ परणै धन दैर उभेल । पणूं पख हेकण मैंदर पैल ।
बरी धण पाल जती जिण वार ।चखाँ लख व्याव तणां सिणगार ।। ६ ।।
चवैरत अम्बर पै व्रक साख । पड़ी धर पाल तणी पवसाख ।
महावर वीर तणी हुय मीच । धखै सवळा अवुआळ रा भींच ।। ७ ।।
पछांण्यांय जींद बूढौ पौहचाळ । वूहो राव हेकळ काढ वेगाळ ।
हवो वित लाग घणूं हवणार । बुरै मुख कीनव जींद जवार ।। ८ ।।

बूढा वायक

दये मत नीच म्हनै दिसटाल । कियो किर बांधव पाबु अकाळ ।
अखीयल आद अनाद उखांण । जमाइय जींद हुवौ जमरांण ।। ९ ।।
धकै मत आव न होवत धीर । वुहो बिवनो आज पाबुअ बीर ।
करूं उर धीब दुसारण कूंत । परौ खह धूरत सारंग पूत ।। १० ।।

बूढै राव रा भुरणा

गिरै नभ खंग नटूटोय गोम । जती तुव अंजस खूटोय जोम ।
हुवै मन सम्भ्रम पेख हवाल । पड़े समरांगण हैकळ पाल ।। ११ ।।

।। परगैरा वैरा ।।

कहै भड़ तोल भुजाँ पर कूंत । पड़ै नह भील पड़ै रजपूत ।

बूढै वायक

परगह हूंत कहै सुपखाल । यळा पिड़ ढेंब गुड्यौ अम्बवाळ ।। १२ ।।
दियो मन बांधव काँसु अदाव । वुहो खग जूझ रह्यौ जिंदराव ।
महावर विर तणी हुव मींच । धखै सांवळा अहफीणि रा भीच।। १३ ।।
ठहोर ठहो सु गया पिड़ ठेल । हठोर पठोजु नठा जुध हेल ।
वढचौ नह उजळ वीजळ वाद । छप्यौ चंद्र भांण अमावस चाँद ।। १४ ।।
भले गत ईश्वर वीर भालाळ । कणेठिय एम हुवै तुभ काळ ।
वतावोय नाम न होवत वार । हुवौ कुण पाल तणो हथमार ।। १५ ।।

जींदराव वायक

अखै मुख जींदोय सारंग आंण । गयौ घर पाल अमां दिय घांण ।
रटै कढ सोगन जायळ राव । अनाहक आप बकौ अनियाव ।। १६ ।।

बूढा वायक

तवै मत से मुंह बोल त्रिजात । वहूं नह तुज्ज तणी सत वात ।
जड़ालाय नांखूअ तेगांय झूड़ । कहूं मत बोल मुखांमुख कूड़ ।। १७ ।।

जींदराव वायक

बक्क नह कूड़ कहूं सत वात । सिधायोय पाल घरां इण सात ।
छुड़ावेय धेन लीयाँ सथ सँग । खड़ंतोय तातिय केसर खँग ॥ १८ ॥
मरै मम बंधव जे हथ मीच । सजीत गयौ जुध कोहर सीस ।

बूढै वायक

चवै किय जायलिया सरदार । लगी नह जांण गयो रैह लार ॥ १९ ॥
हणै मुझ ऊभांय बंधव हाथ । सिधावत ठाकुर ता खग साथ ।
रह्यौ जुध अन्तर भूलत राह । वचै नह पाल परै खह वाह ॥ २० ॥
यळा घन पाल तणी गत एह । दखूं किय अंजस मांनव देह ।

जींदराव वायक

नड़ै जुध पाबुअ खेम निपात । भड़ै रण मारचौय मैंदर भ्रात ॥ २१ ॥

बूढै वायक

क्रमांयल जीव मरै इक कोड़ । जन्मै नह कोड़य मैंहदर जोड़ ।
कठोती विभै दिस राखम कोड़। हवै नह देव तणी नर होड़ ॥ २२ ॥

जींदराव वायक

कहै तुज राव कियो सह कांम । न भूलोय बूढा हूं सारंग नांम ।

बूढा वायक

जणावत वैर तणौ हव जोर ।न्हाठौ किम तात हणंत लंगोर ॥ २३ ॥

जींदराव वायक

मुणै वड़ बोल करौ मत मौल । कहूं मत बोल व बोल कुबोल ।
यळा मुज बूठ उखेड़ेय आज । रया कुसळै कुळ साबत राज ॥ २४ ॥
सहोदर पाल हण्यौ अण सात ।पिता मम आप कियो जुध पात ।
गुनै विण आप म बोलोय गैर । वीमांगत मुज्झ तणा दोय वैर ॥ २५ ॥

सुणी गल एह बुढ़ै सुपखाल । भिड़जां री वाग ग्रही भुरजाळ ।
ग्राया हय जींद तणा खड़ एम । जलद्द घटा रवि ग्रोठव जेम ॥ २६ ॥
दखै कर हाक सबै सिरदार । ग्रधप्पत ग्रग्र ग्रहो ग्रसवार ।

बूढा वायक

रह्यौ मन सम्भ्रम सांनुज रांण । भरै जिण साख ग्रथंतांय भांण ॥ २७ ॥
कहै दसमी सिस रौ ज निकन्द । वढ्यौ तुज ग्रग्रज वैर विलन्द ।
डगै न भगौ मव जेहक डाक । उपाड़िये वाग यसी ग्रयराक ॥ २८ ॥
तुलां थट सैफळियौ रवताळ । नगौ नग सीस घुरी हथनाळ ।
वजी हक गूंभ उठी सहवेड़ । खगां मुंह भूटत सैंभर खेड़ ॥ २९ ॥
हुवा रण छेह हठै न हनौज । कटै हथणापुर ग्रौर कनोज ।
ग्रणी सिर नांखत खैंग ग्रमीर । वरा चख जूंभत पाबूग्र वीर ॥ ३० ॥
सरूठोय बन्धव जावत सार । जठै कुण मांडत पाव जूंभार ।
दुरी रिण ताल लखै जमदूत । पमंगांय छेळत धांधल पूत ॥ ३१ ॥
भड़ै वह वाट ग्रणी मुख भेल । ढहै गज ढाल खड़ै पह ढेल ।
करीटिय रूप हुवो खळ काळ । वळीठाय सेल उड़ै विडंगाळ ॥ ३२ ॥
परोपर सानुज बांधव पीड़ । घमा घम साबळ वाज घमीड़ ।
भड़ांभुज सीस बन्धै भर भार । तुरां थट चाल बहे तरवार ॥ ३३ ॥
वलक्कत पूठ घणूं गज बेल । ढळक्कत ढाल पळक्कत ढेल ।
जुड़ै ग्रस तांण रकेबांय जोड़ । रुड़ौ रण जूंभत राव राठौड़ ॥ ३४ ॥

बूढा वायक

दयौ उर बांधव पाबूग्र दाव । रखै जुथ खेम रहै जिंदराव ।
उभै रिस बैर रही यण एव । ग्रयामण नीबोय बाहड़देव ॥ ३५ ॥
उठावांय कुंत धकै ग्रसवार । ततौलांय जींद मथै तरवार ।
धरा पर जींद ढहै खग घूंण । चढै हय फ़ेट हणामत चूंण ॥ ३६ ॥
सुणे हक एम परग्गह सार । ग्ररी थट मींच दयौ मुख ग्रार ।
तुरां थट बाग भली तिण ताळ । रकेबांय ऊतरिया रव ताल ॥ ३७ ॥

चलै रज घेर धूंग्रौ तम चूक । वड़क्किम धू पर ग्रांण बंदूक ।
रही मन साजण जींद हरीस । ग्रकै वप तीर लगा इकवीस ॥ ३८ ॥

रतंबर धार वहै तन रोस । कमद्धज खाग करी विण कोस ।
ग्रखूं सगती री मया हंस धेव । दल्यौ इणही खग सारंग देव ॥ ३९ ॥

हणूं हव पाल तणौ हथमार । तही खिण चूकवियूं तरवार ।
गरद्द मभार कियौ रिम घाव । पड़ै धर सीस चलै नह पाव ॥ ४० ॥

रह्यौ विण सीस खड़ौ रिम राह। उड़ायाँय ढाल ग्रहां हथवाह ।
उबारयीय जींदह ढालांय ग्रोट । मारूं विण सीस थयौ मन मोट ॥ ४१ ॥

ग्रणी चकचूर थयो तन ग्रंध । कमद्धज घूमत होय कमंध ।
पखां दोय वंस तणी पर पाल । भालाळ री बांह वड़ी भुरजाळ ॥ ४२ ॥

वरूथोय जोमग ग्रंबर बाथ । हुवो हव पाबुए एकण हाथ ।
बरा चक ढाकिय कोट वळीट । परां थट दीठ उगाड़िय पीठ ॥ ४३ ॥

वूहा खग जींद तणा खटवीस । बडे भड़ राव तणा इकवीस ।
भयंकर रूप गुड़ै नृप भूम । डरै खग भाट भगौ इक डुम ॥ ४४ ॥

हुवौ जिण ठौर वडौ घमसांण । नठी तज डूमळ वाज निसांण ।
हणै सत्र तीस दसां निज हाथ । पड़ै चवरासिय घाव निपात ॥ ४५ ॥

वड़े प्रब नांज टळै विमुहाल । सहोदर न्याय वजै सुपखाल ।
वधी खग विखपै दीवा वलीस । चली गत देखल पंच चळीस ॥ ४६ ॥

कंठीरव वंस वधारय कूंत । पड़्यौ समरांगण धांधळ पूत ।
कियौ वरवीर दळांरोय काळ । ढह्यौ नृप सात्रव वाळद ढाळ ॥ ४७ ॥

हणूं जत जींद रही मन हांम । कणेठिय जेठिय ग्रायाह कांम ।

जींदराव वायक

धनो सिध वंस नमो चित धाव। रयौ मन चींतव जींदोय राव ॥ ४८ ॥
यळा पुड़ न्याय वजै ग्रवितंस । वड़ौ पौहवाळ सिधांरोह वंस ।
साळौ ग्रर भ्रात विनै कुळ सोह । मिळै नह बूढोय मैंहदर मोह ॥ ४९ ॥

हुवा भड़ भेळाय होवण हार ।विड़ांगाय डोर भलै जिण वार ।
कटक्किय ऊठ ग्रथै किरणाळ । महा डिग संतर तुज्ञ कपाळ ॥ ५० ॥

वड़ा थळ लंघ महा वळवीर । भली पुळ ग्रायोह जादव भीर ।
चवै नृप जायल व्याकुळ साज । रह्यौ रण मैंदर मातुल राज ।। ५१ ।।
ग्रहाणांय सोक तणौ ढप घेर । फबे ग्रवसांण दियौ बुध फेर ।

मांमैं जादव वायक

हुसी कळपंत म राखव हेज । भणौ गल मौमांय दक्ख भणैज ।। ५२ ।।
धुखी कळ राज करौ भुज ठाह । न हौवत पाल ग्रजे नरनांह ।
रहै सिर वैरन जोगांए रूठ । पाबु सह साम्रथ ऊभौए पूठ ।। ५३ ।।
सुणी गल पाल वड़ौ जुध सार । धरौ ग्ररिग्रंस कढे सहधार ।
भुजाळोए बांधव री पख भीन। तड़ांयळ पाल न राखैय तीन ।। ५४ ।।
लछम्मण ऊभोय पाबुए लार । करै कुण बुढोय जीम डकार ।
जरै कुण पारद काचोय जेठ । पचेजै राव बुढौ किण पेट ।। ५५ ।।
हुवो विण पाल वूहां ग्ररि ग्रंस । वसू पर मेटेय खीचिय वंस ।

जींदराव वायक

नारायण वाद रही यळ नांम । कहो कर तोल करां सोई कांम ।। ५६ ।।
पाबू सिध वीर वडौ पौहचाल । न सूझत मोहि होसी किम नाळ ।

कव वायक

भयंकर ग्राथमियौ नभ भांण । जगी यळ ग्राग धुखंत जिरांण ।। ५७ ।।
मणी चख भींच मटी मरजाद । चवै दिस तीतर चींगण साद ।
क्रमै धड़ ग्रीधण चील सकाम । यळा रवि झंफ हुवंत उनाम ।। ५८ ।।
करूर जूंझार फटी चख कंत । दबी रसणाय झबूकत दंत ।
रनौ किण ही विध होसिय रात।न जांणू हूं जांणौ थूं गोरखनाथ। ५९ ।।
उबै नभ सीस थयौ सिस ग्रांण। विजांणू य होसिय केम विहांण ।

प्रधानां वायक

पयेपत वैण सलै परधांन । जपै मुख कायर फोट जबांन ।। ६० ।।

दुरी सिर डील दयां जुधराव । घलां अधरात पवै परघाव ।
वूओ इसड़ौ किसड़ौ इक वाप । न छोड़ांय पूंछ वढौ हव नाग ।। ६१ ।।
दमंगळ धूंधळ वेळ दुवाह वचाळत पाल परै रस वाह ।
ढळां नख भूखण बैठाय ठाम । वचारत बाद तणी वरियांम ।। ६२ ।।
मजै भड़ खाग करी फिर म्यान। धरै उर जींदोय गोरख ध्यांन ।

परधांनां रो मिसल

जुड़ै जुध पाल थयौ रह जीत । उभै मण कोहर पौढ़ नचीत ।। ६३ ।।
चवै तन कायल लोह सरीर । क्रमै भड़ सूताय जाय कठीर ।
थकेलोय ग्रौजग ग्राळस थोक । रह्या पड़ भील न राखिय रोक ।। ६४ ।।
प्रमेसर हाथ वड़ी परभात । ग्ररी पर घाव घलां ग्रधरात ।
रकेबांय खांच जमै दृढ रांन । जती सिर जावत जूंझ जवांन ।। ६५ ।।
रुपां सिर जाय खड़ां खग रीस । उडै झटका वटका हुय ईस ।
धुखै उर वैर न होवत धीर । कठठुत पाबुग्र सीस कंठीर ।। ६६ ।।
जरद्दांए भीड़ कड़ी जमजाळ । पवै पर भींच खंचै पौहचाळ ।
ढळां बंध पीठ चढे तवे ढंग । खैरावेय खैंगांय तंग खतंग ।। ६७ ।।
होवे भड़ हाकळ हैवर हींस । चढै मारका भड़ पाबुग्र सीस ।
मिळी ग्ररिणयां मन रंभमजाक। कटठुत काळ सरूप कजाक ।
तोड़ा धुक बीड़ बंधै तरवार । चढै फिर जायळियौ सिरदार ।। ६८ ।।

।। इति श्री पाल पोरसातनै ग्रासिया मोडजी कृत उतराण बूढै रौ समयौ सम्पूर्ण ।।

—

।। अथ राती वाहौ ।।

।। दोहा ।।

टोप रंगावळ मारकां । भिड़जां रज भरियांह ।
राव पधारे पाल पर । पिड़ वज पाखरियांह ।। १ ।।

॥ छन्द सारसी ॥

लोह लटोपा बंध धूपा कड़ी टूपा कस्सए ।
आठी आळोजा मूठ तोजा घल्ल मोजा तस्सए ।
मिळ वीर मेळा प्रेत वेळा खेत खेळा नच्चए ।
जिंदराव सत्थं वांध जत्थं पाल मत्थं खंचए ॥ २ ॥

बंदूक सोरं मूठ ओरं गज्ज डोरं बंधए ।
गोळी घमोरं दंत तोरं चडा ठोरं संधए ।
वरियांम वायं थाळ मायं कांन नायं खंचए ।
जिदराव सत्थं बाँध जत्थं पाल मत्थं खंचए ॥ ३ ॥

आड़ीद तोड़ा गज्ज प्रोड़ा जल्ल घोड़ा हत्थए ।
ढळलांम डोरं कंध ओरं सार तोरं मत्थए ।
सीगा ढळक्कं सोर भ्रक्खं सिग्र बंकं अच्छए ।
जिंदराव सत्थं बांध जत्थं पाल मत्थं खंचए ॥ ४ ॥

पंगू पयादं मूक सादं ऊद मादं कढ्ढए ।
तेजाळ तांमं वेग कामं नीस लांमं वढ्ढए ।
सारमी साटं वाज झाटं लोह लाटं लच्छए ।
जिंदराव सत्थं बांध जत्थं पाल मत्थं खंचए ॥ ५ ॥

अंगं बलीठं रोस धीठं रत्र दीठं नैणए ।
काळा करीठं ढाल पीठं खाग रीठं दैणए ।
मूछाळ अल्लं क्रोध मल्लं गल्ल बल्लं मच्चए ।
जिंदराव सत्थं वांध जत्थं पाल मत्थं खंचए ॥ ६ ॥

बंधं बुकानं पेच तानं जोज वांनं चंगए ।
हत्थं बुरच्छी वाग खच्छी खूब अच्छी पग्गए ।
रोद्राळ रीसं रूप दोसं आप ईसं इच्छए ।
ज़िदराव सत्थं बांध जत्थं पाल मत्थं खाँचए ॥ ७ ॥

गुग्घ रायं ढेर वायं सो सिवायं सद्दए ।
चूडेल वीरं भूत भीरं सिद्ध पीरं वद्दए ।
दोड़ै तुरंगी खेह अगी घोर तुंगी मच्चए ।
झिदराव सत्थं बांध जत्थं पाल मत्थं खंचए ॥ ८ ॥

सज्जू धटांना रातवांना खूविडाना अंगए ।
जोगिन्द्र जूना गह्लहूना क्या निमूना जंगए ।
द्वै जुद्ध लग्गा बांह भग्गा प्राण सग्गा पंचए ।
जिंदराव सत्थं बांध जत्थं पाल मत्थं खंचए ।। ६ ।।

।। कवित्त ।।

डावी भैरव चहक वाम गूवू घोरारव ।
है नाहर सावड्ड बाम जाम्बक बोले तव ।
फरक दिसा हव दंत फेर फोई धोमाजळ ।
सत नारी ईसांन भई धापंथ अखै पळ ।
सतसौ सिलहदाराँ सहित भेस पराक्रम लाजमय ।
जिंदराव नाम गोरख जपै मोर पीठ असवार हुय ।। १० ।।

।। छन्द त्रोटक ।।

चढ राव सबै भड़ खेंग चढै । करहा अस कोहर माग कढै ।
कळ चालण जायळ-नाथ क्रमै। चह बंध धुखै अधरात समै ।। ११ ।।
पमंगाँ खड़ सेल भुजाँ पळकै । ढहचाळांय पीठ ढळां ढळकै ।
दळथम्भ बुकाँनिय बंध दियाँ। केइ भींच बंदूकाँए डाब कियाँ ।। १२ ।।
भुइयाळ धकै खड़ पीठ भड़ौ । कर ठोरत पाथर सीस कड़ौ ।
बिजड़ाहथ बाँधव लाय बळै । पाटळै अस एविय माग पुळै ।। १३ ।।

जींदा वायक

धुकती चह भ्रात क्रमू घर सूं । मिळसूं कद बाँधव मैंदर सूं ।
जरदाळ बंधावत गाढ जठै । उर में धिक काळज झाळ उठै ।। १४ ।।
अर मेलूंअ आधिय रात उरा । सरगाँ मग धीरेए सारंगरा ।
जुड़सी जम सादन पाल जमैं । हथमार मिळावुंअ वेग हमैं ।। १५ ।।
खळ काळ माथाळ खथाळ खड़ां।भिडजाळ अताळ ताताळ भड़ां ।
चुड़खो भड़ ग्रीध अखो साँवळी । हिय माँझळ पँख उठी हवळी ।। १६ ।।
पंथ छांडेय ऊजळ वीर प्रलै । हरि जौगण प्रेतण भूत हलै ।

तिण रूप भयंकर ब्याळ तिसौ।जिण वेळा रौ जींदोय काळ जिसौ।। १७ ।।

लड़वा सर धांधळ दाव ळधौ । खड़ आवत खीचिय खार खंधौ ।
जतराव तणौ सिर बंध भलौ । भड़ आवत आधिय रात भलौ ।। १८ ।।

कळचाळ उड़ावत खूर कियां । नर पूठल दोय हजार लियां ।
धरती हय पांडांय नाल धमू । सज हालिय वायब कोण चमू ।। १९ ।।

असवार भयंकर ओप यसा । ततकार चढै जमदूत तिसा ।
नर नाहर बूड हणौ नृपति । अधरात रि वाट ग्रही अपती ।। २० ।।

गम जामान बायक गोरख रौ। निस घोर में खेंग खड़ै नुगरौ ।
रतवाह वजावण खागरणी । तेउ वाजन सूरांय वाज तणी ।। २१ ।।

धल डाक निसाण जगी घुरिया। पींजिया रज धूंधळ पाखरिया ।
सत्रवां पर घालण धाव सही । जिंदराव खडे जमराव जही ।। २२ ।।

निस देवतियां वायक

अर जासिय आधिय रात उरां । कमधां पर घालण धाव करां ।
अणचेतन घेर लई अणियां । जतराव जगावोय जोगणियां ।। २३ ।।

सिधियां तत सीलजती जतियां। देयबो कळ पाबू नै देवतियां ।
पुर साथ झोकायय पेम पतां । जिण लीधोय आसंग पाल जती ।। २४ ।।

सत ताराय गैण मथै समयौ । अज नाह प्रभात्योइ ऊगमियौ ।
खड़िया अस ऊंठ अतन्त खथै । मझ रैण अजां लग दात मथै ।। २५ ।।

पुर बंधरजी पड़ साद पड़ै । खित खीमर हूत विडंग खड़ै ।
कळचाळ पुळै नृप तूंग किए । नव लाख रौ वंधव नींद लिये ।। २६ ।।

विडंगां खड़ सात्रव आय वगौ । निअद्राळुअ नाहर नींद लगौ ।
दसमी दन जींदय दाव दियौ । अध रैणि रौ चांदोई आथमियौ।। २७ ।।

हय कोहर जोगण ऊमहड़ौ । खित पौहर खाखुअ भींच खड़ौ ।

सूईयै वायक

भइयाळ पयादांय हूंत भणै । गोळियौ मढ डाविय कूंठ गणै ।। २८ ।।
उतराध मथांणांय आथमणौ । चख दीखत कोहर सांमहणौ ।

हर झाल कहूं सुध राख हियै । दिस वायव कोळूग्र रूंख दियै ॥ २९ ॥
केयियां सुर घोर सुं ग्रौर कणी। तेइ तीर सरोवर पाल तणी ।
झल वाग प्रधान कहै जब ही । सिरदारांय पाव ठंभौ सब ही ॥ ३० ॥
षग पालाय माड ठंभौ परियां। पागड़ा हव छांड़ोय पाखरियाँ ।
गध घोड़ाय राखांय दूर घणी । तस वाग झली तद मोर तणी ॥ ३१ ॥

प्रधान वायक

छळ सूं बळ दाख गढी चढणौ। वरदायक रात थकां वढणौ ।
रण रोपय पाव खरौ रहणौ । ढळती निस पाल खगां ढैहणौ ॥ ३२ ॥
ग्रस ठांभेय कोहर सूं उरिया । ग्रधकोस वड़ा भड़ ऊतरिया ।
जुध काचांय घोड़ांय डोर झली। गिड़ कंध हथाळिय फींण घली ॥ ३३ ॥
कोग्ररौ मल वाढ नसै कळियौ। गिड़ कंध नै फींण दियौ गळियौ ।
मरदां सिर माप झके मणियां । जमकी कळ पावत झूसणियां ॥ ३४ ॥
तस मूठ ग्रहे धखधूण तळै । खरहंड खड़गांय बीड खुलै ।
चढ सावज देवळ सांमहणी । तद वींट वळी नवळाख तणी ॥ ३५ ॥

गेवाऊ हेलो

गूंजुए पर बोलत मोर घणा । मांझियां सह रैजोइ ग्रापमणा ।
खर री कठ घालत खार खंधी। ग्रणियाळिय सादत रात ग्रधी ॥ ३६ ॥
चंवरी चरराहट चांसरियां । हुड बोलत गूघुइ हालरियां ।
भुरजाळोय सूतोय नींद भरै । काळवीं पय उक्रम हींस करै ॥ ३७ ॥
लुळ खाखुय सायक वैण लगै । परधांन जगायौ दे हाथ पगै ।

खाखू वायक

ध्रख बोलत भूखिय स्याल भुग्रा। वरजातां ऐ मारग नार वुवा ॥ ३८ ॥
सुध राखेय चाँदेय कान सुणी । भड़ भालेय खाखुग्र हुंत भणी ।

चंद्रभाण वायक

बोड़ौ काळवीं पर संज करौ । किम पाल जगावण जेज करौ ॥ ३९ ॥

वद आपांय सीस कळंक बुरौ । कुलंबै मिळ सांमळ पाल करौ ।
गम राखिय आंगुळ वार घणी । तिम बोलत सांमुह काळ तणी ॥ ४० ॥

सुण खाखुअ सांवण तंत सबै । यळ छोड़ोय कोहर वेग अबै ।
रज सूं पळ वींट बंधी रखियां । जग मूठिय आरुण जांमकियां ॥ ४१ ॥

जरदाळां रै आगळ आग जगै । तारायण जांणक भूम तिगै ।
रण सालुळ पैदल भूप रसा । कर डाबिअ ढालांय खोल कसा ॥ ४२ ॥

अधरात अंधारिय वांट अणी । रावणां हलकारचौ क जागिरणी।
लोहचाळ ढालाळ नृपाळ लियां। कर माल कुंदाळ दुतूंग कियां ॥ ४३ ॥

वेगड़ौ सत वीसत हूंत वूवौ । गुंजुए लग कोळूअ माग हुवौ ।
जिंदराव लयै दळ जूह जुदौ । मुणियै जिण कोहर वैर मुदौ ॥ ४४ ॥

तित तोड़ाय तूट पड़ै तिगता । हव हालत नाखत्र हींडळता ।
कमदां खिचियां कुल हांग करौ। अर आयौइ जींद अचांणकरौ ॥ ४५ ॥

घर मंडण भ्रात रनै गमियौ । काळजै भड़ ऊकळतै क्रमियौ ।
लपता छिपता सैह जांण लिया। अतरै सम रूखळ ओळखिया ॥ ४६ ॥

रजनी गत जोवण मींट रही । महाराज विराजत जाव मही ।
भरण नांम अळक्ख वभूत भड़ी । दसनांमिय रूप ग्रही दुजड़ी ॥ ४७ ॥

हतवाह ग्रही खग ढाल हठी । सिधराज लराणांय पाल चठी ।
कर ढाल कराव जळद्द कळा । सिधराव री तेग खवै चपळा ॥ ४८ ॥

क्रम लोह पटेत भुटै कळतौ । अरियां सिर वाढत ऊछळतौ ।
भुज ढाल फिरावत ले भड़ता । तरवार सळाव लये तड़ता ॥ ४९ ॥

चांदे वायक

गुरु लीनाय ठांभ कटक्क घणा । ततकार बलोच भड़ोच तणा ।
अजरायळ जोगिअ खेत अड़ै । प्रिड़ खागांय रीठन त्रीठ पड़ै ॥ ५० ॥

सब दौड़ाय ऊपर काज सरूं । सिधराव संग्राम करै समरूं ।
हव आवत वींट मुरज्ज हली । यक साद उचारत वाद अली ॥ ५१ ॥

भुरजे चढ चांद गोळी भर में । पसणां दळ दीठाय पाधर में ।
खाखूअ कर हाकळ वेग खरी । यत आयोय ऊपर जींद अरी ॥ ५२ ॥

कण मोटेय जोखम धीर कलौ । फूरती कर ढाबोय वेग फलौ ।
हणजो मत सांमीय राव हकै । समरू पर खाग घणी चमकै ।। ५३ ।।

सब चाकर ठाकर एक सही । मिळिया सोय खींमर सीम मही ।
तन जोत पराक्रम दीह तणौ । घट आवत रात अपांण घणौ ।। ५४ ।।

खिज आखव खाखुअ दौड़ खतै । मांझियाँ उठ आयौह साथ मथै ।
प्रसणां घर जाग थई पळिया । हव वेगावो जींदोय हाकळिया ।। ५५ ।।

फुरती कर राव री बोल फतै । उरडै फळसै पर भींच यतै ।
ढोलियै रखवालण काज ढळै । पाआराधिय चांदोय दौड़ पुळै ।। ५६ ।।

दनरा भड़िया नह देख दवौ । अप साथ लखीजै है साथ नवौ ।
लोहलाठ हतावेय ढाल लियां । कर दूजेय खाग अम्यांन कियां ।। ५७ ।।

सत वीस सिधावण पाल सथे । जोगणी छळ कीनौय होय जथै ।
गिड़ कंध कबांणांय दौड़ ग्रही । नहराळांरै धांनंक नोद नहीं ।। ५८ ।।

फरिये दन आवध सैण फरै । जळ धार बन्दूकांय कांन झरै ।
ताइयां वज हाक पुळी तरिया । कमठाळ मनो भ्रम कांजरिया ।। ५६ ।।

धड़ ओद्रक ऊभ्रम रोम धकै । मझ बोलिय मालण पेम मुखै ।
सत वीस कळा विप देव सही । हिक गैब घराघर हाक हुई ।। ६० ।।

अम्बर आज

अणपाण अधीर लड़ै असत्रां । सबळां तन पाण लड़ौ ससत्रां ।
विर हाक वळावळ डाक वजी । गळ आग्रज भीलांय आभ गजी ।। ६१ ।।

ढाळेतिय ठेलांय हूंत ढळै । प्रतखाग अम्यांनिय दौड़ पुळै ।
सांवळां पर आधिय रात सरै । गळियां अड़ घाल बंदूक घुरै ।। ६२ ।।

मग माझिय थाट ठम्भै मंड रौ । चित ओछट चांदेय चामंड रौ ।
मण धारण चेतिय ध्यान मगै । जिण वार पाबू सिधराव जगै ।। ६३ ।।

दहुँ वंस उजाळण सींह दुवो । हेक सांभळ सूरज रूप हुवौ ।
किरती मुख भाखुअ जोड़ किती । जिण वेळाए जोवण जोग जती ।। ६४ ।।

घट व्यापेअ पोरस जोस घणौ । तिणवार धणी कव मोड तणौ ।
हव पूरूंअ हांम मनै हंसियौ । अपजोस वडो कण ऊससियो ।। ६५ ।।

लग आभ भुजां खग ढाल लियूं। कमठाळोय हाकल धाक कियूं ।
कर डाब अली बंध फौर कळै । प्रत खाग अम्यांनिय दौड़ पुळै ॥ ६६ ॥

सयना बळ सेनपती सुधरै । खग वाहण पाल क्रमै खुद रै ।
हव आवत वींट भु रज्ज हली । यक साद ऊचारत वाद अली ॥ ६७ ॥

समसेर रकाब वगों सधरा । रुघ आगळ रौद फबे बुध रा ।
पायकां जुधराज थकां पड़िया । हव आयाइ भील तुटा हुडिया ॥ ६८ ॥

सांवलां रो अग्राज

उरड़ै मत एकल वाद अणी । धीरयै मम आवदि पाल धणी ।
लिय ढाल हती बेय आग लगै । यण सात हुड़ावांव खाग अगै ॥ ६९ ॥

गज हेड़व सींग घलै गिर में । प्रसणां दल ठेळांय पाधर में ।
गुड़सी पिड़ ठाकुर आज घणा । तुळ आयाइ चाकर तुज्ज तणा ॥ ७० ॥

प्रसणां सिर हाथ घलां प्रवड़ै । चवरासि छतीस लखै चवडै ।
खळ जांणन दीधोय प्राण खरू । चन्द्रभांण जौजांण कटै समरू ॥ ७१ ॥

थट अग्र अरां मुह मेज थयौ । गुर तोरण जूंझ सरग्ग गयौ ।
दळ अग्र अरां सिर ईस दियो । कयळास जाय सुवास में कियौ ॥ ७२ ॥

कव वायक

मंड पाव वळावळ आप मणां । तेय तूटत नखत्र रात तणा ।
वड़ बूढौय बंध खगां वहियौ । गूंजुओ खळ चार दिसां ग्रहियौ ॥ ७३ ॥

मच कूक मथाणेय पाल मरै । कछ देसिय सावळ चीह करै ।
जिण वार जती रण घात जुवौ। हेक साथ अड़ां पर घोर हुवौ ॥ ७४ ॥

मोटवी आज चारण पाल मटै । सगतां सह बूंब करै चौवटै ।
लग वाद जिंदै अवसांण लयूं । दोहुं कोर तै कोहर लाय दियूं ॥ ७५ ॥

मण मांझिय काळ थिया मरणै। सत्र दीसत पाधर चांदरणै ।
सगतां केय मेड़िय सीस चढी । गढवा चढ ऊंभाये पूठ गढी ॥ ७६ ॥

वज हाक वळावळ भींच वळै । कमलादेय पूत नहीं कुसळै ।
सत्र आडाय भूसण खूर सळै । गूंजुए पर खागांय रीठ घळै ॥ ७७ ॥

॥ दोहा ॥

वींसोतर बालोह । मोद हतौ थारै मनां ।
भाई मुरजाळोह । रात पड़ै ग्रहियौ रिमां ॥ ७८ ॥
जुध गूंजवड़ै जांण । रहिया नह अंबारथां ।
पीथळ सोम प्रमांण । वीर भांण आया वढण ॥ ७९ ॥
डाक वजै अंबर डगै । भगै प्रेत जुध भाळ ।
लड़ण जींद पाबू लगै । भगै वीर वैताळ ॥ ८० ॥

॥ छन्द डण्ड मण्डली ॥

जिण वार बावन जागयूं । अत हरख चौसठ आगयूं ।
तरवार चन्द्र त्रिकाळ यूं । ढैह पड़ची ढंध ढंचाळयूं ॥ ८१ ॥
ठह तेग ठाठर ठाइयूं । तिण वार ऊसस टाहियूं ।
खग भाल खींवर खोखरं । डाढाळ वीसळ डोकरं ॥ ८२ ॥
कर तरिय पेम पड़ा कड़ं । भड़ मंछ व्रूह भड़ा भड़ं ।
खळ थाट खाकुअ खायकं । पग रोप पाधर पायकं ॥ ८३ ॥
भुरजाळ भाकुअ भाळयूं । मचराळ ग्रीठ मुछाळयूं ।
वेढाक नायक बेगड़ं । तिजड़त्त सायक त्रेघड़ं ॥ ८४ ॥
विरदेत नायक भूवळा । सदवीस ऊसस सांवळा ।
रतवाह पाबू पर रटै । चवरास ध्रीगड़ चौवटै ॥ ८५ ॥
वरियांम जींद वकारियूं । हड़ूमान रांम हकारियूं ।
दळथम्भ ठीगण देवड़ं । बाथोट समहर बेवड़ं ॥ ८६ ॥
जगजैठ खत्र गुर जोट यूं । करूं अंस भालम कोटयूं ।
रण वार वेगड़ मन रळी । चहुंआंण सांमत सींघळी ॥ ८७ ॥
अणबीह आहव और यूं । घुरनाळ बंधिय घोर यूं ।
सोय हाक माइवळ न सुणै । भुरजाळ भाइयळ सूं भणै ॥ ८८ ॥
कमळाय दौढी दिस क्रमी । भय रोम ऊभ्रम मन भ्रमी ।

कमलादे वायक

नह बूढ बूढौ जुध नड़ै । होहाळ बांधव नीबड़ै ॥ ८९ ॥

घढवर्णां दौड़ी पड़ गळी । मझरात मांझिय आ मिळी ।
भयराव मा भायाँ भणी । तायगम तूं छै बूढै तणी ॥ ६० ॥

वात– गढवरणां गोलियँ सूं दौड़ देवल सैंहात कोळू में आय खबर दीनी ॥

॥ छन्द ॥

अर आवि त्योर अंग अणी । धुर वाँछतौ म्हारौ घणी ।
गर ढेरौ बुढौ स्याँगयौ । अर पाल मथै आवियौ । ६१ ॥
पर भणै मात पिछाणियौ । जद वुहौ बूढौ जाँणियौ ।
रणवास सादव सुण रोए । हव सोच कीनां स्यूं हुए ॥ ६२ ॥
दळ मेल सगतां दासियां । घर फेर हाकळ ग्रासियाँ ।

कव वायक

रण साद भूसर सव रहा । गांमेल मोरचा चढ ग्रहा ॥ ६३ ॥
अतरै तौ आइयल आवियूं । बक बैण भड़ विरदा वियूं ।

माजी कमलादेजी वायक

सैहड़ाँ थे देखौ साँघणा । तायै सरग घर बूढै तणा ॥ ६४ ॥
पड़ साद पाबुअ पर पड़ै । सह लखौ तुम भुरजाँ चढै ।
अर सीस नेसां आवियौ । थह पाल घेरौ थावियो ॥ ६५ ॥
वड काल बांधव रिण वुऔ । अंहै चाल घेरचौ गूंजुऔ ।
अधरात पाबुअ पर रणी । तायवणी पुळ भाइयाँ तणी ॥ ६६ ॥
लोह आँच कैणठी पर लगै । भय मांन जैठी स्यां भगै ।
किय तुंग फब्बे बुध करा । भड़ म्लेच्छ सखरै भखर रा ॥ ६७ ॥
जन अन्त तू दिग्र भज्जळै । काळ जाळ वीटण काबलै ।
भड़ साथ आवध ग्रह भलां । होय आज राती वेहलां ॥ ६८ ॥

॥ कवित्त ॥

कळ वीडै जांमकी करै हथ लाल अडीकळ ।
लै दन्ता तरवार पळकै धारूंजल ।

फिर भुजां फरहरै आग मोरचा उलाळै ।
हय फेटां हड़वडै अड़ा ऊपरै अताळै ।
वरियाम हाक करता विडर विभ्रमता बकता वयण ।
आविया पाल ऊपर करण लोह बोह अंगां लयण ॥ ९९ ॥

॥ छन्द पद्धरी ॥

रोधियौ जांण बूढौ रंढाळ । भड़ वेळ करण तूठा भुजाळ ।

रजपूतां वायक

धिप लर्यां सेस यण ताल धाय । मन रखै सोच मत डरो माय ॥१०० ॥
भुर लड़ां अमै भुज भारधार । कळ लावां पाबू पोतकार ।
अरि काळ पाल रख नाल ओट । कर माळ चाळ कर ढाल कोट ॥१०१ ॥
जतळावां कुसळै समर जाय । कै मारां जींदौ अमर काय ।
कह वात सनढ भीड़ै कड़ांह । हयग्रीव रूप कीनी हुड़ांह ॥१०२ ॥
सांमळा समर से मुहासींह । आविया सहड़ पूठै अवीह ।
कळचाळ जींद जुध दाव कीध । दावौ जिण आगू जाय दीध ॥१०३ ॥
अणजांण विगत ऊपर अड़ांह। संक्रमण प्रबळ किय सोहडांह ।
ग्रह ओट तिमर अंगुल गुडंब । धुख तीर समर छूटी प्रडंब ॥१०४ ॥
कळ लगा तीर भुरजाळ केक । हथनाळ गजी सुरबंध हेक ।
अणघाव रह्या केई खेम अंग । रजपूत हुआ केई चौळ रंग ॥१०५ ॥
तेजियौ रजक तीसरी ताळ । भड़ भूठा खाग हूता भुजाळ ।
कळ सोहड़ फेट दे तुरत कीध । दूसरी फ़ेर नह मरण दीध ॥१०६ ॥
सुण हाक समर पड़साद सार । जांणियौ पाल बूढौ जोधार ।
सत्रवां वैहैण मन मोह साज । रण आयौइ अग्रज भ्रात राज ॥१०७ ॥
वण ताल भड़ै हथनाळ थ्याळ । सांवळां हूंत ढळियौ सिंघाळ ।

कमळादे वायक

पाल री पीठ जोगन्द्र पीर । वींटियौ सांवळां हूंत वीर ॥१०८ ॥
सिंहाण चढै करवी सहाय । राखजे पीठ नागोंण राय ।

सुपियार तणा सायब सधीर । ब्रन पाल करण नव लाख वीर ॥१०६ ॥

जिण काज पाल रिणराज जाय। आरंब राय कर वेल आय ।
भालाळ पीठ रछपाल भाळ । पेमड़ा राय तीसरी ताल ॥११० ॥

सुत पाल तणौ रख पीठ साथ । हाथियां गिडारी राय हाथ ।
सेब गिर पाल राखे सचाळ । कांगड़ां दुरंग री महंकाळ ॥१११ ॥

सांमहो लखै प्र तिव्यम्ब सार । कमळा तद ये रिछया कंवार ।
थित एक रखै मुझ सोक थाय। जाखी कण जोखम कुसळ जाय ॥११२ ॥

निस जुद्ध आज होवै अनाथ । सुपियारी पेमल हेक साथ ।
कुसळात उदय किण विध कहाय। जिण सदन जंवाई जींद राय ॥११३ ॥

किरणाळ वधारण वंस कूंत । अब मोटे जायौ पाल पूत ।
सालुळै मूज उर अमर सोर । काळजै तणी वढ पाल कोर ॥११४ ॥

कै हुवैं खींचियां सदन काळ । जुड़सी भटियांणी उग्रर झाळ ।
ध्रोहां निस उड़ौ दीध धाव । जम लीना जाखी जींदराव ॥११५ ॥

यळ गमू तमीणी जात ऊध । दध हुवो सही मन्दार दूध ।
को छळी इच्छ सगत कार । हव मिटे कदे नह होणहार ॥११६ ॥

दोउ घरां गमण पुळ आव दीध । कमळाय पीठ हलकार कीध ।
लागी कळाय भुतोळ लोट । दीधूं कलाळ आडी ददोट ॥ ११७ ॥

तूटीक मूंठ झंफीक ताळ । छूटीक मुंठ नय सीखराळ ।
सेमुहा नजर दीठौ सळाय । हुळ सीस जांण झंपौ हुळाय ॥ ११८ ॥

भालाळ तणा भुरजाळ भाळ । कमठाळ खीचियां तणा काळ ।
आहेड़ भमर मजबूत अंग । रजपूत समर जमदूत रंग ॥११९ ॥
सामळां भींच ऊंतोळ सार । पाल रा पाल आडा प्रकार ।
दोहतां भुजां सांमुद्र डंड । पाल री वेळ आया प्रचण्ड ॥१२० ॥

सांमुग्रां भींच भूठा सभाह । रोधियां खीचियां घणां राह ।

कव वायक

बापरी वीरहक तणी वाक । हळकार पाल पायकां हाक ॥१२१ ॥

पाबू वायक

रोधियो खळां बुढा रंढाळ । चापड़े लये जुध हैक चाळ ।
घण फुरत करी खग घली घाव। रोकियौ कमधजां तणौ राब ॥१२२ ॥
केय कहै भिड़ आयौ कण्ठीर । विसटाळ कहै कोय वडौ वीर ।
जिण वार तमंक पाबु जवान । विसताळ भड़े खग रीठवान ॥१२३ ॥
हिण कहै समर दोहुँ तरफ हाथ। नैहाद वजे ढालां निपाथ ।
जरदाळ तिमर तोड़ी जंजीर । वढ खगां ऊवळै वडौ वीर ॥१२४ ॥
कणएठी जांणै भिड़त काळ । जिण जेठी छूटौ जगत जाळ ।
पिड़ियाळ पखै ऊड़ै पळाह । विधु वीज कनांह वीजुभळांह ॥१२५ ॥
जड़लगां वेहत फिर वज्यौ भीक।लूणकां अगै सिर मिळी लीक ।
सांवळां हाथ तेगां सळाव । गिर सीस वीज वह रतां ग्राव ॥१२६ ॥
जिण वार पाल जम रूप जांण । भळकन्त जेठ मध्यांन भांण ।
जूंझार वीर तोले जवांन । भयरवी सबद बोलै भयांन ॥१२७ ॥
ऊतावळ ऊड़ै समर आळ । भूतावळ फेटां हूंत भाळ ।
डंडूळ वाय नभ धार देह । मैहरांण सीस गैहराय मेह ॥१२८ ॥
अगडाय सीस खुल वाय आंन । पह पाय दूपैरण सुरा पांन ।
यण भांत खीचियां हूंत आड़ । पिड़ भोम भुटै काळा पहाड़ ॥१२९ ॥
जिण वार उभै दळ जोय जोय। हिक पाबू पाबू सबद होय ।
तरवार उडै हुय टूक ताळ । खांडेळ रमै किर बंध खाल ॥१३० ॥
साकणी मढी हूंकार सींह । खोखरां वडां हींडै खवीह ।
ढळिया क गूंजुए रुधर ढांण । जोग्रन्द्र कोयळे धूंध जांण ॥१३१ ॥
वळ कांम खगां घर सीस वाद। संपात हुओ गैणाग साद ।
दीठा दळ मांभी दोहुं दळांह । चहुआंणौ कमधां सींफलांह ॥१३२ ॥
ऊछळै समर धाराळ आग । खीचिया परै टूटंत खाग ।
पे लड़त समर दोनूं पड़ांह । दुजड़ां मुंह ऊंड़े सर दड़ांह ॥१३३ ॥
घण कटै समर कड़ियाळ घांण । पड़ियाळ पखै पांडीस पांण ।
अड़ियाळ लये केइ तुरस ओट । चड़ियाळ करै केइ अ्रंखळ चोट ॥१३४ ॥
जूटै इम पाबू जींद जंग । नाखत्र माळ तूटै निहंग ।

दळ नेत भड़ै जुध देव देत । पिड़ खेत लड़ै कन भूत प्रेत ।।१३५ ।।
मेहरांण प्रबल जिम लोप मांम । सांवळां सबळ वधिया संग्राम ।
घट कटा नायकां तरौ घाव । पिड़ छूटा खोचियां तणा पांव ।।१३६ ।।
जिम चलं ऊप्र वर जळद जाळ। पिड़ ताळ वरण सरतोड़ पाल ।
गज–घड़ा पीठ कंठीर घाव । वादळां लगै जिम दिखण बाव । १३७ ।।

श्री मुख सूं कहै

नायकाँ हाक लव पाळ नाह ! रतवाह खीचियां तणा राह ।
एकलो मुज्ज जाँरौ उजेड़ । चढ आयौ खीची करे चेड ।।१३८ ।।

सांवळां वायक

चवड़ै दोटां कर कटक सीस । विफ आडा चाकर सातवीस ।
माँझियां समर उच्छव मिळेह। विखवांण पाल हाकल वळेह ।।१३९ ।।

सत्रवां सूँ सांवळां रा वचन

चापड़ै लड़ौ जिय मोह छांड । मारकां पाधरै पांध मांड ।
सिरदारां पाछौ फेर साथ । हव देखो भीलां तणा हाथ ।।१४० ।।
रुपिया जो कोळू माग राड़ । ते हुआ अफूटी आग आड़ ।
पग कटा स्रवण सुण सबद पंग। जे करता कोळू माग जंग ।।१४१ ।।
ऋण चौड़े विमुहा बुआ राह । वरियांमा वांसै लीध वाह ।
दुजड़ां मुंह पींठे घाव देर । घांसाहर एकट करी घेर ।।१४२ ।।

राव वायक

अै लगा मोर तेगां ऊभोय । जायल नह जावा दये जोय ।
पुळतौ कर हाकल मांड पांव । रजपूतां दाकल जींदराव ।।१४३ ।।
पूठै लग भीलां हूंत पाळ । भागां वह झाळै दूर भाल ।
ले आडी ढालां हाथ नाळ । रण वळिया सांमा रावताल ।।१४४ ।।
मांझी भड़ पायक एकमेक । उण वार पळापळ दीठ एक ।
उड़ै सिर हेकां आसमान । जाडी पड़ केकां मुंह जबांन ।।१४५ ।।

जिण वार वहै बहुं घाल जोम। गिर पड़ै भुजां खग सहत गोम ।
आफळै चापड़ै खेत आय । खग झाट पड़ै केय फेर खाय ॥१४६ ॥
झख झुरै गिरै गळ झूम झूम । घायल धर पौढै घूम घूम ।
जडलगां अंग कीना झराह । फरडाक करै धड़ फींफराह ॥१४७ ॥
वाजियौ प्रबळ रण भोम वींद । जरदाळ उड़ै त्रण जेम जींद ।
देखै चख देवल स्रोण दीठ । रती जुध कोहर उड़ै रीठ ॥१४८ ॥
भूतावळ दौड़ै भाळ भाळ । मिळ जोगण कीन्ही दीपमाळ ।
झूंझार लड़ै खग पड़ै झाल । ढैंचाळ गुड़ै हिय हुड़ै ढाल ॥१४९ ॥
आछटै तणछ पग हाथ आळ । खळकै रंगावल रुधर खाळ ।
चवड़ै खगधारां धकै चाढ । विप किया खंड वेहंड वाढ ॥१५० ॥
मांझी मुख वौलै मार मार । पंजार पड़ै धर वनां पार ।
झखझूर हुवा घावां झिलेह । लोथां पर लोथां भूमि लेह ॥१५१ ॥
सींहा हर चाढे बंस सोह । लागुआं दए परिहंस लोह ।
धजवडै चड़ै ध्रविया सधीर । नव कोटां चाढै पाल नीर ॥१५२ ॥
बाथटै चटै झूठा जुबांण । पलवटै पेट पड़ कटै प्रांण ।
पांडीस वहत कर द्दष्ट पाळ । विदुतीय तरक वादळ विचाळ ॥१५३ ॥
लोहचक्क समर हूंकर वलाच । मतवाळ कलाळां हाट माच ।
फोड़े घर डाडर उवर फाड़ । ऊससै सुभट साबळ उपाड़ ॥१५४ ॥
इण भांत लड़ै समअर अभंग । राठोवड़ खीची रुद्र रंग ।
झिलमां सिर वीजा वाढ भार । उभड़ै जरदाळां सिर अंगार ॥१५५ ॥
सांवळा हुवा चहुंआंण संग । राठोड़ तणा चखचोळ रंग ।
भारात हाथ वाबंत भील । फाटकां कटै दंठेल फील ॥१५६ ॥
मृगअंक थया उड अस्तमांण । भूंकियौ ताम परकास भांण ।
धजवड़ै चडै आवटै धार । भड़ गुड़ै पाल सिर पड़ै भार । १५७ ॥
मंडल अरणोदय राग मंड । पाल सिर भारथ मेयौ प्रचंड ।
सांवळा सुभठ धारा चडेह । पाल रा पाल आगे पड़ैह ॥१५८ ॥

॥ कवित्त ॥

आफळता आवधै पूर घावां धर पड़ता ।

सारवता संफळे तूट आगां लड़थड़ता ।
चौळ अंग चाचरै जीह लारै जव्वांना ।
कुसळ पाल काढवा भड़ां सूंपिया भवांनां ।
काछेल वेध वढिया कळह ग्रहण पाल पूरी गरत ।
वेठिया हता बूढै विवध आया जे पाबू ग्रन्थ ॥१५६ ॥

सबळ अगे सांवळां लार पाबू ललकारै ।
रिण भेळा रजपूत वळे कंवळाथ वकारै ।
जिण वेळा जिंदराव वढे तेथां दळ वाळे ।
पर भोमी पाछांण विरद सांवता उजाळै ।
सुज पाव रो पैहराव सिर ग्रहण पाल वागो गजर ।
तिणवार हुवा जींदै तणा वजर अंग वाघू वजर ॥१६० ॥

॥ दोहा ॥

ढाल हुवै जींदै धकै लाखां लोह लियांह ।
जाभा रंग तोनूं सदा जूंभा जायलियांह ॥१६१ ॥
अजड़ांहथ कोळू तणा आया बळती आग ।
तद जूटा जायल तणा वीर हुवै वडवाग ॥१६२ ॥
पड़िया होय पतंगिया कोळू सूं खग काढ ।
हूतासण जींदै हुवै वेढ लिया दळ वाढ ।१६३ ॥
कोळू सूं आया कड़च रूंक वजावण राड़ ।
तूटा सांवत तीन सौ ओला पैला आड़ ॥१६४ ॥
ऊपर करवा आविया जै कोळू भड़ जोय ।
वहिया पिड़ धारां बिचौ कुसळै गयो न कोय ॥१६५ ॥
पाबू रा पाराधियां कीनौ आवट कूट ।
पड़िया पूरा पांचसौ खीची रण में खूट ॥१६६ ॥
तिमिर मिटै पावक तुटै पाबू भांण प्रकास ।
अइयां चन्द्र अथामियां अइयां चंद उजास ॥१६७ ॥

॥ छन्द त्रोटक ॥

दुरियो दसमी नभ चंद दुओ । हव पायक चंद उजास हुओ ।

तद खीचिय साथ फटै तम री। मुणियै ससि नायक पूनम री ॥१६८ ॥
लेय ढाल हथा वेय लोह लगै । अरिणयां तुल पायक पाल अगै ।
सज ऊभोय पैदल सांम हणौ । परधान उजाळत लूणपणौ ॥१६९ ॥
वदळायत नायक अंग वजे । भय आंणव पायक नोज भजै ।
चोहचाळ भालाळ विचाळलियौ।किरणाळर भाळ कुंडाळ कियौ॥१७० ॥
वळ पाल परे पड़ियाळ बना । किर कीध जळेरिय चंद कना ।
उदियाचळ सूरज भास उठै । जिंदराव हकारिय सेन जठै ॥१७१ ॥
फुरती कर मंडळ ढाल फरी । किरवांणिय बीज सळाव करी ।
घड़ियाळ अजे गढबंध घणी । तरवार वजे पिड़ पाल तणी ॥१७२ ॥
पिड़ आंगण ढाल समेत पड़ै । खळ धूपट धांधल तेग खड़ै ।
जरदाळ होवे दोय टूक जिता । कैह मोड वखांणत हाथ किता ॥१७३ ॥
पायकां झिलंमां पर तेग पड़ै । झलहो दुरियाँ जड़ मूळ गडै ।
दुलहो फरकी चख दूति फिरै। विजड़ी रत चाकिय पाल बरै ॥१७४ ॥
विजड़ाहत धांधळ पूत बकै । सत्र कौण धकै पग मांड सकै ।
घट सूर ढहै विप खंड घणा । तत चक्र वहै नव लाख तणा ॥१७५ ॥
भड़ वाढत धांधळ खाग भला । चित तूटत जोगण थाँन चला ।
वळतौ कर हाकल हाथ वळै । ताइय धर बोलत धार तळै ॥१७६ ॥
लखतौ रंग धांधळ पाल लगे । अन एकहु आया एक अगे ।
दिन पूगोय तंतर बोध दियौ । लोहचाळ खळाँ दळ टोळ लियौ॥१७७ ॥
लख घाव लगां सिरदार लड़ै । परधान परै खग झून पड़ै ।
अणभंग हुओ चखचूर अणी । धिप तोरण जूंझै है पाल धणी ॥१७८ ॥
सुपियार तणौ भरतार सहू । कव मोड तणौ सिरदार कहूं ।
रिणपाल लगीजत चंद रुकै । पिड चंद लरीजत पाल पखै ॥१७९ ॥
मिळियौ खग धाराँए सूं धमणौ। तिणवार पखायत मुज्झ तणौ ।
वैहतौ रत धांधळ घाव बकै । धुर जींद चढै खगमेळ धकै ॥१८० ॥
दळ ठेल वळौ पवसाख दुवो । हव राव जती मुहमेज हुवौ ।
चढ रोस उपाड़िय सिंहचरा । कर जोस उतोळिय तेग करा ॥१८१ ॥
जरतार बुकानिय बंध जड़ी । चख सोनहरी चकडाल चड़ी ।

भळकी मुगताफळ गंठ भरी । सुज कंठ लखी जत कंठसरी ।।१८२ ।।
तरवार उतोल ग्रही तब ही । जिंदराव पिछांण लियौ जब ही ।

पाबू वायक

धर जोस कहै सिध धीर धरै । कह थूं कुण बोल पछांण करै ।।१८३ ।।
लुळियौ करतौ खग लोक लहै । वध दाखन तो तरवार वहै ।

जींदराव वायक

तरसो मत एकल देख तुमै । अखवूं कुळ खीचिय जींद अमें ।।१८४ ।।
मुहमेज कियो दृढ राख मणां । पिड़ खेत दिखावण सूर पणो ।
जग मांझ अमां नह मूंह जोए। हथ तुज्झ रहूं मुझ मोख होए ।।१८५ ।।
दरसाव थियौ जतराव दनं । धन धन्न अमां मृत भाग धनं ।
लख तेज अनोपम रूप लियौ । दुति जोत प्रभाकर मींढ दियौ ।।१८६ ।।
रहसौ जस नां धर देह रही । सिध देव सगा कर देव सही ।
वरदायक वायक दाख वनै । मुंहमेज हुवो कर लोह मनै ।।१८७ ।।
कुळ ऊंच वड़ौ कण जींद कहै । विप आय अमां किम हाथ वहै ।
धण मुज्झ सगा लघुबंधु धरुं ।कर भुज्ज खगां किम चोह करूं ।।१८८ ।।
धर दोय मिटै दुख वाद घणौ। हव आप अमां सिर घाव हणौ ।
क्रम ऊसस तांम जतेंद्र कहै । वळ हाथ अमां तुझ हंस वहै ।।१८९ ।।
घट लोह हुवो चकचूर घणौ । तद घूमत धांधळ राव तणौ ।
यतहूं परहौ खैंह मुज्ज अगे । लघु बैन तणौ दुख ताय लगै ।।१९० ।।
निज हाथ करूं तुज लोह नहूं । हण स्वाहृण लोकपवाद सहूं ।
ग्रहियै घट वेग खगां घळ नूं । पिड़ जूंझ रंडू किम पेमल नूं ।।१९१ ।।
नवलाख दिखाळत दीह नवा । वड हूं किम पेम करूं विधवा ।
मुंह ठींगण सामत सींह मिळै । कळ वेगड़ तांम चढै कनळे ।।१९२ ।।
सगती सुत आतुर पीठ भयौ । गह पूरत मातुल आय गयौ ।
जुध जींदौय पाल मिळै जबही । परसोंपर तोल रह्या प्रवही ।।१९३ ।।
गिरवांण महा सिध तेग ग्रही । दळथंभ फबै बुध आख दई ।

अंवळौ फिर टाळ वढाळ अणो । तरवार वुही जुध जींद तणी ॥१९४ ॥

तिणवार खळां चख जोत तकै । धरहूंत पड़ै सर जाय धकै ।
जुध जूंभ हुवौ धड़ सीस जुअो । हव पाल कमंधज रूगहुओ ॥१९५ ॥

रज रूप कियौ ब्रन सीस रणौ । व्रन तेण करी कद सीलवणौ ।
धाबळी प्रतपालण जूंभ धरे । कुंण पाल जती ब्रन पाल करै ॥१९६ ॥

मन राख सुधी रिण छंद मुणां । सिध पाल तणौ हव जूंभ सुणां ।
लधर ज घणौ नह जंग लियौ । कळमें हिव कंठ ठकाव कियौ ॥१९७ ॥

भणियौ प्रब ऊसस जोस भलं । कव मौड वखांणत कंठ कलं ।
खग झाट निळाट पछाट खळां । दियै काट निराट अराट दळां ॥१९८ ॥

रजवाट कमंद भुजाट रखै । दह वाट हूवा सत्र थाट धखै ।
ग्रैहै राट उदंत तुराट ग्रह्यौ । रिपु थाट कमंधज झाट रह्यौ ॥१९९ ॥

कर माल फुनाण मणाळ कळी । रूहराळ हुई कर पाल रळी ।
वढ हड्ड कड़क्क बड़क्क वजै । भड़ थाट भड़क्क धड़क्क भजै ॥२०० ॥

हव पंड लड़क्क थड़क्क हलै । खग झल्ल कड़क्क तड़क्क खुलै ।
भक भक्क रुधक्क खळक्क भलं । दक दक्क बकै जब थक्क दलं ॥२०१ ॥

हव मुक्ख लळक्क कळक्क हळी । नव लक्ख थई चख लक्ख लळी ।
भड़ खल्ल झगल्ल वगल्ल भडं । धड़ लल्ल पगल्ल नहल्ल धड़ं ॥२०२ ॥

भल भल्ल नरं खग झल्ल भलं । टल टल्ल गया खग झल्ल टलं ।
कमधज्ज हुवौ दळ जूंभ कटै । रख गोरख गोरख जींद रटै ॥२०३ ॥

जींदराव धायक

त्रिप वाढ करै धड़ सीस वणौ । हव पाल कहौ फिण रीत हणौ ।
दल सींच चढै कुण मुंह दुअौ । हव पाल बिना सिर सूर हुअौ ॥२०४ ॥

जड़लग्ग प्रलग्ग अलग्ग भळै । मगथग्ग वळै पग डग्ग मिळै ।
खग हत्त खड़त्त सजोस खिजै । उथडत्त पडत्त सधीर अजै ॥२०५ ॥

जुध भांण लखै नभ माग जुअो । हव जंग घड़ी घमसांण हुवौ ।
कमधज्ज बखांण खळां कहियौ । गिरबांण विमांण रह्या गहियां ॥२०६ ॥

जत खंभ कना जस थंभ जिपं । धड़ जूटत ऊभीय संभ धिपं ।
पह पाल उजाळत भूंज पखा । मर भार बकै पिड़ खेत मुखा ॥२०७ ॥
धुर साख जका लधराज धरी । किळकार विना धड़ पाल करी ।
कळ देख नवी गत रात्र कपै । उणवार नवैं सिध नाम अखै ॥२०८ ॥
अदभूत कियौ रसरोद्र अड़ै । लख पाल अनोपम रूप लड़ै ।
दुरगा नव चौसट बंध दळां । कळ पाल दिखावत देवकळां ॥२०९ ॥
हुय चौपन कोड़ चमंड हथं । कर कोड़ नवे कनियांण कथं ।
खट कोड लखै ब्रहमाण खड़ी । नव लाखइ लोवड़ियाल लड़ी ॥२१० ॥
पड़िय सिर पाल धरा न पड़ै । हथवा हथ सात्रव सैन हुड़ै ।
लग आभ भुजा धड़ जंग लहै । मुख मार बकै पिड़ खेत मंहै ॥२११ ॥
धड़ सूं खग धारांए जूंभ धणीं। अर खाधाए संतर जींद अणी ।
घट खेम जकै नर भाग गया । रुपिया भड़ पाबुअ हाथ रया ॥२१२ ॥
कर माल ग्रहै जुध आर किया । सत्र साठ अने दस सारविया ।
घट पाल रह्यौ कर लोह घणा । तद छूटाय पांव कटक तणा ॥२१३ ॥
भुरजाल सचेत हुई भुंहरै । मुंह फेर ऊलाळ दई मुंहरै ।
हव ऊसस घूम घणूं हणणी । धरधीर कह्यौ नह वैंण घणी ॥२१४ ॥
कढ टाप पछाड़िय टूक कई । दोहूं वागांए सांकळ तोड़ दई ।
उर चाट कपाड़ पछाड़ अवौ । तिण ताल हुवौ चखचोळ तवौ ॥२१५ ॥
अळगो डर ऊभोए जूथ अरी । काळवी हणणाहट हींस करी ।
तिण तोड़िय सांकळ लोह तणी। चपळागत आवत सीस सुणी ॥२१६ ॥
चंहु कांनिय वाजत भाट सिरै । फिर आवत लंगर मेख फरै ।
चित तूटोए अंबर लाय चडौ । दुर जींद गयौ पिड़ वाज दड़ौ ॥२१७ ॥
हव पाल बिनां विणवाळ हुई । वरदायक ताजण सीक बुई ।
धड़ ऊपर आवत धीर धरी । कनसूरिय कंध उठाव करी ॥२१८ ॥
लुळ वाज गई धरजाय लगी । डगमंड कमंधज देह लगी ।
कंध थापल हाकल पाल कह्यौ । हय राज अमां घट वेग हह्यौ ॥२१९ ॥

अन्तरो हुकम

काळवी तन चेतन जोत कढै । विप खंड करै अरि भुंड वढै ।
नवणै जळ सास उसास नखै । धजराज उडी अर सेन धखै ॥२२० ॥
कर डंबर बाळ सळाव कियौ । हव जींद थरत्थर कंप हियौ ।
जद राव गयौ विच बंध जुथै । मळफी चढ केसर सेन मथै ॥२२१ ॥
दळ तार लई डर जींद दुरी । कमधज्ज तणौ सिर हाक करी ।
सुण वैण सबै गत ठंभ सही । कळ जींद विनां भड़ मार सही ॥२२२ ॥
हिय चाड़ पछाड़ सराड़ हुड़ी । भड़ पाड़ उडाड़ चुंहाड़ भड़ी ।
असवार विनां अस जूंभ इसी । रुहराळ हुई रण रंग रसी ॥२२३ ॥
हणणाहट आवट कूट होऐ । जिण वार वडा भड़ नाळ जोए ।
जुद राव कहै विच बंध जमै । हथनाळ भरौ भड़ बेग हमै ॥२२४ ॥
घट खूंदत केसर पौड़ घणा । तत धाढ वजै तरवार तणा ।
अतरै करती रम बंध अरै । भड़ तूटाए तांम बंदूक भरै । २२५ ॥
वढती घल घूमर खेंग वळी । जिण ताल पंयाळेय नाळ झली ।
घुरनाळ हड़ंब अड़ंब गजी । विप खेंग सडंब सडंब वजी ॥२२६ ॥
हवरंभ भळंब प्रलंब हुई । थित खेंग लए नट रंभ थई ।
सिध ताजण धांधळरी समरी । भख लेंवण काज उड़ै भंवरी ॥२२७ ॥
धम धम्म कलां नमनाळ धमी। झम झम्म पमंग सळम्ब झमी ।
घम घम्म वजे पिड़ पौड़ घणा । तिम काठ भड़ै हथनाळ तणा ॥२२८ ॥
हिय फेट लपेट पगेट हुड़ा । दिय रेट फगेट कुदेट दड़ा ।
यळ मेट दिया जम भेट अरी । कथ थेट महोदध भेट करी ॥२२९ ॥
कट थट्ट गयौ खग भट्ट कहै । रण थट्ट घणा भट पास रहै ।
धर वट्ट पहट्ट गहट्ट घड़ै । पिड़ खंड विहंड़ पमंग पड़ै ॥२३० ॥
गि'तै सिर जंग धणी अहियौ । रवि मोद विमौद छकै रहियौ ।
असवार विनां अस जूंभ अही । सपतास कियौ मन मोद सही ॥२३१ ॥
तुळ केसर नाम तुरंग तणौ । पुर वारत कन्न तुरी पठणौ ।
काळवी कियौ पाल विनौ कजियौ।वसुधा पर नाम घणौ वजियौ ॥२३२ ॥
चपळा गत जोत उदोत सथै । मिळ रभ चढी सुविमांण मथै ।

धुररूप तुरंगण देह धरी । फिर वींट कमंधज आंण फरी ॥२३३ ॥
हिय पंड मुखा बळ सूं हणियां । गुणतीस रह्या वह नागुणियां ।
धिर लोक चहूं वळ माग ग्रह्यौ। रिणचौक कमंधज ठेल रह्यौ ॥२३४ ॥
दळ धाय महा सिध पाव दिया। हव सेन थरत्थर कंप हिया ।
नह धापेय लोह अजे लड़तौ । थित धावत वीर लड़त्थड़तौ ॥२३५ ॥
चलतौ दळ दीठौय राव चखी । मन व्यापक गोरख बोल मुखी ।
कुळ रुयत्र तणीं बुध ओठ कही। सत दीठोय नालक बैण सही ॥२३६ ॥
पल तोकर हाकल मांड पगं । विण छोत मिटै नह सूर वगं ।
सुप्रवीत महाजत सूर सरौ । कमवेस पड़ै अप्रवीत करौ ॥२३७ ॥
मळियेच सुणी यम सूर मटो । तिण धूपर वाळ दियौ त्रवटो ।
मिट जोत प्रभाकर भंखमणी । तन आंच लगी गुळियल्ल तणी ॥२३८ ॥
जभक्यो धड धूणव खाय भकी। तद गोडिय भूम प्रभंक टकी ।
तस कोध वढाव तणोत कियौ । किरणाळ नुं पाल प्रणाम कियौ ॥२३६ ॥
सिविता रवि सूर पतंग सही । रकतम्बर अम्बर ज्योत रही ।
किरणाळ प्रभाकर भांण कहं । रयणोहत मित्र सुचित्र रहं ॥२४० ॥
पिड आंगण धांधळ देह पखं । मुणिया अक द्वादस पाल मुखं ।
सिध आसण नाम जतंद्र सजै । तरवार दई कर आर तजै ॥२४१ ॥
कर चोड अळीबंध खोल कणौ। तत रूप हुवौ तन तेज तणौ ।
सळुभाय खळां अळुजाड़ सुणौ। तद आवण मो परधांन तणौ ॥२४२ ॥
रज पत्र दळां खत कातण रा । ग्रहणा रथ संघट ठेल घणा ।
प्रसणां मरजाद मिटी पंड री। सुण आगम हाकल चांवंड री ॥२४३ ॥
तच्छी तक सूरत पाल तणी । धर सीस लुटै विण सीस घणी ।
मणियक्क सलोह लियां धड़ में। पंडग्क्क फरक्क खरी पिड़ में । २४४ ॥
लख नैंण उभै जळ पूर लियौ । कमठाळ धणी परणाम कियौ ।
पर थंड प्रचंड संभंड पड़ै । खरहंड विहंड खड़ग्ग खड़ै ॥२४५ ॥
मुण वायक नायक जूंभ मही । गैहवंत धिपं पळबट्ट ग्रही ।

चांदे वायक

मनमें मत जींदाय मोद मनै । तजियौ जित वेमल लार तनै ॥२४६ ॥

दियँ जीवत दांन उभै दिल रो। परताप गिरणों सह पेमळ रो।
घर जाय जिंदा दन तुज्झ घणा। तूंझ्र कीधळ अम्मर पाल तणा ॥२४७॥
सांवळां खग झाट नही सभियौ। तिण पैमल लार थनै तजियौ।
ततकाळ करूं दोय टूक तुमै। हुंइ छोडूंग्र पेमल लार हमै।२४८॥
करचाळ तजै फिर मंड कळो। वरदायक नायक आप वळो।
टणको जुध राव तजै टळियो। मारको भड़ लोह चमू मिळियो ॥२४९॥
खित अंग ढह्यो खग झाट खरै। कमठाळ घणांरोय काळ करै।
गिरतो सिर ईस कर ग्रहियो। वरदायक चांवंड रो वहियो ॥२५०॥
पिड़ खीचिय साथ घणूं पडियूं। वढ पाल पड़ै जुध नींवड़ियू।
वियसोतर बंध खळां वहियूं। रवि अंसिय पाल कटै रहियूं ॥२५१॥

॥ दोहा ॥

पाल पड़ै जुध नीमड़ै सूर चढै नभ सीस।
जींद खड़ो जायल दिसा साथ भड़ै दस वीस ॥२५२॥
ले कोळू घोड़ां लगे खीचीड़ा खड़ियाह।
समहर मांहै सांमळा पग पग पाथरियाह ॥२५३॥

॥ कवित्त ॥

ऊगो दणियर अवन राव पूगो पुरणा लग।
साथ तणा सह सुभट रह्य सांवळां कनै लग।
वांणावळी बुहा जिके लीना सैह जाखी।
मार धाड़ माचतो गयो अजरावळ डाकी।
सज खाग सबैई सासरो आप हुवो अद्रियावणो।
तोड़ जड़ राव धांधळ तणी पूगो जायल पांमणो ॥२५४॥

॥ दोहा ॥

हव रांणी व्याकुळ हुई बुहा सरग सोह वीर।
धोक धरे दुसमण धणी पूरो कीमो पीर ॥२५५॥

॥ इति जध संपूरण ॥

देवल वायक सगतां सूं

॥ दोहा ॥

खीचौड़ौ खड़ियोह गंगाजळ हय दस घरां ।
पाबू घर पड़ियोह सो दीठौ देवळ सगत ॥२५६ ॥

वढियौ गायां वाहरू गढां गुरू गंगेव ।
हव सगतां हाल नै देखो लछमण देव ॥२५७ ॥

भालाळौ भड़ियौह काछेलां वित कारणै ।
पाबू धर पड़ियोह सह धावौ हव सिढियां ॥२५८ ॥

सरणायां साधार कै बायां मुजरा करण ।
सिध खत्री संसार आवै धांधळ राव उत ॥२५९ ॥

वालै वत राखी वनै लोवड़ियाळां लाज ।
सरब करौ मिळ सगतियां अमर कमध नै आज ॥२६० ॥

इयूं कहती आईह चारणियां सारो चलै ।
भुरजाळौ भाईह पाल धरा पर पौढियौ ॥२६१ ॥

देवल वायक

अळगौ पड़ उतमंग धड़ अळगौ पड़ियौ धरण ।
जबरौं कीन्हौ जग भालाळा ल्यूं भामणा ॥२६२ ॥

घट वेहै रुधर घणोह पिंड पुरा धावां पड़े ।
औ बांधव अमणोह सूतो वरदायक समर ॥२६३ ॥

सूरापण चढियौह फूक तणा सांभळ कथन ।
वीरा थूं वढियौह मो गायां कज राठवड़ ॥२६४ ॥

जिसौ भरोसौ जांणता पर देता प्रतमाद ।
तैं तिसड़ौ धांधळ तणा वीरा कीन्हौ बाद ॥२६५ ॥

तस दीठा कमधज तणा प्रसणां न दीठी पूठ ।
काछेलां वित कारणै कीन्हौ आवट कूट ॥२६६ ॥

सब दन हता चकार सींगाळा धांधळ सुतन ।
जुध पडतां जूंझार कमधज मोडलिया किया ॥२६७ ॥

कू खत्रिय म्हांनै कह्या वायक वाढाळाह ।

आभ धुंवां ज्यां मेलिया भाई भालाळाह ॥२६८ ॥
कहतौ थूं आगू कथन पाल अमीणा पीर ।
सुरही जासी सर सटे वचन निभाया वीर ॥२६९ ॥
तैं चोळी दांवण तणी पाळी आछी प्रीत ।
राखी धांधळ राव वत रजपूती री रीत ॥२७० ॥
मो सारु दीधो मरण जस लीधौ जुध जीत ।
पग पग ऊपर पौढ़िया धेनां रा धाड़ीत ॥२७१ ॥
अंब वळे देवल तणी जाखी कुसळां जाय ।
जुध यम जांणे जूटियौ अमरांणे सूं आय ।२७२ ॥
कूकी हूं बूढ़ा कनै वीर न कीनी वार ।
तैं कीनी धांधळ तणा साख भरी संसार ॥२७३ ॥
वित लेनै वाईह केवी नह जासी कुसळ ।
भालाळा भाईह ऐ सांचा कीन्हा अखर ॥२७४ ॥
सबळ तणी पख है सदा खळक तणौ ओ खेल ।
तैं कीधी धांधळ तणा वीर गरीबां वेल ॥२७५ ॥
कमधज लीनी काळवी जपिया वयण , जठेह ।
वायक तैं नर वाहिया एवे पाल अठेह ॥२७६ ॥
पीहर पेमलरोह गणत दुआं जूं तूं गनौ ।
दूजो देवलरोह वित वीरा कुण वाळतौ ॥२७७ ॥
समप्यौ मौनूं सीस तैं पाबू धांधळ तणा ।
वसुधा कोड़ वरीस कुण थारी समवड़ करै ॥२७८ ॥
सगत तणा हुकमी सुपह व्रन रा ओठंभ वीर ।
थळ ऊपर रहिजो अमर पाल अमीणा पीर ॥२७९ ॥
वीरा मो वाळीह सेधी नवलख सिद्धियां ।
अै धाबळियालीह आज तनै करसी अमर ॥२८० ॥
उड़ जासी आबूह गिरनारौ थासी गरक ।
प्रथमी पर पाबूह मणधारी रहसी अमर ॥२८१ ॥
बीरा तूं वेह लेह कमध अमां कज मरण कर ।

सारो जुग चेहरेह सगतां में नाही सको ॥२८२ ॥
कायर नर मग्सी किता कोय न नांम कहंत ।
वो गायां री वाहरू पाबू नोज मरंत ॥२८३ ॥
वीर हुमै बैठो हुए कीत सुणै किरणाळ ।
ऊभी पूठै आय नै नव लख लोवड़ियाळ ॥२८४ ॥
सिर धड़ भेळा सांध नै सगतपणा तत सांच ।
ले देहुंए कर लोवड़ी ऊपर दीवी आंच ॥२८५ ॥
जोधारत जदसूह प्रगट्यो फिर देवत पणो ।
सगत तणै सत सूंह हुव कमधज बैठो हुवो ॥२८६ ॥
गढवण लीनो गोद तैं रज झाड़े सिर तणी ।
वीरा समर विनोद तैं कीन्हो धांधळ तणा ॥२८७ ॥
विप सह खंड विहंड वळ लोही धारां वहै ।
पाबू पीरस पंड मार मार बोलै मुखां ॥२८८ ॥

देवल वायक

वीरा मत वजरेह वयूं मारो मारो करै ।
हुव चारणियां देह खीची घर पूगो खड़ै ॥२८९ ॥
केवी घर पूगो कुसळ जुधकर जायल राव ।
वीर अमै तूं मत बजर घट रै लागा घाव ॥२९० ॥

पाबू वायक

पिंड म्हारै व्है पीड़ घावां री देवल घणी ।
भांगे संगट भीड़ सगती गत मोनूं समप ॥२९१ ॥
उर अंजस आयोह पह सिध छत्री पाल नै ।
देवल विरदायोह पीड़ निटी घावां तणी ॥२९२ ।
धूणै भुज खगा छोड़ पांण दये मूंछों परै ।
रण जूंझो राठौड़ विजड़ हथो फिर बोलियो ॥२९३ ॥

दुतिये पाबू वायक

खीची खागां खेल धण रण जूंझे कित गयो ।

म्हनै अकेलौ मेल सिरक कठी गया सांवळा ॥२६४ ॥

देवल वायक

खोची तौ हैवर खड़े औ पूगौ ऐहवास ।
सातूं वीसा सांवळा पड़िया थारै पास ॥२६५ ॥

पाबू वायक

घर जींदौ कुसळै गयौ देवल इण विध देख ।
म्हैं जुध में नहिं मारियौ पेमां रौ वर पेख ॥२६६ ॥
जायळ पुगौ जींदरौ ताता खड़ तोखार ।
उण नूं भरड़ौ मारसी मैहलां में बोकार ॥२६७ ॥
वहै रुधर अंग सांवळां धड़ सूं छूटी धार ।
रळकै पाबू रौ रुधर मिळियौ जिकण मंभार ॥२६८ ॥
कूकी सह काछेळियां रुधर वहै राठोड़ ।
भीलां रौ लोही भिळै देवळ बैगी दौड़ ॥२६६ ॥
देवी देवळ दौड़ नै पिड़ में कीधी पाल ।
रुधर रहै नहि रोड़ियौ खळक बळोवळ खाळ ॥३०० ॥
भालाळौ भाखेह सांभळ देवळदे सगत ।
रुधर मती राखेह मिळवादै भीलां मंही ॥३०१ ॥
सिर पर गिणियौ सांवळां अडग म्हनै नृप एक ।
जुध में वैह लोही जको मिळवादे इकमेक ॥३०२ ॥
दांमा नह दीधाह कीछा पारधियां कठै ।
सत वीसां सीधाह मो साथै कीधा मरण ॥३०३ ॥
परवाड़ा कीधा प्रथी आखाडा अवनींप ।
आहेड़ी रहिया अगे जबरा राड़ा जीत ॥३०४ ॥
मो वाळा पाराधियां लीनी दिस दिस लूंठ ।
पड़िया धारां ऊपरै तारां ज्यूं हिज तूट ॥३०५ ॥
धरपत दस दिस धूजिया पाबू खळां पड़ताप ।

लाखां रा धन लूटिया पाराधियां परताप ॥३०६ ॥
मौत आय मांनव मरै नीच ऊंच मत नेक ।
पिड़ आंगण जूंजै पड़ै उण में छोत न एक ॥३०७ ॥
हूंतासण में होमिया वसत हुवै सुप्रवीत ।
जूंझ मुंवा जुध में जके पायक सदा प्रवीत ॥३०८ ॥
सगत कहै तो चारणी केसर नूं केकांण ।
कमधज जग मोनूं कहै ज्यूं पाराधियां जांण ॥३०९ ॥
अै रहिया म्हारै अगै सगती सुभट सदाय ।
चोटी छेली सांवळां काढी कसर न काय ॥३१० ॥
ऊभी धाबळियाळ पह विरदावै पाल नै ।
चिरंजीवो सुपखाल लजधारी मो लज रखी ॥३११ ॥
साळ खला धांधळ सुतन कळह झाळ जत कूंज ।
धनो ढाल घर धाबळी पाल तेज रा पूंज ॥३१२ ॥
छत्रधारी धांधळ सुतन मणधारी कुळ मौड़ ।
अवतारी पाबू अमर रजधारी राठोड़ ॥३१३ ॥

कवित्त आसोमरौ

पाल वरन री ढाल पाल हुकमी सगती रौ ।
तू वीरा भोपाल पाल थळवट धरती रौ ।
है सूरज हिन्दवांण पाल जीवो धांधळ रौ ।
भुज लग हथ भालाळ पाल बांधव देवळ रौ ।
जूंझार पाल पूजे जगत संत सूरपण लियां सरू ।
सांसणां बगस जाहर सुपद पाल सुरह रौ वाहरू ॥३१४ ॥
भळै तेज रा पुंज भळै साहसी साहस बळ ।
भळै सेस अवतार भळै क्रोधी दावानळ ।
भळै सगतां वीर, भळै सूरा भालाळा ।
भळै गायां वाहरू, भळै व्रन रा रखवाळा ।
भळ पाल सिद्ध छत्री भवण गिरतौ नभ कर पर ग्रहण ।
सुज पाल भलो आखाड़सिध वरदायक कुळवट वहण ॥३१५ ॥

वीर गायां वाहरू वोर आठम खटब्रन रौ ।
काछ पाछ निकळंक वीर गौरख सिध मनरौ ।
वीर बडौ समराथ वोर साचौ वरदाई ।
वीर खाग सिर वहत वीर चारणियां भाई ।
वीर रौ सुजस वधियौ वसू जातां जुगां न जावसी ।
पूजसी पीर सारी प्रथी थांन इळी पर थावसी ॥३१६ ॥

चार असी चारणी आज तूठी तो ऊपर ।
आज सगत आवड़ा आच दीधा तो ऊपर ।
सात वीस सांवळां करूं पाछा सरजीवत ।
तोनूं केसर चाढ देवू रिध सिध दोनूं दत ।
मुंड अर चंड जुध मारणी तूठी आज सगती तिका ।
नवदुरग तणें पांवे नमें मांग पाल हैकण मुखां ॥३१७ ॥

म्हे दांणव मारिया म्हेई ब्रहमंड उपायौ ।
हूं सांवळ दे सगत् जगत सारौ म्हैं जायौ ।
म्है सोखे हाकड़ौ नीर घालियौ पयाळे ।
म्हे सूरज ठांभियौ अमी लायौ उताळे ।
पावहियौ करे गिरनार पत नाचवियौं घर घर तिका ।
खरार बंचि मैहर किया मांग पाल हेकण मुखां ॥३१८ ॥

हूं इज आसापुरा हुंई पावही कहीजूं ।
हूं देवी हिंगलाज रेण डूंगरे रहीजूं ।
जळे थळे प्रगळै डरे डूंगरे डमंगळ ।
मोडी रव गडगडे मिळे रन मांभळ मंगळ ।
हूं इज बूंठ बेछरा बीस हत्थी हूं वाजूं ।
वळ पूरण वरवडी हूं इज सिंह वण अग्राजूं ।
पंड हु लियां देवत पणां हूं महिषासुर मारणी ।
विण सकै सगत साहंस वना तूं मत जांणै चारणी ॥३१९ ॥

पाबू वायक

हूं तो जांणूं सगत गढां जड़ मूळ उखेलण ।

हूं तो जांणू सगत वड़ा असुरां सिर वेडण ।
हूं तो जांणूं सगत क्रोध रूपी महिकाळी ।
हूं तो जांणूं सगत देव चंडी डाढाळी ।
भव बांम भवांनी भैरवी नमो देव नारायणी ।
त्रय सगत नवेंदुरगा तुंई हूं तो जांणूं चारणी ॥३२० ॥
आखै पाबू अरज सुणी देवळदे सगती ।
मेटो जीवण मरण मुज्ज री कर हव मुगती ।
वसूं अमरपुर वास थांन प्रथवी पर धावें ।
नृपत वडां मो नमें धूप ध्यानहि कर ध्यावें ।
सांवळा रहै साथे सदा कहूं चढण नै काळवी ।
यण रीत म्हनै कीजै अमर आप अहूं दुख टाळवी ॥३२१ ॥
हूं देखूं सह जगत मनै नह देखे कोई ।
इल पर रहूं अलोप जोत थानक पर जोई ।
सेवक समरै सदा समरियां आवूं सादां ।
करूं जकांरी सहाय भीड़ भांगू असमादां ।
अतलोक अनै सुरलोक महिं ऊभै गवण है मांह री ।
इण रीत म्हनै कीजै अमर तवूं दवा सिध ताहरी ॥३२२ ॥

देवळ वायक

जितै चन्द अर सूर जितै तारायण धू पर ।
जितै अवन आकाश जितै दरियाव प्रथी पर ।
जितै ब्रह्म शिव सगत जितै जोगी जालंधर ।
जितै गोरख जती जितै हडुमान मेर गिर ।
सीधियळ तिलक देवळ सगत यम आसीस मुण ऊचरै ।
तूं रहिजे धांधळ तणा अमर पाल यळ ऊपरै ॥३२३ ॥
साथे थारै सदा पाल नव ही जोगेस्वर ।
साथे थारै सदा चार अस्सी सिद्धेस्वर ।
सात सती खट जती रही वीरा तो भेळा ।
रामदेव जसराज गोग सम्भरी समेळा ।

सुपियार रही साथे सदा करूं पाल देवत कळा ।
काळवीं सहत साथे कमंध सातूं बीसां सांवळा ॥३२४ ॥
पाबू • आबू परें पाल गिरनारे टूंकां ।
पाल थळां धूंधळां पाल सभाड़ां रूंखां ।
पाल जळां प्रगळां पाल हेम रा बरफां ।
पाल मेर गिर परे पाल सिघ जम्बू द्वीपां ।
रमणीक दीप पाबू रही सिघ अगमागम सूझसी ।
थान नै पान तो थापना पाल पृथी सह पूज सी ॥३२५ ॥

॥ दोहा

वीरा अमर हुवोह सात दीप नव खण्ड सिर ।
होये न कोन हुवोह तो जोड़े धांधळ तणा ॥३२६ ॥

कथ वायक

दौड़ आगे दासियां लारे लोवळियाल ।
कमळादे आगे कमि पूत सम्भालण पाल ॥३२७ ॥
आवे मात उतावळी महा दुखी मनमेव ।
सूत दोनूं बढिया समर नींबो वाहड़देव ॥३२८ ॥

देवळ वायक

लारे लोकाईह सह कोळू री सालुळी ।
आजो आ आईह वीरा कमळादे वही ॥३२९ ॥

पाबू वायक

देवळ सूं पाबू दखै कमधज कथ करड़ीह ।
राख प्राण म्हारो हमैं घट में दौय घड़ीह ॥३३० ॥
आई यण तन री अवध कमध कहै कर कोप ।
पांच तंत पायां पछै औ तन रहे अलोप ॥३३१ ॥

देवळ वायक

देह जयेस्तुत देयेहुत तेज पूझ ततलीध ।
तुझ कृतारत पालजत सरवस तीरथ सीध ॥३३२ ॥

कमळादे वायक

गळ राखण निज जड़ गमण कुळां वधारण कूंत ।
पिड़ आंगमण में पौढियौ तेवा पूत सपूत ॥३३३ ॥
मिट जासी मायाह जग में जळ दीसै जतौ ।
जासी नह जायाह नांम अमर रहसी नवौ ॥३३४ ।
सिर तौ दादे समपियौ कह पाली द्वाज काज ।
तेही नौ सारता कुवां अचरज का सूं आज ॥३३५ ॥
पाबूसर री पाळ लेताड़ो कोहर लगै ।
प्रबल ढळाई पाल तैं बादळ खीची तणी ॥३३६ ॥
जगत तनै सह जांणता देसां कोटां दूर ।
यम द्दिज सुत रहसी अमर सिधां तणौ कुळ सूर ॥३३७ ॥

कमळादे वायक देवळ सूँ

तूं आवड़ अवतार समंद महाजळ सोखणी ।
कियो न खळ खयकार काछेळी अनरथ कियौ ॥३३८ ।
घायल रौ सांसौ नहीं श्री लिछमण अवतार ।
जगजांणी मारे गयौ जायळ रौ जूंभार ॥३३९ ॥

कमळादे वायक

घायौ हार धकेल थूं पाबू म्हारे थणां ।
खग भट बैगी खेल गैरी किम कुसळै गयौ ॥३४० ॥
वध बूढौ कुसळे बुहो नर तन वातौ न्याय ।
केवी किम पूगौ कुसळ पाल थनै पौढाय ॥३४१ ॥
वहियौ बूढौ पिड़ बिचै दोयण जुध दामेह ।

मन में भ्रम राखे मती पाबू गत पामेह ॥३४२ ॥
बाहड़दे मजबूत पाल रखण धायौ पगां ।
पड़ियौ नांन पूत फूटै घट थारै फळै ॥३४३ ॥
विध विध सूं वरियांम बूढ़ै तो वित वेठियौ ।
कोळू वाळा कांम आया भड़ थारै अगे ॥३४४ ॥
कणएटी कारण कियौ जेठी जुध जमजाळ ।
तो पहली तरवारियौ भिळियौ जाय भोपाळ ॥३४५ ॥
मोनूं जुध माराय राव घरां कुसळे रयौ ।
मत जांणै मन मांय सुत बूढ़ौ वहियौ समर ॥३४६ ॥
ले भड़ तो लारेह सुण विवनौ चढियौ सुपह ।
बूढ़ो बेफारेह केवे सारवियौ कळह ॥३४७ ॥

कमळादे वायक देवळ सूं

थित अनरथ थायौह पिड़ बूढौ पाबू पड़ै ।
एक न उगरायौह रे दावौ वांसे रयौ ॥३४८ ॥
वैर घणां रा वाळता आयां सरण अनेर ।
हाय दई आछी हुई वळै न म्हारौ वैर ॥३४९ ॥

पाबू प्रतै

अधरत री आलूज कीधौ नह वहुआं कनै ।
जुध में ढहियौ जूंभ बाहड़दे नींबौ विनै ॥३५० ॥
जुध कुंजवड़ै जांण रहिया नह अंबारथां ।
पौथल सोम प्रमांण वीरभांण आया वढण ॥३५१ ॥
सुत दसमी री सांझ गूंजवड़ै मचियौ ग्रहण ।
मुज्ज तणा पिड़ मांज पाल तुज्ज कज पौढिया ॥३५२ ॥
घूमे घायळियाह घण रण जूंभे गूंजवौ ।
जाखी जायळियाह पह आछी कियौ पांणगौ ॥३५३ ॥
सदन सदन में सोकरां गोरी गावे गीत ।

भळे जमायां रा तिलक करूं कठा लग कीत ॥३५४ ॥

पाबू वायक माता सूँ

सुत माता मिळ कर सला धेंचाई सहगाय ।
प्रसण तणा रजपाड़ नै सुरही ली छो गाय ॥३५५ ॥

समहर मैहदर साजियौ ऊबरियौ नह एक ।
जीवत छोड्यौ जींद रो पेमां रौ वर पेख ॥३५६ ॥

मादळ जिण मांड्योह मो मारण कढियौ मनख ।
बूढ़ो जुध वढियौह श्रौ किण तक पढियौ अरथ । ३५७ ।

इळ सारी कीन्हौ अमर दूर किया खळदाप ।
नवगढ पावे नांमियां पाबू रौ परताप ॥३५८ ॥

सांगरोट वाळी सबै खावड़ कोटड़ खंड ।
ऊभछड़ां वाली अवन दे काळू नै डंड ॥३५९ ॥

दूजा तो दाईह आज तणा कहिजे अवन ।
भळ ज्यां सूं भाईह मोन कळह मराबियौ ॥३६० ॥

पेमां नै परणाय बूढ़ै कुळ जळ बौडियौ ।
वैरी घर वोळाय बाजी सह कीन्हीं बुड़द ॥३६१ ॥

पोरस रौ पाराथ पाबू आई नै पुणै ।
म्हूं नह छोड़त मात खीची नै ढाहत खगां ॥३६२ ॥

जुग दीसै जाताह रहतौ नह दीसै रिधू ।
मरण तणौ माताह निमख जितो धोखौ नहीं ॥३६३ ॥

पिड़ आंगण में तड़फड़त लोहाथां यळियोह ।
जो नांहीं होवत गनौ जोवत जायळियोह ॥३६४ ॥

दोखी नूं दीधोह जस जुध रौ सारौ जगत ।
केवी कर कींधोह मांझी किण तक सूं मरण ॥३६५ ॥

बूढो म्हारौ वीर खळ खीची ढहियौ खगां ।
धांधळ सुतन सधीर पोरस घर हुयगौ पगां ॥३६६ ॥

कमळादे री कूक कांनां सुण लछमण कंवर ।

रण जूझो ग्रहै रूप पाबू पोरसियौ पोहब ॥३६७ ॥
खीचीड़ौ खारौह पाल म्हनै लागौ प्रथम ।
बेटा बूडारौह वैर हमें कुळ वाळसी ॥३६८ ॥
भाखै भालाळोह आज प्रळौ करदूं अवन ।
वीरौ मोवाळोह रण जायल वाळौ रखै ॥३६९ ॥
जायल पत नूं जाय हूं पूछूं ततखिण हमैं ।
मत कळपो मासाव पाल सुतन ऊभौ पगां ॥३७० ॥
करण खळां रौ काळ रुधर प्रळय रौ राठवड़ ।
विण दिन रौ भालाळ वायक दीठांहिज वणै ॥३७१ ॥
सुपह हतौ सूरोह अर देवळ कीधौ अमर ।
भुज लग हथ भूरोह आज गणै कण नै अनंत ॥३७२ ॥

दुतिय पाबू वायक

खळ कुळ राखूं खाय काढै खग वासौ करूं ।
मुज्झ तणौ माताह हाथ देख ऊभी हमैं ॥३७३ ॥
मैं तजियौ ध्रम धार नह हणियौ पेमांग नै ।
जायलियौ जोधार किण विध सूं जावत कुसळ ॥३७४ ॥
वड़तां समर विचाळ चांदै पकड़े छोड़ियौ ।
करै घणै रौ काळ मांझी भड़ियौ मांझिया ॥३७५ ॥

॥ कवित्त ॥

जद पाबू जांणियौ मुवौ बूढौ मो कारण ।
यम विचार उर अधक मोह रूढौ खळ मारण ।
सुण मो विवनौं समर राव वांसै नह रहियौ ।
वड़पह साचौं वीर लड़ै धारां जस लहियौ ।
विदवंत सुणे माता वचन पाल घणौ पौरस्सियौ ।
कर झाल खड़ग लछमण कमंध आज पाल उसस्सियौ ॥३७६ ॥

॥ दोहा ॥

देवळ वायक कमळादेजी सूं

आगेई यण अकळ सूं माराणौ घर माय ।
सोभा हव कासूं चढी धी पेमा रंडाय ॥३७७ ॥
कमळादे सूं कोप कर देवळ ततखिण कहे ।
लोक अजादा लोप क्यूं रांणी अनरथ करै ॥३७८ ॥
सारी सिष्ट सिंगारसी भड़ पाबू भूतेस ।
प्रथमी पत्र करसी प्रळौ सबळपणा सूं सैस ॥३७६ ॥
है नह पाबू हाथ ताव अवघ जींदै तणी ।
वेध विरोधक वात कर कोय विघन करावसी ॥३८० ॥
पाबू पूतारेह हवळे हालौ गूंजुए ।
लोहा चक लारेह घायल पूगावौ घरां ॥३८१ ॥
आवै डूब कह्यौ अठै ग्रह थांनक रनरौह ।
पड़ियौ धांधळ पाटवी डूबंतै दिनरौह ॥३८२ ॥
त्रण ओठी चाढौ तुरत एक जावौ अमरांण ।
दोय मेलो बुढै दसी रण संभाळै रांण ॥३८३ ॥
माय रोवे पिड़ मांय आंख हियै जळ ऊबकै ।
देवळ लीन दबाय हव धीरज धारौ हियै ॥३८४ ॥

कमळादे वायक पाबू सूं

वैर सवेखा वाळसी सुत तन रहौ सधीर ।
हमैं पधारौ गूंजूए पाल अमीणा पीर ॥३८५ ॥
लोक सबै लारेह करग अधारे तन कियां ।
वर दसमी वारेह पाल पधारै गूंजूए ॥३८६ ॥

॥ कवित्त ॥

कमळादे कूकती वहैं मिळ वींटी वांमां ।
देवळ दै आसीस नृपत घर रहसी नांमां ।
उड सांवळां असमांन ग्रीध गरटां गणणावै ।

सह रोवे सांवळी घणा घायल किरणावैं ।
विप श्राय खंड विहंड वुहौ सबद न हतो सुहावणो ।
गूंजूए पाल लागै जको श्राज घणो उद्रावणो ॥३८७ ।

। दोहा ॥

पिड़ श्रस्सी धांधळ पड़ै गुड़ सत्तर गहलोत ।
सतरै पड़िया चावड़ा जे मिळिया रविजोत ॥३८८ ॥

खींया श्रावळ खर खगां वढवा वाळे चाह ।
जुध रहिया जैवूंग जिम खरा भड़ खेचाह ॥३८९ ॥

घोटो हद घूमावियो दे डमरू पिड़ डाक ।
भड़ियो समहर भारथी समरू सूरज साख ॥३९० ॥

चित्रांणो चित्राळ वढ खागां वढ देवळी ।
पाल चाड सुपखाल मिळियो धारौं भड़ कमळ ॥३९१ ॥

तीनू झगड़ां में पुरणाँरी विगत

तवो सहंस तोखार सात कर गैंवर सत्थे ।
श्राठवीस वढ ऊंठ कहूं भारथ जिम कत्थे ।
सितर मौहर निसांण बाज टंकार धनंखां ।
पारघ पारध रूप सजै सतवीस निसंको ।
दहुंश्रो लछमण रावण दुजल धरसिस श्रंबर धरहड़ै ।
सावण मास पायो सुकळ ग्रहण पाल श्रतरा गुड़ै ॥३९२ ॥

श्रौ प्राचीन कवत्त

पड़ै चंद बळपूर पड़ै पेमो परिघी ।
पायक खाखू पड़ै सबळ यळ कीरत सिद्धी
ईसल वीसल पड़ै पड़ै देसळ नेसळ पिड़ ।
पठियो हठियौ पड़ै पड़ै ठाहीयो वड़ो भिड़ ।
सांवळां श्रमर कीन्हो सुजस वसू उवारी वात ही ।
पाल रे धके समहर पड़े सीधा वीसा सात ही ॥३९३ ॥

बारे मीसण वढे सुकव रहिया समरांगण ।
गढवी तेरह गुड़ै भार पड़ियां खळ भांगण ।
कमळ दैण कस कमर समर एक रहियौ सांमो ।
लोह राव दळ लड़ै पड़ै एक जूझ दमामी ।
राईको समर हरियौ रह्यौ अर फिरियो सिर ऊपरे ।
एतळा सुभट रहिया अगे पाल पड़े तो धर परै ।।३९४ ।
असी भाटी सिरदार चारदस भड़ सोलंकी ।
पड़ पनरे विड़ियार निपट कथ राखी नेकी ।
बूढै सत बावीस करे वहिया भड़ कजियो ।
पड़ दोयण पांचसै वसूहा को वजवजियो ।
ओठियां चडै पूगी अवन भोम गळां दस दस भळां ।
थापसी हमै जग सिर थिरू धांम गढां मंड धांवळां । ३९५ ।।

कमळादे वायक

भड वच वाळी भींत धरा ढहियौ पाटोधर ।
नीबौ बाहड़देव सरग पोहता कर संमर ।
हुवो तुझ हेत सूं यळा धांधळ कुळ ऊजड़ ।
पड़ी खांप पातळी यळा जिम सींधळ ऊहड़ ।
घर गई सरब घर धूंहड़ां ते दावी ताता तनै ।
वैरियां विहंडण वैगडा मुणै किसूं हव मात नै । ३९६ ।।

चौसर गाहो पाबू वायक

सुत माता कर मेळ सवायौं, पाटोधर खीची परणायो ।
होसी मात हमें की होवण' अब द्वादस कोसां लग ओवण ।।३९७ ।।

।। दोहा ।।

जस रो रथ जूपोह वरदायक आखै वनौं ।
सोढी नै सूंपोह मन सुध म्हारो मौढियो ।।३९८ ।।
मोनूं जुद्ध मराड़ियो भकर तणै भोपाळ ।

उणरौ देसी ओलभौ पाल कहै रावपाळ ॥३९९ ॥
वण सोढी दीधा वचन भल लेवण सोभाग ।
आवूं जळण उतावळी पूगां थांरी पाग ॥४०० ॥
जांमण मरणौ जगत में सबदन तणौ सुभाव ।
अमरांणै दिस यण घड़ी ओठीड़ौ ऊडाव ॥४०१ ॥
नह गुड़ियो जस गुदळियो भिड़ियौ रण अदभूत ।
लड़ियौ जस प्रथमी लगै पड़ियौ धांधळ पूत ॥४०२ ॥
पाबू पूगौ देवदूत जग सूं पंथ जुवौह ।
घर घर ऊपर गूंजूए हर हर सबद हुवोह ॥४०३ ॥
तेरह रौ तेवीसियौ सांवण दसमी स्वेत ।
पाल समर पड़ियो प्रसिद्ध हठी वरन रै हेत ॥४०४ ॥
अतरै बूढौ आवियौ आडै ऊठ अचूक ।
लोथां लागो मेळवा कोळू ऊठी कूक ॥४०५ ॥
ले पाबू रौ मोळियौ विलखै मुख मुधवंत ।
ओठिड़ौ ऊडावियौ अमरांणै रै पंथ ॥४०६ ॥
रातीवाहै रात री वरणी तीनूं वात ।
खीची आवण जुध भिड़ण पाल देवगत प्रात ॥४०७ ॥
कथ इण नूं म्हारौ कहै भाखै केई भारात ।
रैणां कथ आ कै रही सो अमर समरात ॥४०८ ॥

इति श्री पाल पोरसातनै आसिया मोडजी कृत तन मुरधर भाषा पूरपारथ प्रसाद बार में प्रवाड़ौ रातीवासैं रौ सम्पूर्ण

॥ अथ सती रौ प्रवाड़ौ लिखंते १० मौ ॥

॥ चोपाई ।

करणी कृपा मुज्झ पर कीजै देवी वचन वडाला दीजै ।
घण ऊकता थळ समय घंटाळी लाज धूंजाळी लोवड़ियाळी ।

॥ दोहा ॥

समयो करणाद सगत उकत वड़ी थळ आंण ।
परवाड़ा सतियां तणा वरणूं सरब वखांण ॥ १ ॥
सोढी सेज संवार पौढी सुपियारी पिलंग ।
वासुर मध बेकार चित दारुण लाभो सुपन ॥ २ ॥
आंसू धार अपार नैणां नभ खंडै नहीं ।
व्याकुळ राज कुंवार धण जोखम दीठो धणी ॥ ३ ॥
हळफळ आछट हाथ सुपियारी ऊठी चमक ।
नाथ अमी अणनाथ किम कीधी होसी किसूं ॥ ४ ॥
सुपियारी मुंहगी सदा नायक थारै नांम ।
अब सूरजमल आंगणै रखै न सूंगो राम ॥ ५ ॥
दासी बोल दवार हाथ जोड़ हाजर हुई ।
क्यूं महाराज कुंवार किण कारण अत दुख करो ॥ ६ ॥

दासी वायक

बाईसा भौळा बोहत क्यूं थे रुदन करोह ।
कोळू सरखो सासरो पीहर अमरपुरोह ॥ ७ ॥
रायआंगण चौपड़ रमो महिला सरव सुदाह ।
रखसी बाकळ राज रो चूड़ो अमर सदाह ॥ ८ ॥

फुलवंती वायक

गोली नह जांणै गमत बोलै विण बोलीह ।
पौहरां में जासी परी मझरत घण मोलीह ॥ ९ ॥
दासी मो कीन्हीं दुखो मन भ्रम सुपना मांह ।
धण सुपियारी रो धणी निसचै कुसळै नांह ॥ १० ॥

कव वायक

दासी दौड़ी वेग दुत पोथी रांणी पास ।

कंवरी सुपियारी करै श्रांसूं न्हांक उदास ॥ ११ ॥
तद रांणी धाई तुरत लाड करै उर लाग ।
कळपै सुपियारी कंवर भळै श्रमीणा भाग ॥ १२ ॥

॥ कवित्त ॥

चख काजळ जळचळै रारडासिया रतंबर ।
श्रंग तणांच श्राछटै श्रोढ न्हाखै सिर श्रम्बर ।
तन मूकत तड़फड़ै पड़ै ऊठै पिलंग पर ।
राय कंवरी रुदनंत हुश्रा भेळा श्रम्बर घर ।
विलखाय थियौ श्रारुण वदन सुमन बात धारण सती ।
सुपियार कंवर चोड़े सदन पड़ श्रांगण विच मलफती ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥ राणी वायक ।

गेली थई गंवार क्यूं कंवरी श्रत दुख करै ।
वदन तणौ परवार पीवां जळ माता पिता ॥ १४ ॥
दीठ गळगळी दीठ श्रंबा लपटांणी उवर ।
निज गळ भीड़व नींठ दिल श्रंतर धीरज दई ॥ १५ ॥

सुपियारी वायक

सारी जावै साषबी श्रध खिण मांजळ ऊठ ।
कर सुपियारी री कथन पत धण दीनी पूठ ॥ १६ ॥
इतरा दिनरौ श्रंतरौ हुश्रीज भावी हत्त ।
श्रब श्रंतर मेटण श्रवन सुपियारी समरत्थ ॥ १७ ॥
भांगूं छेटी वरस भर लेंवूं जोत ने काळ ।
पीहरौ री छेटी पडी कद भांगूं ततकाळ ॥ १८ ॥

कथ वायक कलपित

श्राप करेसी यळ श्रमर नवखंड मांझळ नांम ।
श्रालाळा री भांमणी रखै न वांसै राम ॥ १९ ॥

वढ खांमद अंतर बुओ जीवण नहीं जीयाह ।
वसुधा मंडळ वेलियां धाटेचियां धियाह ॥ २० ॥
कर होकस त्यारी करो मनसुध सांभळ माय ।
घड़ियां में मढ गूंजूए पत गोडे पोहचाय ॥ २१ ॥

रांणी वायक

काली मत दाखव कुवच बोल विचार अबूझ ।
नौंज दिखावें नारियळ महिपुळ वो दन मूझ ॥ २२ ॥
कांधै सूं काढ़ी परी खळ पापण खारीह ।
मैं नह वांमण मारिया सांभळ सुपियारीह ॥ २३ ॥
कुंवरी मत दाखव कुवच सुवचन बोल सम्भाळ ।
सुपियारी आवै सदा झूठा सरब जंजाळ ॥ २४ ॥

सुपियारी वायक

दिन रो सुपनो देखियो हुवो न झुटो हेक ।
मारग मांझळ मौळियो खतरो आवै खेंक ॥ २५ ॥
सुंण बांधव विवनो समर राव विया कर रेठ ।
दन हूतो नभ दुघड़ियो जूंझ रह्यो पिड़ जेठ ॥ २६ ॥
कनले अर फरियो कटक रैण हूती अधरात ।
भाख होवंतै भांण रे पिव हूवो खगपात ॥ २७ ॥
सुपनो झूठो सरबथा मुज्ज तणां नह मात ।
मारग आवै मौळियो पाबू रो परभात ॥ २८ ॥
अमरांणो लागै अबै जणणी खारो जैर ।
राख हुंऊ जमहर चडूं जावूं खांमद लैर ॥ २९ ॥

रांणी वायक

सुपियारी मोटा वचन कंवरी काढे कांय ।
वात हाथ सह विसन रै नभै जगत में नांह ॥ ३० ॥

नोज दिखावै नारियळ ओदन बादल ओळ ।
कथ सारै किरतार रै बेटा पहल म बोल ॥ ३१ ॥

सुपियारी वायक

कासूं मां भोळप करै हूं वाजूं सुरतांण ।
सूरजमल री सारधू मो पूठै अमरांण ॥ ३२ ॥
पीहर लाजै धाट पत लाजै ऊमरकोट ।
कोळू लाजै सासरो हूं लेऊ जिय ओट ॥ ३३ ॥
खांवद सरगापुर खड़ै पड़ै सरब सुख पार ।
तिय काठै जद नां चढ़ै लांनत धड़ै लखार ॥ ३४ ॥
रांडी ह्वै ऊमर रोए लाज मिटै कुळ लाज ।
कंत बिहूंणी कांमणी कै जीवै किण काज ॥ ३५ ॥
एकल पंथ अतीत को विण जोड़ी बस ओज ।
सोढी धण रो साहिबो जावै एकल नोज ॥ ३६ ॥
एकल जावै आदमी रांडां में नहिं राम ।
एकल नहिं जासी अली सुपियारी रो सांम ॥ ३७ ॥
जोखमियो जुध जींद रै मौतन हंदो मांड ।
हूतासण में होम सूं पाबू भैळो पांड ॥ ३८ ॥
दासी काकी दादियां भूवा भोजाईह ।
जणणी चख पूछै जपै बोली रह बाईह ॥ ३९ ॥
सुपियारी बैठी सदन आथण हुवो अबेर ।
अंत्रा दिप नें सोक उर घणो कुळंवै घेर ॥ ४० ॥
सूरजमल कांनै सुणी व्याकुळ तन मन वीर ।
अन्त समभ दुख ऊपनो आयो तुरत अधीर ॥ ४१ ॥

रांणा वायक

कर मत सुपियारी कंवर काली कळह अकांम ।
सूरजमल री सरम री रख सी बाजी रांम ॥ ४२ ॥

रांणै री बाजी रहै जद भव जीतो जांण ।
धौळां रौ रखसी धरम सचियादे सुरांण ॥ ४३ ॥
बेटा कुण गांजे सबळ. पाल बली पाराथ ।
सूरजमल री सरम री नाव राख सी नाथ ॥ ४४ ॥
बतळावै कुण वाघ नै कउच ग्रहै कुंण काळ ।
उण नूं कुंण जीतै अरी समहर वांधै साल ॥४५ ॥
आयै जोध सधीर अत वीर धकै सतवीस ।
कुण ठाकुर वावै कळह पाबू पर पांडीस ॥ ४६ ॥
लकै सूं सांढ्यां लयै आयौ पाबू एथ ।
वाहर पूगो वाघरौ जुध मैं दीठी जेथ ॥ ४७ ॥

॥ बात ॥

बाद सूरजमल फूल कंवरी ने सुवर्न रो पांतरो घालण ने पैल री बात सुणा वे है
इण में पूत्र रतन भाव धुन है

॥ दोहा ॥

लांबै पर लागा लड़ण लांबी वूंटै नाळ ।
ओलां भुज अंबर अड़ै पैलां छुटै पाल ॥ ४८ ॥
लांबै पर लागा लड़ण भाळाला रा भींच ।
आधां वाहर अटक ली आधां कीन्हौ पीछ ॥ ४९ ॥
पाबू रोकी पाल पर है जमसाबळ हाथ ।
तद दीठौ धांधळ तणौ वीर बड़ौ समराथ । ५० ॥
आगे पाबू आवियौ पावण अग पांणीह ।
समहर पूगौ सायरौ वांसै वगांणीह ॥ ५१ ॥
वीर कणेरी पावरा धरतन के मग धाय ।
किम धर पर केता तुरी अंबर मदद के आय ॥ ५२ ॥
किलमां दल घेरौ कियौ हैमर पांच हजार ।
आधी सांढ्यां अटकली आधी गई अगार ॥ ५३ ॥
चांदो पूगो चौहटण परबत दीन्ही पूठ ।

ढेबै पर वागो गजर उसरां वागां ऊंठ ॥ ५४ ॥
कमधज न्हांकी काळमी राड़ वजावण रीठ ।
समराळा भागा समर पाळां फरगी पीठ ॥ ५५ ॥
के दूजौ धाड़ो करै खाट हुवे खारीह ।
कुसळै धन लेग्यो कमंध साभिळ सुपियारीह ॥ ५६ ॥
हण नांखां पाबू असी सज कर सांकेळाह ।
किलमां उर धीबं कमंध भालाळौ भालाह ॥ ५७ ॥
मोह टाळा पूरा मची जुध बांका जांमित ।
घिर चमराळां घूमरां लाख दळां भ्रख लेत ॥ ५८ ॥
रवदाळां मारग रुकौ पासै दळ पालौंह ।
ले साबळ वादण लगौ भगौ न भालाळोह ॥ ५९ ॥
मिळियौ खड़ आयौ अलळ पूगौ बकियौ पीर ।
जमियै गिरनारी जपै फड़की बंध फकीर ॥ ६० ॥
नोहड़ी नरवंका नडर खध अंधा गिड़ कंध ।
जुद्ध करण नैं ऊससैं बळ वांका वाजिन्द ॥ ६१ ॥
आहेडी सतरां अगे दरकां टोळा देख ।
लीना वाद लड़ायतां अली अली गळ एक ॥ ६२ ॥
अठी बन्दूकां ऊपड़ी धनंक उठी धूंकार ।
धाड़ेतां वाहर धकै जुवो हको जिण वार ॥ ६३ ॥

पाबू वायक

चांदै विण वणियौ समर ढेबा की ढाळोह ।
पाबू ऊभौ पाल पर भाखे भालाळौंह ॥ ६४ ॥
घोड़ां बांधै घूमरा तोड़ां दए टकोर ।
नाळौं लए कळाईयां कड़वा कज लंगोर ॥ ६५ ॥
मोड़े डावा जीवणा हय खासा हणणाय ।
लंगो लए लड़ायतो सिंधू में सुरणाय ॥ ६६ ॥

ढेबे वायक

धीरज रख म्हारा धणी ओढळयूं असमांन ।
वगतरियां पोवै वरम पीपळ हंदा पांन ॥ ६७ ॥
खाखू भाखू खीजिया देसल नेसल डाक ।
ईसळ वीसळ ऊससे हठिया पठिया हाक ॥ ६८ ॥
पाबू रा पाराधियां अणिया रां भंमराह ।
सींहां खाडू सांवळां जोड़ायत जमराह ॥ ६९ ॥
बादळ वरणा बावरै तीर भुजां वळ तांण ।
घणां दरीजै झंगरी अंवळै मुख धर आंण ॥ ७० ॥
घणूं बळोची गल करे होवे न सोढ्यां हाथ ।
घमराळां रै साथरै भीलांसूं भाराथ ॥ ७१ ॥
पोरस छकिया पाल रा भारत मांहै भील ।
तोड़ै बखतर तेवड़ा फोड़ै बांणां फील ॥ ७२ ॥
सिसकांनी छूटै सळक लाड़ी अलग लगाव ।
अणवर साहण संघणां ठहियो जबर ठकाव ॥ ७३ ॥
धुणियासी धणियां धरी भुज बळ पाल भड़ांह ।
ले सळकां लाहोरणी छूटै लांबछड़ांय ॥ ७४ ॥
ते नायक तरवारिया रुपिया पाधर राड़ ।
ढेंवो कसैन सावरो पिड़ भूजांण पहाड़ ॥ ७५ ॥
हाटां छोड वजाज हव भैपड़ गया ज भाज ।
दरवांनां जीवा डरत दीना जड दरवाज ॥ ७६ ॥
सोढा बह आया सरब ग्रह तज राजघरांह ।
लांबै ऊपर दळ लड़ै कुण है खबर करांह ॥ ७७ ॥
रांमा राजड़ वैरसी भोजा भुरजाळाह ।
अमरांणे रा ऊमरा ढळिया ढालाळाह ॥ ७८ ॥
बीरम भुज बळ गंगदा सिंह ऊदा सुरतांण ।
धाटीचा आया धरै जंगी सबळ जुआण ॥ ७९ ॥
दूर थकांई देखतां जद म्हैं लीना जांण ।

धर मुरधर रा धाड़वी आपाड़े उसरांण ॥ ८० ॥
कमधज झाली काळवीं करग्रह दाढो कूंत ।
काळा जुध हाका करै हींण बलोचां हूंत ॥ ८१ ॥
ओळी तट हिन्दू अखां पिड़ सिन्धू पारांह ।
किण सांमळ करसो कळह सोढ़ा सिरदारांह ॥ ८२ ॥
माढू सारा मेलिया पाबू सांमा प्रौढ ।
हूं एकल पतसां हलै गयो बलोचां गौढ ॥ ८३ ॥
सामां आयो सायरो ताजी चडियो तूट ।
खोसा जावै खोस नै ओजो म्हारा ऊंठ ॥ ८४ ॥

वीर वायक

धमांसू धाड़ो करै टोळा संहै तळाह ।
काफर जो आयो कदन लारे नेजाळाह ॥ ८५ ॥
ठांभ परख सूजाठ कर पटकै जे गुढ प्रौड़ ।
हणसी जए दन हालसी लै सांढ्यां जी खोड़ । ८६ ॥
तूं राजा सोढ़ां तणो तूं रांणा अमरांण ।
अभ्भां जो सिरदार तूं सभ्भांजो रहैमांण ॥ ८७ ॥
विलकुल सुतर छुड़ायलै खीम रहो सह खैर ।
हण म्हाखै जद लैअसी वंजेबां अणवैर ॥ ८८ ॥
धाड़ेतां वाहर धकै वाज हको इकवार ।
दीठो मो दोनूं दळां जंग मटांणो जार ॥ ८९ ॥

सूरजमल सुपियार कंवर नै कैवै

खत्र दळां तूठां भरण पूठो पाबू पास ।
हूं आयो लांबै हलै वाग ग्रही वरहास ॥ ९० ॥
कथ मांनै मेटे कळह सुण मोटा सिरदार ।
सांढां आधी सूंपदो लूंट रहीजै लार ॥ ९१ ॥

पाबू वायक

पावू समझ संभाय पह धर कीन्हा धाड़ाह ।
लड़ दब किणही नह लियो लेसी केम लड़ाह ।। ९२ ।।
लीनोड़ा पाबू तणा आपड़ वांसे आय ।
वाद करे वत वारुआं लीना नह छोड़ाय ।। ९३ ।।
डाढो तरफ बुकांनदे किलम दये फिटकार ।
अली टकोरो ऊछरै मोपर मेली कार ।। ९४ ।।
रांणां यम भाखै रवद् है नह वात हजार ।
सोढां केम छुड़ायलै मासूं डोढी मार ।। ९५ ।।
दीतां झालै डाढियां खीजै गउ खांणाह ।
थे राणां अळगा थयो वादणदो वार्णाह ।। ९६ ।।
करूं गरक रण काळवीं अरक ढकूं रजआड़ ।
दरक कदे देऊं नहीं तुरक नखा दूं ताड़ ।। ९७ ।।
छाडूं नांही छोकरो पायलयूं भुज पांण ।
अळगो होसी आसुरो मीठोड़ो मेहरांण ।। ९८ ।।
जुलफ कार कर मेळिये आवे जो अभिराम ।
किलमायण आगे कदे छोडूं नह संग्राम ।। ९९ ।।
चारूं यार खुदाहरा कूंत अणी सर कीप ।
घूर आवै जो मो धकै मेळूं मकै सरीफ ।।१०० ।।
दोनूं जाया देवनी है जो हसन हुसेन ।
घांधल रा जाया धकै रण में अडग रहै न ।।१०१ ।।
दळ दळ रा असवार नै पूगै घांधळ पूत ।
जंग तणो वागो जरक तुरक होसी ताबूत ।।१०२ ।।
आवै जो मैहदर अली हजरत अली हलाय ।
लोहां बळ ठांभै लयूं पाछा दयूं न पाय ।।१०३ ।।

पुरुषारथ में दीपक

पागाळा खेड़ै पमंग दाढाळा जमदूत ।

किम न्हासूं बांणां अगे रांणा हूं रजपूत ॥१०४ ॥
किलमांयण हाका करै डुंच कसळै डीलांह ।
वाद तणो ढाळो वुग्रो भालो की भीलांह ॥१०५ ॥
कर हथनाळ कळाइयां दे पूणछ टंकार ।
सरगण ऊपर सांध नै वळिया दळ वाकार ॥१०६ ॥

कवत डोढो

अठी उरड़ आविधो विडंग खड़ ने वाघांणी ।
पाल उठी खड़ पमंग आच सावळ ऊबांणी ।
माहोमा मनुआर हुई हथवाह तणी हव ।
पाल कह्यौ तूं वाह तुज्म गुनही धाडीतव ।
वीर वाह खग साह वरग हेरिया वडांणां ।
सकाबार सापुरुष जबर नर समर जुडांणा ।
वाघांणी जिण वार वढण समसेर अवाही ।
दये रांण वेगड़े पाल केसर समभाई ।
कर ग्रेहत वाग केकी कळा तगग गई ऊंची तुरंग ।
हुल जांण व्योम पग हालियौ समळ कनां तजियौ चरंग ॥१०७ ॥

॥ दोहा ॥

गई भमर उड़ चढ गयण वदी रूंख जणवार ।
पुणै सायरो पाल नै नजरां पीठ निहार ॥१०८ ॥
पाल संपेखे फिर पछो कळा वधी केवांण ।
पळकै खग रो पींपळो पाधन के परवांण । १०९ ॥
जद मन पाबू जांणियो परचा सुध ओ पीर ।
सांढ्यां लै जीतै समर जावण न दै फकीर ॥११० ॥
आडा सोढा आविया सजबळ ग्रहै चाळांह ।
किम ह्वै म्हां ऊभां कळह धीरे धुणियाळांह ॥१११ ॥
सूरज सह सोढांणरो महिपत धर पिछमाद ।
रांणां ऊभां रावतां ह्वैण न देवां वाद ॥११२ ॥

पाल तणो ग्रहै पागड़ो आखी म्है अरदास ।
अब सूरजमल आवियौ वधै न वैर वणास ॥११३ ॥
घाड़ैती पाबू धकै बाहर वागाँणीह ।
विष्टाळू सूरज हुवौ तद नाँहीं ताँणीह ॥११४ ॥
पाबू माँनी वात पह तुरकाँ नै पड़ताप ।
वड हेटा दोनूं वुह्वा माहो माह मिळाप ॥११५ ॥
समपी आधी साँढियाँ धाँधळ सुतन सधीर ।
समझ गयो जद सायरो भागाँणी हुथ भीर ॥११६ ॥
पीर सायरो इम पुणे पाल हुए सुख प्राँम ।
यता वर्ग थें हेरिया कहो पाल किण काँम ॥११७ ॥

पाबू वायक

नांम अमर राखै नराँ चारण छत्रियाँ वीर ।
साँढ्याँ ज्याँनें समपसू पाल कहै सुण पीर ॥११८ ॥
तुझ सकज खोसै तुरत दे धन ज्याँनें द्वेख ।
जस करणो चारण जिको आप असी ने एक ॥ ११९ ॥
दीनो पाबू ने दरख मीसण लीनो माँग ।
चढियौ पाछौ सायरो पीर दयै पर छांग ॥१२० ॥
पैलो मिलण असैंधपण माँनी नह मनवार ।
कौळू दिस पुळियो कटक आप हुवो असवार ॥१२१ ॥
टळिया जे टोळाह जे मिळिया आगे जिता ।
भळिया ज्याँ भेळाह क्रमि पायक पाबू कमंध ॥ १२२ ॥
पाबू में देवत पणौ देव पणौ दीदार ।
नर नाही धाँधळ तणौ ओ कोयक अवतार ॥१२३ ॥
जघ मन में यव जाँणियो थित चोती थोड़ीह ।
वर लायक देवाँगना जोवण जिम जोड़ीह ॥१२४ ॥
वसुधा पर मोटे विचै सुण राँणी सिरदार ।
साँवळ धाँधळ सिंह रो जड़लग हथ जोधार ॥१२५ ॥

ओ उसरायण आपड़ी वंगो ध्रमां वार ।
किलमायण पाबू थकै न झाली फिटकार ।।१२६ ।।
है बैनोई जींधरो बूढो जिण रो वीर ।
अरनोई धिकतै उवर गण मन अकस गहीर ।।१२७ ।।
सुपियारी हरकी समझ वर रा सुणत वखांण ।
अतरै सुपनो आवियो याद हियै जळ आंण ।।१२८ ।।

रांणी वायक

तद रांणी ऊठी तड़क लाड करै उर लाग ।
कळपै फुलवंती कंवर भल अमीणा भाग ।।१२९ ।।
रांणै नै पड़पूं नहीं बैहतौ देखै वाट ।
दीनी मारी डीकरी धर कित कोळू धाट ।।१३० ।।
सैंण महीं भाई जिसो मीर चले इक वाट ।
नह दुसमण भाई जिसो कुळ उकटियो काट ।।१३१ ।।
कर सनमंध न्यारो कियो रतन अमोलख रार ।
सुपियारी थारो सजन म्हारो राज कुमार ।।१३२ ।।
सुपियारी रानळ सहिज भालाळौ जिम भांण ।
इण जोड़ी रै ऊपरै कोड़ करूं कुरवांण ।।१३३ ।।
आसीसां नित ऊचरूं वरळ उदे री वार ।
आ जोड़ी रखजो अमर कोड़ जुगां करतार ।।१३४ ।।
सह देसन्तर धाट सर धाट सिरे अमरांण ।
अमरांणो पर ऊपनी अवछर मो ऊर आंण ।।१३५ ।।
मांणीगर हयरोट मझ भणियां थम भणियांह ।
उर मो अपछर ऊपनी पग पग पदमणियांह ।।१३६ ।।
मुखड़ो पूनम रो मयंक ऊगतड़ौ अवितंस ।
बोलन्दी कोयल वयण हालंती गत हंस ।।१३७ ।।
रांणी जाई राजविण दूजू राज दवार ।
मां री जाइ रो जिसो आखूं किण उणियार ।।१३८ ।।

इण पर वारूं उरवसी वारूं सिर इन्द्राण ।
लोपै नह पित मात रा फूलकंवर फरमाण ॥१३९ ॥
आ सुपियारी उरमळा सुख साधी पत सेव ।
सझम पत धांधळ सुतन राखूं लछमण देव ॥१४० ॥
कुसळ जितै भड़ सांवळा कुसल जितै धन वाळ ।
काछळी केसर कुसल कुसल सदा सुखपाल । १४१ ॥
काट जिका कुळ ऊकटै राड़ वटै दव राज ।
दीनी म्हारी डीकरी कोळू मढ किण काज ॥१४२ ॥

रांणा सूरजमल वायक

यम सूरजमल आखियो रे सांभळ रांणीह ।
लावै पाबू नै लयां पाछो अनपांणीह ॥१४३ ॥
नजरां लखूं न लोरटी सह ऊमर रो साल ।
पोहचासी घर पाल नै मरसी सूरजमाल ॥१४४ ॥

॥ सोरठा ॥

है साहब हाथेह वात कैयां नांही वणै ।
पीळी पह प्रातेह चढ़ कोळू नै चाल सूं ॥१४५ ॥

॥ कवित्त ॥

चख पूंछै रूमाल हाथ फेरै मुख ऊपर ।
ले नेड़ी उर भीड़ गोद बैठाड़ी कुंवर ।
करवाळी दुख मेट वात भ्रम री विसराई ।
सूरजमल सारधू कवा सुख दे जीमाई ।
उपजाय हरख सुखपाय उर रांणो कर जोड़त रह्यो ।
ले हुकम तात तनुजा तणां गढ मंझार भूपत गयो ॥१४६ ॥

॥ दोहा ॥

सूजै जिमाई सिधू माढां थाळ मंगाय ।
पोढावै परक पभंर वात दई विसराय ॥१४७ ॥

रांणै सूरजमाल रै पमंगां हुवा पलांण ।
पोह फाटी परभात री हळचळ हुई हलांण ॥१४८ ॥
सुणिगारी बैठी सदन दोढी मग चख देर ।
साथे झूळ सहेलियां लाड़ गहेली लेर । १४६ ॥
पग अगा मन पूंठ ने काळो वदन कियांह ।
आयो काळा आखरी ओठोड़ी अईयांह ॥१५० ॥

अईयांह वाचक ओठी सूं

देखै सूरजमल दरस हिय पाबू रे हेत ।
ओठी गळ लायो अधक दूर हूंता पग देत ॥१५१ ॥

ओठो वायक

खळखळ सूं जीता खळां रण राठोवड़ रांण ।
जुध में जीतो जींधरो छळ करने चोहांण ॥१५२ ॥
जाया धांधळ रा जुगळ धाया सुरपुर धांम ।
नह रोया मृत लोक में कर जुध आया कांम ॥१५३ ॥
आथमते नांमी अरक पड़ जेठी पाराथ ।
ऊगमतें दसमी अवन पड़ कणएठी प्रात ॥१५४ ॥

॥ कवित्त ॥

मह सीधो हणमंत महातन करै वज्र मय ।
गोरख सीधो गरु बजै ओहूं काळ एक वय ।
भव सीधो जड़ भरथ देह संजम इन्द्री दम ।
गरुड़ अवर गंगेव जती सीधो लछमण जिम ।
सीधी यळ कीयां धांधळ सुतन धन देवळ सत धारणी ।
पाल तिण पंथ सीधो सुपह सीधी नवलख चारिणी ॥१५५ ॥

॥ दोहा ॥

चार असी सिध चारणी सात सती सुपखाल ।
जिण मारग सीधो जती नवलख लोवड़ियाळ ॥१५६ ॥
सुणिया ऐ सूजेह श्रवणां दुखदायक सबद ।

अन्तर अम्मूजेह मुरछागत पांमी मरण ॥१५७ ॥
सुपियारी सुरतांण कर दातण बैठी कंवर ।
भू ऊगमतै भांण जद फरकी चख जीमणी ॥१५८ ॥
रांणी दर गहरौ रुदन वर अतै वणियोह ।
महिलां रोवंती मैहळ सुपियारी सुणियोह ॥१५९ ॥

॥ रांणी रो साद, कवित्त ॥

सज सारधू स्रंगार मैहल किण दिन मोकळसूं ।
बिच संवळै कुळ विधू हूंई जोवण कद हळसूं ।
सब उमंग साळियां रैण भर कद न रमासी ।
दारू अमलां दपट प्रगट परगैहै कद पासी ।
रागरंग हूंस मन में रही सोक रुदन फिर सांमणां ।
हमरौठ धणीरै मांडहै पाल हुसी कद प्रांमणां ॥१६० ॥

॥ सोरठौ ॥

रांणी रोवंतीय सुपियारी सांमी चली ।
कंवरी कळपंतीय ऐवासां सूं ऊतरै ॥१६१ ॥

सुपियारी वायक

आंटीला अळखवणा वादीला वरियांम ।
त्रिण धणियामी कर वुवो सुपियारी रो सांम । १६२ ॥
अतरै ले आईह दासी सुध धीरज दयण ।
वांधौ गळ बाईह मत सागर रौ मोळियौ ॥१६३ ॥

कवित्त सुपियारी वायक

मेल कंठ मौळियौ बोल सुपियारी बोलिय ।
अंबा मत स्रव उदक तेज सत नभ दरतोळिय ।
रोसी तिय कुळ रहत जके पति तज रहै जावै ।
मोतिनियां री माळ आंख आंसूं किम आवै ।

पारकर नगर भूंडर पतय कळंजर रांणां कुळी ।
हमरोट कोट अमरांण नै आज करूं सह ऊजळा ॥१६४ ॥

दावानळ दीपते बीच आसण कर बैसूं ।
लूम झाळ विकराळ लाय लपटां तन लैसूं ।
भाळालौ भरतार जिकौ दिल सीस रहाऊं ।
जाळानळ मये जळूं जदे सुरतांण कहाऊं ।

घमसांण हुवै नीसांण घुर गढां प्रसिध कथ व्हे घणी ।
सतीपुर पती लेकर चलूं तद हूं सूरजमल तणी ॥१६५ ॥

कव वायक

पिंड पोरस प्रगटियां करग तन कियां सकोमळ ।
लोवणप्रत रंगळियां अरकतप कियांस ऊजळ ।
मधुर वांण मुखमयंक मात हूंतौ फुरमावै ।
मौ पत रौ मौळियौ अठै लायौ जो आवै ।

कळपत्रछ लता तूटी कना मिलण मनोगत मुख मुणै ।
दुलहणि थियोड़ी विण दुळह ऊभी सूजै आंगणै ॥१६६ ॥

करग कमल कूटतौ ऊअर पीटतौ अगावै ।
नयणै जळ नांखतौ पिता भीतर दुख पावै ।
अत लेतौ ऊसास स्वास नीसास लगावै ।
दुख सागर में डूबतौ धिया दुख देखण धावै ।

ऊठतौ अने पड़तौ अवन तन विपती सूं ताविया ।
मन दुमन थियौ फीकै मुखर यम सूरजमल आवियौ ॥१६७ ॥

सूरजमल वायक

हठ मत कर सत हमै जलण तन दहण कटण जुग ।
हर कीन्हौ जिम हुवौ मरण जांमण दोनूं मग ।
आ धर पुर अमरांण सरब थित सारी संपत ।
पुत्री थूं पाटवी हुकम सह कथ थारै हथ ।

मो दीधो नह सुख समझ मन रांम न सुख दीधो रिध्रू ।
लखत क्रम किसुं कारी लगं सुपियारी म्हारी सिध्रू ।।१६८ ।।

संभावना अलंकार : फूलकंवरी वायक

भांण न ऊगं भूम गरुड़ ऊडांण तजे गत ।
अरजण चूकै बांण मांणरढ रांण तजै मत ।
जत छोडै खटजती सती सातूं सत छोडै ।
उष्ण तजै वळ आठ मेघयळ धारां न मोडै ।
कुळहांण लगै जिण दिन कहूं वांण मुझ भूठी वहै ।
सुरतांण भांण थारी सिध्रू रांणा किम वांसै रहै ।।१६६ ।।

सिर वेणी साजती कसूं काळी डोरी किम ।
रंग चूड़ो राखती लंब कंचुक पहरूं किम ।
सजणहार सिंगार सुतन तो हूंती सुहागण ।
हुय जोगण दुतहीण फिरत शोभूं नहि आंगण ।
कोळूई रहूं जाय किण कतै धुर मो घर हाल्यो धकै ।
सुण पिता कंथ विण तो सदन रांम म्हनें नांही रखै ।।१०० ।।

।। दोहा ।।

पन तन सूं छेटी पड़ै नीर चडै नवनेज ।
हव कोळू दिस हळण री दाजा करो मजेज ।।१७१ ।।

सूरजमल वायक परगंसूं

।। कवित्त ।।

हूवो सती रो हुकम वेग ताजी पलणावो ।
कस कजाव वढ करण अबै ओठी ले आवो ।
सैहे भाई सुरतांण कसो संग चलण कमरां ।
धाट नृपत री धिया यळा करसी जस अमरां ।
पति नूं मिळण राखण प्रसिद्ध वैहण सतीपुर वासरै ।
राख तन करण सांचो रतन सुतन पधारै सासरै ।।१७२ ।।

॥ दोहा ॥

अब उतार असोभता धरे सोभता अंग ।
कारण तिण मंजण करण गई सती धवळंग ॥१७३ ॥

॥ छन्द अोटक ॥

सद्रहो ओपमा ॥ झमकै ओपमा ॥ उतपै च्याव सुत ऊकत ॥ रूपग ओपमा
॥ संकल ॥ पर परंत ॥ रूपग उतपै आ अनुकंत ॥

कर मञ्जन अंग अंगोछ कियूं। सुपियार सती उमिया कसि यूं ।
सटकार दये कच गोख चढी । खित वाल समोहत द्रव्य खड़ी ॥१७४ ॥
धरियौ तन रूप महाधर रौ । कस वागौ अनोपम केसर रौ ।
घट होमण चित्त विनोद धणौ। परमोद धरंत अमोद पणौ ॥१७५ ॥
वरणी तन होमण रौ ब्रत ले । लख अंग प्रतेसु अलंकृत ले ।
वर अोपम एम फबै वळसी । सिर सोभ सबैं उत श्रीफल सी ॥१७६ ॥
सिध बीन्दिय भाळ सिंदूर सधी। उदियौ नभ मंगळ कार अधी ।
मुख पंकज सीस हंसै मिळीयं । भ्रमरावळ जैम वुहा वळियं ॥१७७ ॥
लज ग्रहै विनै पत नेह लभै । अंत रूप लियां हरि नेत्र उभै ।
भ्रमरावळ नैण विचै भळकी । किर रेख अनोपम काजळ की ॥१७८ ॥

॥ अथ भ्रमरां री ओली ह्वै ज्यूं काजल् रेखा वरनन ओपमा ॥

नथ बेसर सोभय सीळ झले । मुगता ग्रहे नूं सुक ज्यूं मुख ले ।
कुळ काग न दाड़म हीरकणी । तस सोभय दंत वतीस तणी ॥१७९ ॥
बिंब अोठ तणै सिर अोप वही। मिळियौ रंग वीद्रुम चोप मही ।
गरदन्न सुबन्न कुरज्ज घटौ । तिण कंठ प्रनाळ भुळै त्रवटो ॥१८० ॥

॥ प्रणाल पांनड़ी वाली छंद अोटक ॥

धर वांह उभै सिस सोभ धरी । कह डाळ अनोपम चंपक री ।
थिर हाथ हथैलिय कुंभ थळी । फवती कर अंगळ मूंगफळी ॥१८१ ॥
सिर स्वेत ससी हरबीज सिधू । वरणू नख आरुण इन्द्र विधू ।
छिब कंचुक तार प्रकाश तिसा। जिण में थण दोय अनांर जिसा ॥१८२ ॥

॥ कांचली री तारां सिस रो प्रकास ॥

ऊपजी फिर ओप यसी उकवा । छिब सूं कर दोय जुड्या चकवा ।
पर पेट प्रभाय मिळी पुणियूं । स्राक स्री व्रख नांम धरी सुणियूं ॥१८३ ॥

जिण नाभ गंभीर सरूप जपं । प्रत जोट दयूं खुलतौ पुसपं ।
मिळ रेख सुरंग परागमयं । अवळी नव तीरथ राज षयं ॥१८४ ॥

कट खीण सती सब सोभ कहं। मृगमंद धस्यो गजकुंभ महं ।
विच जंग रु कंठ दिपै वण रा। कदळी अभथंभक कुंदण रा ॥१८५ ॥

मळियाचळ वास तनूं मैंहक्यो। थिर चाळ चलै जिम हंस थक्यो ।
जन पायौ महाधर धाट जिसौ। हरणांखि तणौ तन हाटक सौ ॥१८६ ॥

कळधौत अभूखण अंग कियूं । नखचक्ख बिचै सिणगार लियूं ।
सुरतांण लये खट तीस सिरा । धिय आज उजाळत धाट धरा ॥१८७ ॥

॥ यां तुकां में लछण ॥

तिण काज त्रियां सिधपाल तणी।विप बारह सोल स्रंगार वणी ।
सब साज विडंग भड़ां कसिया। करि अंग कमाल पळांण किया ॥१८८ ॥

हव जावत पुत्र अमोल हथं । रणवाह समस्त अरोह रथं ।
नरखै पित माताय नीर नरै । कंवरी तन होमण कोड करै ॥१८९ ॥

राय आंगण ग्रेह थयो रिम रौ। पळक्यौ मुख चंदौ ए पूनम रौ ।

॥ श्री मुख सूं फुरमावै ।

पुणहूं जळ चाढुंअ तुज्झ पखां । सुण मां मत न्हाकैए नीर चखां ॥१९० ॥
धन देख रहूँ किम मोख धणी । तनुजा हुँए सूरजमाल तणी ।
सज साथ लियाँ पित मात समी।कुंवरी हव कोलुअ प्राग क्रमी ॥१९१ ॥

धर आद हिये सुरतांण धियां । दुळही दुलहै नुं अवैण दिया ।
झणणाहट जांझर साद हुई । हय पीठ सती असवार हुई ॥१९२ ॥

चित आवत ओपयसी सुरगा । दसमी दन सिंह चढी दुरगा ।
सब साथ लियां पित मात सथै। मळफी चढ प्यार तुरंग मथै ॥१९३ ॥

दुत सूं तन होमण पेंड दिया । धन हो धन सूरजमाल धिया ।
धर गैण प्रथीतळ सोज धणी। तिय लेवण जोत भालाळ तणी ॥१९४ ॥

धिय देखज नेतांय अंग ढहै । विण पीठक माळक जाव वहै ।
सुरतांण लियां कुळभांण सगै । उणवार खड़ै असरांण अगै ॥१९५ ॥

थळसूं रथ पूठय माग धिया । करहां चढ ढील मुहार किया ।
कुंवरी तन जोखम जीव कळै । पत घाट खड़ै असवार पुळै ॥१९६ ॥

घट पाल पड़ै सुत छेह धणी । धुरजाळ खड़ै हमरोट धणी ।
पिड़ मांझ रह्यो कर राड़ पती । सुपियार पधारिय होण सती ॥१९७ ॥

॥ दोहा ॥

कुटुम सरब साथै कियां गढपत पत गोढीय ।
आवी ऊमरकोट सूं सत करवा सोढीय ॥१९८ ॥
अमरांणा रा मारगां खैहती उड्डै खेह ।
आ आवै सोढी अबै नांह निबांहण नेह ॥१९९ ॥
आय हुआ जद एकठा सुत धांधळ सिरदार ।
पाबू बिण झांखो लगं वूढै रो दुरवार ॥२०० ॥
पड़ियो धांधळ पूत सुणियो सूरजमल सिधू ।
आवी चढ अदभूत होण सती हमरोट सूं ॥२०१ ॥
तन चढियो साहस तरण पड़ियो समर पतीह ।
आवी ऊमरकोट सूं सोढी होण सतीह ॥ २०२ ॥

॥ फूल कंवर बायक सारा सोढां सूं माता पिता नै ॥

कुंवरी पित हूंता कहै सोढां सरब सुणेह ।
धियां म दीजो धांधळां निज त्रसटैळा नांह ॥२०३ ॥
हुतो भवस जिमही हुवो सुणो सरब मो साख ।
धिय फिर दैणी धांधळां तिणरी घलो तलाक ॥२०४ ॥

सोढां बायक

यम सह सोढा ऊचरै कीना वचन कबूल ।
धाटेचां धिय धांधळां फेर न देसां फूल ॥२०५ ॥
पिड होमण रो पेहल मैं कियो पती सूं कौल ।
बहूं जलण रणवास रा म्हनै वतावो मौल ॥२०६ ॥
हूं जासूं खग धोळहर उर तज मोटी आस ।

अब देखूं जाय आंगणौं अण घर रा एवास ॥२०७ ॥
दरसण सासू नै दियौ लियौ कुटुम सैहै लार ।
आई वैहै राय आंगणौं छूटां पटा सुप्यार ॥२०८ ॥

माजी कमळादेजी वायक

गढपत रै जनमी घरां आई मो ऐवास ।
पाल भला तो परणियौ सुत सोढी सैंवास ॥२०९ ॥

कव वायक

सोढी जळवा सायधण हवळे पाल हलीह ।
आ किम मेलै एकलौ गढपत नू गेहलीह ॥२१० ॥
बारैं आभूखण बांवधर सज सोळै सिणगार ।
संग पती काठे चढण हुई सती हुसियार ॥२११ ॥
धर पड़ियौं कोळू धणी रण बूडो राजंद ।
सत दीनौ सारां सिरै गैहली नूं गोविंद ॥२१२ ॥
हैवर चढ आगे चली जस मय जेठांणीह ।
वय छोटी मोटो वडम दुलही देरांणीय ॥२१३ ॥

देवल वायक

॥ दोहा ॥

रांणी किम वांसै रहै सुपियारी तज सांम ।
सूरजमल रो सारधू भालाळा री भांम ॥२१४॥

॥ कमळादे वायक ॥

महिपर घर म्हारौह सारौ सरग सिधावसी ।
खित ऊपर खारौह ऊगो ग्यारस रौं अरक ॥२१५ ॥
कुल दीपक तीनूं कंवर रण जूंझे रहुआंण ।
बांध साहस हाली बलण वांसे त्रिहु वहुआंण ॥२१६ ॥

देवल वायक

वाजा वजवाड़ेह पमंग चढी दे पांमड़ा ।
सोढी जळ चाढेह पाल विधू दोनूं पखां ॥२१७ ॥

जण दन झंखी जोय सूरज सैह सोढांणां री ।
सरस वरंगा सोय घणू घुरां मझ गूंजूए ॥६१८ ॥

आभूखण ऊतार देण लगी दुज संत दत ।
तन होमण हुइ त्यार तनुजा सूरजमल तणी ॥२१६ ॥

दत क्यावर दीढा सदा प्रथमी पर परमार ।
आ गाहड अमरांण री साबत रखै सुप्यार ॥२२० ॥

सोढी तन मन सेर अगन जलण री आदरी ।
ले हाथां नाळेर पाल लार दे पांमड़ा ॥२२१ ॥

साथे हालै सासरै सुख देखण सारीह ।
पत सरगां मारग पड़ै नह हालै नारीह ॥२२२ ॥

वहतां सतियां वाट आगे मोहरां ऊछळै ।
थटिया जाजा थाट विप्र भगत अभ्यागतों ॥२२३ ॥

अंग धारै ऊछरंग राव – कंवरी चालै रमण ।
अगन दहण निज अंग चाली सूरजमल सिधू ॥२२४ ॥

पत सूं जोड़ण पांण चंवरी दे सहको चलै ।
स्रग जावण सुरतांण काठां दिस तूं हिज क्रमै ॥२२५ ॥

माता सूं मिळ नैह पर लागी सासू पगां ।
कह दोनूं कुळ नैह अती भोळावण अंतरी ॥ २२६ ॥

सुप्यार कंवरी वायक काठां चढतां माता पिता सूं

॥ कवित्त ॥

हूं जाई थां घरां राव कंवरी कहवाई ।
देसपती मो पिता रह्यौ कुळ गरब सदाई ।
धन धन वाजै धिया वंस री वधै वडाई ।
आज अगन नह जळूं किमूं कुळ रो अधिकाई ।

मोह धर रखं तन तज मरद जद ळांछण मो जात नै ।।२२७ ।।
सुपिग्रार सती होवण समय मिळ ग्राखै पित मात नै ।

सुप्यार कंवरी वायक सासू सूं

धर साहस कुळ धिया पुरणै सासू सूं पिग्रारी ।
मत कळपो मासाब ग्रेम रचना विधना री ।
दन लागां गिर डुळै पड़ै ऐवास प्रथी पर ।
तरवर लाकड़ होय सूख जावै सिन्धू सर ।
नह मुवा नांम यळ पर नवौ सगतांवत कारण समर ।
जग थिरू गयण रवि सिस जितै ग्राप तणा जाया ग्रमर ।।२२८ ।।

रांणी वायक

।। दोहा ।।

भाटी जुध भारात जींदा कुसल न जावतौ ।
जौवत हाथज पात कळैमही होवत कनै ।।२२९ ।।
किय साहस करडोह गेहली हाथ कटार ग्रह ।
झाड उदर झरड़ोह सुत ग्रम्बा नै सूंपियौ ।।२३० ।।
पिड मोह प्रसुता पणै निज मृत समौ निहाळ ।
कर साहस सुत काढियो पेट सती परनाळ ।।२३१ ।।
ग्रंतहपुर भेळो हुग्रो जठै दुराजो जोप ।
सगतां मिळ देखै सको लोक संपेखे लोप ।।२३२ ।।

सती गैहली वायक अम्बा सु

पोखे जणणी पूत प्रसिद्ध वचन मो पालजे ।
सुत ग्रौ होयी सपूत बैर दौनी ही वाळसी ।।२३३ ।।
माता सुत म्हारोह लेखव वय पनरो लगै ।
खीची नै खारोह ग्रौ जोय लागैसी ग्रवस ।।२३४ ।।

वूहां वरस दस मांय काकै पित जींदा करनै ।
मांगेह लेसी माय औ केवा उधरावसी ॥२३५ ॥

बहू सिहारे बंधवा रहियौ जायल राव ।
झरड़ै वय बारह लगों मारै महळां मांय ॥२३६ ॥

रांणी वायक

॥ कवित्त ॥

अन विन रहै न अंग पुणां जळ विनां न पंकज ।
विन पैंडै रथ बहै आंख विण लखै न अंकज ।
जळ विन वहै जहाज पोख विण उडै पंखेरू ।
बिनां भांण तम मिटै डाक विण वजै न डेरू ।
गैहली तूं हुई गैहली घणी और किम ऊछरै ।
सैंह कौम कहै संसार में मात विनां बाळक मरै ॥२३७ ॥

गैहली वायक

औ बाळक ऊपनो वंस कमधां उजवाळण ।
औ बाळक ऊपनो वैर काकै पित वाळण ।
औ बाळक ऊपनो अमर रहसी इळ ऊपर ।
खेल बड़ा खेलसी कांम वणियो अण ऊपर ।
बालको बड़ा लेसी विरद घूमर खळां रा गाळ सी ।
मारसी नृपत मोटै मथण औ कमधां उजवाळसी ॥२३८ ॥

॥ दोहा ॥

देवल सगत असीस दे पांण दिया सुपियार ।
अब वूढै पाबू तणा तुझ भूजां भर भार ।

सगत गैहली वायक माता सूं

पाबूसर री पाळ पीपळ बांधे पालणो ।
भांण तणो तप भाळ वधसी दिन दिन बाळको ॥२४० ॥

दई अंगूठौ दूध मात तणौ थण मांनसी ।
सुज निस दन मन सुध पवन हिलौळै पालणै ॥२४१ ॥
चार असी सिध चारणी रख्या करसी रात ।
रकतंबर दन राखसी नवग्रेह नै नवनाथ ॥२४२ ॥
दुख भरडो बहु देखसी रण मांझल दन रात ।
छोरू होवे छोरळा मर जावै पित मात ॥२४३ ॥

कव वायक

भड़ चाकर भाईह चारण रैबारी सांवळा ।
यांरो वेंह आईह सतियां सह काठे चढ़ण ॥२४४ ॥

संख्या

सात वीस सौ सांवळी चवदै चारणियांह ।
तवुं सहस छत्रियां त्रियां बारै रैबारणियांह ॥२४५ ॥
दियौ सती कर दांन ग्रहणौ सह अभ्यागतां ।
धरियौ जावण ध्यांन पत गोडैं वैकुण्ठपुर ॥२४६ ॥

गैंहली वायक आल ऊदल कमळादेजी सूं

नृप चौढे डोगळ निलज आयौ कुसळै अंग ।
मत देजौ निमोण रौ तिण नै चढण तुरंग ॥२४७ ॥
मो खांवद जुध मैल ने भाग ले आयौ भाग ।
नह राखै धांधळ असल अवस हूम रौ आग ॥२४८ ।

सुपियारी वायक

आखा कर ऊछाळ कमध तणी कर पर क्रमण ।
भव भव औ भालाळ दे खांवद मो नूं दिनद ॥२४९ ॥
लाखां देखे लोक कमळ तणा दरसण करै ।

अगन विचाळै ओक कीनो सूरजमल कंवर ॥२५० ॥

॥ कवित्त ॥

खड़क अगर श्रीखंड सती ग्रह धरण समारै ।
केसर कुंकुम छड़क धूप पर मल सिर धारै ।
करै काठमें कोट पाल वूडौ पधरावै ।
चित्ता धर समसांण जोड़ आसण बैठावै ।
सिरदार लगा हर हर ममर जाग्रत कर पूळी जळण ।
तिण वार ऊभै कमधां तरण वाह ग्रहै ऊठी बलण ॥२५१ ॥

॥ दोहा ॥

उजवाळै अमरांण धर उजवाळै धाट नै ।
भाले अम्बर भांण सुपियारी जाळै सुविप ॥२५२ ॥

॥ कवित्त ॥

काठ सदन कर कदन हुवो जाग्रत हूतासण ।
लाय पवन विध लपट घ्रत्त सींचै ऊपर घण ।
कोमळ तन मन करग किया होमण रायकंवरी ।
बैठी जोड़े वळण भलां बैठी तूं चंवरी ।
विण कंथ सती मृतलोक विच रांड होय नांही रही ।
पाल जिम सही धारां प्रबळ सुपियारी झाळां सही ॥२५३ ॥
रंग रैहण नह रमी पिंड संतोष न पायो ।
सुख दीठौ न सुहाग सुविपसा नेह न चायौ ।
आवौ राय आँगणै वहू लाडी नह वाजी ।
चंदौ न कियौ सदन वीच नह मैहल विराजी ।
पाल रै लार छूटां पटां अगन बळी तन ओरडां ।
वसायौ सती आगे सदन बाँध्या कांकण डोरड़ां ॥२५४ ॥
गेहळी सत संग्रहै कीध साहस अत करड़ौ ।
कर सूं झाल कटार फाड़ उर काढे भरड़ौ ।
काठी बांधे कमर पेट ऊपर कस पेटी ।

बैठी जम रायकंवर लाय तन झपट लपेटी ।
राव तन वांह कीधी रखत पिंड राख हुय धर पड़ी ।
सती होय पती साथे चली धन धन गेहलां धीयड़ी ॥२५५ ॥
सती जोत नभ चढत वहत फूलां री वरखा ।
प्रांणपती जय पाय हुई दोनूं मन हरखा ।
अरुणानुज आरोह आप ईश्वर वैह आया ।
इन्द्र ब्रह्म सिव सगत अमर सांम्हा वैह आया ।
बधाया पाल बूढ़ौ विविध सतसूरपण सराहिया ।
लार नृप ऊभे सतियां लियां अमरपुरी में आवियां ॥२५६ ॥
सतीपुरे विच सदन सरब वणिया सोना रा ।
उठे नृपत आविया लीयां नर सतियां लारा ।
अपछर झूलर अगै वजै खट तीसां वाजा ।
वासव वहै जलेब राव वैकुण्ठ धराजा ।
हुव कमंध मेहळ दाखळ हुआ सिघ सतियां लीनां सथां ।
मिळ गया पाल बूढौ मुगत मोख तणी अंबारतां ॥२५७ ॥

॥ दोहा ॥

नीबै साथे ज्यालनल चढ काठां जयचन्द ।
वधू सरूपां राखियौ चंद्राणण जसचंद ॥२२८ ॥
पाबू बूढ़े पांचमी सिध गत ली जुध सांय ।
छठी गत पूगी सती मिळी पती जिव मांय ॥२५९ ॥
आयौ पाबू एकलौ धण नै मेले घाट ।
होमे तन भेळी हुई वैकुण्ठां री वाट ॥२६० ॥
नह तजिया एकल नरां प्रब मोटे पतियांह ।
मैहली उण साके मंही सहस हुई सतियांह ॥२६१ ॥

॥ कवित्त ॥

तित कंवरी रै सोक जगत सैह सूंनौ जांणे ।
ले अंतहपुर लार गयौ सूजो अमरांणै ।

कमळादे क्रूकती मात ग्राई राय ग्रांगण ।
ले झरड़ौ मूसाळ गई नांनी दुख रांगण ।
काछेला गाँव उजाड़ कर गया तड़ंगे दस दिसां ।
राज तप हीण लारै रह्या ग्राले उदळरै जिसां ॥२६२ ॥

॥ गाहा ॥

जग में ग्रौ भाराथ हुवौ जद स्रावण मास मही वाके सद ।
त्रजड़ हथां धांधळ गळिया तद, खीची ग्रांण वसाई खीचंद ॥२६३ ॥

॥ दोहा ॥

राव समर कर धर रह्यौ सुत धांधळ समरत्थ ।
पूजाणौ प्रथमाद पर रिण जूंझो रावत्त ॥२६४ ॥

इति श्री पोरसातन मुरधर भाषा ग्रासिया मोडजी कृत सतियां रौ परवाड़ौ सम्पूरण

॥ अथ झरड़ै रौ परवाड़ौ लिखते ॥

॥ गाथा ॥

करनी कृपा मुझ पर कीजै देवी वचन वडाळा दीजै ।
घण उकतां घल समय घटाळी लाज धुजाळी लोवड़ियाळी ॥ १ ॥
सीधौ कमधज सदन सवाड़ौ पाबूकर बारमौ प्रवाड़ौ ।
कुळ जिण वरदायक कुरड़ा नै जस रट वाखांणू झरड़ानै ॥ २ ॥

कव वायक

॥ दोहा ॥

सिध झरड़ौ लेसी समर खीची सूं खेटोह ।
विरदाऊ हव बाळकौ बूढ़ा रौ बेटोह ॥ ३ ॥
वरदायक सतियाँ वचन मांनै नांनी माय ।
गई सदन दोहीत नै पालणियै पौढाय ॥ ४ ॥

॥ सोरठा ॥

पेखै चंद प्रकास देखे निस जळ देवियां ।
है मन बाल हुलास पींगै सरतट पौढियां ॥ ५ ॥

॥ दोहा ।

देखं सूरज रौ दरस हूंछै पवन हिलौळ ।
श्रौ बाळक उदियान में के के करै किलोळ ॥ ६ ॥

॥ सोरठो ॥

बोलै सबद अलूक रण मांझळ घुररावता ।
कररावै करकूक भरियें सरवर भैरवी ॥ ७ ॥
दे चूड़ेळण डाक ताल परै दे ताळिया ।
हुवै खवीसां हाक जोगणियां वाळै जमै ॥ ८ ॥

॥ कवित्त ॥

तर पींपळ रै तळै फरै फूंकार मणधर ।
तर पींपळ रै तळै रमै वेताळ पिसाचर ।
आधी निस ऊपरै सरब आवै जोगेसर ।
खेतपाळ खिळखिळै करै हूंकार बकेसर ।
बजाजी प्रेत बूढा वणें केहके निसचिरतां करै ।
देख औकरै हंस डेहकळा बाळक झरड़ौ नह डरै ॥ ९ ॥
अन बाळक पख वदै बदै झरड़ौ इक छिन में ।
वदै बाळ अन वरस वदै झरड़ौ इक दिन में ।
सम्मतसर अन सरिस ग्रहै तन वधण जेम गत ।
महाबळी मास में वढै उतरौ बूढावत ।
हव बाळ वरस दन रौ हुवौ श्रौ कमधां उजवाळणौ ।
संभाळै आय नांनी सदा पींपळ झूलै पालणौ ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

वरस तणौ बाळक हुओ श्रौ अरि हरा अदंत ।

तद नांनी कड़ तैड़ नै सुत लेगई सदंत ॥ ११ ॥
हो मोटो सतियां हुकम झरड़ो उजळतोह ।
पौ पिडतो पिणिहारियां पणघट मझ रमतौह ॥ १२ ॥
गज रिप बाळक जेण गत बूढ़ावत विरदाळ ।
कमधज रमै कबांण कर पंडुर जळ री पाळ ॥ १३ ॥
ग्रहियां हाथ गिलोल ऊभौ सर तट ऊपरै ।
बूढ़ावत अणबोल भांगै घट पांणी भरया ॥ १४ ॥
छुटै गिलोलां सार रौ जो छेदै बह जाय ।
मैंण तणो लेरे मिळे जिणसूं पुणग न जाब ॥ १५ ॥
बूढा रो बेटोह अत घेटो अळखावणो ।
खीची सूं खेटोह करसी वेगो इज कमंध ॥ १६ ॥
जळ मै देवळ जोर अणू पुंणंच ग्रह आछटे ।
कुंभ तणो दहूं कोर निपट रवंतो नीसरे । १७ ॥
टाळी बत नांही टळै खीची री खूटीह ।
दिलती खमिया सरब दन उण दिन छेड़ उठीह ॥ १८ ॥
मोसा दे मामीह जांणू हूं तोनूं जबर ।
जायलिये जांमीह रिण विच धारां राखिया ॥ १९ ॥
भूपत जींदो भांग करसु धोब कटारियां ।
भांमण घड़ा म भांग मांन वचन मो मारका ॥ २० ॥
दस ही दिस डाकोह जवतो जबर जमावतो ।
कहूं तुज्झ काकोह जमडै धक लीना जबर ॥ २१ ॥
जींदे समहर जांण मात पिता भ्रत मारिया ।
काकै नू केवांण दीधी नृप जायल दुरंग ॥ २२ ॥
अबळा रै आगैह कासूं सबळापण करै ।
वांगड़ जद वागेह केवा लै खीची कनै ॥ २३ ॥
पाई जींदे तात मात भ्रात लड़ मारिया ।
जबर गणूं तो जात अरि तू दे जद ओळभो ॥ २४ ॥
अतरी अणहूंतीह अलखांमण न चलै अठै ।

बळहठ बापोतीह जहै तुझ पत री जमी ॥ २५ ॥
सब दन संतावेह पणघट मग पणिहारियां ।
यूं बैर न आवेह तात अनै काकै तणौ ॥ २६ ॥
करड़ा वचन कठीर बाळौ सुण बोलो रह्यौ ।
सुध विसरीय सशीस कर दीय टूक कबांण रा ॥ २७ ॥
उर में ऊठी आग नयणां जळ वरसै निपट ।
बाळौ ओ बजराग आपै आप न ओळखै ॥ २८ ॥
कमध मतै करड़ेह हव कथ पूछण हालियो ।
जोग तणी झरड़ेह उर विच में धारौ उठै ॥ २९ ॥
बूढा रौ बाळोह भातीजो भालाळ रौ ।
वडा पखां वाळोह आयौ नांनी आंगणै ॥ ३० ॥

झरड़ै रा वचन नांनी सूँ

नह राखूं नांनीह सुण म्हारौ विपही सरब ।
छिप मत रख छांनीह कहदे पूरवले कथा ॥ ३१ ॥
पण मौ कवण पिताह कुण माता काकौ कवण ।
सिध नर जगत छताह ज्यांने किण मारघा जबार ॥ ३२ ॥
सुध न हती छोटोह मात पिता री मुझ नैं ।
मोनू तौ मोटोह कीनो तै नांनी कहूं ॥ ३३ ॥
मांमी पणघट मांय कहिया मो खारा कथन ।
वेरी वेग वताय जिण काकौ पित जोखम्या ॥ ३४ ॥
नांनी तीर निमांण मांमी दीधा मैहणा ।
पिण मो नांह पिछाण काको पित मारया कवण ॥ ३५ ॥
तिण री जड़ तोड़ूंह हूं छोटो तौही हमैं ।
सात्रव न छोडंह जिण काकौ पित जोखम्यौ ॥ ३६ ॥

ग्रंथ करता वायक

करदे बाळ कळाप जद नांनी यम जाणियौ ।

सूतो दाटक सांप परत जगायो पापणी ॥ ३७ ॥
आगे तो अळखावणो बोहत हटीलो बाळ ।
ओद जबर जिण ऊपरे क्रोध कियो ततकाळ ॥ ३८ ॥

नांनो वायक

गिरा नहीं मांमी गनो विरथ सुणाई वात ।
पिता स्रग तुझ पौंछियो हुं बैठी तो मात ॥ ३९ ॥
विप म्हारै भुगतूं विपत जो दुख सह्यो न जाय ।
आंण पड़्यो मो आंगणै अम्बर हुं तो आय ॥ ४० ॥
काढ मतो करड़ाह बेटा हट करने वचन ।
नांनी नै झरड़ाह क्यू अत दुखदायक करै ॥ ४१ ॥

झरड़ा वायक

मो पित हथमारोह वेगा वेग वताहयदे ।
तजदूं घर थारोह नांनी हूं रहसूं नहीं ॥ ४२ ॥

नांनो वायक झरड़े सूं

किता दुखां मोटो कियो पोख करै प्रतपाळ ।
हट मत कर बेटा हमैं अम घर रा उजवाळ ॥ ४३ ॥
पणां आपणो पेट ले खंजर मारण लगो ।
नांनी लियो लपेट चवसूं कथ मत मर सुतन ॥ ४४ ॥
जनम तणा जागीह क्यूं मो दुख द्रोगी करै ।
सब दन मन सोगीह रोगी जेम पड़ी रहुं ॥ ४५ ॥
बेटा थारो बाप नांम जिकण बूढ़ो नरिंद ।
पूरै तेज प्रताप काको तो पाबू कमंध ॥ ४६ ॥
वढ खळ दळ वाड़ाह उणकर भूप वडाविया ।
पाबू परवाड़ाह इळ ऊपर कीना अमर ॥ ४७ ॥

बूढ़ौ पाबू था बहु वरदायक उणवार ।
ज्यांनै मारचा जींदरै जायल रै सिरदार ।। ४८ ।।
बेटा थूं है बाळ अवर पखो नह एकलौ ।
भारी वो भोपाळ झरड़ा किम मारिस जकौ ।। ४९ ।।
खित सूं नभ लग सतखणा अै मोटा ऐवास ।
जठै विराजै जींदरौ पवन न पूगै पास ।। ५० ।।

झरड़ा वायक नांनी सूँ

माता तन म्हारौह ओ केवा कज उदकियौ ।
छै हर रौ सारौह जांणू मारूं जींदरौ । ५१ ।।
म्हारा सहं मारेह गैरी वो कुसळै गयौ ।
नह रहिया लारेह हालै जो साथे हमैं ।। ५२ ।।

नांनी वायक

पोरै पौहरायत खड़ा फिरै गिसत चहुं फेर ।
सारंग सुत पोढै सदा अत मोटे आसेर ।। ५३ ।।

झरड़ा वायक

मो सात्रव मोटौह गढपत फिर नौबत घुरै ।
जिण कज जागे टौह हूं होसूं नांनी हमैं ।। ५४ ।।
धरपत नह धारूंह जोग लयूं तज दूं जगत ।
म्हू उणनूं मारूंह माता दन गणियां मांही ।। ५५ ।।
अणियां उवर उभेड़ जननी मोनूं जनमियौ ।
वुवो वडौ विचवेड़ जिणसूं डर नह जीव रौ ।। ५६ ।।
नांनी सू वरनार सदा विभाड़े सात्रवां ।
आंरै पख आधार किणरौ है मोनूं कहौ ।। ५७ ।।
सींचाणौ अगनी सरप कहूं लियां वड कूंत ।

यता न छोटा जांणणा वाघ अने रजपूत ॥ ५८ ॥
ले खंजर मारग लग्यो अपड़ बळी आकाय ।

नांनी वायक

मो दुखदायख नं मुदै झरड़ा तन मत जाय ॥ ५९ ॥

झरड़ा वायक

कुळ सह केवाणेह केवा खीची काढियौ ।
अंग आळस आंणेह हव घर बेठां सूं हुवौ ॥ ६० ॥
उभै अमीणा आच इक खंजर राखूं अगर ।
वळकळ यूं दुख वाच सांच नहीं संसार में ॥ ६१ ॥

नांनी वायक

रैणा मौटो राज तवूं हूंतो सुत ताह रो ।
कर खीची सत्र काज रण विच धारां राखिया ॥ ६२ ॥
दीठांसूं पड़ती दहळ भूप बड़ा भैचक्ख ।
नर दुथणी जायौ नहीं तो फाकै री तक्क ॥ ६३ ॥

झरड़ै वायक

मो पित काको मारनै जींदो रह्यो सजीत ।
देखै हाथ दोहीत रा अब थोड़ा आदीत ॥ ६४ ॥

नांनी वायक

चढ पोरस जीतण समर कमर कसत जिण वार ।
धण सत्रां मिटतौ घुमर होतौ भंवर असवार ॥ ६५ ॥
थित थंभ पित धारीह पह धांधळ रौ पाटवी ।
उणतक उणियारीह देखां जिण दिन दाखसौ ॥ ६६ ॥
पाबू भंवरी पीठ अपड़ त्रभागो आवतो ।

देखरा जिण तक दीठ खित सूरज रथ खांचतौ ।। ६७ ।।

।। छन्द त्रोटक ।।

अब रौस करै भरड़ौ उठियौ । गह छांडत ही वन मांभ गयौ ।
दरसे दुरियां जमदूत दुग्रौ । हव बाळ वडौ अवधूत हुवौ ।। ६८ ।।
घट चाह लियां निरवेध घणी । तन लेपिय खाख मसाण तणी ।
धर ध्यांन सुभाय लिये धिप में। वयराग सुभाग हुवौ विप में ।। ६९ ।।
नह मोद लियां उदमाद नसौ। पह वैर विनां वयराग किसौ ।
भरड़ उर लाय धिखै जगनी । अत मेघसु नांह बुझै अगनी ।। ७० ।।
लघु वेष डिगम्बर धार लियौ। हुय जोगिय जायल नूं हलियौ ।
जिणरौ हट ध्रू प्रह्लाद जिसौ। छित्र अंग लसै सनकादिक सौ ।। ७१ ।।

कवराज वायक

कमधां कुळ रा उजवाळक नैं । विरदावुंअ जोगिय बाळक नै ।
खळ जींद तरौ उर बीच खिसौ। भरड़ौ सिध काकय पाल जिसौ ।। ७२ ।।
रण मांभळ अंबर माग रम्यो । भरड़ौं मृत जींद तणी जनम्यो ।
करड़ौ हर धांधळ वैण कहै । छत्रपत्त वजै भरड़ौ न सहै ।। ७३ ।।
वरती जिंदराव दिसा विषमी। भुज अंग भिड़ाय लई भसमी ।
दिन मध्य लुग्रां स्वळकै डरपै । तिम मीट पड़ै रवि धोम तपै ।। ७४ ।।
भड़ पत्र वघूळांय दोट जुवा । हव भंखर खंखर रूख हुआ ।
कह बाळक सिंह जिसो करड़ौ । जिण बेड में वाट हलै भरड़ौ ।। ७५ ।।
पहरयां सिघ चाखड़ियां पग में। मिळियौ सुत माछंद रौ मगमें ।
डरपै नहिं काळ तरौ डरती । जुग कोड़ वुवा तोइ बाळ जती ।। ७६ ।।
जिण जोड़ तणौ सिध नां जगमां। भळ चौळाय पंरणनां भगमी ।
लख सींगिय कंथय सार लियां । कसमेरिय कुंडळ कांन कियां ।। ७७ ।।
प्रत बंधिय सेळिय टोप परै । हद पंथम धूकर रूप हरै ।
मिळ अक्ष गुणावळ कंठ मई । लख चीपं कमंडळ हाथ लई ।। ७८ ।।
चखचोळ अनै नखचोळ छटा । जिण अंग वभूत अभूत जटा ।

जतराव बड़ी करणा जरणा । मन मोख दिया डरणा मरणा ॥ ७९ ॥
चित बाळ डरचौ तक देख सही। मिळियौ सिधराव विडांण मही ।
भ्रम लेसय जोगिय माग भगां । पड़ियौ भरड़ौ डर दौड़ पगां ॥ ८० ॥

गोरखनाथ वायक

वारदायक बाळ वडै वड़का । लख भेख नहीं डरणा लड़का ।
यतनी कहा ग्रांण वणी ग्रखी। दुनियां दोय रंग सुणी कदुखी ॥ ८१ ॥
ग्रम ग्रागळ पीड़ न क्यूं उचरै । किस कारण बाळ विलाप करै ।
हव थापल पूठ लगाय हिया । दोऊं हाथ मछंदर पूत दिया ।
दुख कोण हुई है तुज्ज दचा । बलवांन वडौ कुळवांन बचा ॥ ८२ ॥

झरड़ा वायक

विण मात पिता दुखियौ वरणौ। सिध राज रौ ग्राय ग्रयौ सरणौ ।
कर जोड़ ग्ररज्ज करूं तुमपैं । ग्रब ग्रायस ग्राच दयौ ग्रमपैं ॥ ८३ ॥
जतराव प्रकासीय नाम जरू । घणहुं दुखियौ दुख काप गुरू ।
ग्रपचार ग्रसी सधकी ग्रपना । करुणानिध हो नवनाथ कना ॥ ८४ ॥

॥ छन्द किरीट ॥

गुरु गोरखो वचन

मैं नह चोळिय मैं नह चंचळ । बाळ गुदाइह नांम जुदागण ।
में नह धोरम मैं नह भूचर । धूमक धांमक नांह ग्रसी पण ।
लोहायळ भ्रन चोळिय सुन्दर । नागाय रूजण मैं न हुं दासिक ।
मैं न मछंदर मैं न जलंधर । मैं हुंरी गोरख तूं भरडा लख ॥ ८५ ॥
मैं नह गौरव मैं नह गोचर । मैं नह दाढम की सिध होसिख ।
ग्रबा ग्रईथा स्वारस्वतइया । नाम जूदे सब पीर हूंदे दख ।
वेवण खंडिय है बोहो डंडिय । तीनूं ही थिर काया है सुख ।
मैं न मछंदर मैं न जलंधर । मैं हुंरे गोरख तूं भरडा लख ॥ ८६ ॥
मैं नह ग्रौगड़ मैं नह कूबड़ । मैं नह धूवड़ नाथ सुणे सिस ।

मैं नह कंथड मैं न विडंगिय । घोड़ा पंचोळिय आपढ सांतस ।
चंडकने रिप मैं नह चर्पट । नो भरणा बहुधा करुणा रख ।
मैं न मछंदर मैं न जलंधर । मैं हूंरे गोरख तूं भरड़ा लख ।। ८७ ।।

।। दोहा ।।

आंखां अंगीठीह धखै दवंग जिम धावड़ा ।
गोरख तक दीठीह औ बाळक ऊबांबरौ ।। ८८ ।।

।। गोरख वाच ।।

किणरौ है तूं केड़ कवण पिता दादौ कवण ।
वहै अकेलौ वेड प्रबळ महारथ पंथ में ।। ८९ ।।
क्यूं रौवे साहंस करै यती कळपना आज ।
यण वन आयौ एकलौ कह बेटा किण काज ।। ९० ।।

झरड़ वायक

मौं सिष कीजै कर मैंहर दिल करुणा दरियाव ।
भाग भलौ जद भेटिया पाव तुहाळा पांव ।। ९१ ।।
मो काकौ पित मात भ्रात कुटंब परगे भड़ां ।
सारंग सुत समराथ महिपत जींदै मारिया ।। ९२ ।।
अर मो घर आरांण में अंबर धुआं उडाय :
जोखां मांणौ जींदरौ जौ दुख सह्यौ न जाय ।। ९३ ।।
सौ थांनक खड़ ऊगिया किता वतीता काळ ।
औ जायल ऐसां करै गोखां आफू गाळ ।। ९४ ।।
जोग लियू भीखूं जगत देखूं हांण न लाभ ।
अरि दोठां सिर आंगमूं जिणनूं पूछूं जाब ।। ९५ ।।
लाखां लसकर लार ताप बड़ै जींदौ तपै ।
आयस राज ऊदार अब हुं बाळक एकलो ।। ९६ ।।
धांधळ कुळ धारेह केवी जींदै काढियौ ।
मो वाळा माहेह प्रसण रह्यौ सांवत पणौ ।। ९७ ।।

गोरखनाथ वायक

विच मोनूं दे वदळियौ अपत विनां आकाय ।
उण नुगरारै ऊपरै रहियौ हुं रीसाय ॥ ९८ ॥
मोसूं ऊवेळोह तुरत हुवो जिणरौ तवां ।
भीम गजां भेळोह करतौ जोय पाबू कमंध ॥ ९९ ॥
जग जेठी जुध जीतणा वरदायक वोहाळ ।
बूढ़ौ पाबू था बह काळ तणा हो काळ ॥१०० ॥
आंनै नह जीतै अमर समर करै समराथ ।
ज्यांनै मारै जींदरौ हुतब उणी रै हाथ ॥१०१ ॥
जांमन दीनौं जींदरै मोनूं जिण पुळ मांय ।
परतन मारूं पालणौ विच जुध लेऊं बचाय ॥१०२ ॥
मोहर बूढ़ौ मारियौ पछै साजियो पाल ।
रती न संक म्हारी रखी तिण जींदै तेराळ ॥१०३ ॥
सौगन म्हांरी री सांपरत जींदै कीन्हीं झूठ ।
उण दिन सूं अपती परै रहियौ हूं विण रूठ ॥१०४ ॥

झरड़ै वायक

मो काके पत री मरण औ किम थयौ अदन्न ।
रिप किण कारण राज नै जींद दियौ जामन्न ॥१०५ ॥
ले जनमन्तर कळह लग वस भावी वळ वेढ ।
कहैं सुणावौं सह कथा म्हांने धुर सूं मेढ ॥१०६ ॥

गोरखो वाच

सुण झरड़ा मोटो समंध जेज लगैसी जांण ।
सुगम संखेप सुणावसूं मग वैहंता बुधवांण ॥१०७ ॥

॥ कवित्त ॥

बूढ़ै कुळ बोळवा पेम जींदै परणाई ।
दे केसर दायजै अखै खीची अनियाई ।

लाख तणौ धन लूट समर सजियौ सारंग नै ।
वीसरिया म्हे वैर वबौ थे नह विद्रंग नै ।
कमलायत सुत कहै सला विपरीत विचारी ।
गढवाड़ां री घेंच सुरह ले जावौ सारी ।
आयसां वित्त अस आपियां ले न सकै बंधव लड़ज ।
भड़ पाल तणौ घलसी घुमर भमर एम भिड़सी भिड़ज ॥१०८ ॥
जींदै सां कर जोड़ अरज फिर राव उचारी ।
मरण न पावै पाल वार पूगै जिण वारी ।
जांमन मो जिंदरै दियौ सौगन कढ जिण दन ।
परत न मारूं पाल गुना जो कोड़ करै गन ।
छळ साज कपट सारंग सुतन वचै मनै दे वद लियौ ।
मौहर सूं बूढ़ौ मार नैं लड़ पाबू मारे लियौ ॥१०९ ॥

॥ दोहा ॥

नगुरौ गुण मांनै नहीं वचन चूक बेकार ।
हुकम थनै म्हारौ हमैं उणनै मार हमार ॥११० ॥

झरड़ वायक

सात्रव नै हुँ साजसूं राज हुकम सिर रक्ख ।
अब जायळ जाय ओळखूं अर नै किण आरक्ख ॥१११ ॥

गोरखो वाच

॥ कवित्त ॥

वड़ चख ऊजळ वरन श्रवण मोती वेंडूरज ।
मुगताफळ गळ मई कड़ा कर वाघमुखा कज ।
कह पय सोभ्रन कड़ौ लियां पग सोभ्रन लंगर ।
वसै दिवस जिंदरौ जठै जाडा तर भिगर ।
हुवै वहौं नकीबां होकबा मेघाडंबर सिर खरौ ।
तिण चढणौ गंगाजळ तुरी यण अहलांणौ जींदरौ ॥११२ ॥

रहै सरब रात रौ भूपरै पहरै भेंरू ।
कर एकरा तरसूल दुहै कर ग्रहियौ डेरू ।
सिंघ उक्के ते सांकळां सदन जड़िया रिप सारू ।
खड़ग बंध नर खड़ा रहै पौहरै रखवारू ।
यांहुँत गरज न रुजै ग्रबै हुँ रूठै तोहितळौ ।
नह राख सके ग्रब जींद नै खेडे बुरज रौ खेतळौ ॥११३ ॥
दसरावै रै दिवस जींदरौ देवळ जासी ।
झोटा बक्कर झेड़ प्रबळ सकतां रत पासी ।
उणरै ग्रासापुरा दखां जाहर कुळ देवी ।
होम जबर होवसी करै विग्रह नह केवी ।
सांम हुड़ तणी मांगै संरी ऐवाजो तोनै ग्रप ।
जद कांम हुवोड़ो जांणजै जरू सिद्ध गोरख जपै ॥११४ ॥

॥ दोहा ॥

छत्रो नूं पोरस चढै बंध तणो सुण वात ।
तद गोरख द्रोणी तणी सरब सुणाई वात ॥११५ ॥
रुद्र रिझावै रात रौ निज कर सूं खगधार ।
ग्रस्वस्थामां एकलौ हण्या ग्रठार हजार ॥११६ ॥
सुण झरड़ा ग्रर ह्वै सबळ रचणो छळ सूं राड़ ।
मारचौ द्रोणी रातरौ पंचळनै पाछाड़ ॥११७ ॥
तूं छत्री वो विप्र थौ जिकण लियौ पित वैर ।
वो ग्रणनाथ सनाथ तुं माछंदर सिख मैर ॥११८ ॥
सुणी कथा झरड़ै स्रवण ग्रायौ जद ग्रापांण ।
दूजो द्रोणी दरसियौ सत्र साजण ग्रवसांण ॥११६ ॥
धारे तन नांखां धड़च मारे प्रसण मरूंह ।
इमें हाथ म्हारो जोए गोरखनाथ गुरूह ॥१२० ॥

गोरखो वचा

दस जाड़ो थारै दखूं खीची कुळसूं खैद ।

जींदै री रांणी जका भुवा देही घर भेद ॥१२१ ॥
सुखसूं नह सोवेह एक घड़ी आराम कर ।
रात दिवस रोवेह भायां कज थारी भुवा ॥१२२ ॥
पेमां कनै प्रकास केवां रौ करजे कहूं ।
निज पति रौ कर नास वेगौ वैर वळावसी ॥१२३ ॥
इउ सुण झरड़ौ ऊठ पांव तणौं पड़ियौं पगां ।
धीर थपेटो पूठ ज्यूं मारूं जाय जींद नै ॥१२४ ॥
कर सूं खोल कटार सिध झरड़ा नूं सूंपियौ ।
मुज्झ हुकम जा मार नुगरा जायलनाथ नै ॥१२५ ॥
गोरख टळै जमात माछंद गुरु सैहती मिळौ ।
रहूं जठै वौह रात फिर मिळसूं ग्यारस फजर ॥१२६ ॥
कांकड़ सूं किरणाळ हुव जोगन्द्र अलोप हुव ।
पुर जायल दिसबाळ गवन कियौ वंदे गरू ॥१२७ ॥
खत्र ग्रह विरद खराह पुरजायल झरड़ौ पूगियौ ।
जण दन जायल राह धर अंबारथ धूजिया ॥१२८ ॥
थांनक फळसैं थापियौ वूवौ आई पंथ वेख ।
जायल जाय जगाड़ियौ अब झरड़ै आलेख ॥१२९ ॥

॥ छन्द त्रिभंगी ॥

खट उरमी जीता अंग अदीठा । काळ वतीता थिर काया ।
रिछ कंते तांणे कुंभक ठांणें । पूरक आंणे फिर पाया ।
काया न कष्टै कांमन इष्टै । संजक चष्टै सीळ सती ।
जमका डर भागै भ्रम नह लागै। जागै गोरखनाथ जतीजी ।
जागै गोरखनाथ जती । मछळी उर जाया जोग कमाया ॥१३० ॥
मीन मछंदर कह वाया । सिसिया तै गौतम वडौ तपोतम ।
व्यास कीरणी निपजाया । गागर तै कुंभज बाळी बंबज ।
मृग तै स्रंगज जोग मति ।जग का डर भागैं भ्रम नह लागै ।
जागे गोरखनाथ जतीजी । जागे गोरखनाथ जती ॥१३१ ॥

रिध सिध दोऊ बंदी रहैज संदी। सदा अनंदी गिर चाया ।
मरगां जिम जोवै परगट होवो । कबहूं लुकोवै छिन माया ।
निद्रा नह आवै ताल लगावै । जोग कमावै ध्यान थिती ।
जगका डर भागै भ्रम नह लागै । जागै गोरखनाथ जतीजी ।
जागै गोरखनाथ जती । माछंदर वाळो सिधो सिंगाळो ॥१३२ ॥

बूढो वाळो जुग वाळो । जीतो जम जाळो जगत निराळो।
हुवो उजाळो दीवाळो । अनहद में बाजै सबद अग्राजै ।
वहै सदाजे जेत रती । जग का डर भागै भ्रम नह लागै ।
जागै गोरखनाथ जतीजी । जागै गोरखनाथ जती ॥१३३ ॥

मैं हूं अविनासी वैर वणासी । बाळ अभ्याखी सन्यासी ।
भूलासा भमता एकही रमता । मन कूं दमता वनवासी ।
गरु गोरख सरणा पार उतरणा। भवदध तरणा होय गती ।
जग का डर भागै भ्रम नह लागै। जागै गोरखनाथ जतीजी ।
जागै गोरखनाथ जती । है सूम गुमांई मुगता नाई ॥१३४ ॥

बांई वंवत नग ऊरा । गोपीचंद भरतर अवर जलंधर ।
कांनी पावन ढंढा रोरा ।कपल गुर जोगिय सोगन रोगिय ।
औघड़ जोगिय सिद्ध पती । जगका डर भागै भ्रम नह लागै ।
जागै गोरखनाथ जतीजी । जागै गोरखनाथ जती ॥१३५ ॥

सक्कर पय खाणा है हरियांणा । जहां सिधूं दा थिर थांणा ।
वसते अवधूता मिद्ध सबूता । जोग जगूता मब जांणा ।
तर हटड़ो औरंग बैठे लोरंग । मैं आया जोवण वस्ती ।
जग का डर भागे भ्रम नह लागै।जागै गोरखनाथ जतीती ।
जागै गोरखनाथ जती ॥१३६ ॥

॥ दोहा ॥

यूं करतो आलेख झरड़ो सह जायल जुवै ।
देवी पूजण देख चढ़ियो खीची छत्रपत ॥१३७ ॥
हुवै नकीबां हाक हाक हाजांपरै नौबत घुरै ।

धर धूजै रिव ढाक ग्रस पाडौं रज ऊड नै ।।१३८ ।।
जावै जायलियाँह ग्रासापुर पूजण ग्रबै ।
ग्राय सभेष कियांह भरड़ौ जिन्द्र ने जोवै ।।१३९ ।।
देखै रूप डराय जाय पाय पड जींदरौ ।
बाळकनाथ बलाय भूठी जिण दीसै निजर ।।१४० ।।

कव वायक

पाह उतर सुखपाल सूं पड़ियौ जींदौ पाव ।
ग्राप कठी सू ग्राविया ग्राखौ ग्रायस राव ।१४१ ।।

ग्रायस उत्तर जींदराव नै

हुँ ग्रायौ उतराद सूं हालूं हरियाणेह ।
ग्राय लियौ विसराम यत तर छाया जाँणेह ।।१४२ ।।
मन मांहे मुळकेह हव चढ जींदौ हालियौ ।
परगै हूंत पुणेह यण सिध नै म्है ग्रोळख्यौ । १४३ ।
नृपत कहै जोगी नहीं बेटौ बूडारौह ।
परतक ग्रावै पाल रौ इण में उणियारोह ।।१४४ ।।
भड़ परगह भाईह सावचेत रहजो सरब ।
ग्रम निजरां ग्राईह जोगीरी भूठी निजर ।।१४५ ।।
यण चख वरसै ग्राग जद नजरां म्हांनं जोवै ।
नैन्हौ दाटक नाग ग्रौ कमधां रे केड़ रौ ।।१४६ ।।

परगै वाक

धांधळ कुळ धारैह कर समहर म्है काढियौ ।
नह रहियौ लारेह वैर लेवण ग्रावे वहै ।।१४७ ।।
भूपत भूलांणोह सुण नै परगो रा सबद ।
जींद कह्यौ जांणोह एक न धांधळ ऊबरचौ ।।१४८ ।।
देवी रै दीवांण हव सह नर भेळा हुवा ।

इंद्र तणे ऐहलांण जाजम बैठो जींदरो ॥१४९ ॥
चढी देग सुर राय नै त्यार हुई सिघताव ।
पैखण राव पधारियो कहै भाद्रवै कड़ाव ॥१५० ॥

जींदराव वायक

छै सांमग्री त्यार सह कहजे त्यार कड़ाव ।
पुणें राव परधांन नै महिषा धेग मंगाव ॥१५१ ॥
सांवत हुकम सुणेह नायक भोटा लाविया ।
धजवर कर धूणेह हव खगवाहा ऊठिवा ॥१५२ ॥
गज वरणा दारुण गजब जम वांहण जेसाह ।
कुम्मा सींगां रा कहूं भुज हंदो भैसाह ॥१५३ ॥

॥ नीसांणी ॥

भोटा बकर भेड़िया खळकै रत खाळे ।
कीनी रिध मोटे कड़ाव भाद्रवै विचाळे ।
हुड काळी निज हाथसूं किय राव रंढाळै ।
आय हुआ नर एकठा सब पूजण वाळै ।
पूजे नृप आसापुरा घृत अगनी जाळे ।
रिध मंगाई थाळ भर ओछाड़ उजाळै ।
हुई तांम पूरणाहुती जद मंत्र जपाळे ।
गवड़ द्रवड़ दोनू गती दुरगा दरसाळे ।
जेजेकार उचारिया व्रम बंद विचाळे ।
हुवा तृपत तेंतीस क्रोड़ सुर सुरपुर वाळे ॥१५४ ॥
मांस रंधाणा देगचा वेसवार अपारा ।
सूळा त्यार किया सही जाभै घृत भारा ।
आया थाळ मिठाईयां पकवांन जभारा ।
भोजन छपन छत्तीस भांत जीमै जुग सारा ।
मांस पुलावां सोहितां तत होय तयारा ।
ऊभा थाळां ऊपरै पुरसें पुरसारा ।
सुर सारंग चरुए सुगाळ वहे रिद्ध वधारा ।
जीमै यम आसीस दे खट दरसण सारा ॥१५५ ॥

॥ दोहा ॥

जींद देग कीनी जबर जींमें सरब जिहान ।
अबै न मानै ओणरों दख आखी दुनियांन ॥१५६ ॥

॥ वात ॥

जायल कठोती रो लोग जीम जीम नै पाछा घर दिसा जावे है जिके जोगी ने फळसै बैठो देख कैवै छै जींदराव रै नाथों रो भाव छै नै थे अठै किण तरै बैठा जीमणनै क्यूं नहीं ग्रवो ?

॥ दोहा ॥

आडी छड़ी न आपणो आवो वरण अहार ।
आयस क्यूं बैठा अठै जीमो जाय जुहार ॥१५७ ॥
धरपत चौरासी धणी वड चितदत वेवज्ज ।
हव सुरपत तरपत हुवो नरपत किये नेवज्ज ॥१५८ ॥
लो गौरख रौ नांम अब सिद्ध झरड़ो ऊठियो ।
करवा मोटो कांम कमध मतौ करड़ो कियो ॥१५९ ॥

जावता लोगायत रा सुगन लेवे है

उण जाग्यासू ऊठतै ले जळ पण लीधोह ।
प्रात अरक ऊगे पेहैल जोखमसू जींदोह ॥१६० ॥
भसमी अंग भड़ाय के ले गुरू गोरख नाम ।
हथ खंजर ग्रहै हालियो हव मन पूरण हांम ॥१६१ ॥

कव वायक

जकां दनां रो जींदरो विजनस पड़ती वीज ।
हव आसंग घल हालियो भालाळेरौ भतीज ॥१६२ ॥
पूरो बिने पखांह जो मोटे कुळ जनमियो ।
सात्रव देख चखांह अगन धुकै जिण अंग में ॥१६३ ॥
उण पुळ झरड़ो आवियो लोयण धुकती लाय ।
जिण पुळ मंडियो जींदरै मदझड़ गजथट मांय ॥१६४ ॥

यणमें पुनरक्त दूषण गुण है

आवी कांठळ ऊपरै गहरै सुर गाजेह ।
दे दूहा घेगा दये जांगड़ मढ जाजेह ॥१६५॥
परबत गात पखाळजो दे विरहण दहलांण ।
इंद्र राजा खड़ आवजो जींद तणैं मैंहलांण ।।१६६॥
झरड़ै अलख जगावियो भ्रम मन रा भागेह ।
जुगां तणो बाळौ जती जो गोरख जागेह ।।१६७॥
मिळ दुनियां मेळोह उणमें जींदै ओळख्यो ।
आयो अवेळोह औ कोय घांधळ है अवस ॥१६८॥
पुणियों यम जायलपती रोड़दार सूं रीस ।
जोगी ने जीमायनै वळदौं पतर भरीस ।।१६९॥
हलै सहंस भड हाजरी ले खग ढालां लार ।
उणसूं राव न आंणियो वैरी तणो विचार ॥१७०॥
वाज लये आया विदर बिध विध रा पकवान ।
मांस मिठाई सौहता व्यंजन बहुत विधान ॥१७१॥
जीमण हूं नह जीमसूं जपियो यम जोगीस ।
आंण दयो म्हांनूं अबै स्याम हुड तणो सीस ॥१७२॥

॥ सोरठो ॥

जपियो विदरां जाय यम जायळपत आगळै ।
काळो हुड़ कैहैवाय समपो जकण सिहा खरो ॥१७३॥

जींदराव वायक

दाखे औ जिमई दयो तिणरी करो म तीठ ।
अठा हूँत वेगौ अबै अणनै करो अदीठ ॥१७४॥
अब उणहिज आंणेह सिर हुड वाळो सूंपियो ।
जोगी हठ जांणेह कहियो जिम सांचो कियो ॥१७५॥
झरड़ै माथो झाल विध यण सुकन विचारियो ।

पसए कनै पितपाळ मूड बेगाइज मांगसू ॥१७६ ॥
परचौ साबत पाय काचौ हुड दांतौ किरड ।
आयस बैठौ आय पाछौ आसण पीपळी ॥१७७ ॥

जींदराव वायक

दिन रौ जोगी देखियौ जो आयौ लारांह ।
जींद कहै मो जाबतौ रखजो सिरदारांह ॥१७८ ॥

झरड़े वायक

बरन बरन रा वादळा लगस चढो ले लाव ।
थित करती जळमय थळां मत वह वेगी आव ॥१७९ ॥
बुझै न अगन बुझाय पावस परताळां पड़ै ।
लागी मो उर लाय जळ बरसै जिम जिम जळै ॥१८० ॥
आवौ अंधियारोह घोरारव करदे गयण ।
मेळ लगै म्हारोह कांठळ सुं झरड़ौ कहै ॥१८१ ॥
अररै भीनै ऊतरै पिंड केसर पोसाक ।
मोवाळां री रिणमहीं रुळे बिरंगी राख ॥१८२ ॥
नह देखै झरड़ौ निजर पड़ै मघण परताळ ।
ऊभौ पूठै आयनै भंवर चढै भालाळ ॥१८३ ॥
लगथगता मद लेवता भींज गया भारीह ।
हव महलां दाखल हुई आवै असवारीह ॥१८४ ॥
हुवौ दुसाखां चानणौ भूम उदे जिम भांण ।
निसमुख जायलनाथ रा कळहांळिया केकांण ॥१८५ ॥
पग पग थंभै पावटौ समर तणौ चाळौह ।
हय पूगौ रंग द्रोळहर मदचख मतवाळौह ॥१८६ ॥
हुवौ जनांनां जाबतौ दिय फाटक दरवांन ।
मिळी रात घण तम मई भैंसा मती भयांन ॥१८७ ॥

॥ छन्द त्रोटक ॥

बरसै नभ बादळ वीट वळी । महि रात अंधारव घोर मिळी ।
धर व्योम विचै घण धार धरै । कइ वीर निसाचर हाक करै ॥१८८ ॥

प्रतबंबिय वीजळ तापळके । खत पालर तालर पै खळकै ।
मन पूर मयुरांय मोद मंडै । घण गाजत हैं उमड़ें घुमड़ें ॥१८९ ॥

लख मेह अनें ससनेह लड़ें । परताळ वजै परनाळ पड़ै ।
महि चोर जगै गिर स्रंग मुनी। धर वाजत है जळपूर धुनी ॥१९० ॥

दुत चंद नखत्रन ढांक दिया । लख तुंगिय जांझर पैर लिया ।
करसै निस कांम कमंधज री । यळ आहट साद वजै अजरी ॥१९१ ॥

भरपूर सरोवर नीर भरै । कड़खां ढहि मोर झिंगोर करै ।
छिबदे रवदात्र हरे सुर री । दिल मून ग्रहोधुन दादुर री ॥१९२ ॥

दत गोरख नांम जपै दनमें । कमियो सिध बाळक कादम में ।
कहजै धन पौंछ कमंधज री । अजरायल आसंग की अजरी ॥१९३ ॥

ग्रह छिद्र गवाक्षन मीट घणी । तिण दीठिय जोत पिलोत तणी ।
महवास है व्योम अदंतर री । उड घांण रह्यौ यक अंतर री ॥१९४ ॥

कहजे विय जाय गनांह कठै । अणमांन पिछाण्योय राव अठै ।
मुक षत्र दियौ जळ अंग मिळै। तक सूतोअ बाळक गोख तळै ॥१९५ ॥

॥ दोहा ॥

अजरायल मदछक अडर नखत वडै नरनाह ।
राणी सूं हसनै रटै है निधड़क मनमांय ॥१९६ ॥

जींदराव वायक

कमधां रा केवाह लेवा कज मनहट लगै ।
मोनूं मारेवाह यत इक धांधळ आवियौ ॥१९७ ॥

भगमा पैहरे भेख वैर लियण आयौ वहै ।
परतक पाबू पेख उणयारौ जिणरौ यसो ॥१९८ ॥

धुई रात काजळ वरण सत्रब मरण सहल ।

धुवै खग गिरवर धरण धण सांभळ धांधल ॥१६६ ॥

पेमां वायक जींदरा नं कंहै

जळ परियौ देवे जितौ रयौ न धांधळरोह ।
एकन आप उबारियौ क्यू पत ठेक करोह ॥२०० ॥
एकण हाथन ऊठता वरदायक मो वीर ।
धोख धरे दुसमण धणी पूरौ कीन्हौ पोर ॥२०१ ॥
सूतौ धारे सांत सांभळ असत्री रा सबद ।
मत फोगट की मांत उण दन जींद अमीर री ॥२०२ ॥
अधपत ऊंधांणौह फिरयौ दारू ऊपरै ।
तांणै जमरांणांह घोर जबर सुर जिण घड़ी ॥२०३ ॥

कव वायक

रांणी मन रूड़ोह विध यण तरह विचारियौ ।
केयां तो कूड़ौह हव कदई सांचौ हुवै ॥२०४ ॥

पेमां रो अभिप्राय

खीची सूं खेटौह लागू हुण केवा लयण ।
बूढारो बेटौह आंनै भरड़ो आवियौ ॥२०५ ॥
गोख विचाळे गात कांमण पेमां काढियौ ।
पळकी वीज उपात सूतौ कमंध सपखियौं । २०६ ॥
पिंड नहचौ पायौह देखे जोगी री दछा ।
भूवा मन भायोह बाळक नै बोलावियौ ॥२०७ ॥

पेमां वायक

आनिस अपरोगीह जींद नै मारे जिसो ।
हैरे तूं जोगीह पह धांधळ रो पाटवी ॥२०८ ॥

झरड़ै वायक

नारी हूं सिख नाथ री गोरख ध्यांन ग्रहाह ।
किस कारण कमधज कहैं हम झड़ देख रहा ॥२०९ ॥

वादळ वरखाईह गोख तणौ ग्रोलो ग्रह्यौ ।
मोनू तूं बाईह किस कारण धांधळ कह्यौ ॥२१० ॥

झरड़ो वीजखियौह ग्रोळखियौ मोनू ग्रबै ।
कुण जींदो कहियोह किण कारण मारूं कहो ॥२११ ॥

पेमां पहछांणीह बोली गळ बूढ़ै तणी ।
पखां ग्रमा पांणीह सात्रव मार चढावसी ॥२१२ ॥

वैरी तणां वखांण सुण नह ग्रंग छिपावसी ।
पेमां कियौ पमांण ग्रो जो हैं ऊण ग्रौधरो ॥२१३ ॥

भूवा पेमां वायक

जोगी जींदारोह सहज बुरो वतसूं सरक ।
निरदह निद्रारौह गहपूरत भूटो घणो ॥२१४ ॥

जाग्योतो भूठेह छिपयांही न छोडसी ।
ग्रध निद्रा ऊठेह कइ जोगी कूटाविया ॥२१५ ॥

भूपत भालाळेह विरद कहाह्यो वेगड़ो ।
सुत सारंग वाळेह समहर जिण नूं साजियो ॥२१६ ॥

झरड़ै वायक

माई तूं ऐसीम कहै नृप रो डरहै नांह ।
इण नरपत नै हूं हमैं मारू महलां मांह ॥२१७ ॥

पेमां वायक

ग्ररध निसारो ग्रावियो रिम कज लेपी राख ।
मो ग्रागे कहदे मुदो ग्रायस कूड़ म ग्राख ॥२१८ ॥

दुख थारै पेमां उरै मन रौ भ्रम मोटोह ।
जांण्यौ तोनू जोगटा बूढा रौ बेटोह ॥२१९ ॥

॥ चंद मोतीय दाम ॥

बकै झरड़ौ वजके जिणवार । अभै मन बाल कियौ निरधार ।
कह्या गुर आगम वैण कबूल । भूवा सुण पेमल ग्यो तुज भूल ॥२२० ॥
अखै यम आवस बाल उचार । विमास लई सुध नांम विचार ।
अख्यौ गुर गोरख वैण उभेद । भुवा घर तुज्ज बतासिय भेद ॥२२१ ॥
पिछांण लियौ निज बंधव पूत । हली झर प्रेम झरोखय हूंत ।
पड़ै चख नीर रिलै प्रथमीज । भुवा उर भीड़व लीन भतीज ॥२२२ ॥
पुणॅं पित माताय वीर प्रमाद । उणी पुळ पीहर आयौय याद ।
विचारिय जांण व लीध विसेख। अपे अंग ओळख लोहिय एक ॥२२३ ॥

पेमां वायक

प्रथी पर माम म्हांरौयय पीर । बड़ा वरदायक था दोहू वीर ।
न नांमय खाधाय जायळ नाथ । मुई जिण सोक लियां मुझ मात ॥२२४ ॥
विडंगण केसर पाखर मीड़ । भुजाळोय बांधव आवध भीड़ ।
ग्रहै कर साबळ अंग गरीठ । पबौ चढतो जद केमर पीठ ॥२२५ ॥
दबंताए भूप जणी नुय देख । उसै प्रथवी जणियौ नह एक ।
वणै चित विभ्रम मोच विचार। महा बळ बांधव लीनाय मार ॥२२६ ॥

॥ दोहा ॥

जोर प्रबळ तन सधरजो सबळ पकड़लै सींह ।
दुसमण खीची भांजदै महिष एक मूकीह ॥२२७ ॥

झरड़ा वायक

॥ छपै ॥

बूढ़ावत बोलियो भूवा पेमां तूं भोळी ।
रजवट वाळी रीत जका जग हूंता जोळी ।

मैंगळ मोटो होए सिंह तन हौवै छोटौ ।
हाथ लहै कणहणँ दए कूंभाथळ दोठौ ।
घण बोझ ऊठावै सिर गधौ सबळवांन वाजै न सुण ।
विप धरै पतंगौ आग विच कहै सूर जिण नूं कवण ॥२२८ ॥

पेमां वायक

खीची सूं ळड़णो खगां अवस काळ सूं आळ ।
आगे तूं झरड़ा अजै बार वरस रौ बाळ ॥२२९ ॥
तन बळ आवै है तरुण धावै जद धर धेस ।
जा भतीज पाछौ जपूं नांनी वाळै नेस ॥२३० ॥

झरड़ा वायक

॥ कवित्त ॥

मैं नह दीठी मात उदर जिण जनमण आयौ ।
हीयैं सीस हुलाराय पोष कर नह पय पायौ ।
काकै पित रौ नांम जप्यौ नांनी जद जांणूं ।
हींण माख म्हारी अगे किण दोरम आणूं ।
भुवा तूं बांधवां भूलगी वीसरगी चहरावरण ।
किण आगे जाय हूं कहूं मो साथे हालौ मरण ॥२३१ ॥
सिंह एक गजथट्ट अनेक मार रनसंक मनावै ।
ग्रीखम सूरज एक दुनी सारी अकुळावै ।
इन्द्र वज्र है एक कड़क सारी धर धूजै ।
गुरड़ एक वसंग अनेक पंख आपांण न पूजै ।
म्हैं सुंणी साख गौरख मुखै अब मनसुत पाराध रै ।
रण सहंस राज सुत राखिया वीर त्रयोदस वरस रै ॥२३२ ॥

॥ दोहा ॥

धन म्हारै नह है धरा भटकूं सारै भूंण ।
वैर वळावण वासतै कटक दयै संग कूण ॥२३३ ॥

आगूं कथ कासूं अखां बाधूं की बजरांह ।
मोनूं भुवा वतायदै नरपत नूं नजरांह ॥२३४ ॥
हर रूपी थारौ हुवौ भोळै मिलण भुवाह ।
भेळौ करदै भूपरै म्हांनू महळां मांह ॥२३५ ॥

पेमां वायक

सुण झरड़ा कीनौ समंध जोय गढां जोड़ीह ।
पेमां नै थारै पिता बूढै नृप बोड़ीह ॥२३६ ॥

॥ कवित्त ॥

जोय झरड़ा झुंबियौ कहूं विसहर किसना नै ।
रावत की राखड़ी सिद्ध सह भरी सुथानै ।
दे टीकौं मेलियौ पाल इक विप्र ऊठासूं ।
गोगामैड़ो गयो जाय बद्यो वरहासूं ।
पीर एम पूछीयो गोग चहुआंण देवगत ।
लायं थूं नाळेर आवसुं लै वरात उत ।
ददरेळ नृपत पूजै दुनी चारूं चख ऊपर सुणी ।
दूसरे दिवस दरसण दियौ धजा बंध मैड़ी धणी ॥२३७ ॥
धांधळ रै मांढ हैं वरण आयौ जेवर रौ ।
उठी तणी बंध पाल ढाल घरवट री घर रौ ।
आगू किसनू अगे पाल देव मत प्रकासी ।
नौ आणा जावणा सुतन मत थए उदासी ।
रह जाय अठै तीनूं रटै परतख देव प्रभाव सूं ।
तूं कहै अठै रहसूं नहीं हूं पत साथे हालसूं ॥२३८ ॥
वर तोरण बांधियौ पीर चढियौ नीलं पर ।
चढ चंवरी चहुआंण दियौ दरसण अंतेवर ।
धन बूढै री धिगा लोक सह जोवण आयौ ।
काकेअ चडां करी पाल गोगां परणायौ ।
मिळी धिया सूं मात भुवा दादी भोजायां ।

कुळ धांधळ रै कहुं चढी सोभा तो जायां ।
डेरां लग जोडग्र विधहू दुरस सको जग देखियौ ।
तिण चखां धिया जामात रौं पाछौ रूप न पेखियौं ॥२३६ ॥

औ कवत्त डोढौ

॥ दोहा ॥

वर जायक जिण धर विधू सुतन सिधू सारीह ।
भात्रीजा धांधळ भवण ग्राया ग्रवतारीह ॥२४० ॥

झरड़ं वायक

धूहड़ धांधळ धुर धवळ जोया खींया जोय ।
वड़ै वंस नरपत वडा कैवो लियो न कोय ॥२४१ ॥

पेमां वायक

पाल संदोसौ पूगियो पह चढियौ रायपाळ ।
पकड़ तिस पूनमी भकर तणो भौंपाळ ।२४२ ॥
वैंर सवे खोवाळियो कमधज जेज न कीन ।
खेड़ नृपत बळ खागरैं चांदो चारण कीन ॥२४३ ॥

छन्द बेअखरी

ग्रायो खळ पकड़े ग्राघांणे, जायल चढण जेज नह जांणे ।
ग्रहण सुणोणी गोग घरांणैं, ढबियो यण कारण नृप ढोणे ।
सातळ सोम हुता भगनी सुत, पह घेरीया जको ढूळी पत ।
बचिया कागद खेड़ विहांणे, छै संगट रौं सिवियाणें ॥२४४ ॥
पडसां रत वाहै रवदां पर, ग्रावै ग्राप करीजो ऊपर ।
मिळियो जायल सिर मेळावो, चढियो ले धूहड़रो चावौं ॥२४५ ॥
वळको खगन सरी ल्याखवटै, ग्रसपत सेने धणू ग्रावटै ।
ग्रालम किलम जोम ग्राफाळै, वसियो नृप वैकुंठ विचाळै ॥२४६ ॥

॥ दोहा ॥

बूढै पाबू रा बहुं केवा लेत कमंध ।
पिड मझ ढहियौ खेड़पत सांचौ हतौ समंध ॥२४७ ॥

कुळ धांधळ रौ कढियौ केवी करमाळांह ।
अंग मो झळ म्हारैं ऊठै जिण दीठौ झाळांह ॥२४८ ॥

मो सुणायदै मैंहणां खैंग नाम घर खार ।
बूढ़ा वाळी ऊपरै चढ तूं चरवादार ॥२४९ ॥

खीजऊ नह ह्वै खिमत मूं पति मार मरूंह ।
यसा वैण बोलै अपत झरड़ा केम जरूंह ॥२५० ॥

नहीं लगाऊं तुज्झ नै लांछण हेक लगार ।
सूर ऊदे काठां चढे तन होमूं पति लार ॥२५१ ॥

अवचळ चूड़ौ चूदड़ी रखियौ पाबूराव ।
मो लारै कुसळे रह्यौ सारंग तणौं सुजाव ॥२५२ ॥

जग बूढै पाबू जिसा किया नहीं किरतार ।
वार वार नह वेण रा यहां जेड़ा ऊणिहार ॥२५३ ॥

वांधव वागै सीह मैहपत होसी मारका ।
ज्यांनै लागै सीह बूडं पाबू रा विरद ॥२५४ ॥

॥ कवित्त ॥

रात दिवस रंग राग वीर होक बैरी हंतौ ।
फजर भंमर फैरतौ पाल भुज सेल ग्रहंतौ ।
आठ सिद्ध नव निद्ध रही मो पिता रसौड़े ।
मो कमळायत माय जिका अन पूरण जोड़ै ।
अंतेवर सगतां आवती म्हैं रमती महलां परै ।
चीतार लाड मां भ्रात रौ रात दिवस आंसू झरै ॥२५५ ॥

॥ दोहा ॥

झरड़ै वायक

पाबू बूढै रा प्रगट केवा लूं ततकाळ ।

म्हनै लेजावै महल में दुसमण नै देखाळ ॥२५६ ॥

पेमां वायक

जो तोसूं सजियौ नहीं हूं सभसूं हणवीज ।
आव अमां वांसै अबै रहै सधर भ्रातीज ॥२५७ ॥

झरड़ै वायक

निज सिध गोरखनाथ अस्व दिया मो पर ऊभै ।
सात्रव नूं यण साथ मू चख देखे मारसूं ॥२५८ ॥
न्होखे निसरणीह सिसु गोखां पर चाढियौ ।
तिकण कपाट तणीह जड़ सांकळ कीन्ही जरू ॥२५९ ॥
पौहरायत पाछेह केई निस हाका करै ।
विध पेमां वाचेह ऊभौ रह भ्रतीज यत ॥२६० ॥
आवी जोवण आप सूतौ सांम संपेखियौ ।
यू रण अवध प्रताप नरपत ऊधांणौ बसै ॥२६१ ॥
तस दोहु खग नो लेह चीर विलूटै सींहणी ।
असमर ऊतो लेह ऊभी पेमां ऊपरै ॥२६२ ॥

पेमां वायक

मत कर हव मौड़ीह जमड़ौ नीतर जागसी ।
सात्रव सूतौड़ीह साज हमै झरड़ा समर ॥२६३ ॥
तस हुंता ताळीह दे पेमां समचा दई ।
आवस उताळीह हव सिध झरड़ौ हालियौ ॥२६४ ॥
महिपत महलां मांय बीजड़ काच बिड़ावियौ ।
जोयौ झरड़ै जाय दुरस भुवा कीनौ दगौ ॥२६५॥

झरड़ा रौ अभिप्राय

परघळ घल पांणीह भूपत हौद भरावियौ ।

जळ अणथग जांणीह कितरौही ऊंडौ कहूं ॥२६६ ॥
आवै नह आगौह ऊभौ हव झरड़ौ ऊठै ।
मन में भ्रम लागौह ईख काच राय आंगणं ॥२६७ ॥
पेमां पहचांणीह तद मन धुन झरड़ा तणी ।
औ जांणं पांणीह पळकौ काच तणौ पड़ै ॥२६८ ॥
कर सूं दूर करेह महिलां न्हांकी मूंदड़ी ।
सद्रस सबद सुणंह इण पहचांणचौ आदरस ॥२६९ ॥
पड़तां काच परेह विण खणणाटौ बाजियौ ।
आंपांणं तन एह ग्रहियौ जद पोरस घणौ ॥२७० ॥

॥ कवित्त ॥

मुगताफळ गळ मंहीं फबै श्रावणां मुगताफळ ।
दुपटौ सोभा दये बंद सिर पेच महाबळ ।
सिर ओढियां दुसाल नगां आभूषण लागां ।
पह जींदौ पौढियौ पिलंग सोव्रन रै पागां ।
रंगमहल पिलोची जय रही नृपत कंठी रवनां दरौ ।
तिम उडै घांण अंतर तणौ जालम सुतौ जींदरौ ॥२७१ ॥

॥ दोहा ॥

झरड़ौ डर जांणांह सात्रव री देखे चखां ।
जागै जमरांणौह चेत्यौतौ देसी सजा ॥२७२ ॥

पेमां वायक

बूढारौ बेटोह भात्रीजौ भालाळ रौ ।
दुसमण तक दीठौह पूठ तनै पाछौ फिरै ॥२७३ ॥
छुरौ करग साहेह आव पसण उर ऊपरा ।
मृग निद्रा मांहेह सोवै जायल पत सदा ॥२७४ ॥
कहियौ खंजर काढ भुवा दियौ अवसांण भल ।
ग्रह बूढावत गाढ आयौ छाती ऊपरा ॥२७५ ॥

बुडावत बैठोह छाती पर ग्रहियां छुरौ ।
भळ स्वत जगजेठोह जायलराव जगाडियौ ॥२७६ ॥

झरड़ा वायक

भूवत तो भांगूह कर खंजर ग्रह ग्रार कर ।
मू जींदा मांगूह काकौ पित थारै कनै ॥२७७ ॥
जागै जायलियौह काळ रूप मारै कमंध ।
लोयण लाय लियौह चपळा जिम ग्राहियौ छुरौ ॥२७८ ॥
प्रांण ग्रमां पाबूह झरड़ा सूं जींदौ जपै ।
पुत्री परणाऊंह राजंद मैंहदर राव री ॥२७९ ॥

झरड़ा वायक

सात्रव नह छौडूंह तोडूं हूं जड ताहरी ।
मूं खंजर मोडूंह काळज फींफर छेक कर ॥२८० ॥
एक हुकम सूं ऊठता हाजर सहस हजार ।
ग्राज न दीसै ग्राप रौ प्राण बचावणहार ॥२८१ ॥
जींदा मन में जांणतो रह्यौ न धांधळरौह ।
करूं थनै बेगो कहूं पंथीं जमपुर रोह ॥२८२ ॥
धण ऊभी मारण धणी यसी वणी पुळ ग्राय ।
ग्राज न होवे इष्टसूं सारंग सुतन सहाय ॥२८३ ॥
धण ऊभी सिर घेस धर खग कर बीच खवंत ।
वूग्रो वना बळ काळ वस जींदो नृप जोवंत ॥२८४ ॥
सुखसूं वाजी सदन में सायंकाळ विचाळ ।
वाजी खीची रै बुरी ग्रधख री घड़ियाळ ॥२८५ ॥
ग्राइयौ ग्रनियायीय धर पुड़ किणी न धारतौ ।
यसी घड़ी ग्रायीह नबळ हुवौ निरखै निजर ॥२८६ ॥

पेमां वायक

वेरीसूं वातोंण कासूं हव झरड़ा करै ।

इण सात्रव हाथांण केवा लै जमड़ा कनै ।।२८७ ।।

।। छन्द पद्दरी ।

पड़ प्रबळ सत्रु कृत आप ताप, मझरात कियौ झरड़ै मिलाप ।
रिम दीठौ चख इम जींदराव, सुत काका पित हूंता सवाय ।।२८८ ।।
पर प्रबळ अगन परताप मांझ, चेय सिरी सरस नर साप मांझ ।
हतसूं परस सात्रव तणौ होय, जैसी रीस झरड़ा तणी जोय ।।२८९ ।।
अत जींद वदक उर छुरौ मेळ, अर कियौ खुड़द अणियां ऊथेळ ।
वहै रक्त हंस वप वरगवाट, महल प्रत फूटो जनु रंगमाट ।।२९० ।।
मिळ राव प्रभंजन गत मंझार, ऊचरै न सुणै नृप त्रतीय द्वार ।
लागू हण केवा मांम लीन, काको पित सर घड़ जुदा कीन ।।२९१ ।।

।। दोहा ।।

केबी ऊपर कटार रा किया घाव करड़ाह ।
वैर दोनूंही वाळिया जाझा रंग झरड़ाह ।।२९२ ।।
तोड़ कंठ तरवारसूं कमधज लीह करीह ।
हव झरड़ौ ले हालियौ माथौ चपर महीह ।।२९३ ।।
पांणांसूं पीधौह झरड़ै लोही जींद रौ ।
कर पेमां कीधोह वण आरक्त विलोवणो ।।२९४ ।।
राजंद आपस रीझ वैर दुनेइ वाळिया ।
भुआ अने भात्रीज पाव तणै आया पगां ।।२९५ ।।
कसमेरी कांनेह कंथा नवरंगी कियां ।
एकल उध्यानेह पांव विराजै पीपळी ।।२९६ ।।
दांतांसूं डसतोह आपस मसतक ईखियौ ।
आयौ ऊससतोह जींद तणौ सर जांणियौ ।।२९७ ।।
आच लियां ऊतमंग आपस दीठौ आवतौ ।
रावत झरड़ा रंग सत्रु नुगरौ साजियौ ।।२९८ ।।
परकमणा दे पड़ पगां बंदन कर जिण बेर ।
नाथ अगाड़ी नाखियौ नृपसिर रौ नाळेर ।।२९९ ।।

पेमां झरड़ौ यम पूर्ण कर प्रणाम सिर नाय ।
वैर दुनोई वाळिया राज कृपा सिघराव ॥३०० ॥

गोरखनाथ वायक

॥ छप्पै ॥

पवन नहीं वसरतौ जठै रव करण न जाती ।
जबर नखत जींदरौ चढै जिण दीठां छाती ।
वानी श्रंग वळेट मेखळी भुज पर मेळी ।
ले माछंदर नाम साहतन कंथा सेळी ।
ग्रह लियौ प्राण श्राधी गजर ठह सूं कर वज्जर हियौ ।
झरड़ा रिम मारे जींदरौ कहुँ काम करड़ौ कियौ ॥३०१ ॥

॥ दोहा ॥

पेमां बूढ़ै पाल नै निज विसरी महन्न ।
वैर सवायौ वाळियौ बांधव तणौ बहन्न ॥३०२ ॥

पेमा वायक

पतन हतौ वो पीर हुँतौ भवस जिम हुवौ ।
वरण सजिया मो वीर घीर सुतनकर वाहियौ ॥३०३ ॥
जग ऊपर ऐ जाब श्रण कथ रा रहसी श्रमर ।
सत मो बगस सताब चढूं काठ माछन्द्र सिष ॥३०४ ॥

गोरखनाथ वायक

कीन्हां लायक काम खळ खामद खायक खगां ।
स्रग धायक मिळ साँम सुण वायक पेमां सुता ॥३०५ ॥
दीन्हा कर गोरख दहुँ तोर बडै कुळ तास ।
सह सतियां पेमां सरे वसै श्रमरपुर वास ॥३०६ ॥

पेमां वायक

जलण मांही जाळूंह अम पांते वेळी दईग्रा ।
ग्रावस ऊजवाळूंह पंड होमे चारूं पखां ॥३०७ ॥

गोरख वायक

॥ कवित्त ॥

सांझ समैं रौ सपन कहूं जायळपत कीन्हौ ।
ग्रधरत जातां पैहल प्राण झरडै हर लीनौ ।
रतनां छाई रात तसकरां भवरां वाळी ।
वळै सधर वैरियां टाळ नह जावै टाळी ।
नज जकण क्रोध झळियो नहीं यसौ तेज विप ग्राप में ।
चुपचाप मही सात्रव सभे पाछौ ग्यौ चुपचाप में ॥३०८ ॥

इंद्रजीत ग्रवतार प्रथी मालम जायल पत ।
त्यां लिछमण ग्रवतार सुपह पाबू धांधळ सुत ।
बांदौ ढेंबो सुभट हडू ग्रंगद कपि होता ।
वदळौ देवा वचन ग्रखै नर व्यापा एता ।
सिव ऊमिया पेमां सुलोचना तुज तणां ग्रवतार त्यां ।
ग्रागळै जनम वाळौ ग्रठं यण तन वदळै दीधियां ॥३०९ ॥

॥ दोहा ॥

जोगी तिय बाळक जके त्यां नर वाही टेक ।
हठ तीनू भेळी हुई ग्रधपत ढहियौ एक ॥३१० ॥
चवां मात जोधु तणी वीर पाल री बैन ।
थां देहु जोडै यळ परै हुई न कोई हैन ॥३११ ॥
हाथ दियां राजी हुए पेमां ऊपर पाव ।
सह सतियां हूतां सिर सत समपै सधराव ॥३१२ ॥
पाल गनौ पाळेह जीवत छौड्यौ जींदरौ ।
वेद जकौ वाळेह चढ काठां पेमां सती ॥३१३ ॥

पेमां वायक झरड़ै ने

॥ कवत्त ॥

धांधळ नृपरी धिया अधप सारंग घर आई ।
पाबू बूढौ वीर जपूं कमळादे जाई ।
सोढी गहली जिसी भणूं म्हारी भौजाई ।
गोग देव संमरी जिसौ भो भ्रात जमाई ।
झरड़ा भतीज तो जेवड़ौ आसथान दादौ अमां ।
पायौ भ्रतार जायलपती मुझ पख दोहु गिरमेर मां ॥३१४ ॥

॥ दोहा ॥

समप पती रौ सीस आछै तणा लूं आरणा ।
ऊजवाळू अवनोस पंड होमे चारूं पखां ॥३१५ ॥
मो पत रौ माथोह आप म्हने भ्रातीज अब ।
जिव पिय रौ जातौह अतुर जावे आपडूं ॥३१६ ॥
लार रयां लाजेह धूहड़ नै धांधळ धरा ।
सुत मो विप साजेह लांछण तो कुळ नै लगे ॥३१७ ॥
नकलिणी नेठीह यूं जुग सारो आखसी ।
बार वळां बैठोह धणी मार धांधळ धिया ॥३१८ ॥
जद अंजस झरड़ेह सीस भुवा नू सूंपियौ ।
वजर कपाट वड़ेह कर छाती पेमां क्रमी ॥३१९ ॥

॥ कवित्त ॥

जांम निसा जावतां भूआ सूं मिळ भ्रातीजो ।
कंथे ऊवर कटार जडी जद पौहरौ वीजो ।
पाव पगां पीपळी जांम तीजी वह आया ।
चौथैं पौहरै सती काठ चढ होमैं काया ।
गळळाई रैण गळंतियां सांम नांम नीजर चखां ।
ऊदियाचळ सूरज आवतां पेमां उजवाळै पखां ॥३२० ॥

कव वायक

कमळादेवी कूख जिका जूनै पर जाई ।
अमर अंस अवतार पाल बूढौ जिण भाई ।
भेदै मंडळ भांण अगे भोजाइयां आई ।
दोय धांधळ रा कंवर त्रितिय धांधळ री जाई ।
तड़ तागत साहंस तेजसूं वूई व्योम मग विण वहल ।
मिळ गई जदि सूं मुगत में पौहर दिवस चाढचां पहल ॥३२१ ॥

॥ दोहा ॥

दे गोरख वरदांन अंबर रवि सिस नखत यळ ।
चौकर वेस समांन अमर रहे झरड़ा यतै ॥३२२ ॥
नह रहसी गिर तर नहीं केइ वैहसी जुग वाळ ।
पण तन थूं रहसौ अमर वार वरष रौ बाळ ॥३२३ ॥
हण दोयण ले गुर हुकम लोपण मोद लगांह ।
अब झरड़ौ बैह आवियौ पाबू तणेह पगांह । ३२४ ॥
आवे झरड़ौ आखियौ पाल तणे पावेह ।
जमपुर मेल्यौ जींदनै जायल गढ जावेह ॥३२५ ॥
छत्रपत हणियौ चूक कर मोटा महलां मांय ।
भेद दयौ घर रौ भुआ सिधवर रौ बळ स्यांम ॥३२६ ॥
साबत सारंगरौह राज गनौ घण राखियौ ।
पथ सरगापुररौह वणनैं म्हे हिज बोडियौ ॥३२७ ॥
खळ अणखादी मेह मो पित काको मारियां ।
उणनै आधी देह करसूं दइ कटारियां ॥३२८ ॥
रखियौ कुसळै राज जींद वैहन पत जांणनै ।
उण टणकां नै आज मारग लांबै मेलियौ ॥३२९ ॥
मारे महलां मांय सीस भुआनैं सूंपनै ।
अरि रा धुंवा उडाय आप पगाहूं आवियौ ॥३३० ॥
ताई सूं टाळोह मैं नह लीनौ मारियौ ।

वैर आप वाळौह रिम ऊपर नह राखियौ ॥३३१ ॥
दिस दिस जींदरोह उवे लोक सह ईखतौ ।
लड़ जिय लीधे रोह वारस कोइय न आवियौ ॥३३२ ॥
हिय मांझळ होळीह अर साबत सुण ऊठती ।
झळकत झखझोळीह लोहड़ियाळी पुण चळग ॥३३३ ॥
वसुधा पर मे वाजतौ छत्रपत नह सहियौह ।
आसंग कर नै एकलै जींदो जोखमियौह ॥३३४ ॥
सूतौ जायलपत सदा अंबर तणै घरांह ।
तेम भुवा परताप सूं हणियौ धोळहरांह ॥३३५ ॥

यणमें लछण

वायक विसराळाह मुणिया थें मने ।
वे धांधळ वालाह केवा मैं सह काढिया ॥३३६ ॥
भालाळा सतभेव परचा सिध पाबू प्रतक ।
दीजै काकादेव मन सुद्ध दरसण मुज्झ नूं ॥३३७ ॥
प्रगट दरसियौ पाल सांभळ झरड़ै रा सबद ।
धर हिदवांणी ढाळ सुतधन देणा सेवगां ॥३३८ ॥
साथे वीसां सातहो चापड़ियौ पौहचाळ ।
दरसण झरड़ा नै दियौ भंवर चढे भाळाल ॥३३९ ॥

पाबू वायक

वा जाइ बूढ़ोह तूं सवाई धांधळ तवां ।
रिम हण नै रूड़ौह आछौ वर उघावियौ ॥३४० ॥
बिजड़ी सूं बीजाह पिड़ में खीची पाडियौ ।
भालै भात्रीजाह रिम तो सारूं राखियौ ॥३४१ ॥
बूढ़ौ पाबू वाजिया वांघड़ अगली वार ।
रिम हण छोगा राळिया झरड़ा सुत जोधार ॥३४२ ॥

भत्रीजा मो भ्रात कळ चाळौ बूढौ कमंध ।
वंद वधावे वांत मो सारू मारीजियौ ॥३४३ ॥

बेटा काकै बाप रौ लड़नै वैर लियौह ।
अंजस तो मनमें अरी रिम हण कुसळ रियौह ॥३४४ ॥

पाल मोद पायौह यम श्रीमुख सं् उचरै ।
जिण तो नग जायोह धन गह्लां री धीयड़ी ॥३४५ ॥

अम कुळ रा अवतंस रैण पर चिरंजी रहै ।
वजै सिधां रा वंस कहवत तैं सांची करी ॥३४६ ॥

छळ छिद्र खीचीड़ौह तुल जोड़ै तोलीजतौ ।
धांधळ तणौ घड़ौह हव चेले भारो हुवौ ॥३४७ ॥

भाखै इम भालाळ तौनै रंग बूढ़ै तणा ।
अम कुळ रा ऊजवाळ भ्रतीजा जनम्यौ भलौ ॥३४८ ॥

वैर दुने ही वाळिया प्रसण विभाड़ पलंग ।
केरडी थें आसंग करी रंग बूढावत रंग ॥३४९ ॥

पाबू रौ वर

चौकर वेस चतेह ना तन वधै घटै नहीं ।
जग मो नाम जतेह यते तुझ तन ओ अमर ॥३५० ॥

बारै वरसां बाप रौ लड़ नै बैर लियौह ।
झरड़ा मारे जोंदरौ करड़ो काम कियौह ॥३५१ ॥

रवि जेतै ऊगै रसा सिव जेतै कैळास ।
एते तूं झरड़ा अमर वसजे नरपुर वास ॥३५२ ॥

कव वायक

पाबु सूं मिळनै पछै गौरख कने गयौह ।
पाबू गोरख री कृपा झरड़ौ अमर थयौह ॥३५३ ॥

रूपनाथ गुरु पाल रौ सुणी यसी म्हैं ख्यात ।

रूप नाम झरड़ै तणो जद मो कह्यौ न जात ॥३५४ ॥
दखै गोरख देव कर जपतप सीधा किता ।
मन पोरस ग्रह मेव तूं सिध झरड़ा तूं द्विज तूं ॥३५५ ॥

॥ कवित्त ॥

सीधो गोपीचंद दियौ उपदेस जलंधर ।
दृढ भक्ती प्रहलाद करी तूठो करुणाकर ।
ग्रत डरसूं सुलतान बलखपत लई फकीरी ।
पत भुज करी नैपात चलीमत भूरी ऋमरी ।
वय राग जो अंग दुसार वैज्ञान भगत विण लाग में ।
भरथरी तुज्ज मत भाळतां वडौ फरक वैराग में ॥३५६ ॥

॥ दोहा ॥

चित फाटो संसार सूं तिय देखे विरताळ ।
थयौ वैरागी भरतरी धारा नगर भोपाळ ॥३५७ ॥
अरि मारण थें आदरी तन धर धर बहु त्याग ।
तूं सीधौ बूढै तणा वैर तणा वैराग ॥३५८ ॥
व्यापै मन नरवेध वैरागी आगे बुवा ।
विप भागूलू वेध ग्रौ वैराग तो ऊपजै ॥३५९ ॥
ग्यान भक्त विभचार मृत रसाभाष विणराग ।
वैर वहण छट्ठौ वजै वडौ वीह वैराग ॥३६० ॥

॥ कवित्त ॥

दात गुर रीत सूतौं कळजुग कित सजय ।
सरबनास सन्यास सूतौ सब ग्रास समज पय ।
बात रागवैराग राग सब ग्यान ग्यान मय ।
ध्रष्ट धूत ग्रवधूत नियम देख्यां वैरामां नय ।
दम ब्रम सोज इंद्रियदम सबद ध्यान जाग्रत सरू ।
मृत जोग जीत दृढ जोग मय त्वां नमांमी गोरख गुरू ॥३६१ ॥

क़ंद मूळ फळ खाय वसै गिरवर की छाया ।
विण पांखां उड़जाय काळ नह व्यापै काया ।
पवन रूप पसरंत नहीं आपा ओळखावै ।
आप रहे एकंत पुरुष जांण न पावै ।
दस दिसा बाळ लीला फरै आप करै मुख रूप लख ।
झरड़ौ अजपै मय यम जपै सत्य सत्य माछंद्रसिष ॥३६२ ॥

॥ दोहा ॥

पाबू दरस प्रकास झरड़ा नै दिनां विजै ।
वणियौ धांगड़ वास वणद जसू थानक वडौ ॥३६३ ॥
पूरण परवाड़ोह झरड़ा रौ सू सबद जथौ ।
सब दिन सवाड़ोह रहजे धांधळ रावउत ॥३६४ ॥
सूरा मन हरखै सुणै कायर जाय थरक्क ।
बिप ऊगौ मो वचन में औ इग्यारमौ अरक्क ॥३६५ ॥

इति श्री पालपोरषातन मुरधर भाषा आसिया मोडजीकृत झरड़ारौ प्रवाड़ौ
॥ सम्पूर्ण ॥

परचा रौ समो लिखंते

॥ दोहा ॥

कुण म्हारी करणीह धरपुड़ पाबू विण धणी ।
जिण रौ जस वरणीह आखर दीजे ऊजळा ॥ १ ॥
धार मनां इक धारणा तज दूजा सहतंत ।
परचा आखूं पाल रा सगत समाप सुमंत्त ॥ २ ॥
थपै वळावळ थांन पाबू पूजै सैहै प्रथी ।
रूपा नै राजान दरसण धांगड़ वा दिया ॥ ३ ॥
दे दरसण दीनौह अन धन रिध निध थित अपट ।

कमधज थें कीनीह खाती चावौ खंड में ॥ ४ ॥
वाजो इळ वजियौह धाम गढां मढ धांधळां ।
कर कमधज कजियौह आवागमन मिटावियौ ॥ ५ ॥
नेचा लीना रग्ग री गुड़िया गिड गज गंध ।
कमधां चावांणां कियौ समहर साका बंध ॥ ६ ॥
जबरौ जूंझांणोह त्रजड़ां मुंह धांधळ तणौ ।
पाबू पूजांणांह वे देवत यळ राठवड़ ॥ ७ ॥
धौळी धजा धणीह फाबै देवळ फरकती ।
घट मो चाह घणीह कोळू जाय दरसण करूं ॥ ८ ॥
थांन धणी थाराह अतही दीसै ऊजळा ।
वजता नग्गारांह सोभा लगै सुहावणी ॥ ६ ॥
क्रमवज लेपे कार दुख चीपण वागे कियौ ।
दुठ आप दुर बार मठ सूं ढौल मंगांड़ियौ ॥ १० ॥
आरोपे आगेह भोपा मिळ भालाळ रा ।
भूप पाल भांगेह मरजादां सह यू मुणे ॥ ११ ॥
भू पर भालाळाह हेक तूह असतौ हुवौ ।
विलखातो वाळाह सेवग धांधळ रा सुतन ॥ १२ ॥
पाबू मोटी पौछ तो वाळी धांधळ तणा ।
अजेन आई आंच तौर सहत बाधो तपै ॥ १३ ॥
महि पर कई मोंमाह कई परा जूंझार कर ।
चवै आप सामाह यू वायक ओ अधपती ॥ १४ ॥
रूपै बाळौ राव सांभळ धांघळ रौ सुतन ।
पाबू देव प्रभाव घ्रांगड़वा आवौ धणी ॥ १५ ॥
आवै आधीरोह साबळ हथ सवद सुणै ।
बांधव सगती रोह अगे अलोप इम ऊचरै ॥ १६ ॥
ऊखड़सी आबूह पड़सी धर ऊपर पतंग ।
प्रथो परै पाबूह तद होसी सदना सतक ॥ १७ ॥
कर बघा पर कोर कमधज भोपा ने कहै ।

यण सायत आरोप आंणू ढोल उतावळी ॥ १८ ॥
पेट दुखायौ पाड़ ततखणही बाघै तणौ ।
यण सायत गुळवाड़ सह सोजत धरसूं कही ॥ १९ ॥
पड़ियौ भोपो पाय कर बांधे वाधौ कमंध ।
नृप कै सीस नमाय कीन्हीं सो माई कहूं ॥ २० ॥
नरपत तैं मतनीच कीन्हो कृत भोपा कहै ।
बुरछी छाती बीच सो रोपी धांधळ सुतन ॥ २१ ॥
दूजो दीहाड़ेह देवत पूगौ दुष्ट नै ।
पुळ तीजी पाड़ेह पाल सेवगां प्रसण नै ॥ २२ ॥
साचौ सुर सुणियोह दस ही दस पाबू दरस ।
ग्योई जतै गुणियोह रै है धांधळराव रौ ॥ २३ ॥
गुण नह हुवे लगार भोपा यम वायक भणै ।
अण नै भंमर सवार पाल दोष कर पाड़ियौ ॥ २४ ॥
बाघै वाजंतोह ढोल मढायां तत घड़ी ।
पण लख भाजंतोह पाल तणै ल्यायौ पगां ॥ २५ ॥
अंग रौ ऊवेलोह पाल जदी करसी पतख ।
मढ नम तै मेळोह आठ सहस ओईचणै ॥ २६ ॥
होता प्रसण हजार एकल बाघौ ऊबरचौ ।
ए पाबू उपकार कीन्हौ जे जो कारणै ॥ २७ ॥
वाजे हूंत वणास हव नृप रा घट मे हुवो ।
वाघै धांगड़वास पाछौ ढोल पौछाड़ियौ ॥ २८ ॥
थापे सोजत थान पाबू रै पड़ियो पगां ।
नृप कर धूप नित्यांन मूरत राखै गळ मई ॥ २९ ॥
थापै सोजत थान पाणां वागै छात्रपती ।
जांणै सरब जिहांन आरोपो भारी उठै ॥ ३० ॥
भूपत भोपांरीह बांधी मरजादा वडी ।
लीह न लोपांणीह तृणा सो घळी तलाक तिण ॥ ३१ ॥
आयौ गांगै ऊवरै दोलतखांन दुरीह ।

पाबू रै आये पगां कमधज अरज करीह ।। ३२ ।।
दुसमण औदा दाह चमराळौ आयौ चढै ।
जपां किसूं जादाह राज लाज मो राखजौ ।। ३३ ।।
उसर हूता म्हे अज्ज लोह जरीकौ लेवसां ।
लज थंभ म्हांरी लज्ज तू राखौ धांधळ तणा ।। ३४ ।।
चमराळां सूं चावड़ै भिड़सां म्हैं भाराथ ।
गते वगा धांधळ तणा हार जीत तो हाथ ।। ३५ ।।
भाखै भालाळोह सुपनैं मझ गांगौ सुणै ।
वाघे मो वाळोह थांनक सोजत थापियौ ।। ३६ ।।
खग वाहां खं धार पिड़ थे रचजो प्रात रो ।
हुवां तुहाळी हार हूं चोखां नै मार हूं ।। ३७ ।।
हींच उडै हाथेह लग गांगौ दोलौ लड़ै ।
मच्चिये जुध माथेह कमधज ओरी काळवी ।। ३८ ।।
धीबी धांधळ रेह साबळ वांम भरे सबळ ।
पल क्यौं कूत परेह उथळ तौ दीठौ उसर ।। ३९ ।।
समहर सेखौ साजियौ पाबू देव प्रभाव ।
दौलतियौ भागौ दुरत प्रसणां छूटा पांव ।। ४० ।।
राजन धांधळ रो रह्यौ महि खावड़ थळ मेह ।
रतनां धांधळ पाल नै पूजै जिण पुळ मेह ।। ४१ ।।
रतन सींच राखोय खावड़ घर में खेजड़ी ।
सुरमो कुळ साखोय थांन पाल रौ थापियौ ।। ४२ ।।
जैसींगै नै जैतिय अत कीधी अज गत्त ।
वृछ थांनक रौ वाडियौ कर मृत होण कुमत्त ।। ४३ ।।
वरजै वारंवार रतनां धांधळ कर रुदन ।
जैसींगा जमद्वार क्यूं जावै अवगत करै ।। ४४ ।।
पूंगीसर री पाल वृछ जो खेजड़ वाढ़ियौ ।
तोनू तीजी ताल मो कुळ देवत मारसी ।। ४५ ।।
यम आखै मद अंध कुण पाबू हव है कठै ।

कासू मांगे कमंध मो पित दादै री मही ॥ ४६ ॥
मौत श्राय केयक मरै केक करै श्रपघात ।
मारीजे केई कळह मभ जिण सूं देवत थात ॥ ४७ ॥
धींठ होवे धींगाह पाल तणौ वृछ पाड़ियौ ।
जौंजे जैसींगाह हवै तुज्झ माहै हुवे ॥ ४८ ॥
मो धर यत सूं मूक क्रूखत्री श्राखै कुवच ।
कोळू जावे क्रूक धांधळ पाबू री धिया ॥ ४९ ॥
जळ श्रांखां भरतीह पड़ करती कइ कळपना ।
दुसटी रा डरतीह कोळू श्रावी क्रूकवा ॥ ५० ॥
रतनां करै पुकार सांभळ धांधळ रा सुतन ।
जेसीगे जोरार बृछ थानक रौ वाढियौ ॥ ५१ ॥
दुरबळ रतनां दौड़ पाल तणैं श्रावी पगां ।
रे देवत राठौड़ कुळ रौ ऊपर कीजिये ॥ ५२ ॥
पाबू सुणैं पुकार देवळ कज माथौ दियौ ।
बीर श्रमीणी बार कमधज जेज घणीं करी ॥ ५३ ॥

॥ कवित्त ।

कोळू थांनक कमंध दियौ रतनां नै दरसण ।
धिया देख धांधळां पाल बौह थायौ परसण ।
बाहर पाबू वीर मुणै बाई कर म्हारी ।
घीरप रतनां धिया करूं ऊपर हुं थारी ।
भाटी नै जम भेट कियां डूबंती किरणां ।
तड़छै घर जैतियौ घणू घट करतौं गिरणां ।
लोक कहै हमे बचै नहीं सेल श्रणी तो चाढियौ ।
थी निजर न देखी थापना वरजंता तर वाढियौ ॥ ५४ ॥

॥ दोहा ॥

रूपारौ वृछ रोपियो सोना री कर साख ।
सोव्रन री फिर सांगरी नग लागा पर लाख ॥ ५५ ॥

वणरै विप आरांम लाख वात होवत नहीं ।
पाल पगां परणांम हव कीनौ साता हुई ॥ ५६ ॥

रतनां सुण रोतीह भाटी नै पूगौ भलौ ।
जद जस सैंजोतीह थान पांन थप थापना ॥ ५७ ॥

॥ कवित्त ॥

केई बेळा कोटड़ै दळां आय घेरौ दीधौ ।
कमधज ऊपर करै वार उबारै लीधौ ।
वीखेरै वैरियां चक्र न्हांखै गेबाऊ ।
रखी लाज रांणी री सरब जांणै आसाऊ ।
राज गिर भूप रण रंधियौ वळे पाल अगलै वरस ।
कांगरै कांगरै काळवीं दीठी सत्रावां दळ दरस ॥ ५८ ॥

॥ दोहा ॥

कैहवत सारेही कहै है जाहर आ हाल ।
कहूं जिकां रौ कोटड़ो धणी जिकां रै पाल ॥ ५६ ॥

अर जबरा अड़ियाह प्रथवी सीमाड़ै परै ।
कुसळै कोटड़ियाह राज विखय पुळ में रखौ ॥ ६० ॥

होवै सदा गढ कोटड़ै राज थपो सो रांण ।
धणी पाल मो द्रांगड़ै बा साची कर थाण ॥ ६१ ॥

॥ कवित्त ॥

परचौ बीकानेर

राज गिरे हरराज रतन पुत्री जिण आई ।
नरपत बीकानेर सिंह सूं करी सगाई ।
भूपत पंड में भूत हुआ बौह दीह विळागौ ।
सो अचेस्ट चंडाळ बहोत दुख देवण लागौ ।
मण सवातणै वेगर मई कथन प्रेत डोरो कियौ ।
चे फूल अरधमण सार रौ नरपत गळ बांधं लियौ ॥ ६२ ॥

नृप कन्या वर जोग हुवौ कमधज जीवत अ्रत ।
जेसलमेरे जदी पूछ .कीनी बीका प्रत ।
चवै नाट रायसिंह पेड वेदन नह परणां ।
भणै भाटियौ भोंण कारबारी बुधकरणौ ।
जिण बंस मई पाबू जिसौ सतदेवत ऊभौ वजै ।
छळ छद्र नमै जिण नाम सुण भूतप्रेत अळगा भजै ।। ६३ ।।

मिळ सला मंत्रियों सिंहसा राखी छांने ।
अरबद जेहड़ौ अबर है न तीरथ हिंदुआंणै ।
जो थांनक जांणरी धणी जंगल मनधारी ।
ले वैहळ सांकर लार करी परभात सवारी ।
राज गिर हूंत हरराज चढ़ दळ मुकाम आबू दिया ।
पाल पग ऊभै छत्रपतियां कोळू आय डेरा किया ।। ६४ ।।

।। दोहा ।।

ले सरणौ सूतौ नृपत मढ ओळखै मईह ।
भूत किमाड़ा भांजिया कर छळ छिद्र कईह ।। ६५ ।।
घोर निसा लागौ गयण दस दस बुरछां दांत ।
कियौ कमध ऊपर द्रबौ भूतावळ यण भांत ।। ६६ ।।
सुर भंगवे नरपत चबै उरड़ी प्रेत अणीह ।
विखमी पुळ अबै बणी धावै पाल धणीह ।। ६७ ।।

।। कवित्त ।।

दोड़ भंमर वज दड़ौ हुवौ मढ हूंकारव ।
वीर हाक सांभळां धनुष टंकी धूंकारव ।
कमध तणा कोरड़ा प्रेत मौरां पर वाजै ।
पूळियौ कूक पळीत चीह करतौ रव जाभै ।
वाचा दिराड़ खीलाड़ बृछ चंचळ होठ्ठ चाढियौ ।
पाल कर कार समदां परै कमध भूत नै काढियौ ।। ६८ ।।

॥ दोहा ॥

गज समपै गाढा गरू सिंह सूरदां छत्र ।
दुरगा भोपां नै दई कोळू तांबा पत्र ॥ ६९ ॥
पाल दरस वीकांण पत सो कीनौ रायसिंह ।
बावन हाथी बगसिया एक दिवस अरडिंग ॥ ७० ॥
बूढै पाबू रा बिनै देवळ ऊजळ दूत ।
कमधज सिंह कराड़िया सोव्रन कळस संजूत ॥ ७१ ॥

॥ कवित्त ॥

पनरै सै पनरोतरै वरस संवत वर तीजै ।
मास भाद्रवै मई सुकळ ग्यारस साखीजै ।
सोम भतनै सैलाळ दियौ दरसण ऊजळ दिल ।
मरूधर ऊपरै तपै जोधावत सांतळ ।
खजांना खरबरा खोलने कर आरोप कराड़ियौ ।
आरौप हतौ कचौ अगे दरसण वीका नै दियौ ॥ ७२ ॥

सोभे धांधळ नै पोते रौ खजांनां बतायौ तिणरौ

॥ कवित्त ॥

रूगो रावत दुसट जुलम कारक जलोड़े ।
देछू जातां दिसट पड़ी कूंपासर प्रौड़ै ।
ताडां गोहू वाव मिन्दरां माळा मांडू ।
कर ओवण सह किलम सेवगां दड़े छोडूं ।
सुण वात पसी भोपै स्रवण पाल पगे आया पुळै ।
कर जोड़ उभै अरदास कर विलखै मुख साबळ वळै ॥ ७३ ।
पाबू डगां पाड़ यळा जिण दिन रिव ऊगौ ।
भोपा करसी भिसट दुसट धर वळतौ रूगौ ।
सुण सावळ सैलाळ हुकम देवळ रै हुकमी ।
किधौ सत्रुवां केध वार यण भांगू विखमी ।

उपाड़ी जबर भौपा अखौ जालोड़ै वाळै जड़ा ।
काळजौ तोड़ मुह मोड़ कर धूड़ मिळादै ढेंबड़ा ।। ७४ ।।

।। दोहा ।।

कियौ हुकम जिम हिज कियौ धर खंजर धानंक ।
सींग बधाया सेवगां सत्रुश्रां मांनी संक ।। ७५ ।।

चारण मेहाजी रा लारा सू लिखणा

।। नीसानी ।।

हेक चारण जनमंद हो वसुधा वीकाणैं ।
नर धन जांचण नीकल्यौ रजपूतां ढांणैं ।
वेड मजारै वीसरयौ ऊनाळ लुवाणैं ।
धीज करे यळ धूधळां तव धोम तपाणैं ।
किसट पड़ै तेतीस कोड़ सुर कुसमां रांणैं ।
ऊपर करण न आवियौ कळ घोर कहांणैं ।
धायौ पाबु धांधलोत जप नाम जपांणैं ।
चंचळ जे केसर चढण कर कूंत ग्रहांणैं ।
गडवी ऊठ पताक ग्रह ढळ मारग ढांणैं ।
पाल कृपा जनमंधपण मिट दुष्ट खुलांणैं ।
रैंण मिटै जिम होत है तम नास बिहांणैं ।
पात धणी नै पूछियौ उतपात धरांणैं ।
हब आगे की होवसी जसवंत घरांणै ।
दाखैं पाल जवाब दे नालक नासांणैं ।
पैंतीसैं धर पालटे जालम जोधांणै ।
रैंसी राव मंडोवरौ सिर काबळ थांणै ।
अजन मुरधर धर आवही एक छत्रपत पांणै ।। ७६ ।।

।। दोहा ।।

पाल तणा वायक प्रगट सो सुणिया जसवंत ।
जद मन में यम जांणियौ अटक रहै सूं अन्त ।। ७७ ।।

अजन अगंजी गजन हर गाह्या वपन गिराह ।
चवियौ भोपैं भाकचन्द आगू कथ अवरांह ।। ७८ ।।

सम्मत सतरौ अड़सटौ महिसुध फागुण मास ।
कहिज नखत्र किरतका तिथ सप्तमी प्रकास ।। ७६ ।।

अजन ढाल हिंदू अवन कहूं चेढावण केत ।
पाल दरस आयौ पगां सुन अभमाल समेत ।। ८० ।।

भालाळा सत भाव सूं मेहाणंद कबंद ।
जस तौ तोहक जातरा चविया बावन छंद ।। ८१ ।।

माहेजी रौ छन्द

मेहौ भूलौ वेढ मझ अस कज विनां अमल ।
जस गायौ यूं जांण नै धायौ सुत धांधल ।। ८२ ।।

।। छन्द त्रोटक ।।

दरसाव महासुर पाल दियौ । किरणांपत जांण उद्योत कियौ ।
प्रथमी तिण नांम अखी पढणौ। सिध ताजण केसर जे चढणौ ।। ८३ ।।

कर चोड़व पोतोये केसरियौ। दत खोहथ हूंत अमल दियौ ।
तवजे सत वायक आप तणा । छंद साबत पाल तणा सुणणा ।
अखियौ मत संभ्रम मेह इयूं । हिव चाह यति वंस धांधळयू ।
कहणी मझ नावत आद कियैं। हय मुज्झ गमाणिय सोच हियैं ।। ८४ ।।

स्रवणै जस छन्द पछै सुणहूं । हत्र आंणुअ तुज्झ तुरंगण हूं ।
देवादि कळा विप में द्रढ यू । अस केसर धांधल आरुढ यूं ।
महि सोध वळावळ देव मगे । अस वैंग हुड़ाविय घाल अगे ।
अत व्याकुल कीध कुखैंग अणी। तुरगांण संभाळव तुज्झ तणी ।। ८५ ।।

विध सांभळ जोस वधै विप जे। जस धांधळ पाल तणो जपजै ।

मेहे वायक

कमंधां रिव तौ मझ मान करौ । घण हेत लजावेय मुज्झ घरां ।। ८६ ।।
सिध खत्रिय धांधल वंस सतै । पढ छंद सुणासुअ तुज्झ पछै ।

जत देवकळा गज हुंत जुम्रो । हव बाज समेत म्रालोप हुम्रो ॥ ८७ ॥
वरस्या लभ फूल जणी वरियां । भुम्र डाबर केसर सूं भरियां ।
कव देत प्रमाद हमै कळियौ । सिव खत्रिय पाल म्हनै छळियौ ॥ ८८ ॥
तण धांधळ देव तणी तकयूं । म्रसवार म्रने म्रस म्रोळखयूं ।
सुर पाल वजै जग सीस सचौ । निज पायौय मेह घणौ नैहचौ ॥ ८९ ॥
गणियौ मुझ म्राप तणौज गुणी। धन भाग लख्यौ चख म्राज धणी।
कह ध्रोह कियौ किण कारणनूं । छळतौ नहतौ सुर चारणनूं ॥ ९० ॥
करसूं म्रपघात हमें करसूं । मन धारिय पाल परै मरसूं ।

श्री मुख सूँ फुरमावै

नर मंद क्रमी तुज भाग नहीं । सुर पाल कह्यौ नभ वैण सही ॥ ९१ ॥
पुण छंद सुणूंह परस्सण है । हठ कीनव नांह दरस्सण है ।
तर मोद लियां छंद मेह पढ़ै । सुण पाल तणै चित मोद चढै ॥ ९२ ॥

मेहे वायक

॥ गाहा चौसर ॥

वंस कमधजां पाल बरदाई । वेगड़े विरद वहण वरदाई ।
वेरीहरौ बंको वरदाई । बांको पाधोरग वरदाई ॥ ९३ ॥
उदियौ कुळखीची म्रणभंगौ । म्रापेह पाण इसौ म्रणभंगौ ।
म्रावध हंत हुम्रो म्रण भंगौ । म्ररियां गमै न कौ म्रण भंगौ ॥ ९४ ॥
जींदो पाल बीनै जग जेठी । जग जेवंत बीनै जग जेठी ।
जागै छळ बीनै जग जेठी । जगसै जुद्ध बीनै जग जेठी ॥ ९५ ॥

॥ छन्द त्रोटक ॥

जग जेठिय जींदोय पाल जगा। म्रधपत्त म्रनंमिय म्राप वगा ।
खळ खार खैंखार न बोल खमै। नह कोय किणी पर टांक नमे ॥ ९६ ॥
पाबू जिंदराव प्रमाण पहं । गहवंत घड़ाल सपूर गहं ।
वह कोप हुम्रा विरदेत विनै । वाव धारण वीरत जूंझ वनै ॥ ९७ ॥

वयणै वदवादन काय वळी । टळ सिद्ध सग्गपण मांम टलो ।
धांधळां खीचियां वैर धकै । वेयस नर लाग दबंग विखै ॥ ६८ ॥

मेहले दळ जींदय मच्छरियौ । पाबू धर खीचिय पस्सरियौ ।
जिंदराव तणा भड़ जोड़ जिकं । किय जेत परद्ध तणा कटकं ॥ ६६ ॥

भड़ होय हुकम्म सनाह भड़ं । कस जद्द जरद्द कड़ी छकड़ं ।
किय टोप रंगावळ क्रगळियूं । सज हाथळ सींह सरक्कथियूं ॥१०० ॥

तस रूप तणौ कसणौ तणियूं । जोहग्रिद हुआ भड़ जूसण यूं ।
खुरसांणिय खग्ग छतीस खरा । निज अंग सुछंग रहंत नरा ॥१०१ ॥

कर वेग मलावोय वार कहै । विणाल विडंगय भीण वहै ।
मंढ पीठ पिळांण लगाम मुखं । रिम पाखर रोल घंटाळ रुखं ॥१०२ ॥

कस तंग तुरी सब साज कियं । बलही जिन बाळ विछोवळियं ।
तन रोम रकाव तणौं तरसे । अणभंग हुआ असवार असे ॥१०३ ॥

जिंदराव चढै जमराव जिसौ । दल हालय धांघळ देस दसौ ।
हव हींस हुकम्म हुलास हुवै । भय भंग भयं छत्रपत्त हुवै ॥१०४ ॥

पथपूर कटक्क हुत्र प्रबळा । जिंदराव कजांमळ हेम जळा ।
वहतै दळत्राट धमी विखमी । खळ चाढत सेस न भार खमी ॥१०५ ॥

यम सेन इसा अस ऊळटियं । गिर भंगर पाधर गाहटियं ।
ताग्रजंत अहो निस तंग तुरी। दुरिया निध लेवण हेट दुरी ॥१०६ ॥

फाटी पह पासरणै फरयू । पाहबू धर खीचिय पासरियू ।
लेइ हत्थ करै सब्र लोभ हरं । घण थाट वळे पतदेस घरं ॥१०७ ॥

पुवकार मुखं पुळ लंग पगं । आयौ जाहण उत पाल अगं ।
पाळै तिण राव तणी प्रथड़ा । जिदराव उपाड़िय देस जड़ा ॥१०८ ॥

उठियौ धिक पोरस पाल इसौ। जोय जाणव निग्रंथ बास जसौ ।
भड़ चोळ चखां अत रोस भली।मुख भ्रूंह अणी जाय भ्रूह मिळी॥१०६ ॥

वधिया भुज भोम लगै विमळा। क्रम तेदेय टीकम जेम कळा ।
भड़ वीर हकारत पाल भला । वरियांम चढो वहळा वहळा ॥११० ॥

वड तूंग विरत्त विलक्कुळियं । अत चोडोय लास उतावळियं ।
साकत्त पलांण लगांम सहूं । तसलीम कियां तंग तांणतहूं ॥१११ ॥

सहडां विप वेग सनाह सजे । करमाळ छतीस करग्ग कजै ।
अणभंग तुरंगण आरुढियं । सुरही छळ सूरत सन्नढियं ॥११२ ॥
पाबू पर नेत परठुवियं । काळवीं चढियौ करकूंत कियं ।
भड़ पाल तणा पाराथ भड़ं । आया अणभंग इसा अनड़ं ॥११३ ॥
वरियांम संग्राम जहांम विपै । कियै तैल चंपेल सु चील कंपै ।
धूणियाळ बांहाळ घेटाळ धुवं । हटियाळ कांधाळ त्रकाळ हुवं ॥११४ ॥
लछराळ रंढाळ रोसाळ मनै । विकराळ वडाळ जो काळवनै ।
ढैंचाळ भुजाळ रोदाळ ढहै । सत वीसांए सूर सधीर सह ॥११५ ॥
सोहड़ा चांदियौ इण रूप सजं । मिळ पूनम चंद नखत्र मजै ।
खा आखू पआमळ खंधार खळं । विसळे वद वीरत वीस वळं ॥११६ ॥
भड़ हेकाहे हेक विसेक भणं । पाआरधिय पावक पाल तणं ।
होइया सत्र धंसेय एक मनं । धनधन्न नरां नर पत्त धनं ॥११७ ॥
धांअधळ समौभ्रम धूअ धड़ै । खित मारग पाल तुरंग खड़ै ।
भड़ ईसळ वीसळ भींच भला । गीया पथ पाधर जूंभ झळा ॥११८ ॥
धर धूजत पाय धनंक धरं । कर जोड़ कुदीळ खड़ग्ग करं ।
पाअरधिय लोधिय धीस पुळं । पायक्क अधक्क पुळै प्रगळं ॥११९ ॥
लेवार छक आरत प्रब्ब लगै । वाहरू आय पाल प्रमांण वगै ।
को कर सनेह सह खेम कसं । दम ऊपर डम्बर गैण दिसं ॥१२० ॥
विध तेण रजी अंग पाल वसी । घट जांण महेस वभूत घसी ।
कमधज्ज वदन्न संजोत करा । किर सूरज निकळियौ सेहरा ॥१२१ ॥
इम धांधळ अंस उरव्वड़ियूं । खोचियां दळ आपड़ियौ खड़ियूं ।
विखवांण वदं जिंद्दौं वरूवा ।आवग वाळिय सांमिह वाहर उवा।।१२२ ॥
नर धेन धणी धाड़ोत नरैं । फौजां सज वींटिय जोड़ फरैं ।
नीहसांण दहुं दिस नीध सियं । हरखै पलचारी मनै हसियं । १२३ ॥
ताळी मिल नारद वीर त्रहा । डमरू किय डायण डाक डहा ।
धड़ पाल अनै जिंदराव धड़ा । नह साय सुभट्ट अया नैयड़ा ॥१२४ ॥
पड़ियाळ पखे धिक सार पणं । झड़ कांठळ वीज जबक्क जणं ।
वळिया गढ बोळ दलांह बहुं । गुण तांण कबांण सुपांण गहूं ॥१२५ ॥

सवरी गण पारधिये समरै । किये कुण्डळ राह गनांम करै ।
सर पूर समूह विछूट सनं । मिळ घोर अदारक मेह मनं ॥१२६ ॥
छणकार खतंग निछंट छणै । रुग वज्जिय पंख धनंक रणै ।
फर फाटस नाह सवाह फड़ै । भाग्रलोड़ वंभार करंत भड़े ॥१२७ ॥
गमियौ गयणाग धराग हतं । मिळ घाय घणो दिल रीठ मतं ।
जयकार भणै सुर धार जटा । निकल्या भड़ पाल तणा नैहटा ॥१२८ ॥
होय इक्क सधक्क कटक्क हमं । साबक्क जसक्क धसक्क समं ।
जभ बड़क्क भड़क्क भटक्क भड़ै । फाड़क्क फड़क्क तड़क्क फड़ै ॥१२९ ॥
कसणक्क भड़क्क बड़क्क कड़ा । पिडवक्क थड़क्क दड़क्क पुड़ा ।
मुरडक्क मुडक्क असंध मुड़ै । जुध पाल अनै जिदराव जुड़ै ॥१३० ॥
मिळ चट्ट पगट्ट सुभट्ट मिळं । दुजड़ाहत पाल भड़ै दुझळं ।
फरड़ाहक बोलत फींफरियूं । करवा हत पाल करं मरियूं ॥१३१ ॥
काळवीं कर हाहुळ मोर कळा। लख थाट थिरै पिक झंपलुळा ।
असवार अभंग सुचंग इसी । रण जाय जणौजण रूंकरसी ॥१३२ ॥
मछराळ खेंगाळ सुताळ मतौ । रोहराळ बंबाळ भलाळ रतौ ।
हाडाळ गोडाळ डालाळ हुआ । जांण साल जंभाळ जड़ाव जुवा ॥१३३ ॥
विमुहाळ कांधाळ विचाळ विरं। उवचाळ बंगाल सिंगाळ अपं ।
घड़ घाव वडाळ ओलाळ घड़ै । पड़नाळ प्रनाळ चाणाळ पड़ै ॥१३४ ॥
गळमाळ रम्भाळ गुंथाळ ग्रहै । कर माळ मुंछाळ भूटाळ कहै ।
मोसाळ भूखाळ पंखाळ मिळै । गूदाळ रसाळ गालाळ गळै ॥१३५ ॥
तज रज्ज रडै धारां त्रजड़ै । भल साळ पड़ै भळ पाल भड़ै ।
वड नांम समापेय धेन वड़ै । चांदियौ रण नांमेय चांद चड़ै ॥१३६ ॥
लोहां मुख पायक चीत लहै । रिण खाखूअ पेमल साथ रहै ।
विसळै वियरत्त विखंम कियूं । खिचियां दळ जुद्ध थयौ अखियूं ॥१३७ ॥
किय पारधियें कल नांम कथं । सत वोसांय सीधाय पाल रथं ।
राठोड़ संग्राम करै रहियूं । गऊ बाहर पाबूह गोग हियूं ॥१३८ ॥

॥ कवित्त कळस रौ ॥

गउ बाहर गोग इयूं पाल पर जुड़ै इसी पर ।

जींदे सूं जुध जाग कियौ उजळौ कर सर ।
वांमै रम्भ वरेह बांन कमधज्जां वद्धै ।
पूरौ आस पळछरां लियौ अमंख धो लद्धै ।
सत्र जींद थये धांधळ सूं इम थिर नांम ससेन सह ।
प्रणमंत मेह पाबू प्रसिध तो पर सिळूं प्रमांण पह ॥१३६ ॥

मेहेजी रं कह्या सम्पूर्ण

॥ पुनरपि ॥

कळ खेंग वलावळ वेग क्रमै । रिण पाल जगोजण रूंख रमै ।
ग्रहै मेह परै निज भाव घणौ । तुझ सांभळ धांधळ राव तणौ ॥ १ ॥
लिप मेह पढै विसरांम लियै । दिन ऊजळ देव हुंकार दियै ।
मनस्या हित देविय पुत्र मनै । कन मेह हतौ जिणवार कनै ॥ २ ॥
सुर पाल दियौ जस सांभळियौ । करसूं नभ मारग कांवळियौ ।
तन तुज्झ रहे जग मेळ गत्यां । झड़सी इक मौहर झाटकतां ॥ ३ ॥
कर धूंप प्रभातेअ छन्द कियूं । दत मोहर रींझ हमेस दियूं ।
चित मूंन ब्रतंत यहे सहजे । किण आगळ वात मती कहजे ॥ ४ ॥
विण दीहसु पूज स्तुती वणिया । श्रवणौ छन्द मेह कह्या सुणिया ।
सुकथा फिर दूहाय बंध चवी । कर राज कृपाल धराज कवी ॥ ५ ॥
कथ वात सम्पूरण चाढ कळी । बुधराज वखाणिय ख्यात वळी ।
सुनरां मुख वैण जिता सुणिया। कवता मतसूं कर छन्द किया । ६ ॥
सबही कथ मालम वात सखी । लधराज कही बुधराज लखी ।
लख श्रोज तणा गुण अंग लई। मुणिया सब्र छन्द प्रसाद मई ॥ ७ ॥

कव वायक

मन वाय अनै क्रम हूंत मणी । तत कीरत पाल कमंद तणी ।
घट मांझ रखे द्रढ भाव घणौ । तवियौ जस मोडय पाल तणौ ॥ ८ ॥
भल दीह सुधारण मौ भव रौ। काळवीं असवार धणी कव रौं ।
घर आंणत वित्त नठौ गमियौ। सेवगां धन दे अण चिंतवियौ ॥ ९ ॥

पुळ आंण वर्ण कव मोड परै । कमधेस रती नह जेज करै ।
सुण पाबुअ थांन रहै सुख में । दरसै नजदीक घणौ दुख में ।। १० ।।

तुरतां लज राखण मोड तणी । धर धावेय तीजिय ताल धणो ।
रज बंधिय वात हुवां रिमरी । भुअपाल तुं पाल चढै भँवरी ।। ११ ।।

दोहरी पुळ सेवण भीड़ दियां । काळवीं चढ आवेय साद दियां ।
अम संगट मोद धरै अरसै । दनजै तुरंगांण चढ्यौ दरसै ।। १२ ।।

प्रभणौ थळ खाबड़ देसपती । जसलै जुगजीवहै पाल जती ।
देय खाग अरी थट सोंह दुऔ । हव पाल महा सिध पीर हुऔ ।। १३ ।।

धव लंगाय धांम धजा धवळी । धरही घर माट वजै गवळी ।
अम पीड़ हरै सुर वार अणी । धन है कवळू मढराज धणी ।। १४ ।।

कमधेस मनै वडभाग कियौ । दत तौ सुत पाबुअदांन दियौ ।
थिर पावळ गावेअ मोद थियौ। कवळू मढ़ जाय जुहार कियौ ।। १५ ।।
गणिया तद अमृत री घड़ियां । पढियौ ज़द रूपग पावडियां ।

।। गीत ।।

गायौ पालनै सुकवी गुण गीत । धारे अढगरी देवीध ध्यान ।
दीनो पाबू देव करे दत । दांन मनै सुत पाबू दांन ।

सोळै तेवीसे लग सांचौ । रटियौ नित कोळू मढराय ।
धांधळ सुतन जिसां धणियांरौ । जस कीधौ ऐहळौ नहिं जाय ।

देमां वंस वधारण दीपक । घणौ उजाळो कीनौ घर ।
भांमी तो ऊपर भालाळा । जोमी सुध लीनी जबर ।

माथौ हव जिणरौ दूखो मत । घणी अमी रौ निजर धरौ ।
राखै कुसळ बेगड़ा रावत । करो रीझ निरवाह करौ ।

।। छंद ।।

जस सूं रम भाग वधै जग में । पढतां अतरा गुण रूपग में ।
जस भूपत ईश्वर रौ सजियौ । कव पाल तणौ वरणांम कियौ ।

जुध थांनक राज सख्यात जथा। कुळ धांधळरी यण मंझ कथा ।
भल रूपग मोड कह्यौ भणतां । सुरपाल रंजै पढतां सुणतां ।

मन ग्रामय मोड उदेग मिटै । पढतां विप तेज कळा प्रगटै ।
वड भाग हौवे सुभ दीह वळै । तिण पाठ कियां सह रोग टळै ।
पोरसातन जोम वधै प्रबळा । कजियैं घट व्यापत देव कळा ।
ग्रत भोमज पाबुग्र नांम ग्रगे । भूतावळ गोटाय दूर भगैं ।
रोहियां मग भूल विडांण रहै । छळ छिद्र नसै जिण नांम सुणै ।
जळ ग्रानळ पाल धणी जपजै । ग्रह ग्रादवड़ा डर नां उपजै ।
केइ भूप पखायत बंधकणी । धुर मुझ्झ हेमायत पाल धणी ।
गय वाज प्रबै धन धांन घणौ। तन मोड तणां बळ पाल तणौ ।
मुझ ऊपर पूर रखौ मरजी । ग्रतरी सुण पाल ग्रमां ग्ररजी ।
घर खोस लई सत्र मुझ धणी । कव गांव महीं नह जोग कणी ।

॥ कवित्त ॥

गयण नखत्र कुण गणै गणै कुण वसुधा रजकण ।
तेरू दध कुण तरे निगम गम करै कवण जण ।
कुणलै उतर छेह कवण चित्रै नभ मण्डळ ।
व्रह्मनाळ कुण गणै कवण घण पुणग गणै यळ ।
समापत सेस नह कर सकै धर हिंदुवांणी ढाल रा ।
कुण कहै रसण एकण कवी पूरण परचा पाल रा ॥

॥ दोहा ॥

परचा पूरण पाल रा सो कुण कहण समत्थ ।
सुणिया जै मोडे सुकव कहिया रूपग कत्थ ।
रात दिवस मन में रहै वरणूं वचन विचाळ ।
दरसण मोनूं दीजियै भमर चढै भालाळ ।
सवदाडंबर कीय सूं धर ग्रम्बर लग धार ।
रूपग ग्रमर रहावसी रैवत भमर सवार ।

॥ कवित्त ॥

सापुरसां सूरमां ग्ररी गाहण ग्रड़साळां ।
जबरां दयण जबाब ग्रथग मत दात्रीयाळां ।

जीव जोत जोधरां कळह धीरां कंठीरां ।
रखणा सरण खूनियां वचन कायम वर वीरां ।
वायक सुण विळकुळै हुवै पोरस हूंकारौ ।
अंग वीरारस आय चखां मुख दरसै सारौ ।
पिंड पाल तणौ पोरस पवन वधै जोस मो मन घणौ ।
उण सभा मंहो साबत अरथ बंधै रूप रूपग तणौ ॥

कम पौछां कायरां ठहै सठ ठीगा ठोळी ।
मैला घटां जवांन तठै जिण सूरां टोळी ।
भगत भाव गउभेष मिळै ठाकुर मावडियां ।
सूधा सरल सभाव छैल पिणघट लावड़ियां ।
नर यस सभा आवै नजर चित मझ रोस न चाढणौ ।
तिण ठौड़ पाल रूपग तणौ कवियण वचन न काढणौ ॥

कव वञ्छना कवित्त कुण्डलियौ

पाल तुझ्ज देवत पणौ कमधज जदे कहाय ।
मैं कीनौ रूपग जिकौ यळ पर मालम थाय ।
यळ पर मालम थाय वरत लख जाय वळावळ ।
जांणै नृप जोधांण अरथ चरचूं जिण आगळ ।
मोद रंजै मुरधरा अरग पाबू आठौ मझ ।
जांणै सकळ जिहान रूप डींगळ रांणा रज ।
ववरै तुकां सारी वसा सोखै के चरचै सुणौ ।
तद गणूं तूठ धांधळ तणा पाबू तो देवत पणौ ॥

पाल जेम आविया सुणै देवळ री सावळ ।
पाल जेम आविया राव गोगै तणी आचळ ।
पाल जेम आविया धिया रतनां दुख हरवा ।

पाल जेम आविया कोटड़ै ऊपर करवा ।
छडियाळ हथां सावळ सुणे धुरज भंमर चढ धावजे ।
कव मोड तणी ऊपर करण उण वध पाबू आवजे ॥

अप्रापत ज्यां अळग भाग प्रापत ज्यां नैडा ।
नह मांनै ज्यांरै कदन सुदन मांनै सुख खैडा ।
निरधन जे नह नमै नमै धनवंत सदाई ।
है गरीब नह जपै जपै जे धींग सदाई ।
कर पाठ उदं सेवा करै कमी जकां वात न कणी ।
पावै तुरंग गज गांम पुत्र ध्यावै जे कोळू धणी ॥

॥ दोहा ॥

चवी बतीस छतीसा या वडा बाप मो बंक ।
तबूं भाग जाडे तिके आखर आडे अंक ।
मालम धर बुधमाल रा आखर चारूं ओड़ ।
कह रूपग भेळा किया रैणाकज राठोड़ ।
कवराजा नरपत कियो मेधा पारख मांन ।
कव मत मंडण गुण कियौ बंधु बांकीदांन ।
पाल पोरसातन प्रगट जोड़ नाम दिय जब्ब ।
कव जूंजाऊ गुण कियौ मोडै पौछ मुजब्ब ।
वैर पुराणा वाळवै उर विच ऊठै अग्ग ।
सुण सूरां मन दे जळै पाल तणा रूपग्ग ।
सहर कोय ठाकुर चढै भुज पाकड़ भालोह ।
तिण नै जस पाबू तणौ पौरस रौ प्यालोह ।
विप ऊठै वैराग थाकल यूं अंजस चढै ।
वीर आग वजराग रूपग पाल सुणेर जो ।
कायर ही सूरौ हुवै पाबू सुजस प्रसंग ।
हुवे आंवळा सार सूं पारौ काजळ रंग ।

॥ कवित्त ॥

ऊगेइज ऊगे अरक निसा दरसै हिज उडगण ।
पसरै हिज धर पवन तरंइज दध पर तारुण ।
नारायण रै नांम हुवै उद्धार न संसय ।
पड़ी वस्तु ज्वाळानळ दहण दाहै इज संदय ।
करसै सहाय विजनस कमंद घट मांभळ धीजौ घणौ ।
नर हियै यतौ नहचौ रखै तौ नैड़ौ धांधळ तणौ ॥

॥ दोहा ॥

देसी जद पाबू दरस करसूं मन अत कोड ।
जग सागै यम जांणसी मेहे ज्यूइज मोड ।
मिळसै जद पाबू मनै सो दन अत सारोह ।
औ मो लेखे ऊगसी सूरज सोनारोह ।
दरसण मेहा नै दियौ जस थोड़ै जूंभार ।
रटियौ मोडै राज रौ रूपग तीन हजार ।
बांधव धाबळियाळ रौ पाबू सर प्रगत्त ।
सांभळ रूपग पाल रौ सुप्रसन हुवौ सगत्त ।

कवी री फरियाद

॥ छंद ॥

कहिया सु पाल धणी कळजे । सुकवी रौ सावळ सांभळजे ।
वत लेकर बैठौय साहवजे । उण दी धन मोनुअ जाब अजै ।
थित पूगइ राज तणी थळियां । उणनू कर पायक आवळियां ।
न बधै तन गाम लगौ न रती । धुणियाळा रा भूप छुटौ धरती ।
हल कीजै ऊपर वेग हमै । सुप्यारी रा सायब एण समै ।
वैरियां मिळ वार करी विषमी। हव सांभळ देवळ रा हुकमी ।
मम साथ दरावेय आय मणा । व्रजलाळय नायक आप तणा ।
सेवगां दुखियौरी कूक सुणी । काळवीं असवार गो दीपकणी ।
राखौ जद खांवद लाज रहै । विप डूबौ ऊपर वांस वहै ।
सुकवी रौ तौ ऊपर रीभ समै । खिण फौरिअ छाछ न फूंक खमै ।

मम संकट में नह काय मणा । थू गयौ कित धांधळ राव तणा ।
१ आद अनै २ गौळरौ ३ विनोदक ४ फेर विरोधी ।
५ पाल ब्याव ६ अक्रान्त समय पुर बावण सोधी ।
७ उत्तर समर प्रहार अवर ८ बूढा जुध आगळ ।
९ रातीवाहो रात १० क्रमी सतीयां सुण कागळ ।
११ ले वंर जोग झरड़ै लियो १२ परचा देवत पाल रा ।
छै रूपग द्वादस समा म्हनै दिरावण माल रा ।

॥ दोहा ॥

छै द्वादस रासा सिरे भणूं द्वादस भेद ।
द्वादस समिया पाल रा एवा करण विछेद ।
पुंज तेज रौ पूतळौ पाबू सुजस प्रचंड ।
औ मेटै कातर पणौ तिम औ मेटे तड ।
अरक उगै मेटै अवन सिय तम चोर उपाध ।
तूं मेटै धांधळ तणा वीर आद नै व्याध ।
जोग पंथ हरि भजन सूं तीन पीर काबूह ।
पीर जूंझ पूजीजिया गोगो नै पाबूह ।
उदै एक आदोत सूं रहै वरण ध्रम रीत ।
कव मोडै वरणन किया ऐ बारै आदीत ॥

इति श्री पाल पोरसातन मुरधर भाषा कवि आसिया मोडजी कृत
पाबू प्रकास सम्पूरण

पाबू प्रकाश का कथा-सार

उतपत रौ समौ (१ से १४)— कवि मोडजी आसिया (चारण, राठौड़ों की कीर्ति और गौ-रक्षा की भावना की प्रशंसा करते हुए पाबूजी के पूर्वज राठौड़ों की वंशावली का वर्णन करते बताते हैं कि कोलूमढ (जोधपुर-मारवाड़) के राठौड़ आस्थान के पुत्र धांधल बहुत ही चतुराई से अपना राज्य चलाते थे। उनके राज्य की शोभा अतुल एवं वर्णनीय थी। वे महान प्रतापी और वीर राजा थे। एक समय उन्हें किसी इन्द्र की अप्सरा को देखने का सौभाग्य मिला, जो इन्द्र के श्राप से, धरती पर मानव देह धारण कर अपने श्राप के दिन बिता रही थी। इस अप्सरा का यही दोष था कि इसने इन्द्र के दरबार में मानव देही की प्रशंसा कर दी थी धांधल अपनी रानी कमलादे के साथ सुख से जीवन बिता रहे थे। एक रात वे मृगया करते किसी सरोवर के किनारे विश्राम करने रुके और प्रातः स्नान कर तैयार हुए तो एक अप्सरा आकाश मार्ग से उतर कर उनके पास आई। परस्पर नजरें चार होते ही धांधल अप्सरा के रूप पर मोहित हो गये। प्रेम में फंसे धांधल दिन को राजकाज करते और रात को रानी से छुप कर अप्सरा के साथ, विशेष महल में, जो उनके महल से दूर अन्यत्र ही बना था, उसमें आमोद-प्रमोद करते। अप्सरा की कोख से ही कथा के नायक वीर पाबू का जन्म हुआ। रानी कमलादे को धांधल के इस उपक्रम के प्रति संदेह होने लगा और एक रात वह भी चुपके से सत्य की खोज में उनके पीछे-पीछे घोड़े पर सवार होकर चल पड़ी। रानी को आई देख अप्सरा ने धांधल को अपनी कथा का रहस्य बता दिया और अपनी मानव देह तज अलौकिक अप्सरा बन कर आकाश मार्ग से स्वर्ग में चली गई। राठौड़ धांधल रानी कमलादे पर बहुत नाराज हुए और उसकी प्रताड़ना की। रानी ने उसे पाबू को अपने पुत्र के समान पालन - पोषण करने का विश्वास दिलाया और उसको अपने महलों में ले आई। प्रातः ही पाबू के जन्म की विधिवत् घोषणा की गई और महलों में बधाइयाँ दी गई। अब पाबू दिन प्रतिदिन बड़ा होने लगा। उधर आणंद के घर देवल का जन्म हुआ। वह भी अपने पिता के घर बड़ी होने लगी। उस अप्सरा ने देवल से कहा था कि वह घोड़ी के रूप से उसके पास आयेगी और युद्ध के समय पाबू की रक्षा करेगी। धांधल राठौड़ के दो रानियें थी। बड़ी रानी भटियाणी से 13 पुत्र हुए तथा छोटी रानी कमलादे से पाबू सहित 8 पुत्र व 2 पुत्रियें सोनल व पेमल हुई। इस प्रकार कोलूमढ पर राज्य करते धांधल का अंत में स्वर्गवास हो गया।

गोळ रौ समौ (१४ से २८)— धांधल की मृत्युके पश्चात् उसका पाटवी पुत्र बूढौ(बूडा)कोलूमढ की गद्दी पर बैठा । बूढो छत्तीस गुणों से सम्पन्न था और राजसी गुणों से भरपूर था । सारंग ने बूढो से गोल (नागौर) वापस लेना चाहा । युद्ध के बाजे बज उठे । अकाल के समय बूढो ने अपने पाराधियों की रक्षा की थी जिससे वे उसके स्वामीभक्त बन गये । सारंग का दूत बूढो के पास आया परन्तु बूढो बिना युद्ध के जमीन वापस देने को तैयार नहीं था । जब दूत के मुख से यह बात सुनी तब सारंग नाराज हुआ और हुक्म दिया कि अकाल के कारण इधर आये लोग अब वापस चले जायें । लेकिन जायलनाथ जींदराव फौज ले आया । कोलूमढ में रणभेरी बज उठी । धाँधल के युद्ध पराक्रम से जींदराव घबरा उठा । चाँदा और ढेबा के विकट प्रहारों के सामने जायल-फौज के पैर उखड़ गये और गोल की भूमि राव बूढो के पास रह गई । बूढो ने जींदराव को भागता देख क्रोध से पाबू को कहा कि यदि जींदराव जीवित चला गया तो हमारे क्षत्रियत्व को धिक्कार है । पाबू ने भी प्रण किया कि सारंग व जींदराव को कैद न कर लूं तो धांधल का पुत्र नहीं । पाराधियों ने भी बूढो के आगे प्रण कर लिया कि वे खीची जींदराव की सांडियें, गायों व घोड़ियों को लूट लावेंगे । जींदराव व बूढो परस्पर युद्ध के लिये पुनः तैयार हो गये । जींदराव युद्ध छोड़ कर भाग गया और पारधियों ने उसके घोड़े लूट लिये, पाबू भी पारधियों को साथ ले युद्ध करने लगा और गाय, भैंस, घोड़ियां लूट ली, सारंग मारा गया । तब गोरखनाथ ने जींदराव को दर्शन दिया और बैर लेकर विजय प्राप्त करने का आशीर्वाद दिया, जींदराव को अमरता का वरदान देकर गोरखनाथ लुप्त हो गये ।

विनोद रौ समौ (२९ से ४१)— खीची जींदराव अपना बैर लेने हेतु फिर से सेना इकट्ठी करने लग गया । उसने अपने पिता सारंग का बदला लेना चाहा । अप्सरा ने अपने वचन-प्रमाण देवल के घर घोड़ी के रूप में जन्म लिया जिसे देवल ने पाबू को सवारी के लिये दे दिया और इस 'केसर' नाम की घोड़ी से पाबू ने पहला युद्ध जीता । कोलूमढ में बूढो की विजय की खुशियें मनाई जाने लगी । सभी लोग पाबू का यशोगान करने लगे । उसके प्रभाव से गोओं की रक्षा होने लगी । पाबू और कालवीं केसर का यह मिलन एक दैविक संयोग था जो अप्सरा माँ की इच्छा का परिणाम ही था । फिर देवल के भतीज की बरात में पाबू भीलों को साथ लेकर गया । सिंध के अलहणपुर पाटण में रात को ठहरा उससे पहले अलहण राव की सांढियाँ को सिंध का मिरजा सायर उठा ले गया और चारण पाबू के पास रक्षा के लिये गये । अलहणपुर पाटण के बाग के माली ने उनको वहां निवास करने से रोका पर रात को वे जबरदस्ती वहां ठहर गये । प्रातः मिरजा का पीछा करके दिन भर चलते हुए उसे पकड़ लिया और वापस लौटते सोनभद्र नदी में घोड़ों को नहलाया । जब उन्हें मालूम हुआ कि खीची लोग कोलूमढ के पास हमला करने आये हैं तो सभी राठौड़ वापस रवाना हुए और खीचियों को पराजित कर असरफियां को लूट कर कोलूमढ में आ गये । इधर माता कमलादे अपनी

दोनों पुत्रियां सोनल और पेमल को विवाह योग्य जान बूढो व पाबू से कहने लगी कि वे उनके विवाह की व्यवस्था करें। बूढो ने बताया कि सोनल को सिरोही वालों को व पेमल को जींदराव खीची जायल वालों का व्याह देगा। इस पर पाबू ने विरोध किया कि पेमल जींदराव को नहीं व्याही जाये। बूढो ने बताया कि जायलनाथ से बैर मिटाने का यही मात्र उपाय है। माता भी बूढो के विचार से दुःखी हुई। बूढो के आग्रह पर पाबू और बूढो में भी परस्पर विरोध हो गया। सातां थोरियां पाराधियाँ) को साथ ले वह घर से निकल गया। फिर कभी कोलू सीमा में न आने की उसने कसम खा ली। इस प्रकार पाबू व सातों भील लूटपाट मचाते घूमते रहे। रायपाल व पाबू में लड़ाई छिड़ गई और साय आमेर आ ठहरे। पाबू ने मण्डोर इन्दावाटी भी जीती।

विरोध रौ समौ (४२ से ५०)—माता कमलादे और पुत्र बूढो ने गुप्त मंत्रणा करके पेमल की सगाई का नालेर खीची जींदराव के पास भेज दिया, जांन आ गई, सांमेला हुआ। कमलादे ने पाबू को भी निमन्त्रण दिया, तब चांदे ने घोड़ों को तैयार करने का हुक्म दिया। सांमेला के बाद पाबू वापस घोड़े फेर कर चला गया। जींदराव ने दायजे में केसर घोड़ी को लेने की इच्छा जाहिर की। बड़जानियों ने जींदराव को केसर घोड़ी न लेने को समझाया पर जींदराव नहीं माना। उसने कहा कि केसर घोड़ी दायजे में नहीं दी गई तो अपना बैर नहीं मिटेगा व पेमल के साथ विवाह नहीं होगा। बूढो इस विपत्ति में माता के पास आया। मां भी दुःखी हुई। जींदराव ने गोरखनाथ का वरदान याद कर पेमल से विवाह कर लिया। पेमल के साथ आमोद-प्रमोद करते हुए भी वह केसर घोड़ी को नहीं भूला पाया। सोनल के विवाह के लिये सिरोही के देवड़ा की बारात भी कोलूमढ आ गई। पाबू मन ही मन बहुत प्रसन्न हुआ। बहन को दत-दायजे सहित विदा किया। बूढो के मुख से जींदराव की बात जब पाबू ने सुनी तो वह मन में क्रोधित हुआ। पाबू ने अपने भील साथियों से कह दिया कि अब अपने मरण के दिन आ गये हैं, सभी तैयार रहें।

आव्हान रौ समौ(५१ से ८५)—पाबू ने कहा यदि जींदराव केसर घोड़ी ले ही जावेगा तो फिर पाबू किस गर्व से जीवित रहेगा। इधर पेमल व जींदराव में मन मुटाव हो गया। देवल चारणी भी इससे संतप्त हुई। उधर सोनल को जब देवड़ा ने दुःख दिया तो पाबू घोड़ी पर सवार हो लूटमार मचाते सिरोही आ धमका और देवड़ा राय को कैद कर लिया, पर बहिन के याचना करने पर बहनोई को छोड़ दिया। पाबू की वीरता सुन अमरांणे के सोढा राणा ने अपनी पुत्री सुपियारदे का विवाह पाबू से करने का निश्चय कर नालेर भेज दिया। पाबू की माता को इससे महान् हर्ष हुआ, अमरकोट के सोढों का सारा हाल पूछा व जोशी को अपना राठौड़ वंश का सारा वृतान्त सुनाया। इस बीच ही बूढो की पत्नी गैली बोल उठी कि यह सम्बन्ध उचित नहीं। हमारा व सोढों का परम्परागत वैर रहा है इसलिये शादी करके भी पाबू का जीवन सुखमय नहीं रह पायेगा।

चांदे ने गैली के कथन का विरोध किया और बोल उठा कि पाबू को कोई नहीं परणावें तो हम सातों भील विवाह करा लायेंगे। चांदे के कथन से नाराज हो बूढो माता से कहने लगा कि पाबू को पाराधि मित्र ही परणायेंगे, हम तो जांन में नहीं जायेंगे, अब मरुधर की धरा पर रक्तपात होकर रहेगा। चांदा तब बोल उठा कि नियति ने जो लिखा है वह होकर रहेगा। जींदराव ने जो युद्ध किया तो मुक्ताफल की माला बिखर जायेगी लेकिन पाबू उसकी दासता स्वीकार नहीं करेगा। भोजोराण ने घोड़े लूट लिये पर चांदे ने उसे हराकर सारा माल उससे लूट लिया। सोढों से कुंकुंपत्री आई, तब पाबू ने कहा कि अमरकोट विवाह करने को वह अकेला ही जायेगा। पाबू वर बन कर गया तो देवल अपशुकन देने लगी। पाराधियां के पूछने पर देवल ने बताया कि इस ब्याह में विघ्न होगा। ढेबे ने उत्तर दिया कि पाबू के रहते किसी को दुःखी होने की जरूरत नहीं। पाबू के जांन चढते ही ऊसर धरती हरी भरी हो गई। ढोल बजते वह बरात अमरकोट के गढ़ में चली गई। जांन में आळ ऊदल, नीबो, बाहड़दे, रणधमल आदि अनेक राजा साथ गये। इस तरह खेड़ के राजा रायपाल, जसराज, बलोच आदि लोग सोढा सूरजमल के सांमेले में मिले। उधर बूढो ने जायलराव को पत्र लिख कर एक ओठी के साथ भेजा। उसने नागौर के पास बरात से मिलने की तैयारी की। राघोगढ व गढ गागरौण के खीचियों को साथ ले जींदराव पाबू से लड़ने को तैयार हो गया। जब पेमल को दासी से यह समाचार मिले कि जींदराव पाबू को मारने जा रहा है तो उसने कहा कि पाबू अप्सरा का दूध पीकर बड़ा हुआ है उसे कोई नहीं मार सकता। परन्तु यह षड़यन्त्र रचा गया कि देवल की गौओं को लूटा जाय तो पाबू जरूर उनकी रक्षा में आयेगा, तो पेमल ने कहा यह बूढो ने बुरा किया; इसमें राठौड़ व खीचियों के वंश का नाश ही होगा। मार्ग में अपशुकन होने लगे। बरात के लोगों में शंका होने लगी। पाबू ने भी शकुन विचार कर सभी सरदारों से कह दिया कि अब सुपियारदे को तेल चढी नहीं रखेंगे, शादी अवश्य करेंगे; परन्तु हमारा भविष्य निश्चित् ही युद्ध और मौत है। अतः क्षत्रिय के नाते युद्ध करके मंगलमय मृत्यु के साथ भी आलिंगन करेंगे। उधर देवल की गायों को जींदराव ने लूट लिया, वह पाबू से गौरक्षा की याचना करने लगी। इधर जसराज व रायमल होनहार गत पर चिन्ता करने लगे। अमरकोट सोढा के साथ बारह सरदार-घाट, कछ, डूंगर, बड़, लवा, ईडर आदि के मौजूद थे। लांबै तालाब के पनघट पर पानी भरने वाली युवतियां की रूपशोभा अवर्णनीय थी। वे नवकोट के धणी की बरात को एवं वर के रूप में पाबूको देख मोहित हो गई। बरात का सामेळा हुआ तब सोढा सूरजमल ने कहा कि जींदराव बड़जानी बन कर बरात में क्यों नहीं पधारे? बूढोजी भी जान में नहीं आये, यह क्यों? चन्द्रभाण ने बताया कि देवल ने पाबू को केसर घोड़ी प्रदान की उससे बूढो नाराज हो गये और जिस जींदराव ने गायें लूटी उसने केसर घोड़ी दायेजे में न देने से नाराजगी दिखाई है। पाबू-सुपियारदे का विवाह होने लगा। चौंरी में ही गठजोड़ा त्याग पाबू चारणी की गायों की रक्षा हेतु घोड़ी पर सवार हो युद्ध हेतु प्रस्थान करने लगा। सुपियारी ने पाबू से विनय की कि यदि नाथ का हुक्म हो तो वह

भी रण में उनके साथ चले। उसने बहुत ही आग्रह किया। अन्त में सती होने की इच्छा प्रकट की और पाबू से कहा कि आप विजयी बन वापस आकर सुपियारी की सार संभाल नहीं करोगे तो यह क्षत्रिय-कन्या विधवा बन कर जीवित नहीं रहेगी; अग्नि में जल कर आपका साथ निभायेगी। तब पाबू ने अपनी प्रियतमा से इतना ही कहा कि, "हे प्रिये ! जिस दिन मेरा मोळ्िया (साफा)तेरे पास आये उस दिन तू देरी मत करना और जो जीवित आ जाऊँगा तो अपने जीवन का सुख-लाभ हम दोनों जरूर भोगेंगे।" इस प्रकार सभी सगा - सम्बन्धियों व बरात के साथ के सरदारों को प्रणाम कर मांझल-रात में ही पाबू ढेंबे को साथ ले युद्ध-प्रयाण कर गये। प्रभात के समय कोलू की धरा पर युद्ध का कोलाहल मच गया।

आक्रान्त रो समौ (८५ से ११६)— गायों को लेजाते जींदराव के साथ युद्ध करने की देवल की प्रार्थना को बूढा ने ठुकरा दिया। तब देवल ने बूढा को धिक्कारा और कहा कि तू राठौड़ आसथान का वंशज है इसलिये मुझे तुझ पर अति भरोसा था, परन्तु तू क्षत्रियत्व को कलंकित करने वाला कायर ही रहा। धाँधलोतों ने जब ललकार की तब बूढा ने सबको युद्ध में न जाने की बात कह रोक दिया। देवल गढवाणों से कहने लगी कि मेरा सपूत भाई पाबू बहुत-2 दूर अमरकोट गया है, उसको मेरी पुकार कैसे सुनाऊँ ? सामन्तों ने कहा- हे, काछेलियों। मन में दुःखी मत होवो पाबू तुम्हारी पुकार सुन विवाह-मण्डप से ही आधी रात को तुम्हारी रक्षा हेतु रवाना हो चुका है। देवल को सन्तोष हुआ। पाबू मोड़ बंधे ही देवल के पास आ गया और उसे मुजरा किया। चारणियाँ रोने लगी। तब पाबू ने उन्हें ढाढस बंधाते हुए कहा- हे बायां चुप रहो ! तुम्हारी गौऐं तुम्हारे ठिकाने आयेंगी, पाबू के रहते गाँओं पर कौन आघात कर सकता है ? देवल से कहा कि तेरी दुःख भरी पुकार सुन मैं अमरकोट छोड़ कर आ गया हूं। अब तो गायों के लिये मरण-त्यौहार ही मनाया जायेगा। चांदा व पाबू अपने साथियों सहित युद्ध के लिये तैयार हो गये। ढोल बजने लगे, चांदा भयंकर हूंकार करने लगा। चारणी देवल अन्य देवशक्तियों के साथ पाबू का पराक्रम देखने लगी। मां कमलादे ने मन ही मन पाबू की वीरता पर सुख का अनुभव किया और कहा हे क्षत्राणियो ! तुम यदि पुत्र पावो तो पाबू सा पुत्र प्राप्त करना। बूढा भी माता के कहने पर पाबू के साथ युद्ध में गया और देवल से क्षमायाचना की तब देवल ने दोनों भाइयों को वरदान दिया। बूढो की बहू गेली ने बूढो को युद्ध में जाने से रोका पर वह नहीं रुका और धांधल के चौदह पुत्र पाबू के साथ जींदराव से देवल चारणी की गायें छुड़ाने को प्रस्थान कर गये।

उत्तरायण सम्प्रहार रौ समौ (११७ से १३६)— पाबू ने जींदराव के दल को जाकर ललकारा। जींदराव ने अचलावत एवं मेलावत सरदारों से कहा कि गायों को घेर कर शीघ्र ले जावो, मार्ग में ही युद्ध होने की सभावना है। जब वे लोग

तेजी से बढ़ने लगे तब ढेबे ने युद्ध के लिए ललकारा और उनसे कहा कि कायरो! क्यों भाग रहे हो ? पाबू के सामने युद्ध करो, हम युद्ध में मर कर ही पाबू के सच्चे साथी कहलायेंगे। तुम भी युद्ध करो। तब तक पाबू भी वहां आ गये और उन्होंने खीचियों सहित गायों को रोक लिया। इस तरह धांधल के इक्कीस पुत्र वहां लड़ने को उद्यत हो गए। जींदराव अपने किये पर पछता रहा था, परन्तु गोरखानाथ के शब्द उसे बार बार याद आ रहे थे। उसे तो गोरखनाथ पर ही भरोसा था। पाबू को जीतना व केसर घोड़ी को लेना उसके लिए मुश्किल था। पाबू की घोड़ी ने ढेबे को पहचान लिया और ढेबे ने कालवी की हिनहिनाहट से पाबू को, तब ढेबा बोल उठा कि पाबू को शक्ति का वरदान है और जींदराव को गोरखजती का, परन्तु हम तो पाबू के साथ ही मरेंगे-जीयेंगे। पाबू की घोड़ी ने युद्ध में भयंकर तूफान मचा दिया। पाबू ने केसर घोड़ी से कहा-- हे कालवी ! तू जल्दी मत कर, मैं रुण्डमाल पहना कर तुम्हें अमर कर दूंगा। पाबू ने जींदराव को पकड़ लिया। उसकी जीत हो गई। कई वीर युद्ध में मारे गए। बहिन पेमल ने अपने वीर भाई की वीरता को खूब सराहा और वह भ्रातृत्व प्रेम से विव्हल हो गई। पाबू ने गायों को एक ओर इकट्ठी की। देवल चारणी ने मुक्ता थाल लेकर पाबू की आरती की। उसके ललाट पर कुंकुम का तिलक निकाला, मंगल गीत गाए। क्यों कि पाबू उसकी गायों को बचाकर ले आया था। देवल ने पाबू की खूब प्रशंसा की तब पाबू ने कहा कि वह क्षत्रिय है, उसका छोटा भाई है, सब दुखियों की पीड़ा मिटाने वाला है और सातों वीरों को साथ लिये इसीलिये तैयार रहता है। इस प्रकार बहिन का आभार मानकर उसको देवी शक्ति का अवतार मान,उसको प्रणाम करने लगा। उसने देवल से फिर कहा कि अपनी गायों को संभाल लो, कोई बछड़ा भी छूट गया हो तो वह उसकी दुगुनी कीमत अदा कर देगा। तब ग्वालों ने अपनी गायों को संभाल लिया। तीन दिन की प्यासी गायों को कोलूमढ में पानी पिलाया फिर चांदे के साथ गायें रवाना की।

बूढ़ा रो समो (१३७ सें १४३)— वीर साथियों सहित हांफते हुए बूढा भी वहां आ पहुँचा और कहने लगा कि भालाल् भाई के बिना कोलूमढ जाना उसके लिए संभव नहीं है। बूढा जींदराव सेभी मिला और जुहार किया परन्तु उसने बहनोई को बुरा-भला भी कहा। तब जींदराव ने बूढा को अपशब्द बोलने से टोका और उसने बताया कि पाबू गायों को छुड़ा कर वापस अपने घर गया है, इसमें किसी तरह का झूठ नहीं है। इस पर बूढा व जींदराव में तकरार हो गई और दोनों में लड़ाई हो गई। कई वीर जींदराव के मारे गये परन्तु बूढा इस लड़ाई में जींदराव के हाथों मारा गया। इस तरह जींदराव का भाई मेहन्दर व पाबू का भाई बूढा ये दो वीर इस युद्ध में काम आये। जींदराव का मामा पाबू की वीरता का स्मरण कराते उससे बोल उठा कि पाबू अब बूढा का वैर लेकर ही रहेगा। जींदराव पाबू से घबराता था ही वह इस परिस्थिति में

सारी सूझबूझ भूल गया और गोरखनाथ का मन में स्मरण करने लगा। उसके मन में यही भाव आते रहे कि रात में जब थका पाबू सो रहा हो, उसके साथी भी थके पड़े हों, उस समय हमला कर पाबू को मार डालना ही उचित है, अन्यथा यह हार की आग उसे शान्ति से नहीं रहने देगी और इसी मानसिक उद्वेग में उसने रात के समय पाबू पर हमला कर दिया।

रातीवाहो (१४३ से १८१)— क्रोध से तमतमाता अपने वीर सरदारों के साथ जींदराव पाबू पर चढ आया और मन ही मन कहने लगा कि पिता सारंग व भाई मेहन्दर की मौत का बदला पाबू को यमपुर पठाने पर ही पूरा होगा। जींदराव को युद्ध प्रमाद में देख शक्तियें कहने लगी कि यह पाबू पर हमला आधीरात के समय उसके सोते समय करेगा तो निश्चय ही पाबू का वध हो जाएगा इसलिए कोलूमढ जाकर पाबू को जगाना चाहिये। जींदराव के सैनिकों ने चुपके से गढ पर चढने को योजना बनाई। कुछ दूरी पर घोड़े छोड़ गढ़ की ओर बढ़ने लगे। चांदे ने कुछ आवाज व पैरों की आहट सुनी तब वह सचेत हो गया। चन्द्रभांण ने कहा पाबू को तुरन्त जगाओ और घोड़े तैयार करो। ज्यों ज्यों जींदराव आगे बढने लगा त्यों त्यों चांदा और खाखृ मोरचे के लिए सबको तैयार करने लगे और सभी भयंकर सिंहनाद कर युद्ध के लिए तैयार हो गये। शक्तियों ने जान लिया कि कमलादे के पुत्र की आज कुशल नहीं। अतः वे गढ के कांगरे-कांगरे पर बेठ गई। पाबू के लिए वीर बैताल भी लड़ने को तैयार हो गये। कमलादे भयतीत होकर पाबू के महल की ओर दौड़ी और देवल दौड़ती हुई पाबूको जींदराव की खबर देने लगी। सभी राज्पूत सरदार माता कमलादे को सांत्वना देते हुए कहने लगे कि हे माता आप चिंता न करें,हम पाबू की रक्षा करेंगे या तो जींदराव को मारकर ही आयेंगे या हम सब रणखेत रह जायेंगे। माता देवी-देवताओं से पाबू की रक्षार्थ प्रार्थना करने लगी। जींदराव ने भयंकर आक्रमण बोल दिया। पाबू भी क्रोधित हो कर निर्णायक युद्ध करने को आमादा हो गया, कई राजपूत योद्धा रणखेत रह गये। पाबू का और उसकी घोड़ी का चमत्कार देखते ही बनता था। पाबू के साथ उसके सातों भील भी अपना युद्ध कौशल दिखाने लगे। इस तरह राठौड़ और खीची भयानक युद्ध करने लग गये। करीब 500 खीची सैनिक इस युद्ध में धराशायी हो गए। जींदराव ने जब पाबू को ललकारा तो पाबू और क्रोधित हो शत्रुओं पर प्रहार करने लगा। जींदराव पाबू के वध का अवसर ढूंढता रहा। पाबू ने जींदराव को कई बार जीवन-दान दिया, बहनोई के नाते, परन्तु जींदराव ने मौका पाते ही पाबू को घायल कर डाला, युद्ध शान्त हो गया। जींदराव वापस जायल को रवाना हो गया और महलों में राणियें शोक में डूब गई। उधर देवल (चारणी) भी शक्ति से कहने लगी, जब उसने गौ-रक्षक पाबू के शरीर को खून से लथपथ रणांगण में देखा) कि आज हमें कमधज को अमरत्व प्रदान करना है

क्यों कि पाबू मानवता का अवतार था और स्त्री - जाति गौ व निर्बल का रक्षक था। इस प्रकार सभी शक्तियें चारणियें बन कर वीर पाबू का यशोगान करने लगी। पाबू ने अपने सातों साथियों के बारे में पूछा तो देवल ने बताया कि वे सातों उसके साथ ही निश्प्राण पड़े हैं। तब पाबू ने कहा कि पेमल के सौभाग्य की चिन्ता से ही जींदराव जीवित बच पाया है परन्तु हमारे वंश में "झरड़ा" पैदा होगा वही उसका वध कर बाप व चाचे का बदला लेगा। पाबू के शरीर से बहता खून भीलों के खून के साथ मिल एक हो गया। पाबू, माता कमलादे तथा देवल व दूतों में परस्पर सवाद होता रहा। अन्त में माता कमलादे ने जब पाबू की आत्मा को वात्सल्यपूर्ण विदाई दी तब ही वह आत्मा सूर्य की साख में परमात्मा में विलीन हुई। धांधल वंश का अन्त देख माता कमलादे विकलता से रोने लगी और दूत पाबू का 'मोळिया' लेकर अमरकोट राणी सुपियारदे के पास जाने के लिए रवाना हो गया।

सती रो प्रवाड़ो (१८१ से २०९)–– इस तरह युद्ध का अन्त बुरा हुआ। धांधल का वंश ही नष्ट हो गया, कोई पानी देने वाला भी नहीं रहा। उधर अमरकोट में सुपियारदे को अपशुकन होने लगे। उसने अपनी माता से यह बात बताई कि उसका पति वीर पाबू कुशल नहीं है। माता की सान्त्वना उस पर बेअसर रही। सूरजमल भी बेटी की चिन्ता से शोक-मग्न हो गया। बलोच से सोंडियाँ जीतने के पाबू के पराक्रमी युद्ध का चित्र उसके आंखों के सामने आने लगा और उसे स्मरण हो आए अपने इष्ट के बोल, जिसमें पाबू को देवता का अवतार बताया था। पाबू के मरने की शंका से ही उसे चिन्ता हो गई। माता ने भी बेटी के वैधव्य की शंका से अपने पति को बुरा भला कहा। मां ने बेटी को प्यार से गोदी में बैठाया, पिता ने उसको भोजन करवाया। इतने में ऊंठ-सवार वहां आ पहुँचा। उसने बूढा व पाबू की मृत्यु के समाचार सुनाये। सुपियारदे पाबू के प्रति बिलख कर रोने लगी। उसने सती होने का निश्चय कर लिया और अमरकोट के सरदारों को साथ ले सती होने कोलूमढ़ आ गई। उसके मुख पर सतीत्व का तेज झलक रहा था। माता नव-वधू का सती के रूप में स्वागत करती बिलख उठी। सुपियारदे सभी परिजनों के पैरों पड़कर सासू के पाय लगी और यही कामना की कि दोनों कुलों में स्नेह बना रहे। बूढा की राणी गेली ने चिता पर बैठते ही कटार से अपना पेट चीर कर हिम्मत के साथ अपने गर्भस्थ शिशु को पेट के बाहर निकाल कर अपनी माता को संभलाते हुवे उससे कहा कि "यह झरड़ा बारह वर्ष की उम्र प्राप्त करते ही जायलपति जींदराव खीची को उसके महलों में ही मार कर अपने पिता व चाचा का वैर लेगा" इसके बाद गेली व सुपियारदे सती हो गई। सूरजमल व उसका परिवार रोता बिलखता अमरकोट आ गया व माता कमलादे अपने महल में आ गई, नानी बालक झरड़े को लेकर अपने ठिकाने वापस चली गई।

झरड़ै रो परवाड़ौ (२०९ से २४८)— बूढ़ो का पुत्र झरड़ा अपनी नानी के संरक्षण में दिन दिन बड़ा होता गया। घर में मामी आदि उसको असह्य वचन कहने लगे कि 'पनघट पर पनिहारिनों को सताने से पिता व चाचा का वैर नहीं लिया जा सकता।'' इन अपमान भरे कथनों से नाराज होकर झरड़ा नानी के पास गया और उससे पूछ बैठा कि उसके जीवन की पूर्व कथा क्या है? नानी ने बहुत समझाया परन्तु वह नहीं माना और कहने लगा कि यदि उसने सत्य नहीं बताया तो उसके घर को छोड़कर वह चला जायेगा। तब झरड़ा की नानी ने सारी कथा विस्तार से उसको बताई। कथा सुनते ही झरड़ा जींदराव को मारने को तैयार हो गया। वह वन में चला गया और अवधूत बनकर शरीर पर भी भस्मी रमा कर, दिगम्बर वेष में ही घूमने लगा। वन-प्रांगण में गोरखनाथ से उसकी भेंट हो गई, वह उसके चरणों पर गिर पड़ा और विलाप करने लगा। गोरखनाथ ने झरड़े को समझाया और उसका वंश परिचय पूछा। झरड़े के मुख से सारा वृतान्त सुनकर गोरखनाथ ने कहा कि जींदराव ने जो कुछ किया वह सब अन्याय था और उस दिन से वह उससे रूठा हुआ है। गुरू गोरखनाथ ने जींदराव की सारी बात बता दी और झरड़ा से कहा- ''मेरा हुकम है तू जींदराव को मार डाल।'' गुरु की आयस पाते ही झरड़ा जायल की ओर रवाना हो गया और उसके वहां पहुँचते ही जींदराव के महल कंपित होने लग गये। झरड़ा ने उसके फळसे के पास ही अपना आसन जमा दिया और गोरखनाथ का जाप करने लग गया। जींदराव बालक अवधूत के पैरों पड़ा और उसने उसकी यात्रा का कारण पूछा। जींदराव ने अपनी विजय की खुशी में सामिष भोज बनवाया। सभी लोग भोजन खाने आये पर झरड़ा नहीं गया, तब लोग आश्चर्य कर उससे पूछताछ करने लगे।

झरड़ा की भुवा पेमांदे ने जींदराव को अपने भाइयों की हत्या का दोषी मानकर उसे उपालम्भ दिया और जोगी अवधूत के भेष में झरड़ा भतीजे को देख कर अपने वंश का अंश मान उसे अपने पास बुलाया और उससे कहा कि वह अपने आने का कारण निश्चित होकर उसे बताये। उसने प्रगट कर दिया कि वह जोगी नहीं बूढो का बेटा, उसका भतीजा ही है। और झरड़ा ने कहा कि वह छोटी उम्र का होते हुए भी जींदराव के लिये महाकाल स्वरूप है, वह तो इतना ही सहयोग चाहता है कि किसी प्रकार वह जींदराव के महलों में पहुँच जाये। पेमांदे ने ताली का संकेत देकर झरड़ा को महलों में बुला लिया। पलक मारते ही सोये हुए जींदराव की छाती पर झरड़ा खंजर निकाल कर चढ़ बैठा। जींदराव प्राणदान मांगने लगा व अपनी भतीजी के साथ उसके विवाह की चर्चा करने लगा। पेमांदे ने झरड़ा से बातों में न उलझने का संकेत दिया तो झरड़ा ने तत्काल कटार से जींदराव की आंतें बाहर निकाल ली। तलवार के वार से उसका सिर धड़ से अलग करके वह महलों के बाहर सिर ले चला। गोरखनाथ कहने लगे कि 'हे झरड़ा! जींदराव को मार कर तू ने महान शौर्य का काम किया है। पेमांदे

ने झरड़ा को बहुत आशिष दी। पाबूजी ने झरड़ा को वरदान दिया कि जब तक सूर्य पृथ्वी पर उदय होता रहेगा, महादेव कैलाश पर विराजमान रहेंगे, तब तक झरड़ा इस पृथ्वी पर अमर रहेगा। झरड़ा जोगी रूप में ही वन में फिरता रहा और अलख भेष में अभी तक विचरण कर रहा है। इस प्रकार झरड़ा के परवाड़े के साथ पाबू की जीवनी समाप्त हुई।

फुटकर कथाएँ (२४८ से २६८)—

वीर पाबूजी के बाद उनके भतीज झरड़े द्वारा अपने पिता व चाचा का बदला ले लिया गया और वह अमर हो गया तब से 'पाबू - भालाळा' के असंख्य भक्त भारत-भर में हो गये। गुजरात, माळवा और राजस्थान में पाबूजी के अगणित चमत्कार उनके भक्तों को मिलने लगे। पाबूजी का मूल स्थान तो फलोदी के पास कोलूमढ़ में है जहां साल भर उनकी पूजा होती रहती है। दूर दूर देशों से लोग अपना मनोकामना सिद्धी के लिये तथा कष्ट निवारण के लिये आते हैं। पाबूजी के अनेकानेक चमत्कारों में श्री रूपाजी का, बाघाजी का व राव गांगोजी का चमत्कार वर्णित किया गया है। जैसिंग ने हरे वृक्ष को काटा तो उसे जो यातना पाबूजी ने दी उसका भी वर्णन बहुत प्रभावशाली है। जैसलमेर के हरराज की कन्या के योग्य वर बीकानेर नरेन्द्र के शरीर में भूत आ बसा तो कन्या की प्रार्थना पर उस राजा के शरीर में से भूत भगा दिया। धांधल शोभा को उसके पोते के खजाने के चोरी गये माल का पता बता दिया और उसे आरोप मुक्त करवा दिया। रुगा रावत बहुत अत्याचार करने लगा और थान के भोपों को यातना देने लगा तो वीर पाबूजी ने रुगा रावत की गर्दन तोड़ उसे मार डाला। चारण मेहाजी को भी अनेक परचे पाबूजी ने दिये, महाराजा जसवन्तसिंह प्रथम का काबुल में स्वर्गवास होने की पूर्व सूचना पाबूजी ने महाराजा को दे दी थी। मेहाजी ने भी पाबूजी के यश का पवाड़ा बना कर गाया और इसी चारण वंश में कवि आशिया मोडजी ने अपनी मनोकामना पूर्ति हेतु इस ग्रन्थ की रचना की और पाबूदान पुत्र को प्राप्त कर कोलूमढ़ पाबूजी की पूजा करके कृतकृत्य हुआ। वीर पाबूजी की यह पराक्रम गाथा सारे भारत में प्रचलित है तथा मालवा एवं गुजरात के लोगों के जन-जीवन पर पाबूजी के चमत्कारों का अमिट प्रभाव है।

परिशिष्ट–२

शब्दार्थ

'अ'

अंजळ — अन्न-जल
अंजस — गर्व
अंबुवा — भील
अखी — अक्षय, अमर
अगीण — अंगारे, क्रोद्धाग्नि
अड़पायत — अडिग, दुर्द्धष वीर
अड़ियाला — बांका
अजरेल — जबरदस्त, न दबनेवाला
अजरोह — विकट, वीर
अजहूणी — आज की
अधकांणाह — बढे चढे, उन्नत
अधपत — राजा, शासक
अनड़ — पहाड़, वीर
अणसात — इसी समय
अणियाल — भाला
अणी — फौज फौज की टुकड़ी, भाले का अग्रभाग
अपखां — पक्षरहित, संबल रहित
अपट — अपार
अपत — विश्वास न करने योग्य
अप्रमांण — अत्यन्त, अथाह
अमरां — देवता
अभीरां — पक्षहीन, निर्बल
अलखामणा — न सुहानेवाले
अलल — घोड़ा
अलोप — अदृश्य, अप्रकट
अयराक — इराकी नश्ल का घोड़ा
अवनाड़ – काबू में न आनेवाला, वीर
अवन — अवनी, पृथ्वी
अवतरी — अवतार लेकर प्रकट हुई
अवरी — कुमारी
अवितंस — शिरोमणी, श्रेष्ठ
अस — अश्व; घोड़ा
असमर — तलवार
असमादां — व्याधि
अहफोण — अफीम

'आ'

आंटोय — बैर
आखड़ी — प्रतिज्ञा
आखाड़सिध — युद्ध प्रवीण
आखूं — कहूं
आगहथो — शस्त्रधारी वीर
आछटो — प्रहार किया
आंछौ — शीघ्रता
आंटोय — वैर
आताळै – घोड़े को छलांग भराना
आथमियौ — अस्त हुआ
आपमणा — सचेत, संगठित
आफरीवाद — आशीर्वाद
आफू — अफीम
आभरण — वस्त्र
आरत — आर्तनाद
आळ — छेड़
आलहणो — मना करना
आव — आयु
आवड़ा — एक देवी का नाम
आवटकूट — विध्वंस
आवध — आयुध
आसंग — सामर्थ्य
आसब — शराब
आहेड़ी — भील का पर्याय

'इ'

इकडांणी — एकछत्र
इळ — पृथ्वी
इहग — चारण, कवि

'ई'

ईढ़ — ईर्ष्या, दुश्मनी

'उ'

उखांण — कहावत, उक्ति
उगराणोह — वसूल किया
उजवाळो — उज्जवल करनेवाला
उतमंग — सिर
उतराफजर — उत्तराषाड़ा
उथाळ – उलटना, धराशायी करना
उदमांदां — उन्माद
उदियामणी — अनमनी, उदास
उधरावै – लेता है, वसूल करता है
उरव्वडियूं — तेजी से भागता हुआ
उरस — आकाश
उवेळो — रक्षा, सहायता
उसरांण — दुश्मन

'ऊ'

ऊंडलियां — गोद
ऊतळियूं — लपका
ऊकट काट — क्रोध में उफनता
ऊबंबरौ — साहसी, विचक्षण

'ऐ'

ऐवास — गृह, महल

ओ'

ओठंम — संरक्षण प्रदान करने वाला
ओठी — सुतर सवार
ओठीड़ौ — सुतर सवार
ओथसां — वहां से
ओदी — शिकारगाह
ओद्रक — चमक कर
ओद्रकती –जोश के आवेश में आई हुई
ओळ — ओट
ओळख — पहिचान

'औ'

औजग — जागरण
औध — जाति, वंश

क'

कंठीर — सिंह
कंद्रप — कामदेव
कड़चियौ — उद्यत हुआ, लपका
कजियौ — युद्ध
कणएठिय — लघुभ्राता
कणणाय –घायल की रोसीली आवाज
कमठाळाय — भील लोग
कमंद — राठौड़
कमधागुर — राठौड़ों में श्रेष्ठ, पाबू
कमाड़ — कपाट
करंड –देवी की मूर्ति रखने की पेटी, आसन
करणाटी — कर्नाटक की
करमाणंद आणंद — प्राचीन दो कवि
करिन्द — गजराज
कळ — युद्ध
कळचाळ — युद्ध

कळचाळा	युद्ध, वीर
कळेह	युद्ध, झगड़ा
कांठल	काली घटा
कांण	कायदा
काँधोधर	वृषभ सा बलिष्ठ
काप	काटना
कापण	काटने वाला
काळा पहाड़	एक प्रसिद्ध योद्धा
काली	बावली
किरणाळ	तेजस्वी वीर
किरणाळौ	देवता, सूर्य
कुखतरी	–क्षत्रियत्व के गुणों से रहित
कुलढाकण	–कुल की रक्षा करने वाला
कुळधी	कुल की पुत्री
कुळमंडण	कुल का पोषक नाम करने वाला
कुळवट	कुल की राह
कुवच	बुरे वचन
कूंजडियाँ	क्रौंच पक्षी
कूंत	भाला
केरड़ी	बछड़ी
केवाह	दुश्मनी, कठिन कार्य

'ख'

खंड वेखंड	टुकड़े - टुकड़े
खड़	घास
खगां रसिया	युद्ध रसिक
खटतीसां	छत्तीस की संख्या
खत्री	क्षत्रिय
खथाळ	तेजी से
खरळदिसा	–उत्तर व पश्चिम के बीच की दिशा
खरलां	अफीम घोटने का पात्र
खरहंड	नष्ट-भ्रष्ट
खळ	दुश्मन
खळां डळां	खंड विखंड
खही	क्षय हूई
खाट खाय	अपनी जीती हुई भूमि का उपभोग करता है, पक्की कमाई
खिमए	शान्त रह, ठहर
खोटवियोड़ा	छेड़े हुए
खेंगण	घोड़ी
खेड़	मारवाड़ में राठौड़ों की प्राचीन राजधानी
खेम	क्षेम
खेळा	भैरु, गण
खोटिय	बुरी

'ग'

गजगाह	युद्ध
गजगेहण	युद्ध
गढ़वाड़ा	चारण वर्ण
गढ़वी	चारण का सम्मान सूचक सम्बोधन
गरठ	बलशाली, वीर
गरबावै	गर्वित होते हैं
गळगळो	अश्रु गलित
गवण	गमन
गहेठौ	गाहटा
गांजे	नष्ट करें, परास्त करें
गिरवांण	दैविक शक्ति
गुडळापळ	गर्द से आच्छादित
गुद्दू	गूढ बात, अप्रकट
गेबाऊ	अचानक
गोडै	पास
गोप	गोपनीय
गोल मथांण	संकल्प विकल्प

गोळू — पशुओं को लेकर अकाल के समय अन्यत्र जाने वाले लोग

'घ'

घोऊरारव — युद्ध की भयंकर आवाज

'च'

चंचाळ — घोड़ा
चंद्रहास — तलवार विशेष
चहुंकानिय — चारों तरफ
चकडाळ — खुमारी
चख — आंख
चलूए — चुल्लू भर
चांचड़ा — बाजरी के सिट्टे
चाखड़ियां — खड़ाऊ
चिरतां — चरित्र
चींतविया — विचारा हुआ
चीतारेह — याद करता है
चोभड़ियाळ — सुअर के बच्चे
चीह — चीख पुकार
चूंथलिया — लूटलिया
चोल चखां — लाल आंखें
चोळी दांवण — चोली दामन

'छ'

छड़ — भाले की डंडी
छीतर — पठार
छेहली — अन्तिम
छैवास — शाबास

'ज'

जग जेठिय — दुनियां में श्रेष्ठ
जड़लगां — तलवारें
जमजाल — युद्ध
जमदाढ — कटार
जवार — जुहार, प्रणाम
जितेन्द्र — जितेन्द्रिय, पाबू
जिरांण — श्मशान
जूंझमल — जूंझने वाला, वीर
जेज — विलंब
जोतांइ — खोजने पर भी

'झ'

झाट — प्रहार
झूसण — कवच, बख्तर

'ट'

टीकायत — टीका ग्रहण करने वाला, गद्दी का अधिकारी
टूंकस — शिखर
टूंकां — शिखर
टोप — सिरत्राण

'ड'

डारण — प्रचंड शरीर वाले

'ढ'

ढेंचाळ — हाथी

'त'

तंत — तत्व
तइयां — दुश्मन
तइयूं — दुश्मन
तड़ता — बिजली
तवै — कहता है

त्रजड़	तलवार
त्रभागो	भाला
ताजण	घोड़ी
ताजी	घोड़ा
ताता	तेज त्वरा से
ताताय	तेज
तारायण	तारावलि
तोड़ा	छोटी नाल की बंदूक
तोन तड़ा	तीन शाखाएँ
तूंग	फौज की टुकड़ी
तेड़यौ	बुलाया
तेराल	कुलहीन, दुष्ट
तेलंगी	तैलंगाना की
तोखार	घोड़ा

'थ'

थपोट	थपथपाना

द'

दधरेल	पानी का रेला
दळथंभ	युद्ध में अडिग वीर
दळपांगळौ	बडी फौज वाला जयचन्द का विरुद
दवा	दुआ
दसण	दांत
दहवाट	संहार
दांणवी	दानवी
दाकल	ललकार
दात्रडियाळ	सूअर
दामण चोळ	चोली दामन का सा सम्बन्ध
दायौ	दावा
द्वादसभांण	बारह आदित्य
दावौ	बदला
द्राह	वेदना
दिसाटाळ	दिखाई पड़ना
दुगाळ	कुवचन, गाली
दुजाळ	तलवार
दुझाल	तलवार
दुतियां	धारण वर्ण की स्त्रियां
दुथनी	स्त्री
दुबारा	दोबारा खेंची हुई तेज शराब
दुबाह	वीर
देवंसी	देव अंश वाला
देवळी	पत्थर में स्मारक स्वरुप कोरी हुई पुतली
दोळियां	इर्द-गिर्द

'ध'

धजराज	श्रेष्ठ घोड़ा
धजवाड़	ध्वजधारी
धणियापण	छत्रछाया, रक्षा
धनवाळ	पशुधन
धनंखां	धनुषों की
धयर	धैर्य
धवळकंध	बलिष्ठ, वृषभ
धाईह	दौड़ी
धाट	ऊमरकोट की धरती
धाटेती	धाट धरती की स्त्री सोढी
धानंक	धनुषधारी
धायौ	पीया, स्तनपान किया
धीचवियूं	रौंद डाला
धुणियाळाह	धनुषधारी योद्धा
ध्रोलहरांह	राजप्रासाद

'न'

नगकोड़ीक	अतिश्रेष्ठ पुरुष
नरेहण	निष्कलंक

नरनाह — राजा, शासक
नवलाखरौ — नौलाख लोवडिवाल देवियां
नवखंड — नौ खंड
नहठाळ — धैर्यवान्
नहराळा — जंबुक आदि
नागाणो — मारवाड़ का एक गांव जो राठौड़ों की कुलदेवी नागणेचियां का स्थान है
नागोणराय — नागणेची देवी
नायक — भील
नीहंग — आकाश
नीपियौ — उत्पन्न हुआ
नेतियार — न्यौते हुए लोग

'प'

पखाळै — धोता है
पतसाळ — पितृगृह
पतियारो — भरोसा
पनंगणी — नागकन्या
पमग — घोड़ा
पयाण — प्रस्थान
परग — साथ, मण्डली
परब — पर्व
परवाड़ा — वीरता पूर्ण कार्य
परसेवो — पसीना
पलाउए — प्रतिकूल
पह — योद्धा
पांतरै — भूलता
पाथरियाह — ध्वस्त किये, बिछा दिये गये
पांमणौ — पाहुंना
प्रामणौ — पाहुंना, जामाता
पाराधियां — भील लोग
पिड़ — युद्ध
पिड़जान — बारात के स्वागतार्थ कुछ दूरी पर सामने जाने वाला समूह
पींगै — पलने में
पुड़ां — धरती के पर्त
पुरबंध — भरपूर
पुळै — चले
पेथड़ — चारणों की एक शाखा
प्रोखता — एक विशेष प्रेतयोनी जो प्रेमी का पोषण करती है
पौंछाला — पहुँचवान, वीर
पौरसातन — पौरुष से परिपूर्ण
पौहचाळ — पहुंचवान, समर्थ

'फ'

फजरे — प्रभात
फळ — भाले का अग्रभाग
फींफराह — फेंफड़े
फुणावण — शेषनाग का फन
फेंट — टक्कर
फोई — एक छोटा जानवर जिसकी आवाज के साथ अग्नि निकलती है
फोट — धिक्कार

'ब'

बाग — लगाम
ब्रन — चारण वर्ण
बराचक — भरपूर
बळह — बलाहक
बलीठ — बलिष्ट
बांहां प्रलंभ — श्रेष्ठ पुरुष
बुकानी — दाढ़ी पर का बंधन
बुरचींतोय — बुरी विचारने वाला
बुरछी — बरछी

ब्रूहो	भौंह
बूंब	चिल्लाहट, पुकार
बूंहरै	भुंआरा; जमीन में किया हुआ आच्छादित गढ्ढा
बेल	सहायता वेलि
बोवतौ	बरबाद करता

'भ'

भंगमा	भंगवे रंग के
भंवरो	पाबू की घोड़ी
भद्रटोळा	गज-समूह
भयरवी	एक चिड़िया
भ्रक	भक्षण
भागल	युद्ध से भागने वाला
भालाळ	–भालाधारी, पाबू का विरुद
भाविय	भविष्य, भावितव्यता
भुइयाल	पृथ्वी
भुजिये	बुर्ज
भूंण	भुवन
भूंडण	सूअरनी
भुगतणौ	–भोगना, कष्ट व्यतीत करना
भूतावल	भूतों की जमात
भूरा	शेर, वीर
भूरोह	सिंह, वीर का पर्याय
भिड़ज	वीर, योद्धा
भीच	योद्धा
भीत	भय

'म'

मचराल	क्रोधी
मझमांनांह	मेहमान
मणधर	सर्प, बड़ा वीर
मतूर	मनोदशा
मयूरिय	–मयूर की तरह नृत्य करने वाली-घोड़ी
महमाई	महामाया, देवी
महियां	दही
महीरेलण	दानवीर, रायपाल का विरुद
माखिय	बन्दूक की नाल पर निशाना साधने का चिन्ह
मांढिया	वधूपक्ष
मिसटांण	मिष्टान्न
मींढ	समान, तुलना में
मीसण	चारणों की एक शाखा
मुणिया	कहे
मुदवी	प्रधान, जिम्मेदार
मुदरालाय	मुद्राधारी, नाथयोगी
मुहमेज	आमने-सामने
मुकअ	त्यागूं
मेकादसा	ग्यारह
मैंगळ	हाथी
मेरधड़ै	सुमेरु के समतुल्य
मोख	मोक्ष
मोडो	मोडजी आशिया

'य'

यणताळ	इसी घड़ी
यळ	पृथ्वी

'र'

रंडू	विधवा करूं
रंदाळा	अदुर्दमनीय
रखवाळण	रक्षार्थ
रखै	ऐसा न हो कि
रजबंद	आज्ञा में
रढ रांमण	हठीला, वीर
रणंदे	बजते हैं
रतनाळियां	मांस भक्षी पक्षी

रत्र	रक्त
रन	जंगल, ऊजड़ जमीन
रवदां	मुसलमान लोग
रहस	रहस्य
राईतन	-राजेश्वर्य, राजाओं की रीति
राड़	युद्ध
राजंद	प्रियतम, राजा
रिणवां	चारण
रिधू	अविचल
रिव्यंद	अरविन्द
रूं आंवल	रोमराजि
रूपग	प्रशस्ति काव्य, गीत
रूपारेल	शकुन चिड़ी
रूहराळ	रक्तरंजित
रागौ	राघौगढ़
रोधिया	अवरुद्ध किये
रोळ	ध्वनि
रोद्राल	भयंकर गुस्से में

'ल'

लंगेय	लांघकर
लांबै	ऊमरकोट के तालाब का नाम
लूथ बथां	गुत्थम गुत्थ
लोकाईह	लोग, जनता
लोतर	लक्षण
लोह	शस्त्र

'व'

वखमी	विपरीत, कठिन
वडकापणौ	बड़प्पन
वजरेह	बकना, ललकारना
वजौ	कहलाते हो
वढिया	युद्ध में काम आया
वनड़ोह	दूल्हा
वज्र कमाड़	वज्र कपाट
वरग	ऊँटों का टोला
व्रनपाल	-चारण-वर्ण को पालने वाला
वळोवळ	चारों तरफ
वांकाय	बांके
वायक	वचन
वाळला	एक प्रकार का हार
वाळवौ	वापिस घेरना
वालोह	प्रिय
वावळ	वर्षा के पहले की हवा
वासे	पीछे
वाहरू	वाहर चढ़ने वाला, पीछा करने वाला
बिडंगाल	घोड़ा
विजड़ाहत	वीर
विजड़ौहथ	वीर
विजड़ी	तलवार
वित	गौधन
विलकुळिया	युद्ध में प्रवृत्त हुए
विरदायोह	उत्साहित किया
विरोलाय	नष्ट करें
वींटिय	घेरे हुए
वीभरियोड़ा	गुस्सेल
वेगड़ौ	प्रचंड वीर
वेध	युद्ध
वेसवार	मसाले
वोकार	ललकार

'स'

संक्रम्या	चले
सको	समस्त
संगट	संकट
संज	पिलान आदि
सझाड़ा	सघन
सतखणा	सात खंडों वाला

सपतास	सूर्य
समवड़	समानता, बराबरी
सम्भरी	चौहान
समेहळा	वर-वधू पक्ष का प्रथम मिलन आयोजन
सलामी	अधीनता में रहने वाले
सलुळी	उमड़ पड़ी
सवळी	चील
सवादोह	अनुकूल
सहड़	वीर
सांक	शंका
साकंबरी	शाकंभरी (देवी)
साकर	शक्कर
साकुर	घोड़ा
साख्यात	साक्षात्
साद	आवाज
साबळ	एक प्रकार का भाला
सांम	स्वामी, पति
सायर	समुद्र
सारबिध	शस्त्रों से घायल किये, मारे
साँवळा	भील लोग
साहणी	तबेले का अध्यक्ष
सिंगाळ	सामर्थ्यवान, वीर
सिधियळ	सिद्धि प्राप्त
सिमाड़	सीमा
सिरायत	श्रेष्ठ, प्रधान
सींगाळा	बलशाली, स्वाधीन
सींचाण	बाज जैसा पक्षी
सीलणौ	खिमायजा देना, बदला चुकाना
सुरांतर	कल्पवृक्ष
सुरै	सुरही, गायें
सूरमण	श्रेष्ठ, सूरमा
सेवगी	सेवक
सैलाड़	अेक साथ
सोनहरी	सुनहरी
सोरभ्रखी	बन्दूक
सोहड़	वीर, योद्धा
सोहळा	शादी के समय गाया जाने वाला एक गीत

'ह'

हड़ांवाय	खदेड़े
हथनाळ	बन्दूकें, हल्की तोप
हथळेवोय	गठबधन
हनोज	अभी तक
हमरोटियां	ऊमरकोट की स्त्रियां
हणणाट	हिनहिनाट
हरखांणी	प्रसन्न हुई
हरणांखुर	घोड़ा
हाकड़ौ	एक विस्तृत नदी का नाम
हीणाय	हीन, कान्तिरहित
हुतब	होनहार
हेकधड़ै	एक साथ
हेतारथ	प्रेम सम्बन्ध
हेरूअ	पीछा करने वाला
होफरती	प्रचंड आवाज करती हुई ।

★

परिशिष्ट – ३

शुद्धि-पत्र

पृ. सं.	पं. सं.	अशुद्ध	शुद्ध
3	11	हरिया माली	हरियामाळी
5	8	बोघ	बोध
7	13	पर गहै	परगहै
7	20	सें है	सैह
8	14	घणीह	धणीह
9	27	कत हूंरू	कथ हूं रू
10	17	झड	झड़
15	7	वांहनकरै	वाह न करै
20	23	डोळियां	डोळियां
30	6	उगनूं	उग नूं
32	25	मखरं	भखरं
34	23	जबरेल	जथ रैल
40	18	मणले	मण ले
40	26	रागपाल	रामपाल
49	16	करकंद्रप	कर कंद्रप
51	6	ध्रस लावै	ध्रसळावै
54	2	खत्रां	सत्रां
59	3	नगरां	नगारां
65	2	देवर	देव रै
67	16	मारे	मोर
70	17	हवसाण	हव सूण
74	5	सुरंगद कूळ	सुरंग दकूळ
74	19	खजै	सजै
74	24	कुंआँ रखव	कुंआंर खंवा
75	4	आसबा	आसब

78	2	बंधस नै	बंध सनै
78	24	सखो	सीख
79	2	घड़ी कनरैं	घड़ीक न रै
85	1	सदमारां	सद मोरां
85	6	सीस	सीम
86	11	सेर	सोर
86	20	कुस मांडव	कुसमांडव
87	19	कोट	कीन
88	14	कण एठिय	कणएठिय
90	19	घीचोजै	घीचीजै
91	13	खेहांखमां झल़	खेहां खमाझल़
92	2	जघसो	जावसो
93	6	सूरांतर	सुरांतर
100	6	धट	घट
102	12	थांधाभ	धांधल
104	1	अंग मसो	अंगम सी
105	15	भीडत	भीड़त
107	17	जोवण	जोगणं
113	3	मगती	मुगतो
114	8	खोखलई	खोस लई
115	5	किस	किम
119	3	धरवा	भरवा
119	23	पखरालल़ांय	पखराल़ांय
122	10	विरियां मांने	वरियांमां नै
122	25	कमठां गुणले जमतांण	कमठांगुण लेजम तांण
123	2	प लवोट	पल वींट
123	9	रावजणी	राव जणी
124	21	कण एठिय	कणएठिय
131	2	ऊपरै ठोक	ऊपरैठो कनोती
132	4	त्रिधाई	त्रिघाई
132	21	घाबली बार	धावल़ी बार
132	26	जख	जग
136	21	भूरा रोलू	भूरा रा लूं
141	12	बरा चक	बराछक
148	14	सम रुखल़	समरू खल़

148	23	रीठन त्रीठ	रीठ नत्रीठ
149	13	जळ	झळ
152	24	हथ लाल	हथनाळ
154	3	पेमड़ाराय	तेमड़ाराय
170	12	साळ खला	साल खळां
172	8	घावै	थावै
174	9	द्वाज	द्विज
174	12	बादळ	बाळद
175	22	पोथल	पीथल
175	27	सोकरां	सोक रा
191	16	चरंग	सरंग
229	11	पालणै	पाल नै
231	20	ऐसीम	ऐसो म
235	14	सवे खौवालियौ	सवेगो वालियौ
237	15	ऊतो लेह	ऊतोलेह
338	16	कंठी रवनां दरौ	कंठिरव नाद रो
238	16	जय	जळ
242	19	नर वाही	नरवाही
244	6	तड़ तागत	तड़ता गत
245	5	पुरा चगळ	पुराच लग
246	14	केरड़ी	करड़ी
249	28	सदना सतक	सद नासतक
250	11	दस	दिस
251	11	खं धार	खंधार
251	16	उथल तौ	ऊथलतौ
256	17	दुष्ट	दिष्ट

—